...त ज्योतिष में मानसिक रोग - एक अनुशीलन

...गणेश दोनी वैदिक विश्वविद्यालय

के अन्तर्गत

"विद्या वारिधि" (पीएच.डी.)

...धि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

...

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

22630

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

22630

M:9415462468 M:9451994540
Prem Shanker Rama Shanker
Law Book Binder
Thesis • Project Report • Binding,
Printout • Photocopy • Colour Printout
22, Naaz Cinema Road Aminabad Lucknow
email id-: mukesh99gautam@gmail.com

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फलित ज्योतिष में मानसिक रोग - एक अनुशीलन

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

के अन्तर्गत

"विद्या वारिधि" (पीएच.डी.)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

यह पुस्तक देय नहीं है।

शोध-प्रबन्ध

सन्दर्भ पुस्तक

शोधकर्ता

अनुराग पाठक

शोध निर्देशक

डॉ. मानवेन्द्र पाण्डेय

उपाचार्य

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

शोध सहनिर्देशक

डॉ. निलिम्प त्रिपाठी

उपाचार्य

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

२०१४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घोषणा-पत्र

मैं यह शपथपूर्वक घोषित करता हूँ प्रस्तुत शोध प्रबन्ध जिसका शीर्षक **"फलित ज्योतिष में मानसिक रोग-एक अनुशीलन"** है, सन्दर्भ ग्रन्थों पर आधारित मेरा मौलिक शोध कार्य है। मैं यह भी घोषित करता हूँ कि यह शोध कार्य मैंने किसी भी विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी भी उपाधि आदि की प्राप्ति हेतु प्रस्तुत नहीं किया है।

शोधकर्त्ता

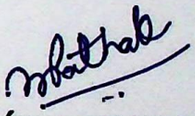

(अनुराग पाठक)
महर्षि महेश योगी वैदिक
विश्वविद्यालय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रमाण-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि शोध-प्रबन्ध जिसका शीर्षक **"फलित ज्योतिष में मानसिक रोग-एक अनुशीलन"** है, अनुराग पाठक द्वारा सन्दर्भ ग्रन्थों पर आधारित मौलिक शोध कार्य है, जो कि मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया गया है। मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि यह शोध कार्य किसी भी विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी भी उपाधि प्राप्ति हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

5.5.2014

शोध-सह निर्देशक

डा. निलिम्प त्रिपाठी

महर्षि महेश योग वैदिक विश्वविद्यालय

शोध-निर्देशक

डा. मानवेन्द्र पाण्डेय

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

15.9.2015

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सादर आभार

प्रस्तुत शोध निबन्ध के प्रस्तुतिकरण का श्रेय परम पूज्य गुरू हमारे शोध निर्देशक डा. मानवेन्द्र पाण्डेय उपाचार्य, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय को है, जिन्होंने अपने अति व्यस्त कार्यक्रमों से समय निकालकर निबन्ध विन्यास की संयोजना की। शोध प्रक्रिया के प्रारम्भ से लेकर शोध निबन्ध के पूर्ण होने तक आपका वरद्हस्त तथा मार्गदर्शन सदैव मिलता रहा। आपने शोध अवधि में हर प्रकार की जो सहायता की है उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

मैं परम पूज्य गुरू श्रद्धेय डा. निलिम्प त्रिपाठी उपाचार्य, महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय का भी अति आभारी हूँ। गुरू जी ने समय-समय पर हमारे मार्ग के सभी प्रकार के कंटक का सफाया किया और अपने स्नेहिल सानिध्य में सदैव हमारा मार्गदर्शन किया।

मैं परम पूज्य श्रद्धेय डा. पी.बी.वी. सुब्रहमण्यम जी सहायक प्रोफेसर, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान गरली हिमाचल प्रदेश का भी आभारी हूँ। गुरू जी के द्वारा भी कुण्डली समीक्षा और रोगों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुयी, गुरू जी ने विज्ञान सम्मत ज्ञान प्रदान किये और आधुनिक विज्ञान के सम्बन्धों के बारे में जानकारी दी।

मैं 2004 से 2006 तक ज्योतिषीय सलाहकार के रूप में Hutch (Vodafone) आज की कम्पनी Vodafone को सेवा दी। यही कारण है कि हमारी सभी कुण्डली 2005 और 2006 के रोगियों की है जो अस्पताल में भर्ती हुए। इनके परिजन फोन करके इनके बारे में पूछते थे और मैं इनको बताता था इसी बीच कई प्रकार के रोगियो से मुलाकात भी हुयी। ये सभी आँकड़े इसी कारण से 2005 और 2006 के हैं। इस बीच मैं दिल्ली और राजस्थान में भी ज्योतिषीय सलाह दी। राजस्थान की Hutch (Vodafone) की ज्योतिषीय सेवा हमने शुरूआत करायी और लखनऊ में रहते हुए इन सभी आँकड़ों को एकत्रित करके रखा और बाद में गुरूओं के आशीर्वाद से समीक्षा की गयी।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं आचार्य इन्दु प्रकाश मिश्रा (ज्योतिषाचार्य) India TV पर सुबह 7:30 बजे रोज इनका प्रोग्राम आता है। मैंने इनको भी ज्योतिषीय सेवा दी इनसे भी मुझे बहुत सीखने को मिला, मैं आचार्य जी का आभार व्यक्त करता है कि इन्होंने हमें अपने साथ रखा।

इसके अतिरिक्त मैं उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, संस्कृत भवनम, न्यू हैदराबाद, लखनऊ के पुस्तकालय अध्यक्ष श्री जगदानन्द झा एवं अन्य सहायक कर्मचारियों के प्रति अति कृतज्ञ हूँ जिनकी सहायता से मुझे निरन्तर ज्योतिषशास्त्र से सम्बन्धित अति प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध होते रहे।

मैं मानसिक चिकित्सालय, नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ के मनोचिकित्सक तथा मानसिक रोग विभाग किंग जार्ज मेडिकल कालेज के न्यूरोफिजिशियन डा. राकेश शुक्ला, विभागाध्यक्ष (Neurology), डा. हिमांशु कृष्णा, न्यूरोसर्जन का भी अत्यन्त आभारी हूँ।

अन्त में मैं उन सभी मनोचिकित्सकों, शास्त्रकारों, विद्वानों तथा अन्य सहयोगियों एवं विभिन्न वाचनालयों का आभारी हूँ। जिनकी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहायता प्राप्त हुयी।

शोधकर्त्ता

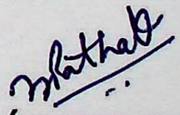

(अनुराग पाठक)
महर्षि महेश योगी वैदिक
विश्वविद्यालय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक्

विषय–प्रवेश

1– ज्योतिर्विज्ञान पृथ्वी का प्राचीनतम विज्ञान

2– ज्योतिर्विज्ञान संसार के सभी देशों में लोकप्रिय

3– इण्टरनेट पर करोड़ों वेबसाइटें

4– लोकप्रियता के बावजूद कटु आलोचकों की भी कमी नहीं

5– अनेक वैज्ञानिकों द्वारा विरोध तथा असहमति व्यक्त

6– ब्रिटिश ज्योतिषी पीटर मार्शल द्वारा वैज्ञानिकों की आलोचनाओं का उत्तर

7– संसार के अनेक अति प्रसिद्ध व्यक्ति भी ज्योतिष में विश्वास करते हैं

8– एलेन लियो की ज्योतिष पत्रिकायें सम्पूर्ण संसार में प्रचलित

9– पीटर मार्शल ने अति जटिल आलोचनाओं का उत्तर देते हुए यह बताया है कि ज्योतिषीय स्थितियां मानव मस्तिष्क में केवल प्रवृत्ति उत्पन्न करती हैं, बाध्यकारी आदेश नहीं देती (Stars incline but they do not compel)

10– ओशो रजनीश द्वारा ज्योतिष का सटीक विश्लेषण

11– ज्योतिष का वैश्वीकरण

12– ज्योतिष के 18 प्रवर्तकों में भारत के अतिरिक्त रोम का निवासी रोमक, एलेक्जेन्ड्रिया का निवासी पोलिश तथा अमेरिका का निवासी मय का नाम उल्लेखनीय है

13– रोमक के योरप का निवासी होना, पोलिश का अलेक्जेन्ड्रिया का निवासी होना तथा मय का अमेरिका निवासी होने का प्रमाण

14– ज्योतिष की प्राचीनता

क– वाल्मीकि रामायण में ज्योतिषीय स्थितियों का विवरण

ख– महाभारत में ज्योतिषीय स्थितियों का विवरण

15– ज्योतिष के आरम्भ काल का निर्णय

16– अति प्राचीन ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त के आधार पर इस ग्रन्थ के टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित ने ज्योतिष का आरम्भ काल 21 लाख वर्ष से कुछ अधिक माना है। इनकी गणना का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आधार अग्रलिखित सिद्धान्त है।

क– सूर्य सिद्धान्त में उल्लिखित काल–गणना का सिद्धान्त

ख– वेद व्यास द्वारा श्रीमद्भागवत महापुराणम में उल्लिखित काल गणना का सिद्धान्त

17– उपरोक्त काल गणना सिद्धान्तों का आधुनिक खगोल वैज्ञानिक जयन्त नारलीकर द्वारा समर्थन

18– गणित द्वारा ज्योतिष के आरम्भ काल को 21 लाख वर्ष से कुछ अधिक प्रमाणित करना।

19– रामेश्वरम तथा श्रीलंका के मध्य स्थित श्री राम के द्वारा निर्मित सेतु से भी काल निर्धारण सम्भव।

20– शोध प्रबन्ध का उद्देश्य ज्योतिष की वैज्ञानिकता को सिद्ध करना नहीं है तथापि उन तथ्यों को उजागर करना आवश्यक है जिनसे यह संकेत प्राप्त होते हैं कि ज्योतिष में कोई बहुत बड़ा विज्ञान है, जिसे आज का वैज्ञानिक अभी खोज नहीं सका है।

21– मेरे शोध प्रबन्ध का उद्देश्य मानसिक रोगों पर ज्योतिषीय प्रभावों के अध्ययन तक ही सीमित है।

22– ज्योतिष तथा चिकित्सा शास्त्र का घनिष्ठ सम्बन्ध।

23– आयुर्वेद के अनुसार एक कुशल चिकित्सक के लिए ज्योतिष का ज्ञान अत्युपयोगी।

24– अति प्राचीन तत्सम्बन्धी ज्योतिषीय सिद्धान्तों का पुनरावलोकन, परीक्षण तथा विज्ञान सेम्मत व्याख्या आज के युग की आवश्यकता।

अध्याय–प्रथम : मानसिक रोग तथा जातक शास्त्र के सिद्धान्त

1. ज्योतिर्विज्ञान और आयुर्वेद
2. शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य
3. रोग के दो अधिष्ठान 1– शरीर, 2– मन
4. प्राचीन भारतीय ज्ञान की सभी मुख्य विधायें भारतीय दर्शनशास्त्र पर ही आधारित
5. मन का निरूपण– योग दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1— योग वासिष्ठ के अनुसार

2— पतञ्जलि के अनुसार

6. पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा मन का विश्लेषण

क— सचेतनावस्था

ख— अवचेतनावस्था

ग— अचेतनावस्था

7. पाश्चात्य मनोविज्ञान तथा मनोरोग

फ्रायड तथा जुंग का मनोविश्लेषण सिद्धान्त

8. महर्षि पतञ्जलि का चित्त तथा फ्रायड के अचेतन मन में समानता— डा0 आर0पी0 सचदेव का शोध

9. आधुनिक शारीरिक मनोचिकित्सा

10. महर्षि इण्टरनशनल युनिवर्सिटी (U.S.A.) के वैज्ञानिकों द्वारा ग्रहों, राशियों, नक्षत्रों तथा मानव मस्तिष्क एवं स्नायु तंत्र के मध्य विद्यमान अन्तर्सम्बन्धों पर शोध।

क— केन्द्रीय स्नायु संस्थान

ख— सुषुम्ना तथा मस्तिष्क

ग— सुषुम्ना— ग्रे—मैटर, व्हाइट मैटर

घ— मस्तिष्क— विभिन्न भाग

ङ— श्रवण तथा दृष्टि आदि का अधिष्ठान

11. अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियां भी मनोभावनाओं को नियंत्रित करती हैं।

थायराइड आदि अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियां

12. शारीरिक रसायन— पित्त (Bile) तथा स्नायविक द्रव्य (Nervous Fluid) आदि।

13. युनिवर्सिटी आफ मैरीलैन्ड (U.S.A.) के वैज्ञानिकों द्वारा शारीरिक रसायन तथा ब्रम्हाण्ड के मध्य विद्यमान अन्तर्सम्बन्धों पर शोध।

14. विभिन्न शारीरिक रसायन— 1—पित्त (Bile), 2—स्नायविक द्रव्य (Nervous Fluid) आदि।

15. आधुनिक चिकित्सा के अनुसार मानसिक रोग के दो भाग

क— आर्गेनिक तथा नानआर्गेनिक

ख— आर्गेनिक तथा नानआर्गेनिक के विभिन्न प्रकार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

16. आयुर्वेद के अनुसार मानसिक रोगों का वर्गीकरण

17. मनोरोग तथा ज्योतिष

18. प्राचीन मिश्र के ज्योतिषाचार्य क्राडियस टालेमी के ग्रन्थ में चिकित्सा ज्योतिष

19. योरोप तथा अमेरिका आदि देशों में चिकित्सा ज्योतिष

20. भारतीय ज्योतिष ग्रन्थ

क– होरा स्कन्ध

ख– सिद्धान्त स्कन्ध

ग– संहिता स्कन्ध

21. होरा तथा संहिता ही जातक शास्त्र है

22. जातक शास्त्र में रोग विचार के उपकरण

23. जातक शास्त्र के सिद्धान्त

क– योग तथा उनके प्रकार

ख– योगों के तीन तत्व– ग्रह, राशि, भाव

24. क– ग्रहों की प्रकृति

ख– शुभ तथा पाप ग्रह

ग– उच्च तथा नीच ग्रह

घ– ग्रहों का मैत्री विचार

ङ– ग्रहों का भाव कारकत्व

च– ग्रहों के विशिष्ट प्रभावों का कारकत्व

छ– ग्रहों तथा राशियों का बाधक होना

ज– ग्रहों के राशियों का स्वामी होगा

झ– ग्रहों की दृष्टि

ट– ग्रहों का बल

ठ– ग्रहों की अवस्था

25. क– राशियों के भेद

ख– राशियों की दृष्टि

ग– राशियों का रोगकारकत्व

26. रोग विचार के परिप्रेक्ष्य में नक्षत्रों की भूमिका

सभी 27 नक्षत्रों में होने वाले रोग

27. रोग विचार के परिप्रेक्ष्य में राशियों की भूमिका

28. रोग विचार के परिप्रेक्ष्य में भावों की भूमिका

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

29. द्रेष्काण के आधार पर अंगों का प्रतिनिधि भाव
31. भाव विचार की सामान्य विधि
32. भावों की कुछ महत्वपूर्ण संज्ञायें
33. भावों, ग्रहों तथा राशियों के पर्याय

अध्याय–द्वितीय जातक शास्त्र में मनोरोग विमर्श

1. आयुर्वेद तथा जातक ग्रन्थों में शारीरिक तथा मानसिक रोगों की परिभाषा।
2. ग्रहों की मानसिक स्थितियां (जातक पारिजात के अनुसार)
3. ग्रहों की मानसिक स्थितियों के नाम तथा इनका विवरण (सारावली के अनुसार)
4. ग्रहों की मानसिक स्थितियां– 1– जागृत, 2– स्वप्न, 3– सुषुप्ति आदि (वृहत् पाराशर होराशास्त्रम् के अनुसार)
5. ग्रहों की लज्जितादि अवस्थायें (वृहत् पाराशर होराशास्त्रम् के अनुसार)
6. ग्रहों की शयन आदि अवस्थायें (वृहत् पाराशर होराशास्त्रम् के अनुसार)
7. ग्रहों को रोग कारक बनाने वाले हेतु

1– त्रिक स्थान– षष्टम्, अष्टम् तथा द्वादश भाव

क– षष्टम् भाव (ग्रहों की स्थिति के अनुसार)

ख– षष्टम् भाव (षष्ठेश की स्थिति के अनुसार)

ग– षष्टम् भाव की समीक्षा

घ– अष्टम् भाव एवं द्वादश भाव

2– लग्न भाव–

क– लग्नस्थ ग्रहों का रोगकारकत्व

ख– जन्म लग्न का फल– जन्म के समय पूर्व क्षितिज में उदित राशि को जन्म लग्न कहते हैं। विभिन्न जन्म लग्नों का फल

ग– लग्नेश का रोगकारकत्व

घ– लग्न भाव की समीक्षा

3– अवरोहीपन

4– क्रूर षष्ठ्यंश में स्थिति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5– पाप ग्रहों से प्रभावित होना

क– पाप ग्रहों के मध्य में स्थित

ख– कर्तरी योग का होना

ग– पापग्रहों से युति तथा पाप ग्रहों की दृष्टि

6– राशि या भाव के स्वामी की अनिष्ट स्थान में स्थिति

7– भाव, राशि एवं उनके स्वामियों की निर्बलता

8– भाव से चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश में या त्रिकोण स्थान में पाप ग्रहों का होना

9– शुभ ग्रहों का प्रभाव न होना

8– रोगों के सम्भावित समय का ज्ञान – विंशोत्तरी दशा

1– दशा द्वारा रोगोत्पत्ति काल का ज्ञान

क– सूर्य की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग

ख– चन्द्रमा की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग

ग– मङ्गल की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग

घ– बुध की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग

ङ– गुरू की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग

च– शुक्र की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग

छ– शनि की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग

ज– राहु की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग

झ– केतु की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग

2– अन्तर्दशा द्वारा रोगोत्पत्ति काल का निर्णय

क– सूर्य की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिका

3– किस ग्रह की प्रत्यन्तर दशा में कौन–कौन से मानसिक रोग होंगे।

4– किस ग्रह की सूक्ष्म दशा में कौन–कौन से मानसिक रोग होंगे।

5– किस ग्रह की प्राण दशा में कौन–कौन से मानसिक रोग होंगे।

6– गोचरीय ग्रह स्थिति द्वारा रोग आरम्भ काल का ज्ञान।

9– विभिन्न जातक ग्रन्थों में उल्लिखित मनोरोगों के योग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1— उन्माद रोग के विभिन्न योग
2— अपस्मार रोग के विभिन्न योग
3— कलहप्रिय होने के योग
4— प्रमाद एवं उसके योग
5— पिशाच–पीड़ा योग
6— जड़ता और उसके योग
7— शाप एवं अभिचार जन्य रोगों के योग
8— बुद्धिहीनता के योग
9— क्रोधी होने के योग
10— कायर होने के योग
11— द्रोहकर्ता होने के योग
12— दुर्व्यसन के योग

अध्याय तृतीय

उन्माद

1— आयुर्वेद के अनुसारः—
(I)— उन्माद रोग का परिचय
(II) उन्माद रोग के प्रकार
क— वातज
ख— पित्तज
ग— कफज
घ— सन्निपातज
ङ— आगन्तुज
3— वातज उन्माद के लक्षण
4— पित्तज उन्माद के लक्षण
5— कफज उन्माद के लक्षण
6— सन्निपातज उन्माद के प्रकार और उनके भिन्न–भिन्न लक्षण
7— भूतोन्माद के प्रकार और उनके भिन्न–भिन्न लक्षण
2— जातक ग्रन्थों के अनुसारः—
1— जातक ग्रन्थों में उल्लिखित उन्माद रोग के प्रकार— 1— वातजन्य, 2—पित्तजन्य, 3— कफजन्य, 4— सन्निपातजन्य, 5— आगन्तुज

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– जातक ग्रन्थों के अनुसार वातजन्य उन्माद के लक्षण

3– पित्तजन्य उन्माद के लक्षण

4– जातक ग्रन्थों के अनुसार कफजन्य उन्माद के लक्षण

5– जातक ग्रन्थों के अनुसार सन्निपातजन्य उन्माद के लक्षण

6– जातक ग्रन्थों के अनुसार आगन्तुज उन्माद के लक्षण

7– जातक ग्रन्थों में भूत–प्रेत, किन्नर, यक्ष, ब्रम्हराक्षस, गन्धर्व आदि से भय एवं पीड़ा।

3– जातकग्रन्थों में उल्लिखित उन्माद रोग के विभिन्न योग

4– अनेक उन्माद रोग से पीड़ित रोगियों से सम्पर्क तथा उनकी जन्म कुण्डलियों की समीक्षा।

अध्याय चतुर्थ — अपस्मार

1– आयुर्वेद के अनुसारः–

1– आयुर्वेद के अनुसार अपस्मार रोग का परिचय

2– रोग के सामान्य लक्षण

3– अपस्मार रोग के भेद– 1– वातज, 2– पित्तज, 3– कफज, सन्निपातज

4– वातज अपस्मार के लक्षण

5– पित्तज अपस्मार के लक्षण

6– कफज अपस्मार के लक्षण

7– सन्निपातज अपस्मार के लक्षण

2– जातक ग्रन्थों के अनुसारः–

1– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित अपस्मार रोग का परिचय

2– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित अपस्मार रोग के लक्षण

3– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित अपस्मार रोग के विभिन्न योग

4– विभिन्न अपस्मार रोगियों से सम्पर्क तथा उनकी जन्मकुण्डलियों की समीक्षा।

अध्याय पंचम — अतत्वाभिनिवेश एवं मनोविक्षिप्ति

1– आयुर्वेद के अनुसारः–

1– आयुर्वेद के अनुसार अतत्वाभिनिवेश रोग का परिचय

2– अतत्वाभिनिवेश रोग के लक्षण

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3– मनोविक्षिप्ति रोग का परिचय

4– मनोविक्षिप्ति रोग के लक्षण

2– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित अतत्वाभिनिवेश एवं मनोविक्षिप्ति रोग के लक्षण तथा उनके योग।

3– अतत्वाभिनिवेश तथा मनोविक्षिप्ति रोग से पीड़ित रोगियों से सम्पर्क तथा उनकी जन्मकुण्डलियों की समीक्षा।

अध्याय षष्टम — विसाद–अवसाद, अव्यवस्थित चित्तता : अन्तराबन्ध **Depression, Schizophrenia**

1– आयुर्वेद के अनुसारः–

1– आयुर्वेद के अनुसार–विसाद अवसाद रोग का परिचय

2– विसाद–अवसाद रोग के लक्षण

3– अव्यवस्थित चित्तता : अन्तराबन्ध रोग का परिचय

4– अव्यवस्थित चित्तता : अन्तराबन्ध रोग के लक्षण

2– जातक ग्रन्थों के अनुसार–

1– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित विषाद–अवसाद एवं अव्यवस्थित चित्तता रोग के लक्षण।

3– क– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित विषाद अवसाद रोग के योग।

ख– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित अव्यवस्थित चित्तता रोग के योग।

4– विषाद–अवसाद तथा अव्यवस्थित चित्तता रोगों से पीड़ित रोगियों से सम्पर्क तथा उनकी जन्म कुण्डलियों की समीक्षा।

अध्याय सप्तम — भ्रम, विभ्रम या अवस्तुबोधन, संविभ्रम : स्थिर व्यामोह, मिथ्या विश्वास संघर्ष

1– आयुर्वेद के अनुसारः–

1– आयुर्वेद के अनुसार भ्रम रोग का परिचय

2– भ्रम रोग के लक्षण

3– विभ्रम या अवस्तुबोधन रोग का परिचय

4– विभ्रम या अवस्तुबोधन रोग के लक्षण

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5– संविभ्रम : स्थिर व्यामोह रोग का परिचय

6– उपरोक्त रोगों के लक्षण

7– व्यामोह– मिथ्या विश्वास संघर्ष रोग का परिचय

8– उपरोक्त रोगों के लक्षण

2– जातक ग्रन्थों के अनुसार–

1– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित उपरोक्त रोगों के लक्षण

3– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित उपरोक्त रोगों के योग।

4– उपरोक्त रोगों से पीड़ित रोगियों से सम्पर्क तथा उनकी जन्म कुण्डलियों की समीक्षा।

अध्याय अष्टम — मनोनाड़ी दौर्बल्य– मनःश्रान्ति, मनोग्रन्थि (हठ और बाध्यता युक्त मानसिक रोग)

1– आयुर्वेद के अनुसारः–

1– आयुर्वेद के अनुसार मनोनाड़ी दौर्बल्य : मनःश्रान्ति रोग का परिचय

2– उपर्युक्त रोगों के लक्षण

3– मनोग्रन्थि रोग का परिचय

4– उपर्युक्त रोग के लक्षण

2– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित उपर्युक्त रोगों के लक्षण

3– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित उपर्युक्त रोगों के योग।

4– उपर्युक्त रोगों से पीड़ित रोगियों से सम्पर्क तथा उनकी जन्म कुण्डलियों की समीक्षा।

अध्याय–नवम् — वृद्धावस्थाजन्य मनोविकार

1– आयुर्वेद के अनुसार–

1– रोग परिचय

2– रोग लक्षण

2– जातक ग्रन्थों के अनुसार

1– दीर्घायु योग

2– मार्केश निर्णय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3– वृद्धावस्था जन्य मानसिक रोगियों से सम्पर्क तथा उनकी जन्मकुण्डलियों की समीक्षा।

अध्याय दशम् **आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में ज्योतिर्विज्ञान के सिद्धान्तों की समीक्षा**

1– ज्योतिष एक अद्भुत विज्ञान।

2– सन् 1976 में 186 वैज्ञानिकों द्वारा ज्योतिष का विरोध।

3– विरोध तो सापेक्षवाद के सिद्धान्त के जनक अल्बर्ट आइन्सटीन का भी हुआ था। (स्टीफन हाकिन्स के अनुसार)

अतएव विरोध से महत्व नहीं घटता।

4– फ्रिटजाफ कैपरा के अनुसार विज्ञान की अवधारणा में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ रहा है।

5– ज्योतिष का उद्भव ब्रम्हाण्ड विज्ञान से हुआ, जो अति प्राचीन काल में अपने उन्नत शिखर पर था।

अतएव ज्योतिष की वैज्ञानिकता के परीक्षण के लिए अति प्राचीन ब्रम्हाण्ड विज्ञान तथा आधुनिक ब्रम्हाण्ड विज्ञान की तुलना आवश्यक है।

6– आधुनिक ब्रम्हाण्डिकीय (Cosmology) के क्षेत्र में अद्भुत अनुसंधान– प्रमुख वैज्ञानिक लाइन्डे एन्ड्रेई तथा ब्रायन ग्रीन।

7– अनेक वैज्ञानिक विज्ञान और अध्यात्म में समन्वय स्थापित करने में संलग्न है। जैसे– फ्रिटजाफ कैपरा तथा लाइन्डे एन्ड्रेई आदि।

8– योग वासिष्ठ तथा अनेक अन्य भारतीय ग्रन्थों में ब्रम्हाण्ड से सम्बन्धित अद्भुत वैज्ञानिक सिद्धान्तों का उल्लेख।

9– आधुनिक विज्ञान तथा योग वासिष्ठ में उल्लिखित 1– ब्रम्हाण्ड के मूल कण, 2–अन्तरिक्ष, 3– सृष्टि रचना, 4– सृष्टि के रचयिता आदि के सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन।

क– ब्रम्हाण्ड का मूल कणः–

(1) आधुनिक विज्ञान के अनुसार ब्रम्हाण्ड का मूल कण।

(2) योग वासिष्ठ के अनुसार ब्रम्हाण्ड का मूल कण।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ख– अन्तरिक्षः–

(1) आधुनिक विज्ञान के अनुसार अन्तरिक्ष।

(2) योग वाष्ठि के अनुसार अन्तरिक्ष।

ग– सृष्टि रचनाः–

(1) आधुनिक विज्ञान के अनुसार सृष्टि रचना।

(2) योग वासिष्ठ के अनुसार सृष्टि रचना।

घ– सृष्टि के रचयिताः–

(1) आधुनिक विज्ञान के अनुसार सृष्टि के रचयिता।

(2) प्राचीन भारतीय ग्रन्थों के अनुसार सृष्टि के रचयिता।

क– विश्वामित्र द्वारा अपने तपोबल तथा अपने ज्ञान विज्ञान से एक नवीन सृष्टि की रचना का अद्भुत उदाहरण।

ख– ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रचना।

10– प्राचीन भारत का उच्च विज्ञान जिससे ज्योतिष विज्ञान विकसित हुआ था, वह अब विस्मृत हो चुका है।

11– प्राचीन यूनानी विद्वान प्लेटो तथा आधुनिक विचारक ओशो रजनीश का कथन।

12– भारत में अति प्राचीन काल में विकसित विज्ञान के सम्बन्ध में विश्वविख्यात अन्वेषक एवं विद्वान एरिक वॉन डेनिकन का कथन।

13– उच्च विज्ञान के विनष्ट होने का सम्भावित कारण–

प्राकृतिक आपदायें– जिनका उल्लेख महाभारत में है।

14– प्राचीन विज्ञान विस्मृत हो चुके हैं। अतएव ज्योतिष के वैज्ञानिक आधारशिलाओं की पुनः खोज आवश्यक।

15– ज्योतिष की आधारशिलाओं से सम्बन्धित निम्नलिखित सिद्धान्त उल्लेखनीय है–

(1) यथा पिण्डे तथा ब्रम्हाण्डे का सिद्धान्त।

(2) पाइथागोरस द्वारा प्रतिपादित ब्रम्हाण्डीय लयबद्धता का सिद्धान्त।

(3) महर्षि इण्टरनेशनल युनिवर्सिटी द्वारा इस सम्बन्ध में किया हुआ अनुसंधान।

(4) आकाशीय पिण्डों में आकर्षण शक्ति।

(5) लोबसांग राम्पा का कथन।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(6) स्वामी विशुद्धानन्द द्वारा प्रतिपादित सूर्य सिद्धान्त।

(7) ओशो रजनीश द्वारा विज्ञान सम्मत विश्लेषण।

(8) जातक ग्रन्थों में उल्लिखित प्रेत–बाधा, शाप तथा अभिचार जन्य रोगों के सम्बन्ध में विवेचन।

अध्याय एकादश

उपसंहार

1– शोध प्रक्रिया का निष्कर्ष

2– शोध प्रक्रिया के क्रम में पूछे जाने वाले कुछ सामान्य प्रश्न यथा– यदि हमारा जीवन आकाशीय पिण्डों के प्रभाव से ही संचालित होता है तो हमारा मानव जीवन यंत्रवत हो गया, फिर हमारे कर्मों का क्या महत्व रह जाता है?

3– उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर–

ज्योतिष शास्त्र के 18 प्रवर्तक– इनमें महर्षि वेद व्यास तथा महर्षि वसिष्ठ का तत्सम्बन्धी विचार महत्वपूर्ण है।

4– महर्षि वेद व्यास द्वारा कर्म और भाग्य के सिद्धान्तों का विवेचन

5– महर्षि वसिष्ठ द्वारा कर्म और भाग्य के सिद्धान्तों का विवेचन

6– कर्म फल और ग्रह फल की समीक्षा

1– प्रश्न– यदि किसी ने जीवन भर दुष्कर्म किया हो किन्तु यदि उसका जन्म शुभ ग्रह नक्षत्रों में हो गया तो क्या उसका अगला जीवन सुखमय हो जायेगा?

2– उत्तर– जिस प्रकार के हमारे पूर्व काल में किये हुए कर्म होते हैं, उसी प्रकार के प्रभाव वाले ग्रह नक्षत्रों में हमारा जन्म होता है। अर्थात सूक्ष्म शरीर भी ग्रह नक्षत्रों से प्रभावित होता है।

7– वेद व्यास द्वारा किये गये तत्सम्बन्धी उल्लेख (भीष्म का प्राण त्याग के लिए उत्तरायण तक प्रतीक्षा) से यह सिद्धान्त स्पष्ट होता है।

8– आकस्मिक तथा संयोगवश घटने वाली घटनाओं के ज्योतिषीय कारणों का विवेचन।

9– आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में ज्योतिष का उपयोग।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संकेत विवरण

1. 5/8 – आदि अंकों का तात्पर्य है कि अध्याय पांच का आठवां श्लोक

2. 5/19/1 – आदि अंकों का तात्पर्य है कि पांचवे अध्याय के 19वें सूत्र की पहली पंक्ति

3. ——— – प्रत्येक पृष्ठ पर नीचे सन्दर्भ में जो ग्रन्थों के नाम दिये गये हैं, उनके प्रकाशक का नाम तथा प्रकाशन वर्ष आदि का उल्लेख "संदर्भ ग्रन्थों की सूची" (Bibliography) में किया गया है। पुनरूक्ति दोष के भय से इनका उल्लेख अलग–अलग पृष्ठों पर नहीं किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट सूची

1. परिशिष्ट–1 – समाचार पत्र से उद्धृत, जो ज्योतिष की लोकप्रियता का द्योतक है।

2. परिशिष्ट–2 – गैरी लैकमैन (Gray Lachman) का लेख जो "द गार्जियन (The Guardian) लंदन में प्रकाशित हुआ था।

3. परिशिष्ट–3 – नासा (Nasa) द्वारा प्रकाशित राम सेतु का चित्र तथा तत्सम्बन्धी टिप्पणी, जो ज्योतिष की भी प्राचीनता का द्योतक है।

4. परिशिष्ट–4 – चित्र में ग्रहों, राशियों तथा नक्षत्रों का मानव मस्तिष्क एवं स्नायु तंत्र के मध्य विद्यमान अंतर्सम्बन्धों को दिखलाया गया है।

5. परिशिष्ट–4ए – चित्र में मानव मस्तिष्क के विभिन्न भागों के नाम का हिन्दी रूपान्तरण दिखलाया गया है।

6. परिशिष्ट–5 – युनिवर्सिटी आफ मैरीलैण्ड के वैज्ञानिकों द्वारा शारीरिक रसायन तथा ब्रम्हाण्ड के मध्य विद्यमान अंतर्सम्बन्धों पर शोध।

7. परिशिष्ट–6 – चित्र में ग्रहों, राशियों तथा नक्षत्रों का शरीर के विभिन्न अंगों से सम्बन्ध।

8. परिशिष्ट–7 – आधुनिक विज्ञान का क्वान्टम का सिद्धान्त तथा योग दर्शन में उल्लिखित चिति तत्व में समानता प्रदर्शित।

9. परिशिष्ट–8 – प्राचीन सरस्वती नदी का सेटेलाईट से लिया गया चित्र (महाभारत में उन ज्योतिषीय स्थितियों का उल्लेख है जिससे अनेक बड़ी नदियाँ लुप्त हो गयी थीं)।

10. परिशिष्ट–9 – चित्र में ग्रहों तथा नक्षत्रों का मानव मस्तिष्क से अंतर्सम्बन्ध दिखलाया गया है।

11. परिशिष्ट–10 – चित्र में ग्रहों का मस्तिष्क के विभिन्न भागों से अंतर्सम्बन्ध दिखलाया गया है।

12. परिशिष्ट–11 – नक्षत्रों का मस्तिष्क के विभिन्न भागों से अंतर्सम्बन्ध दिखलाया गया है।

13. परिशिष्ट–12 – चित्र में 12 राशियों का मस्तिष्क के विभिन्न भागों से अंतर्सम्बन्ध दिखलाया गया है।

14. परिशिष्ट–13 – लोब सांग राम्पा द्वारा प्रकाशित चित्र– मानव शरीर के चारो ओर इथरिक का आवरण।

15. परिशिष्ट–14 – लोब सांग राम्पा द्वारा प्रकाशित चित्र– मानव शरीर के चारो ओर प्रभामण्डल (Aura) का आवरण।

16. परिशिष्ट–15 – लोब सांग राम्पा द्वारा प्रकाशित चित्र– मानव शरीर के चारो ओर प्रभामण्डल का अण्डाकार आवरण।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुरोवाक्

ज्यौतिर्विज्ञान एक गूढ़ विज्ञान है। इस पर शोध करने की कल्पना मात्र से ही सूरज को दीपक दिखाने जैसी अनुभूति होने लगती है, क्योंकि जो 18 महर्षिगण इस विज्ञान के प्रवर्तक माने गये हैं, वे सभी तपोबल से सम्पन्न तथा दिव्य दृष्टि से युक्त थे, जो जड़ जगत तथा चैतन्य जगत, दोनों के सम्यक् ज्ञाता थे, इसीलिए इस गहन विज्ञान को समझ सकने में समर्थ थे। वस्तुतः ज्योतिर्विज्ञान कोई सामान्य विज्ञान नहीं, अपितुक अति विशिष्ट विज्ञान है। इस विज्ञान के सम्बन्ध में सूर्य सिद्धान्त नामक प्राचीन ग्रन्थ में उल्लिखित विवरण द्रष्टव्य है, जो निम्नलिखित है:–

"ग्रह नक्षत्रों से सम्बन्धित यह ज्ञान सम्पूर्ण शास्त्रों में उत्कृष्ट तथा दिव्य है। इसे जानकर व्यक्ति सूर्य लोक में अथवा ब्रम्ह लोक में शाश्वत स्थान पाता है।[1] पुनः कहा गया है कि–

"यह ज्योतिर्विज्ञान भूलोक का अत्यन्त अद्भुत तथा रहस्यमय एवं ब्रम्हतुल्य ज्ञान है।"[2]

ऐसे ज्ञान को आज वैज्ञानिक ढंग से समझ पाना कठिन प्रतीत हो रहा है, जिसका प्रथम कारण तो यह है कि वैज्ञानिक क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों को प्राचीन वैदिक शास्त्रों का ज्ञान नहीं है और वैदिक विद्वानों का सामान्यतः आधुनिक विज्ञान का ज्ञान नहीं के बराबर है।

द्वितीय कारण यह है कि आज का मानव अभी जड़ संसार की खोज से ऊपर

1– दिव्यं चाक्षं ग्रहाणां च दर्शितं ज्ञानमुत्तमम्।।
विज्ञायार्कादिलोकेषु स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम्।।24।।

सूर्य सिद्धान्त– टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित, अध्याय–14, श्लोक–24, पृष्ठ–478 प्रकाशक– चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान– 38 यू0ए0, बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007

2– स तेभ्यः प्रददौ प्रीतो ग्रहाणां चरितं महत्।।
अत्यद्भुततमं लोके रहस्यं बम्हसम्मितम्।।28।।

तत्रैव अध्याय–14, श्लोक–28, पृष्ठ–483

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं उठ सका है। वस्तुतः ज्योतिर्विज्ञान इस धरती का अति श्रेष्ठ तथा विशिष्ट विज्ञान है जो जड़ तथा चैतन्य, दोनों में तारतम्य स्थापित करता है।

कदाचित् इसी कारण वराहमिहिर जैसे उद्भट् विद्वान भी ज्योतिष शास्त्र को महासमुद्र तथा अपने स्वरचित ग्रन्थ को एक छोटी नौका से तुलना करते हुए कहते हैं कि–

"होराशास्त्र रूपी बहुत विशाल समुद्र के पार जाने के लिए एक शास्त्र रूपी नौका बनाना प्रारम्भ कर रहा हूँ"।[3]

प्राचीन शास्त्रों को आधुनिक तथा युगानुकूल विचारों के द्वारा ही बोधगम्य बनाया जा सकता है, अतएव ज्योतिष शास्त्र के लिए आज के विज्ञान सम्मत व्याख्या की आवश्यकता है। किसी भी ज्ञान को यदि परिवर्तित युग अनुसार युगानुकूल न बनाया जाय तो वह ज्ञान प्रगति की दौड़ में पिछड़ जाता है और धीरे–धीरे उपेक्षित होकर लुप्त होने लगता है।

इसीलिए ब्रिटेन के प्रसिद्ध ज्योतिषी रिचर्ड नोले ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक क्रिटिकल एस्ट्रोलोजी : इनवेस्टीगेटिंग द कास्मिक कनेक्शन (Critical Astrology : Investigating the cosmic connection) में ज्योतिष पर आज के नवीन परिप्रेक्ष्य में पुनः शोध की आवश्यकता पर बल दिया है। उन्होंने ज्योतिष पर शोध के लिए निम्नलिखित विधि तथा प्रक्रिया को अपनाने का सुझाव दिया है।[4]

3– होरातन्त्रमहार्णवप्रतरणे भग्नोद्यमानामहं,
स्वल्पं वृत्तविचित्रमर्थबहुलं शास्त्रप्लवं प्रारम्भे।।2।। वृहज्जातकम (आचार्य वराहमिहिर विरचित) व्याख्याकार– डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र, पृष्ठ–20) प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन, 16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली संस्करण 2005

4– Contents: The need for critical astrology. Is astrology ready for its own future? Three steps to research; the need for historical research in astrology; Adapting statistical methods to astrology; Basic statistical astrology techniques; Problems and perspectives in astrological research; Science or psience?
www.book.Critical Astrology: Investigating the Cosmic Connection- Richard Nolle (Obtained through Internet).

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– ज्योतिष के प्राचीन इतिहास की खोज।

2– ज्योतिषीय सिद्धान्तों के परीक्षण के लिए सांख्यिकीय विधि अपनाना।

3– ज्योतिष से सम्बन्धित समस्याओं तथा सम्भावनाओं का उल्लेख तथा इसके विज्ञान सम्मत होने की खोज।

प्रसिद्ध जर्मन मनोवैज्ञानिक सी0जी0 जुंग भी ज्योतिष शास्त्र में अभिरूचि रखते थे। उन्होंने भी ज्योतिष पर शोध किया था। उनके शोध का विषय था "विवाहित दम्पत्तियों के जीवन पर ज्योतिषीय स्थितियों का प्रभाव"। शोध निबन्ध का शीर्षक था "ज्योतिष का प्रायोगिक परीक्षण (An Astrological Experiment)" अपने इस शोध का विवरण उन्होंने अपनी सिन्क्रोनीसिटी : एन एकाजल कनेक्टिंग प्रिंसिपुल (Syncronicity : An Acausal connecting principle)" नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया है। अपने शोध की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा है कि–

"परीक्षण के उद्देश्य से विभिन्न विवाहित दम्पत्तियों की जन्म कुण्डलियां ज्यूरिच, लंदन, रोम तथा वियना आदि स्थानों से इकट्ठी की गयी। सभी ने स्वेच्छा से अपनी जन्म कुण्डलियां भेजी थीं। कुल 180 दम्पत्तियों की कुण्डलियां (360 जन्म कुण्डलियां) एकत्रित हुई।"[5]

इन कुण्डलियों का परीक्षण किया गया तथा निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि "यद्यपि यह कोई नहीं जानता कि जन्मपत्रियों के जीवन पर प्रभाव का विज्ञान सम्मत

5– The material to be examined, namely a quantity of marriage horoscopes, was obtained from friendly donors in Zurich, London, Rome, and Veinna. Originally the material had been put together for purely astrological purposes.
C.G. Jung- Synchronicity : An acausal Connecting Principle, Chapter (An Astrological Experiment) Page 60. Publisher- Routledge & Kegan Paul Ltd. 39- Store Street, London Edition 1981.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आधार क्या है, किन्तु यह विचारणीय तथ्य है कि ग्रह नक्षत्रों की स्थिति तथा मनोदैहिक अवस्थाओं में कार्य–कारण का सम्बन्ध विद्यमान है।[6]

मुझे ब्रिटिश ज्योतिषी रिचर्ड नोले द्वारा लिखित पुस्तक में दिये गये उपर्युक्त सुझाव तथा प्रसिद्ध जर्मन मनोवैज्ञानिक सी0जी0 जुंग द्वारा अपनायी गयी प्रक्रियायें किसी भी ज्योतिष से सम्बन्धित शोध के लिए सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत हुई।

अतएव इन्हीं आधारों पर मैंनें मानसिक रोगों के ज्योतिषीय कारणों की प्रायोगिक समीक्षा पर शोध हेतु प्रारूप तैयार किया।

विषय की नवीनता को देखते हुए परम पूज्य विभागाध्यक्ष श्री बृजेश शुक्ल जी ने तथा विश्वविद्यालय की तदर्थ नियुक्त समिति के माननीय गुरूजनों ने स्वीकृति प्रदान की जिससे मुझे अतीव प्रसन्नता हुई।

अपनी शोध प्रक्रिया के क्रम में मुझे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि प्रायः मानसिक रोगियों की जन्म कुण्डलियां उनके घर वाले देना नहीं चाहते, विशेषतः यदि वह रोगी अविवाहित महिला हो तब तो बिल्कुल ही नहीं देते। कदाचित उनके मन में यह भय रहता है कि यदि इस रोग के विषय में अन्य लोग जान जायेंगे तो विवाह में अड़चनें आ सकती हैं। जिन लोगों ने जन्म कुण्डलियां दी भी तो उन्होंने अपना नाम तथा पता पूरी तरह गोपनीय रखने का आश्वासन लिया। जन्म कुण्डलियां को प्राप्त करने के लिए मैने किंग जार्ज मेडिकल कालेज, लखनऊ के मानसिक चिकित्सा विभाग में तथा नूर मंजिल

6- Although nobody knows what the validity of a nativity horoscope rests on, it is just conceivable that there is a causal connection between the planetary aspects and the psycho-physiological disposition.
तत्रैव पृष्ठ-62

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लखनऊ में स्थित मानसिक चिकित्सालय में अनेक बार जाकर विभिन्न प्रकार के मानसिक रोगियों के अभिभावकों से सम्पर्क कर रोगियों की जन्म कुण्डलियां प्राप्त की है। इन जन्म कुण्डलियां में जो महिलाओं की जन्म कुण्डलियां हैं, उनके नाम तथा पता को मैने परिवर्तित कर दिया है।

दूसरी कठिनाई जातक ग्रन्थों से सम्बन्धित है। जातक ग्रन्थों में अनेक श्लोक ऐसे हैं जो दो या दो से अधिक ग्रन्थों में उसी रूप में मिलते हैं। इसका कारण यह है कि विभिन्न जातक ग्रन्थों के श्लोक भी अति प्राचीन ग्रन्थों से ही संकलित किये गये हैं। प्राचीन ग्रन्थकारों की यह विशेषता थी कि वे लोग अपना नाम विख्यात करना इतना आवश्यक नहीं समझते थे जितना कि अपने ग्रन्थ और तद्गत सिद्धान्तों का प्रसार।

डा0 भीखन लाल आत्रेय ने अति प्राचीन विद्वानों की इस प्रवृत्ति को उच्च कोटि का आत्म त्याग माना है किन्तु उनका यह भी कहना है कि उनकी इस प्रवृत्ति के कारण अनेक प्राचीन ग्रन्थों के मूल लेखकों के सम्बन्ध में विवाद उत्पन्न हो जाते हैं तथा उनका काल भी निर्धारण नहीं हो पाता।[7]

सन्दर्भ श्लोकों के सम्बन्ध में भ्रम की स्थिति दूर करने के लिए मैनें जिन जातक ग्रन्थों से श्लोकों को उद्धृत किया है, उस ग्रन्थ का नाम, और पृष्ठ संख्या तथा श्लोक संख्या उसी सम्बन्धित पृष्ठ पर दिया है किन्तु ग्रन्थ के प्रकाशक का नाम तथा प्रकाशन वर्ष आदि सम्पूर्ण सूचनायें पृथक रूप से अंतिम पृष्ठों पर "संदर्भ पुस्तक सूची" में दे दिया गया है।

7- डा0 भीखन लाल आत्रेय- योग वासिष्ठ और उसके सिद्धान्त, पृष्ठ-11
प्रकाशक- श्रीकृष्ण जन्म सेवा संस्थान, मथुरा- संस्करण-2003

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोध निबन्ध के विभिन्न अध्यायों का नियोजन निम्नलिखित क्रम के अनुसार किया गया है।

विषय प्रवेशः–

शोध प्रबन्ध के विषय प्रवेश में ज्योतिर्विज्ञान के परिचय पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया गया है कि ज्योतिष केवल भारत ही नहीं अपितु संसार के लगभग सभी प्राचीन संस्कृतियों में विद्यमान है तथा आज भी संसार के अधिकांश जन इस पर विश्वास करते हैं, जिनमें संसार के अनेक अति प्रसिद्ध व्यक्ति भी सम्मिलित हैं। ब्रिटिश ज्योतिषी पीटर मार्शल तथा भारतीय विद्वान ओशो रजनीश के द्वारा ज्योतिष के पक्ष में प्रस्तुत की गयी तर्कपूर्ण व्याख्या का भी उल्लेख किया गया है।

ज्योतिष की प्राचीनता का उल्लेख करते यह बतलाया गया है कि ज्योतिषीय तथ्यों तथा स्थितियों का उल्लेख वेदों, वाल्मीकीय रामायण तथा महर्षि वेद व्यास द्वारा रचित महाभारत आदि अति प्राचीन ग्रन्थों में विद्यमान है। यह भी बतलाया गया है कि सूर्य सिद्धान्त के टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित ने ज्योतिष का आरम्भ लगभग 21 लाख वर्ष पूर्व का माना है। यह गणना उन्होंने सूर्य सिद्धान्त में उल्लिखित काल गणना के सिद्धान्त के आधार पर की है। काल गणना के इस अति प्राचीन सिद्धान्त को प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक जयन्त नारलीकर ने आधुनिक वैज्ञानिक काल गणना के सिद्धान्तों के आधार पर अद्भुत रूप से सत्य माना है।

इस काल गणना की प्रमाणिकता में नासा द्वारा प्रकाशित रामेश्वरम् तथा श्रीलंका के मध्य समुद्र में डूबे हुए एक मानव निर्मित सेतु का भी उल्लेख किया गया है जिसकी कालावधि नासा ने अपने वैज्ञानिक अन्वेषणों से 1760000 वर्ष पूर्व का निर्धारित किया है।

इस प्रकार विभिन्न प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सूर्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिद्धान्त के टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित का यह कथन कि ज्योतिष लगभग 2160000 वर्ष पूर्व का विज्ञान है, लगभग सत्य प्रतीत होता है।

ज्योतिषीय स्थितियों तथा मानसिक रोगों में अन्तर्निहित सम्बन्धों का भी उल्लेख करते हुए यह बतलाया गया है कि आयुर्वेद में अति प्राचीन काल से ही चिकित्सा में ज्योतिष का उपयोग किया जाता था। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में भी ज्योतिष के उपयोग पर आज अनेक ग्रन्थ यूरोप तथा अमेरिका आदि देशों में प्रकाशित हो चुके हैं।

मानव मस्तिष्क शरीर का सर्वाधिक संवेदनशील भाग है। यह सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को भी ग्रहण करता है, अतएव आज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में तत्सम्बन्धी अति प्राचीन ज्योतिषीय सिद्धान्तों का पुनरावलोकन, परीक्षण तथा विज्ञान सम्मत व्याख्या आज के युग की महती आवश्यकता है।

प्रथम अध्यायः– प्रथम अध्याय में मन तथा मनोरोग एवं ज्योतिषीय स्थितियों से सम्बन्धित मूलभूत तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

समस्त प्राचीन भारतीय ज्ञान–विज्ञान दर्शन शास्त्र पर आधारित है। एतएव मन पर विचार प्रक्रिया का आरम्भ भी दार्शनिक सिद्धान्तों की पृष्ठभूमि से शुरू करते हुए योग दर्शन के परिप्रेक्ष्य में मन का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तत्पश्चात फ्रायड तथा जुंग आदि मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्तों की भी चर्चा की गयी है।

इसके पश्चात आधुनिक मनोचिकित्सा के नवीनतम अनुसंधानों के अनुसार केन्द्रीय स्नायु संस्थान, मस्तिष्क और सुषुम्ना में स्थित ग्रे मैटर तथा व्हाइट मैटर एवं मस्तिष्क के विभिन्न भागों में स्थित श्रवण आदि अधिष्ठानों का विवरण दिया गया है। साथ–साथ यह भी बतलाया गया है कि अनेक अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियां तथा पित्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदि शारीरिक रसायन भी मनोभावनाओं को प्रभावित करते हैं।

ज्योतिषीय स्थितियां मनोवृत्तियों को सर्वांगीण प्रभावित करती हैं। इसे स्पष्ट करने के लिए जातक शास्त्र के विभिन्न सिद्धान्तों यथा– ज्योतिषीय योगो के तीन तत्व– ग्रह, राशि तथा भाव की चर्चा करते हुए ग्रहों की प्रकृति, ग्रहों का शुभत्व तथा पापत्व, ग्रहों का उच्च तथा नीच का होना, ग्रहों का मैत्री विचार, ग्रहों का भाव कारकत्व, ग्रहों तथा राशियों का बाधक होना, ग्रहों की दृष्टि, ग्रहों का बल, ग्रहों की अवस्था तथा ग्रहों, राशियों और नक्षत्रों के रोगकारकत्व होने की भी चर्चा की गयी है।

अन्ततः द्रेष्काण के आधार पर अंगों का प्रतिनिधि भाव तथा भाव विचार की सामान्य विधि एवं भावों की कुछ महत्वपूर्ण संज्ञाओं का भी उल्लेख किया गया है।

उपर्युक्त सभी सिद्धान्तों के प्रमाण स्वरूप विभिन्न जातक ग्रन्थों में उल्लिखित तत्सम्बन्धी श्लोकों का भी उल्लेख किया गया है।

<u>द्वितीय अध्यायः–</u>

द्वितीय अध्याय में ज्योतिष के कुछ अन्य सिद्धान्तों, ग्रहीय स्थितियों को रोगकारक बनाने वाले हेतुओं और रोगों के सम्भावित समय का ज्ञान तथा विभिन्न जातक ग्रन्थों में उल्लिखित मानसिक रोगों के विभिन्न योगों का उल्लेख किया गया है।

ग्रहों की दीप्ति, प्रमुदित, स्वस्थ तथा शान्त आदि अनेक मानसिक स्थितियों के अतिरिक्त ग्रहों की जागृति, स्वप्न सुषुप्ति आदि अवस्थायें भी होती हैं। इसी प्रकार लज्जितादि अवस्थायें तथा शयन आदि अवस्थायें भी होती हैं। सभी सिद्धान्तों के प्रमाणस्वरूप जातक ग्रन्थों में उल्लिखित तत्सम्बन्धी श्लोकों का उल्लेख किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रहों को रोगकारक बनाने वाले हेतुओं का विवरण देते हुए त्रिक् स्थान (षष्टम्, अष्टम् तथा द्वादशभाव, लग्न भाव, अवरोहीपन, क्रूर षष्ठ्यंश, पाप ग्रहों से प्रभावित होना, राशि या भाव के स्वामी का अनिष्ट स्थान में स्थिति, भाव, राशि एवं उनके स्वामियों की निर्बलता) आदि अनेक हेतुओं का विवरण दिया गया है।

रोगों के सम्भावित समय के ज्ञान के लिए विंशोत्तरी दशा का विवरण दिया गया है।

अन्त में विभिन्न मानसिक रोगों यथा– उन्माद, अपस्मार, कलहप्रिय होना, प्रमादग्रस्त होना, पिशाच पीड़ा, जड़ता, शाप एवं अभिचार, बुद्धिहीनता, क्रोधी होना, कायर होना, द्रोहकर्ता तथा दुर्व्यसन आदि उत्पन्न करने वाले अनेक योगों को प्रस्तुत किया गया है। सभी योगों के प्रमाण के लिए तत्सम्बन्धी जातक ग्रन्थों के नाम तथा श्लोक आदि का उल्लेख किया गया है।

<u>अध्याय तृतीय से अध्याय नवम् तकः–</u>

अध्याय तृतीय, चतुर्थ पंचम, षष्टम, सप्तम, अष्टम तथा नवम् अध्यायों में क्रमशः 1– उन्माद, 2– अपस्मार, 3– अतत्वाभिनिवेश तथा मनोविक्षिप्ति, 4– विषाद, अवसाद, अव्यवस्थित चित्तताः, अन्तराबन्ध (Depression, Sehizophrenia), 5– भ्रम, विभ्रम या अवस्तुबोधन, संविभ्रम : स्थिर व्यामोह– मिथ्या विश्वास– संघर्ष (Illusion, Hallucination, Paranoia, Delusion), 6– मनोनाड़ी दौर्बल्य– मनःश्रान्ति, मनोग्रन्थि (हठ और बाध्यता युक्त मानसिक रोग) (Neuresthenia, Obsessional Compulsive Neurosis) तथा 7– वृद्धावस्था जन्य मनोविकार (Senile Psychosis) आदि रोगों के लक्षणों का उल्लेख किया गया है।

इन सभी लक्षणों का विवरण आयुर्वेद ग्रन्थों में तो है ही, जातक ग्रन्थों में भी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इनका उल्लेख उपलब्ध है। अंतएव इन सभी अध्यायों में उल्लिखित रोगों के लक्षणों का विवरण आयुर्वेद तथा ज्योतिष, दोनों विधाओं के अनुसार दिया गया है। सभी प्रकार के रोगों के योगों का उल्लेख भी तत्सम्बन्धी अध्यायों में किया गया है।

मैनें प्रत्येक प्रकार के रोगियों से सम्पर्क किया है। इन रोगियों का सर्वेक्षण विज्ञान–सम्मत विधि से ही सम्पन्न किया गया है। सभी रोगियों से उनकी जन्म कुण्डलियां प्राप्त की गयी हैं। सभी जन्म कुण्डलियों की समीक्षा करने के पश्चात यह ज्ञात हुआ है कि सभी रोगियों की जन्म कुण्डलियों में तत्सम्बन्धी रोगों के योग वैसे ही विद्यमान हैं जैसे विभिन्न जातक ग्रन्थों में उल्लिखित है। इन सभी अध्यायों में लगभग 20–20 रोगियों के जन्म कुण्डलियों की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है, किन्तु नवम् अध्याय में वृद्धावस्था जन्य मनोरोगियों की केवल छः जन्मपत्रियां ही प्रस्तुत की गयी हैं, क्योंकि वृद्धजनों को न तो अपनी जन्मतिथि तथा जन्म समय का स्मरण था और न उनके पुत्र–पुत्रियों के पास उनकी जन्म कुण्डलियां उपलब्ध थीं।

अध्याय दशमः–

दशम अध्याय का प्रारम्भ करते हुए यह बतलाया गया है कि आज आधुनिक विज्ञान की अवधारणा में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन आ रहा है। अमेरिकी वैज्ञानिक फ्रिटजॉफ कैपरा ने अपनी अनेक विश्व प्रसिद्ध पुस्तकों में अनेक तथ्यों पर प्रकाश डाला है, जिससे आधुनिक भौतिक विज्ञान प्राचीन भारतीय अध्यात्मिक मान्यता के निकट आता जा रहा है।

ब्रिटिश वैज्ञानिक लाइण्डे एण्ड्रेई ने भी अपनी नवीनतम ब्रम्हाण्ड अनुसंधान से सम्बन्धित लेखों में इन तथ्यों की ओर संकेत किया है। उनके अनुसार ब्रम्हाण्ड के सम्बन्ध में नवीनतम अनुसंधान आधुनिक ब्रम्हाण्ड विज्ञान को प्राचीन अध्यात्मिक मान्यताओं के निकट ला रहे हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन समानताओं को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित आधारभूत तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

1–ब्रम्हाण्ड के मूल कण, 2– अन्तरिक्ष, 3– सृष्टि रचना, 4– सृष्टि के रचयिता।

इन तथ्यों पर आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों तथा प्राचीन ग्रन्थों में उल्लिखित मान्यताओं की समीक्षा की गयी है।

अन्त में ज्योतिष शास्त्र के विज्ञान सम्मत तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए निम्नलिखित सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है।

1– यथा पिण्डे तथा ब्रम्हाण्डे का सिद्धान्त, 2– पाइथागोरस द्वारा प्रतिपादित ब्रम्हाण्डीय लयबद्धता का सिद्धान्त, 3– महर्षि इण्टरनेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा इस सम्बन्ध में किया हुआ अनुसंधान, 4– आकाशीय पिण्डों में आकर्षण शक्ति, 5– लोबसांग राम्पा का कथन, 6– स्वमी विशुद्धानन्द द्वारा प्रतिपादित सूर्य सिद्धान्त, 7– ओशो रजनीश द्वारा विज्ञान सम्मत विश्लेषण, 8– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित प्रेत बाधा, शाप तथा अभिचारजन्य रोगों के सम्बन्ध में विज्ञान सम्मत विवेचन।

अध्याय का समापन करते हुए यह बतलाया गया है कि ज्यों–ज्यों आधुनिक विज्ञान विकसित हो रहा है, त्यों–त्यों प्राचीन भारत के अनेक शास्त्रीय सिद्धान्त और मान्यतायें विज्ञान–सम्मत सिद्ध होती जा रही हैं।

<u>उपसंहारः–</u>

अन्तिम अध्याय "उपसंहार" में सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। साथ–साथ शोध प्रक्रिया के क्रम में अनेक जिज्ञासुओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी दिये गये हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाग्य और कर्म पर भी अनेक प्रश्न पूछे गये हैं, जिनका उत्तर महर्षि वेद व्यास तथा महर्षि वसिष्ठ के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के आधार पर दिया गया है। कर्म फल तथा ग्रह फल की भी समीक्षा की गयी है।

आकस्मिक तथा संयोगवश घटने वाली घटनाओं के ज्योतिषीय कारणों की भी विवेचना की गयी है। अन्त में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में ज्योतिष की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए शोध प्रबन्ध का समापन किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषय-प्रवेश

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषय–प्रवेश

भविष्य जानने की उत्कंठा मानव की आदिम उत्कंठा है। मानव ने अनेक प्रकार से भविष्य को जानने का प्रयास किया है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अनेक विधायें विकसित हुई यथा हस्त रेखा विज्ञान, संख्या विज्ञान, अतीन्द्रिय ज्ञान तथा ग्रह–नक्षत्रों का मनुष्य के ऊपर पड़ने वाले प्रभावों का ज्ञान जिसे ज्योषित अथवा ज्योतिर्विज्ञान कहा जाता है। यह ज्योतिर्विज्ञान ही सर्वाधिक मान्य हुआ है।

ज्योतिर्विज्ञान हमारी पृथ्वी का कदाचित सर्वाधिक प्राचीन विज्ञान है। यदि हम इस धरती पर मनुष्य जाति के अब तक ज्ञात इतिहास की खोजबीन करें तो ऐसा कोई भी समय नहीं मिलता, जिसमें ज्योतिष ज्ञान का प्रमाण न प्राप्त हो।

ज्योतिष संसार के लगभग सभी देशों में किसी न किसी रूप में सर्वाधिक मान्य भी रहा है। अमेरिका जैसे विज्ञानवादी देश में भी बहुत बड़ी संख्या में ज्योतिषी कार्यरत हैं तथा बहुत बड़ी संख्या में लोग उन पर श्रद्धा रखते हैं।

ज्योतिष की लोकप्रियता का अनुमान इन तथ्यों से भी होता है कि केवल भारत में ज्योतिष से सम्बन्धित करीब एक करोड़ बीस लाख रजिस्टर्ड वेबसाइटें हैं, जबकि पूरी दुनिया में पांच करोड़ अट्ठारह लाख वेबसाइटें हैं। हर साइट पर विशेष प्रश्न पूछने के लिए तीन सौ से पन्द्रह सौ रूपये का शुल्क लिया जाता हैं।[1]

इस अद्भुत लोकप्रियता के बावजूद ज्योतिष के कटु आलोचकों की भी कमी नहीं है। आज भौतिक विज्ञान के विकास के कारण प्राचीन मान्यताओं को तिरस्कृत करने की भी प्रवृत्ति प्रबल हो उठी है। वैज्ञानिक ऐसा समझते हैं कि केवल वही सत्य

1– दैनिक समाचार पत्र "हिन्दुस्तान" लखनऊ दिनांक अप्रैल 23, 2006 को प्रकाशित देखिये परिशिष्ट–1

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

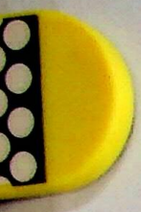

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है जो तर्क की कसौटी पर खरा उतरे तथा आधुनिक विज्ञान के ज्ञात सिद्धान्तों से समर्थित हों। चूंकि ज्योतिष के सिद्धान्त उनके ज्ञात वैज्ञानिक नियमों से मेल नहीं खाते इसलिए अनेक विज्ञानविद् ज्योतिष का विरोध करते दिखाई देते हैं।

सन् 1976 ई0 में संसार के लगभग 186 वैज्ञानिकों ने (जिसमें 19 वैज्ञानिक नोबेल पुरस्कार विजेता थे) एक संयुक्त घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किया था, जिसका शीर्षक था "ज्योतिष से असहमति"। इसमें उन्होंने यह घोषित किया था कि ज्योतिष का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है तथा यह अन्धविश्वास पर आधारित है।[2]

वैज्ञानिकों द्वारा की गयी कटु आलोचनाओं के कारण अनेक ज्योतिर्विद आन्दोलित हो उठे, और उन्होंने अपने तर्कों से ज्योतिर्विज्ञान के पक्ष को दृढ़ता से प्रस्तुत किया। इन ज्योतिर्विदों में पीटर मार्शल की कृतियां उल्लेखनीय हैं। इनकी प्रमुख पुस्तक हैं "वर्ल्ड एस्ट्रोलाजी" (प्रकाशक–पैन मैकमिलन)। इस पुस्तक में मार्शल ने बड़ी दृढ़ता से ज्योतिष का पक्ष प्रस्तुत किया तथा बताया कि सम्पूर्ण संसार का सामान्य मानव ज्योतिष को किसी न किसी रूप में मानता है।[3]

पीटर मार्शल ने अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तियों का भी उल्लेख किया है जो ज्योतिष में विश्वास रखते थे, उनमें प्रमुख हैं:– प्लेटो, सेन्ट टॉमस एक्वीनास, दान्ते, गेटे तथा डब्ल्यू0बी0 इट्स आदि। अनेक आधुनिक राजनेताओं का भी उन्होंने उल्लेख किया है, जिनमें प्रमुख हैं, फ्रांस के भूतपूर्व राष्ट्रपति चार्ल्स डी गाल तथा अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन। इस प्रकार यूरोप तथा अमेरिका में ज्योतिष की मान्यता का उल्लेख करते हुए मार्शल ने अरब के अनेक देशों तथा चीन एवं भारत की भी चर्चा की है।[4]

2– गैरी लैकमैन (Gary Lachman) का लेख जो "द गार्जियन (The Guardian) लंदन में प्रकाशित हुआ था तथा हिन्दुस्तान टाइम्स (Hindustan Times) लखनऊ ने इसे दिनांक फरवरी 01, 2004 को पुनर्प्रकाशित किया था। देखिये परिशिष्ट-2

3– तत्रैव

4– तत्रैव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

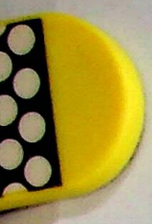

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीटर मार्शल ने 20वीं सदी में ज्योतिष का पुनरोद्धार करने में अमूल्य योगदान किया तथा सम्पूर्ण संसार में ज्योतिष के प्रति लोगों की अभिरूचि बढ़ाने में सहयोग दिया है। प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् एलान लियो ने भी अपने अनेक लेखों द्वारा ज्योतिष का प्रसार किया है। आज सम्पूर्ण संसार में अलान लियो की पुस्तकें बड़ी अभिरूचि के साथ पढ़ी जाती हैं।[5]

यद्यपि यह भी सत्य है कि ज्योतिष के नाम पर अनेक प्रकार की धोखाधड़ी भी कभी–कभी होती रहती है, तथापि ऐसी घटनाओं को ही अधिक महत्व देकर किसी ज्ञान विज्ञान के अस्तित्व को ही नकार देना उचित नहीं। दुरूपयोग तो किसी भी विज्ञान का हो सकता है, अतएव दुरूपयोग करने वालों के कारण कोई विज्ञान अस्तित्वहीन नहीं हो जाता।

ज्योतिष के सम्बन्ध में सन्देह उत्पन्न करने वाले अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं। जिनमें प्रमुख प्रश्न यह है कि एक ही समय में तथा एक ही ग्रह नक्षत्रों की स्थिति में एक बच्चा पैदा नहीं होता बल्कि अनेक बच्चे पैदा होते हैं। उनमें एक प्रेसीडेन्ट बन जाता है तथा दूसरा भिखारी। उनमें से एक सौ वर्ष तक जीता है तथा दूसरा एक साल में ही मर जाता है। इसके अतिरिक्त हिटलर ने जर्मनी में गैस चैम्बर में डालकर लाखों व्यक्तियों को निर्दयतापूर्वक मार डाला, तो क्या सभी मृत व्यक्ति एक ही ग्रह नक्षत्र में पैदा हुए थे? इन प्रश्नों पर विचार कर पीटर मार्शल ने उत्तर दिया है कि ग्रह नक्षत्र मानव मस्तिष्क में केवल प्रवृत्ति उत्पन्न करते हैं, वे बाध्यकारी आदेश नहीं देते। (Star incline but do not compell-Peter Marshal-World Astrology, Pan Macmillan)।[6]

5– तत्रैव

6– तत्रैव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपर्युक्त प्रश्नों पर आधुनिक दार्शनिक ओशो रजनीश का कथन भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा है कि "ज्योतिष में तीन हिस्से हैं। एक जिसे हम अनिवार्य (Essential) कह सकते हैं जिसमें कोई अन्तर नहीं हो सकता। उसे जानने के बाद उसके साथ सहयोग करने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है। वास्तव में इस अनिवार्य तथ्य की खोज के लिए ही ज्योतिष इतना महत्वपूर्ण माना गया। दूसरा है—नान एसेंसियल (Non Essential)। यह बाहर की परिधि है इसमें सब परिवर्तन हो सकते हैं, इसमें कुछ भी जरूरी नहीं है, सब सांयोगिक है। तीसरा है— अर्द्ध अनिवार्य (Semi Essential)। जिसमें जानने से परिवर्तन हो सकते हैं, न जानने से कभी परिवर्तन नहीं होंगे। यदि नहीं जानेंगे तो जो होना होगा, वह होगा। यदि जान लेंगे तो वह विकल्प ढूढ़ सकते हैं, उनमें बदलाहट हो सकती है।"[7]

ओशो ने यह भी कहा है कि "सामान्य जन जिस ज्योतिष की बात समझते हैं वह नान एसेंसियल का ही मामला है। एक आदमी पूछता है कि मेरी लड़की का विवाह कब होगा। कोई ज्योतिषी उसके ग्रह नक्षत्रों की स्थिति जब अनुकूल होती है, वह समय बता देता है। किन्तु यह नान एसेंसियल का मामला है। उस बताये हुए समय में विवाह हो भी सकता है, नहीं भी हो सकता। यह उस व्यक्ति के प्रयत्न पर निर्भर है। वास्तविक तथ्य इतना ही है कि यदि आप प्रयत्न करेंगे तो सफलता मिलने की सम्भावना सर्वाधिक होगी क्योंकि ग्रह नक्षत्रों के अनुकूल होने के कारण प्रसन्नतादायक प्रवृत्ति उत्पन्न होगी।[8]

ज्योतिष का वैश्वीकरणः—

आज धरती पर वैश्वीकरण का युग आ गया है। विश्व व्यापार संगठन की

7— ओशो रजनीश— मैं कहता आखन दखी (प्रवचन— ज्योतिष और अध्यात्म) पृष्ठ 226, संस्करण-2003 ताओ पब्लिशिंग प्राइवेट लि0, 50 कोरेगांव पार्क, पुणे।

8— तत्रैव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थापना के पश्चात न केवल आर्थिक क्षेत्र में बल्कि बौद्धिक ज्ञान के क्षेत्र में भी वैश्वीकरण की प्रक्रिया तीव्र गति से क्रियान्वित हो रही है। इसके लिए बौद्धिक सम्पदा से सम्बन्धित अनेक नियम अथवा कानून बनाये जा चुके हैं। ज्ञान और विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को पेटेन्ट कराने के लिए विभिन्न देशों में तीव्र स्पर्धा की प्रवृत्ति उत्पन्न हो गयी है। इस प्रक्रिया में भारत की अति प्राचीन जड़ी–बूटियों के ज्ञान को भी कुछ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने पेटेन्ट कराया है। किन्तु यह दुःख की बात है कि हम भारतीय लोग अपने अति प्राचीन ज्ञान विज्ञान से अपरिचित हैं अथवा हीन भावना से ग्रसित होने के कारण अपने प्राचीन ज्ञान विज्ञान को उपेक्षात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं।

यह अत्यन्त आश्चर्यजनक तथ्य है कि प्राचीन भारत के ऋषियों ने भी अपने द्वारा विकसित ज्योतिर्विज्ञान का वैश्वीकरण किया था किन्तु उनके वैश्वीकरण का उद्देश्य आर्थिक लाभ अथवा आर्थिक शोषण नहीं था बल्कि बहुजन हिताय बहुजन सुखाय तथा वसुधैव कुटुम्बकम की भावना थी।

भारतीय ज्योतिष के विद्वान श्री सुधाकर द्विवेदी ने वराहमिहिर विरचित पंच सिद्धान्तिका की प्रकाशिका नामक टीका के प्रारम्भ में सूर्य–अरूण सम्वाद का उल्लेख करते हुए अनेक ऐसे श्लोकों को उद्धृत किया है, जिनका तात्पर्य है कि–

"आदि वेदांग रूप ज्ञान पितामह ब्रम्हा को प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने पुत्र वसिष्ठ को दिया। वसिष्ठ ने उस ज्ञान को सूर्य को दिया। उस सिद्धान्त को मैने (सूर्य ने) मय को दिया। यही वसिष्ठ सिद्धान्त है। पौलिश ने निज निर्मित सिद्धान्त को गर्ग आदि मुनियों को बतलाया। मैं सूर्य शाप ग्रस्त होकर यवन जाति में जन्म पाकर रोमक को रोमक सिद्धान्त बतलाया। रोमक ने अपने नगर में उसका प्रचार किया।"[9]

9- नेमिचन्द्र शास्त्री- भारतीय ज्योतिष, पृष्ठ-67, संस्करण-2000, प्रकाशक- भारतीय ज्ञान पीठ, 18, इन्स्टीटयूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110032

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सम्भव है यह रोमक प्राचीन यूनान अथवा आधुनिक रोम के निकटवर्ती क्षेत्र का निवासी रहा हो।

पौलिश के सम्बन्ध में भी श्री नैमिचन्द शास्त्री ने अल्बरूनी के मत का उल्लेख करते हुए कहा है कि "अल्बरूनी का मत है कि अलेक्जेन्ड्रिया वासी पौलिश के यूनानी सिद्धान्तों के आधार पर ही पौलिश सिद्धान्त की स्थापना हुई।[10]

ऐसा प्रतीत होता है कि मय सम्भवतः प्राचीन अमेरिका की माया नामक सभ्यता से सम्बन्धित कोई व्यक्ति था। इस सम्बन्ध में अति प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त में उल्लिखित निम्नांकित तथ्य दृष्टव्य है।

क– सूर्य सिद्धान्त में मय को महादैत्य कहा गया है। दैत्यों के निवास स्थान के सम्बन्ध में कहा गया है कि:– "देव तथा दैत्यों के दिन–रात्रि परस्पर विपरीत होते हैं अर्थात देवों का दिन दैत्यों की रात्रि और देवों की रात्रि दैत्यों का दिन होता है।"[11]

ख– "मेषादि में क्षितिजस्थ सूर्य को देवता लोग उदित होता हुआ और दैत्य लोग अस्त होता हुआ और तुलादि में क्षितिजस्थ सूर्य को देव लोग अस्त होता हुआ और दानव लोग उगता हुआ देखते हैं। इसलिए देव और दैत्यों के दिन–रात्रि परस्पर विपरीत होते हैं।"[12]

10– तत्रैव, पृष्ठ–78, 79

11– अतो दिनक्षपे तेषामन्योन्यं हि विपर्ययात्।।
अहोरात्रप्रमाणं च भानोर्भगणपूरणात्।।50।। सूर्य सिद्धान्त– टीकाकार– पं0 माधव प्रसाद पुरोहित, अध्याय–12, श्लोक–50, पृष्ठ 386, संस्करण–1995, प्रकाशक– चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, 38 यू0ए0 बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007

12– देवासुरा विषुवति क्षितिजस्थं दिवाकरम्।।
पश्चन्त्यन्योन्यमेतेषां वामसव्ये दिनक्षये।।47।। तत्रैव अध्याय–12, श्लोक–47, पृष्ठ–384

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह सर्वविदित भौगोलिक तथ्य है कि जब भारत में दिन होता है तब अमरीका महाद्वीप में रात होती है तथा जब भारत में रात्रि होती है तब अमरीका महाद्वीप में दिन होता है।

इस प्रकार महादैत्य मय अमरीका महाद्वीप का ही निवासी सिद्ध होता है।

अतएव यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि अति प्राचीन काल में विभिन्न महाद्वीपों के विद्वान भारतीय ऋषियों के सम्पर्क में थे।

ज्योतिष शास्त्र की प्राचीनता:-

ज्योतिष शास्त्र का आरम्भ कब हुआ:- यह प्रश्न अत्यन्त विवादास्पद है। विभिन्न विद्वानों ने आरम्भ काल का निर्णय विभिन्न प्रकार से किया है, तथापि यह सर्वमान्य है कि वेदांग ज्योतिष सर्वाधिक प्राचीन है।

वेदांग (अर्थात वेद का अंग) होने के कारण वेदांग ज्योतिष नामक ग्रन्थ पवित्र माना जाता था और इसे स्मरण रखना पुण्य का काम समझा जाता था, कदाचित् इसीलिए यह ग्रन्थ लुप्त नहीं होने पाया।

डा0 गोरख प्रसाद का कथन है कि "इसे ग्रन्थ कहना बहुत उपयुक्त नहीं है, क्योंकि ऋग्वेद ज्योतिष में केवल 36 तथा यजुर्वेद ज्योतिष में केवल 44 श्लोक हैं। अतः इसे पुस्तिका कहना अधिक उचित होगा। यह भी सम्भव है कि ज्योतिष की यह दोनों पुस्तिकायें किसी बड़े ग्रन्थ से संकलित की गयी हों और उस बड़े ग्रन्थ का अब लोप हो गया है।"[13]

13- डा0 गोरख प्रसाद- भारतीय ज्योतिष का इतिहास, पृष्ठ-37, संस्करण-2004, प्रकाशक- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन, हिन्दी भवन, 6, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाल्मीकीय रामायण में ज्योतिषः–

महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में अनेक स्थलों पर ज्योतिष का उल्लेख किया है– यथा– राजा दशरथ ने राम से कहा– "श्री राम! ज्योषियों का कहना है कि मेरे जन्म नक्षत्र को सूर्य, मंगल और राहु नामक भयंकर ग्रहों ने आक्रान्त कर लिया है।"[14]

"ऐसे अशुभ लक्षणों के प्राकट्य होने पर प्रायः राजा घोर आपत्ति में पड़ जाता है और अन्ततोगत्वा उसकी मृत्यु भी हो जाती है।"[15]

"आज चन्द्रमा पुष्य से एक नक्षत्र पहले पुनर्वसु पर विराजमान है। अतः निश्चय ही कल वे पुष्य नक्षत्र पर रहेंगे– ऐसा ज्योतिषी कहते हैं।"[16]

"इसलिए उस पुष्य-नक्षत्र में तुम अपना अभिषेक करा लो। शत्रुओं को सन्ताप देने वाले वीर! मेरा मन इस कार्य में बहुत शीघ्रता करने को कहता है। इसलिए कल मैं अवश्य तुम्हारा राज्याभिषेक करूंगा।"[17]

इस प्रकार वाल्मीकि ने अनेक स्थलों पर ज्योतिषीय स्थितियों का उल्लेख किया है।

14– अवष्टब्धं च मे राम नक्षत्रं दारूणग्रहैः।
आवेदयन्ति दैवज्ञाः सूर्याङारकराहुभिः।।18।। वाल्मीकीय रामायण– अयोध्याकाण्ड– चतुर्थ सर्ग, श्लोक–18, पृष्ठ–189, संस्करण– सम्वत्–2060, गीता प्रेस–गोरखपुर।

15– प्रायेण च निमित्तानामीदृशानां समुद्भवे।
राजा हि मृत्युमाप्नोति घोरां चापदमृच्छति।।19।। तत्रैव श्लोक–19, पृष्ठ 189

16– अद्य चन्द्रोऽभिषिञ्चस्व मनस्त्वरयतीव माम्।
श्वः पुष्ययोगं नियतं वक्ष्यन्ते दैवचिन्तकाः।।21।। तत्रैव श्लोक–21, पृष्ठ 189

17– तत्र पुष्येऽभिषिंचस्व मनस्त्वरयतीव माम्।।
श्वस्त्वाहमभिषेक्ष्यामि यौवराज्ये परंतप।।22।। तत्रैव श्लोक–22, पृष्ठ 189

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महाभारत काल में ज्योतिषः–

महर्षि वेद व्यास ने महाभारत ग्रन्थ में अनेक स्थलों पर ज्योतिषीय स्थितियों का उल्लेख किया है– यथा–

"केतु चित्रा का अतिक्रमण करके स्वाती पर स्थित हो रहा है। उसकी विशेष रूप से कुरूवंश के विनाश पर ही दृष्टि है।"[18]

"अति भयंकर धूमकेतु पुष्य नक्षत्र पर आक्रमण करके वहीं स्थित हो रहा है। यह महान उपग्रह दोनों सेनाओं का घोर अमंगल करेगा।"[19]

"मंगल वक्र होकर मघा नक्षत्र पर स्थित है। बृहस्पति श्रवण नक्षत्र पर विराजमान है तथा सूर्य पुत्र शनि पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर पहुंच कर उसे पीड़ा दे रहा है।"[20]

"शुक्र भाद्रपद पर आरूढ़ होकर प्रकाशित हो रहा हैं और सब ओर घूम फिर कर परिध नामक उपग्रह के साथ उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र पर दृष्टि लगाये हुए है।"[21]

18– श्वेतो ग्रहस्तथ चित्रां समतिक्रम्य तिष्ठति।
अभावं हि विशेषेण कुरूणां तत्र पश्यति।।12।। वेद व्यास– श्रीमदमहाभारतम्– भीष्म पर्व, तृतीय अध्याय, श्लोक–12, पृष्ठ–2548, संस्करण–सम्वत्–2043 गीता प्रेस, गोरखपुर।

19– धूमकेतुर्महाघोरः पुष्यं चाक्रम्य तिष्ठति।
सेनयोरशिवं घोरं करिष्यति महाग्रहः।।13।। तत्रैव श्लोक–13 पृष्ठ–2548

20– मघास्वङारको वक्रः श्रवणे च बृहस्पतिः।
भगं नक्षत्रमाक्रम्य सूर्यपुत्रेण पीडयते।।14।। तत्रैव श्लोक–14 पृष्ठ–2548

21– शुक्रः प्रोष्ठपदे पूर्वे समारूह्य विरोचते।
उत्तरे तु परिक्रम्य सहितः समुदीक्षिते।।15।। तत्रैव श्लोक–15 पृष्ठ–2548

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"चित्रा और स्वाती के बीच में स्थित हुआ क्रूर ग्रह राहु वक्री होकर रोहिणी और चन्द्रमा और सूर्य को पीड़ा पहुंचाता है तथा अत्यन्त प्रज्वलित होकर ध्रुव की बांयी ओर जा रहा है जो घोर अनिष्ट का सूचक है।"[22]

इस प्रकार स्पष्ट दिखायी दे रहा है कि महाभारत काल में ज्योतिष अत्यन्त विकसित अवस्था में था।

महाभारत युद्ध के पश्चात एक अन्धकार युग आया और धीरे–धीरे ज्ञान विज्ञान से सम्बन्धित ग्रन्थ विनष्ट हो गये। इस प्रकार इस विज्ञान के वैज्ञानिक व्याख्या के सूत्रों का विस्मरण हो गया।

प्राचीन शास्त्रों के अनुसार ज्योतिष के 18 प्रवर्तक माने गये हैं। इनके द्वारा प्रवर्तित अष्ठादश सिद्धान्तों में आजकल केवल पांच सिद्धान्त– 1–सूर्य, 2–पैतामह, 3–वसिष्ठ, 4–पराशर, 5–व्यास सिद्धान्त ही प्राप्य हैं। शेष सिद्धान्त समय के प्रभाव से लुप्त हो गये हैं। वराहमिहिर ने छठी शताब्दी में इन पांचों सिद्धान्तों को लेकर "पंच सिद्धान्तिका" नामक ग्रन्थ की रचना की थी।[23]

इन पांचों सिद्धान्तों में भी सूर्य सिद्धान्त ग्रन्थ ही सुव्यवस्थित और शुद्धतर है, और शेष अन्य ग्रन्थ अस्त–व्यस्त हो चुके हैं।[24]

22– ध्रुवं प्रज्वलितो घोरमपसव्यं प्रवर्तते।
रोहिणीं पीडयत्येवमुभौ च शशिभास्करौ।
चित्रास्वात्यन्तरे चैवं विष्ठितः परूषग्रहः।।17।। वेद व्यास श्रीमद्महाभारतम–भीष्मपर्व–तृतीय अध्याय, श्लोक–17 पृष्ठ–2548

23– सूर्य सिद्धान्त– टीकाकार– पं0 माधव प्रसाद पुरोहित (भूमिका– पृष्ठ–7), चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, 38 यू0ए0 बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007

24– तत्रैव पृष्ठ–7

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्योतिष के आरम्भकाल का निर्णयः–

किसी भी ज्ञान विज्ञान के आरम्भ काल का निर्धारण उस ज्ञान विज्ञान से सम्बनिधत ग्रन्थों अथवा प्राचीन प्रस्तरों पर उत्कीर्ण चिन्हों के आधार पर की जा सकती है। भारत में ज्योतिष के आरम्भ काल के निर्धारण के लिए ज्योतिष शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ "सूर्य सिद्धान्त" अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है।

सूर्य सिद्धान्त में उल्लिखित काल गणना के आधार पर इस ग्रन्थ के टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित ने इस सिद्धान्त का रचना काल लगभग 21 लाख वर्ष के आस–पास निर्धारित किया है।[25]

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय ग्रंथालय करौंदी, कटनी (म.प्र.)

उपर्युक्त काल निर्धारण की प्रक्रिया का आधार सूर्य सिद्धान्त में उल्लिखित काल गणना का सिद्धान्त है, जो निम्नलिखित हैः–

"बारह हजार दिव्य वर्षों का एक चतुर्युग अर्थात एक महायुग होता हे। इसी महायुग में तैंतालिस लाख बीस हजार सौरवर्ष होते हैं। एक दिव्य वर्ष (देवताओं का वर्ष) में 360 सौर वर्ष (मनुष्यों का वर्ष) माना गया है। वह जो चतुर्युग का मान कहा गया है, वह संध्या और सध्यांश के सहित है। कृत, त्रेता और द्वापर तथा कलियुग इन चारों युगों की व्यवस्था धर्म पाद के अनुसार है, अर्थात कलियुग में धर्म के एक चरण, द्वापर में दो चरण, त्रेता में तीन चरण और कृत युग में चार चरण होते हैं। इस कारण कलियुग की कालावधि से दुगना द्वापर की कालावधि और तीन गुना त्रेता की कालावधि तथा चार गुना कृत युग (सत्ययुग) की कालावधि होती है।[26]

25– सूर्य सिद्धान्त– टीकाकार– पं0 माधव प्रसाद पुरोहित (भूमिका– पृष्ठ–8), चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, 38 यू0ए0 बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007

26– तद्द्वादशसहस्त्राणि चतुर्युगमुदाहृतम्।।
सूर्याब्दसंख्यया द्वित्रिसागरैरयुताहतैः।।15।।
सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं विज्ञेयं तच्चतुर्युगम्।।
कृतादीनां व्यवस्थेयं धर्मापादव्यवस्था।।16।। तत्रैव अध्याय–1, श्लोक–15, 16, पृष्ठ–12

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गणना को आगे बढ़ाते हुए पुनः यह बतलाया गया है कि–

"इस प्रकार एक हजार महायुगों के तुल्य भूतों का संघार करने वाला एक कल्प होता है। यह एक कल्प ही ब्रम्हा का एक दिन है जो हमारी वर्तमान सृष्टि की कालावधि है।"[27]

सृष्टि की कालावधि की गणना का उपर्युक्त सिद्धान्त, जैसा सूर्य सिद्धान्त में बतलाया गया है ठीक वैसा ही सिद्धान्त महर्षि वेद व्यास (जिनकी गणना स्वयं भी ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तकों में होती है) ने अपने ग्रन्थ श्रीमद्भागवत महापुराणम में दिया है, जो इस प्रकार है:–

"सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलि– ये चार युग अपनी संध्या और संध्याशों के सहित देवताओं के बारह सहस्त्र वर्ष तक रहते हैं, ऐसा बतलाया गया है।[28] इन सत्यादि चारो युगों में क्रमशः चार, तीन, दो और एक सहस्त्र दिव्य वर्ष होते हैं और प्रत्येक में जिसमें सहस्त्र वर्ष होते हैं, उससे दुगने सौ वर्ष उनकी संध्या और संध्याशों में होते हैं।"[29]

"यहां की एक सहस्त्र चतुर्युगी का एक दिन होता है और इतनी ही बड़ी रात्रि होती है, जिसमें जगतकर्ता ब्रम्हा जी शयन करते हैं।[30] रात्रि का अन्त होने पर इस

27– इत्थं युगसहस्त्रेण भूतसंहारकारकः।।
कल्पो ब्राम्हमहं प्रोक्तंशर्वरी तस्य तावती।।20।। सूर्य सिद्धान्त– टीकाकार– पं0 माधव प्रसाद पुरोहित अध्याय–1 श्लोक–20 पृष्ठ–16

28– कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति चतुर्युगम्।
दिव्यैर्द्वादिशभिर्वर्षैः सावधानं निरूपितम्।।18।। वेद व्यास– श्रीमदभागवत महापुराणम् प्रथम खण्ड, तृतीय स्कन्ध, अध्याय–11, श्लोक–18, पृष्ठ 247, संस्करण सम्वत्–2043, गीता प्रेस गोरखपुर।

29– चत्वारि त्रीणि द्वे चैकं कृतादिषु यथाक्रमम्।
संख्यातानि सहस्त्राणि द्विगुणानि शतानि च ।।19।। तत्रैव– श्लोक–19

30– त्रिलोक्या युगसाहस्त्रं बहिराब्रम्हणो दिनम्।
तावत्येव निशा तात यन्निमीलति विश्वसृक्।।22।। तत्रैव– श्लोक–22, पृष्ठ–248

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

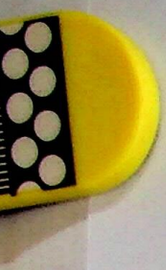

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लोक का कल्प आरम्भ होता है, उसका क्रम जब तक ब्रम्हा जी का दिन रहता है, तब तक चलता है।"[31]

पुनः महर्षि व्यास ने विष्णु पुराण में भी यही सिद्धान्त बतलाया है।

उपर्युक्त सिद्धान्तों के आधार पर सूर्य सिद्धान्त के टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित ने निम्नलिखित गणितीय तालिका प्रस्तुत की है:—[32]

(दिव्यवर्षप्रमाण से युगादिमानबोधक चक्र)

युगनाम	कृतयुग	त्रेतायुग	द्वापरयुग	कलियुग	महायुग(चतुर्युग)
युगप्रमाण	4000	3000	2000	1000	10000
आद्यन्तसन्धिप्रमाण	800	600	400	200	2000
ससन्धियुगप्रमाण	4800	3600	2400	1200	12000

सौरवर्षप्रमाण से

युगप्रमाण	144000	108000	720000	360000	3600000
आद्यन्तसन्धिप्रमाण	288000	216000	144000	72000	720000
ससन्धियुगप्रमाण	1728000	1296000	864000	432000	4320000

कल्प प्रमाण

महायुगप्रमाण X 1000 = 4320000000 सौर वर्ष

4320000 X 1000 = 4320000000 मानव वर्ष

(चार अरब बत्तीस करोड़ मानव वर्ष)

31- निशावसान आरब्धो लोककल्पोऽनुवर्तते।
यावद्दिनं भगवतो मनून भुञ्जंश्चतुर्दश।।23।। वेद व्यास- श्रीमदभागवत महापुराणम् प्रथम खण्ड, तृतीय स्कन्ध, अध्याय-11, श्लोक-23 पृष्ठ-248

32- सूर्य सिद्धान्त- टीकाकार- पं0 माधव प्रसाद पुरोहित, पृष्ठ-36 प्रकाशक-चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान 38 यू0ए0 बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपर्युक्त काल गणना वैज्ञानिक कसौटी पर:-

भारत की इस काल गणना का निश्चित वैज्ञानिक आधार है। वैज्ञानिकों ने अब तक जितनी शोध करके सृष्टि रचना सम्बन्धी जितने तथ्य प्रकट किये हैं उनमें से अधिकांश भारतीय मान्यताओं से मेल खा रहे हैं।

भारत के प्रसिद्ध खगोल वैज्ञानिक जयन्त नार्लीकर ने उपर्युक्त काल गणना को आश्चर्यजनक रूप से वैज्ञानिक गणना के आधार पर सत्य माना है। अपनी पुस्तक "द स्ट्रक्चर आफ द यूनिवर्स" (The Structure of the Universe) में उन्होंने लिखा है कि-

"हिन्दुओं के प्राचीन ग्रन्थ में जो काल गणना दी गयी है, उसकी तुलना हम आधुनिक खगोल विज्ञान से कर सकते हैं। ब्रम्हा को सृष्टि का रचयिता माना गया है। सृष्टि के सम्पूर्ण जीवन को ब्रम्हा के एक दिन से तुलना की जा सकती है। ब्रम्हा का एक दिन तब समाप्त होता है जब चारो युगों का एक हजार चक्र पूरा होता है। युगों का एक चक्र बारह हजार दिव्य वर्षों में पूरा होता है। इन सभी अंकों का गुणा करने पर यह ज्ञात होता है कि ब्रम्हा के एक दिन में 4320 मिलियन वर्ष होते हैं। इस संख्या की तुलना हम आधुनिक खगोल विज्ञान के द्वारा प्राप्त उन संख्याओं से कर सकते हैं, जिनके अनुसार बिग बैंक से लेकर आज तक की कालावधि को लगभग 10 हजार मिलियन वर्ष माना गया है।"[33]

33- Long before the advent of modern cosmology, the question of the origin and evolution of the Universe fascinated mankind. Different civilizations, religions, and cultures formulated their own interpretations. Of these the Hindu scripture VISHNU PURANA comes with suggestions of a time scale comparable with those of present-day astronomy. In this work (verses 12-15, Book I, chapter 3), the god Brahma is regarded as the creator of the Universe, and the overall life of the Universe may be compared with one day of Brahma. One day of Brahma elapses when the four yugas, Krita, Treta, Dwaper, and Kali, are repeated a thousand times. One cycle of four Yugas takes up 12000 divine years. One divine year is equal to 360 human years. Multiplying these factors we see that the day of Brahma is equal to 4320 million years. This may be compared with the estimated age of a big-bang universe up to the present epoch, which is around 10000 million years.

Jayant Narlikar, The Structure of the Universe page-105, Publisher- Oxford University Press-Walton Street, Oxford Edition 1978

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस प्रकार यहं स्पष्ट ज्ञात होता है कि भारतीय तत्ववेत्ताओं ने बड़ी खोज एवं सूक्ष्म दृष्टि से ऐसे मानो को स्थापित किया है जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। विज्ञान के विकास के कारण आज उन्हें पुनः प्रकाश में लाने का अनुकूल अवसर है।

यह पूर्व में कहा गया है कि सूर्य सिद्धान्त के टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित ने ज्योतिष का आरम्भ इक्कीस लाख वर्ष से पूर्व का माना है। उनके इस कथन को प्रमाणित करने के लिए सूर्य सिद्धान्त में उल्लिखित निम्नलिखित श्लोक दृष्टव्य है–

अल्पावशिष्टे तु कृते मयनामा महासुरः।
रहस्यं परमं पुण्यं जिज्ञासुर्ज्ञानमुत्तमम्।।2।।
वेदाङमग्रयमखिलं ज्योतिषाँ गतिकारणम्।
आराध्यायन् विवस्वन्तं तपस्तेपे सुदुश्चरम्।।3।।[34]

अर्थात सत्ययुग के कुछ बाकी रहते मय नामक महादैत्य ने ग्रह नक्षत्रादिकों की गति ज्ञान के लिए अत्यन्त गोपनीय, पुण्य जनक और वेद के व्याकरण आदि छः अंगों में प्रधान, सम्पूर्ण शास्त्र रूप उत्तम ज्ञान की इच्छा से सूर्य नारायण की अराधना करते हुए अत्यन्त कठिन तपस्या की।

"उस कठिन तप से संतोष को प्राप्त होकर प्रसन्नता से श्री सूर्य भगवान ने वर के चाहने वाले उस मयासुर को ग्रहों का चरित्र बतलाया।"[35]

सूर्य सिद्धान्त में उल्लिखित उपरोक्त श्लोकों में यह कहा गया है कि यह सूर्य सिद्धान्त कृतयुग (सत्ययुग) के कुछ शेष रहते बनाया गया था। इस प्रकार इनके

34– सूर्य सिद्धान्त– टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित, अध्याय–1, श्लोक 2, 3, पृष्ठ–3 (प्रकाशक पूर्वोक्त)

35– तत्रैव, श्लोक–4, पृष्ठ–4

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निर्माण काल की गणना "अल्पावशिष्टे तु कृते" इत्यादि श्लोकानुसार निम्नलिखित विधि से की जा सकती है:–

5000 वर्ष– कलियुग के– (शास्त्रों के अनुसार कलियुग का आगमन आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व हुआ था)

864000 वर्ष– द्वापर युग (पूर्वोक्त तालिका दर्शनीय)

1296000वर्ष– त्रेता युग (पूर्वोक्त तालिका दर्शनीय)

योग 2165000वर्ष–इस योग में "अल्पावशिष्टे तु कृते" इत्यादि श्लोकानुसार कुछ वर्ष सत्ययुग के भी सम्मिलित होंगे।

सामान्य रूप से इस काल निर्धारण को "इक्कीस लाख वर्ष से पूर्व का" कहना अधिक उपयुक्त होगा।

इस प्रकार यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि ज्योतिष का आरम्भ 21 लाख वर्ष के आस–पास का है।

रामेश्वर तथा लंका के मध्य प्राप्त ऐतिहासिक सेतु के द्वारा भी ज्योतिष का काल निर्धारण सम्भव:–

अभी अमेरिकी अन्तरिक्ष एजेंसी नासा के वैज्ञानिकों ने वह काम कर दिखाया है जिसे विश्व के तमाम इतिहासकार तथा पुरातत्ववेत्ता नहीं कर सके। नासा शटल से प्राप्त उपग्रहीय चित्रों में रामेश्वरम तथा लंका के मध्य समुद्र में विद्यमान एक सेतु का स्पष्ट चित्र प्राप्त हुआ है। नासा के अनुसंधानों के अनुसार यह सेतु सत्रह लाख साठ हजार साल पुराना है तथा यह मानव निर्मित है।[36]

36– www.adamsbridge.com. (परिशिष्ट–3 दर्शनीय)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह सर्वविदित है कि त्रेता युग में राम ने रामेश्वरम तथा लंका के मध्य सेतु का निर्माण कराया था। महर्षि वाल्मीकि ने इस सेतु के निर्माण की प्रक्रिया का उल्लेख किया है जो इस प्रकार है:–

"महाकाय महाबली वानर हाथी के समान बड़ी–बड़ी शिलाओं और पर्वतों को उखाड़कर यन्त्रों (विचित्र साधनों) द्वारा समुद्र तट पर ले आते थे।"[37]

"उन वानरों ने सब ओर पत्थर गिराकर समुद्र में हलचल मचा दी। कुछ दूसरे वानर सौ योजन लंबा सूत पकड़े हुए थे।"[38]

"कोई नापने के लिये दण्ड पकड़ते थे तो कोई सामग्री जुटाते थे। श्री रामचन्द्र जी की आज्ञा शिरोधार्य करके सैकड़ों वानर सेतु बांधते थे।"[39]

"वह पुल बड़ा ही विशाल, सुन्दरता से बनाया हुआ, शोभासम्पन्न, समतल और सुसम्बद्ध था। वह महान् सेतु सागर में सीमन्तके समान शोभा पाता था।"[40]

सूर्य सिद्धान्त की काल गणना के अनुसार त्रेता युग की कालावधि नौ लाख

37– हस्तिमात्रान् महाकाया: पाषणांश्च महाबला:।
पर्वतांश्च समुत्पाटय यन्त्रै: परिवहन्ति च।।60।। महर्षि वाल्मीकि– वाल्मीकीय रामायण युद्ध काण्ड– द्वाविंश सर्ग– श्लोक–60, पृष्ठ–258, संस्करण–2060, प्रकाशक–गीता प्रेस, गोरखपुर।

38– समुद्रं क्षोभयामासुर्निपतन्त: समन्तत:।
सूत्राण्यन्ये प्रगृहणन्ति ह्यायतं शतयोजनम्।।62।। तत्रैव– श्लोक–62

39– दण्डानन्ये प्रगृहणन्ति विचिन्वन्ति तथापरे।
वानरै: शतशस्तत्र रामस्याज्ञापुन: सरै:।।64।। तत्रैव– श्लोक–64

40– विशाल: सुकृत: श्रीमान् सुभूमि: सुसमाहित:।।
अशोभत महान् सेतु: सीमन्त इव सागरे।।79।। तत्रैव– श्लोक–79, पृष्ठ–259

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से 21 लाख वर्ष के मध्य आता है। अतएव राम का काल (जो त्रेता युग में पैदा हुए थे) 17 लाख 60 हजार वर्ष प्राचीन होना सत्य प्रतीत होता है।

इस प्रकार ज्योतिष के प्राचीनतम ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त के टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित का यह कथन कि इस ज्योतिष का आरम्भ लगभग 21 लाख वर्ष से कुछ पूर्व हुआ था, विश्वसनीय तथ्यों पर आधारित प्रतीत होता है। अब जो नये–नये ऐतिहासिक तथ्य उभरकर सामने आ रहे हैं, उन पर गहन शोध की आवश्यकता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि ज्यों–ज्यों विज्ञान विकसित हो रहा है त्यों–त्यों भारत की प्राचीन मान्यतायें सत्य सिद्ध होती जा रही हैं।

मेरे शोध प्रबन्ध का उद्देश्य ज्योतिष की पूर्ण वैज्ञानिकता को सिद्ध करना नहीं है फिर भी उन तथ्यों की ओर संकेत करना आवश्यक है जिससे हम यह सोचने को विवश हो जाते हैं कि कहीं न कहीं इसमें बहुत बड़ा विज्ञान छिपा है, जिसे अभी हम खोज नहीं सके हैं। वास्तव में विज्ञान का अर्थ होता है कारण और कार्य (Cause and Effect) के बीच सम्बन्ध की तलाश करना। वह तथ्य अन्धविश्वास प्रतीत होने लगता है, जिसके पीछे हम वैज्ञानिक कारण बताने में असमर्थ हो जाते हैं।

अपने शोध प्रबन्ध को मैने मानसिक रोगों तक ही सीमित रखा है ज्योतिष ग्रन्थों में विभन्न प्रकार के मानसिक रोगों के लिए विभिन्न प्रकार की ग्रहीय स्थितियों को कारण के रूप में उल्लेख किया गया है। ज्योतिष ग्रन्थों में यह उल्लेख है कि चन्द्रमा का मस्तिष्क पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। यदि हम चन्द्रमा तथा मस्तिष्क में सम्बन्ध खोजने का प्रयास करें तो यह सम्बन्ध सूत्र शीघ्र ही दृष्टिगोचर होने लगता है। हम देखते हैं कि पूर्णिमा के दिन समुद्र में ज्वार भांटा सर्वाधिक आता है, अर्थात पृथ्वी का जल चन्द्रमा से सर्वाधिक प्रभावित होता है। यह भी एक ज्ञात तथ्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है कि हमारे शरीर में जल तत्व ही सर्वाधिक है। अतएव चन्द्रमा से हमारे शरीर का जल भी अवश्य प्रभावित होगा। फलतः जिस शरीर का रक्षा कवच दुर्बल होगा उस शरीर का जल तत्व अधिक प्रभावित होगा तथा मस्तिष्क में हलचल मचा कर विकृति उत्पन्न कर सकता है।

भारत में तो प्राचीन काल से ही चिकित्सा तथा ज्योतिष में घनिष्ठ सम्बन्ध माना गया है। आयुर्वेद के मूर्धन्य विद्वानों में चरक, सुश्रुत तथा बागभट्ट आदि का नाम प्रमुख है, ये सभी न केवल चिकित्सा शास्त्र के बल्कि ज्योतिर्विज्ञान के भी मर्मज्ञ थे। यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष तथा आयुर्वेद सहोदर भाई है।

प्राचीन शल्य चिकित्सक सुश्रुत ने तो सर्जरी करने से पहले श्रेष्ठ तिथि, करण, मुहुर्त और नक्षत्र को भी ध्यान में रखने को कहा है।[41]

सुश्रुत ने एक अन्य अध्याय में रोगों को उत्पन्न करने वाले अनेक कारणों का उल्लेख करते हुए ग्रह नक्षत्रों के दुष्प्रभाव को भी रोगों का एक कारण माना है।[42]

आयुर्वेद को आठ अंगों में विभक्त किया गया है। इनमें भूत विद्या नामक चतुर्थ अंग में ग्रह नक्षत्रों से उत्पन्न होने वाले रोगों का विवरण हैं।[43]

औषधियों के निर्माण करने में भी विशिष्ट तिथियों आदि का ध्यान रखने का निर्देश चरक संहिता में उपलब्ध होता है।

आयुर्वेद में यह मान्यता रही है कि कुशल चिकित्सक को आयुर्वेद के साथ–साथ ज्योतिष का भी ज्ञान होना चाहिए।

41– सुश्रुत संहिता– प्रथम खण्ड, अध्याय–5, सूत्र–7 व्याख्याकार– डा0 अम्बिका दत्ता शास्त्री, संस्करण सम्वत्–202, प्रकाशक–चौखम्भा संस्कृत संस्थान, चौक वाराणसी।

42– तत्रैव– अध्याय–6, सूत्र–21

43– तत्रैव– अध्याय–3, सूत्र–44

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानव मस्तिष्क शरीर का सर्वाधिक संवेदनशील भाग है। यह सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को भी ग्रहण करता है। अतएव आज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में तत्सम्बन्धी अति प्राचीन ज्योतिषीय सिद्धान्तों का पुनरावलोकन, परीक्षण तथा विज्ञान सम्मत व्याख्या आज के युग की महती आवश्यकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट–1

भाग्य जानने की ललक

- हर अख़बार, हर पत्रिका, हर एफ-एम और टीवी चैनल वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक और दैनिक राशिफल छापते/ प्रसारित करते हैं
- हर समाचार चैनल में राशिफल और ग्रहों से संबंधित विशेष कार्यक्रम। इंडिया टीवी में ग्रहों-नृक्षत्रों के प्रभाव और उनके उपचार पर भी कार्यक्रम
- टेलीशॉपिंग के माध्यम से ग्रहों-नृक्षत्रों के प्रभाव से निपटने के लिए नगों व पत्थरों की बढ़िया मार्केटिंग
- केवल भारत में ज्योतिष से संबंधित करीब एक करोड़ 20 लाख रजिस्टर्ड वेवसाइटें। जबकि पूरी दुनिया में पाँच करोड़ 18 लाख वेवसाइट्स।
- हर साइट पर विशेष प्रश्न पूछने के लिए 300 से 15 सौ रुपए का शुल्क
- लखनऊ में भी हच और श्री एस्ट्रॉलोजी सेंटर ऐसे केन्द्र, जहाँ ज्योतिष विज्ञान की वाकायदा शिक्षा ले चुके विशेषज्ञों की सलाह मिलती है
- लखनऊ में ज्योतिष और कुंडली देखकर कर्मकांड बताना जैसे स्वैच्छिक कामों ने व्यवसाय का रूप लिया।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट-2

In 1976, 186 scientists, including 19 Nobel prizewinners, signed a manifesto entitled "Objections to Astrology." Claiming that there is "no scientific foundation for its tenets", they asserted that astrology was mere superstition, and its practitioners "charlatans." Twenty years later, the zoologist Richard Dawkins repeated the accusation. For Dawkins astrology is an "aesthetic affront" whose "pre-Copernican dabblings demean and cheapen astronomy." Dawkins shares the historian Franz Cumont's belief that astrology is "the most persistent hallucination that ever haunted the human brain". Peter Marshall's impressive history is a well-argued and absorbing account of astrology's grip on the imagination, and an eloquent defence of its importance in our lives.

Marshall is aware of the shortcomings of astrology, something he shares with most serious practitioners. "As widely practised today," he writes, "astrology is based on an astronomically false view of the universe and follows arbitrary rules established 2,000 years ago." Given the phenomenon of the "precession of the equinoxes" (which accounts for the apparent backward motion of the zodiac against the backdrop of the fixed stars), the constellations are not in the same position as they were when the zodiac was established some 2,500 years ago. This means that the first point of Aries is now really in Pisces: the sun signs in our daily horoscopes do not reflect the heavens above.

Another glitch is the problem of twins: they may have the same chart yet widely different lives. Likewise, did all the victims of Nazism share similar horoscopes? This thought leads to perhaps the central objection to astrology: its apparent denial of free will.

Marshall devotes a chapter to these concerns, yet believes that as a "valuable technique of understanding human character and experience", astrology "has hardly ever been in better health". Since 1930, when the Daily Express published an astrological profile of Princess Margaret, millions of newspaper readers have daily succumbed to the "persistent hallucination".

They are in distinguished company. Plato, St Thomas Aquinas, Dante, Goethe and WB Yeats were all devotees, along with politicians as disparate as Charles de Gaulle and Ronald Reagan. Marshall's fascinating narrative extends beyond Europe to include China, India, and the Arabic world. Ninety-five per cent of marriages in India are guided by astrological help. And when astrology and its sister science astronomy went into decline in the dark ages, both disciplines were kept alive by the sages of the Middle East.

Equally interesting is Marshall's account of the changing ideas about the use of astrology. Originally devoted to predicting the rise and fall of empires, with the Greeks "mundane" astrology gradually shifted into our more familiar natal astrology, focused on the fate of the individual. By the time of Galen, court physician to the Roman emperor Marcus Aurelius, astrology was considered an essential part of medical knowledge; awareness of the influence of the stars was necessary for an accurate diagnosis. That human life was a part of the whole and therefore affected by cosmic conditions was, until fairly recently, a given.

Although most devotees seek some idea of themselves from their daily horoscopes, Marshall echoes the attitude of Renaissance astrologers like Marsilio Ficino, who sought to escape baleful celestial emanations through knowledge of them. Rejecting stellar determinism, Marshall advises that the "stars incline but do not compel".

Yet his account is full of instances when the predictive power of astrology was evident, as in the case of William Lilly, who was brought before Parliament for his accurate predictions of both the plague and the great fire of London. One wonders if an equally accurate prediction foresaw the 20th century renaissance of astrology at the hands of the aptly named Alan Leo, whose popular books revitalised mass interest in the subject in the early 20th century and are believed to have inspired its most well known musical expression, Gustav Holst's The Planets suite.

Gary Lachman's most recent book is The Dedalus Book of the Occult: A Dark Muse (Dedalus).

Gary Lachman
The Guardian, Saturday 31 January 2004

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-प्रथम

मानसिक रोग तथा जातक शास्त्र के सिद्धान्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय प्रथम

मानसिक रोग तथा जातक शास्त्र के सिद्धान्त

ज्योतिर्विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान का प्राचीन काल से ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। आयुर्वेद में स्वास्थ्य रक्षण हेतु जड़ी–बूटियों का संञ्चय, औषधि निर्माण तथा शल्य क्रिया आदि में कालकृत विशेषताओं को अत्यन्त उपयोगी माना गया है।[1] आयुर्वेद शास्त्र तो यहां तक कहता है कि काल की विशेषताएं अपने स्वभाव से ही दोषों का संञ्चय, प्रकोप एवं प्रतिकार कर देती हैं।[2] इसीलिए आयुर्वेद के आचार्य रोगी की जन्म कुण्डली के विविध योगों का अध्ययन कर रोग की प्रकृति का ज्ञान करना तथा तदनुसार उपचार करना उपयोगी मानते थे।

यद्यपि ज्योतिष के अनुसार ग्रह नक्षत्रों की स्थितियाँ मानव जीवन को सर्वाङ्गीण प्रभावित करती हैं तथापि इस शोध प्रबन्ध को मानसिक रोगों के अध्ययन तक ही सीमित रखा गया है। आयुर्वेद किसी व्यक्ति को तब तक स्वस्थ नहीं मानता जब तक उसमें दोष, अग्नि धातु एवं मल की क्रिया की समानता (प्राकृतावस्था) के साथ–साथ उस व्यक्ति के मन और आत्मा में प्रसन्नता न हो।[3] इस प्रकार स्वास्थ्य की सम्पूर्णता के लिए मानसिक स्वास्थ्य भी आवश्यक तथा उपयोगी है।

आयुर्वेद में रोगों के दो अधिष्ठान हैं[4] –1. शरीर और 2–मन। इन दोनों अधिष्ठानों में होने वाले शारीरिक और मानसिक रोग एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।[5] कभी–कभी जब शरीर रोगी होता है, तो मन भी रोगी हो जाता है तथा मन के रोगी होने पर शरीर को भी रोगाक्रान्त होते देखा जाता है। इसी अभिप्राय से चरक ने

1- कालकृतास्तु प्रवातनिवातात पच्छायाज्योत्स्नातमः शीतोष्णवर्षाऽहोरात्रपक्षमासर्त्वयनादयः संवत्सर विशेषाः। — सुश्रुत संहिता प्रथम भाग अध्याय 1 सूत्र 42 पृष्ठ-7

2- ते एते स्वभावत एव दोषाणां संचयप्रकोपप्रशमप्रतीकारहेतवः प्रयोजनवन्तश्च।। — तत्रैव अध्याय-1 सूत्र 43, पृष्ठ-8

3- समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्याभिधीयते।। — तत्रैव अध्याय-15 सूत्र 48, पृष्ठ-64

4- तेषां कायमनोभेदादधिष्ठानमपि द्विधा। — अष्टांग हृदय-(वाग्भट्ट विरचित) सूत्र-स्थानम्-आयुष्कामीय अध्याय-1, सूत्र-1, पृष्ठ-17

5- ते च विकाराः परस्परमनुवर्तमानाः-
कदाचिदनुबध्नन्ति कामादयो ज्वरादयश्च। — चरक संहिता प्रथम भाग विमानस्थानम् अध्याय-6 सूत्र-9, पृष्ठ-704,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहा है कि– 'शरीर मन के अनुरूप होता है और मन शरीर के अनुरूप'।[6] अतएव शोध–प्रक्रिया के आरम्भ में मानसिक स्वास्थ्य के सम्यक् ज्ञान के लिए मन का विश्लेषणात्मक अध्ययन वांच्छनीय है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान की सभी मुख्य विधायें लगभग भारतीय दर्शन पर ही आधारित हैं। भारतीय दर्शन में जीवन तथा जगत के लगभग सभी पक्षों पर अत्यन्त गहनतापूर्वक विचार किया गया है। इसीलिए दर्शन शास्त्र, आयुर्वेद तथा ज्योतिष परस्पर सम्बन्धित तथा एक दूसरे से प्रभावित प्रतीत होते हैं। अतएव मन पर विचार प्रक्रिया का आरम्भ भी दार्शनिक सिद्धान्तों की पृष्ठभूमि से ही शुरू करना अधिक उपयुक्त है।

योग दर्शन में मन का निरूपणः–

योग दर्शन में मन की परिभाषा देते हुए योग वासिष्ठ में कहा गया है कि– संकल्प करने का नाम मन है, मन संकल्प से भिन्न कुछ नहीं है– जैसे जल, द्रवत्व (पतलेपन) से है और वायु स्पन्दन से भिन्न कोई दूसरा पदार्थ नहीं है।[7]

महर्षि पतंञ्जलि ने मनसतत्व को चित्त के रूप में स्वीकार करते हुए उसको पांच वृत्तियां में विभक्त किया है।[8] 1– प्रमाण, 2– विपर्यय, 3– विकल्प, 4– निद्रा, 5– स्मृति।[9]

इन वृत्तियों की विवेचना अग्रलिखित है–

प्रमाण– प्रमा (यथार्थ ज्ञान के सम्बन्ध में) को प्रमाण कहते हैं।

प्रमाण वृत्ति भी तीन भागों में विभक्त है– प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम।[10]

6– शरीरमपि सत्त्वमनुविधीयते सत्त्वं च शरीरम्। चरक संहिता शारीरस्थानम् अध्याय-4 सूत्र-36, पृष्ठ-890

7– सङ्कल्पनं मनो विद्धि सङ्कल्पात्तत्र भिद्यते।
यथा द्रवत्वात्सलिलं यथा स्पन्दोऽनिलात्।। योग वासिष्ठ और उसके सिद्धान्त; डा0 भीखन लाल आत्रेय, अध्याय-9, श्लोक-3/4/43, पृष्ठ-309

8– वृत्तयः पंचतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः।। पातञ्जल योग सूत्र- समाधिपाद सूत्र-5

9– प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः।। तत्रैव सूत्र-6

10– प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि। तत्रैव सूत्र-7

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karaundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रत्यक्ष– श्रोत, त्वक्, चक्षु, जिह्वा और घ्राण, इन इन्द्रियों द्वारा क्रमशः शब्द, स्पर्श, रूप रस और गन्ध का निश्चयात्मक बोध होना प्रत्यक्ष कहलाता है।

अनुमान– किसी चिह्न को देखकर जो बात प्रकट नहीं है, उसको भी जान लेना अनुमान है।

आगम– वेदशास्त्र और आप्त पुरूषों के वचन को आगम कहते हैं। जो पदार्थ मनुष्य के इन्द्रियों से प्रत्यक्ष नहीं है एवं जहां अनुमान की भी पहुंच नहीं है। उसके स्वरूप का ज्ञान वेदशास्त्र एवं महापुरूषों के वचनों से होता है।

बिपर्यय– किसी वस्तु में किसी अन्य वस्तु के होने की प्रतीति होना विपर्यय कहलाता है। जैसे मरूस्थल में सूर्य की स्पन्दनमान किरणों को देखकर पानी का भ्रम होना।[11]

विकल्प– केवल शब्द के आधार पर बिना अस्तित्व वाले पदार्थ की कल्पना करने वाली वृत्ति को विकल्प वृत्ति कहते हैं।[12]

निद्रा– जिस समय मनुष्य को किसी भी विषय का ज्ञान नहीं रहता केवल मात्र ज्ञान के अभाव की ही प्रतीति रहती है, यह अवस्था जिस वृत्ति के आश्रित रहता है वह निद्रावृत्ति है।[13]

स्मृति– किसी अनुमान किये हुए विषय का पुनः प्रकट होना स्मृति है।[14]

पुनः महर्षि पतञ्जलि ने चित्त के क्लेशों के पांच कारण बताये हैं:– 1– अविद्या, 2– अस्मिता, 3– राग, 4– द्वेष, 5– अभिनिवेष।[15]

अविद्या– यथार्थ का उचित ज्ञान न होना अविद्या है।

11– विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्।। पातञ्जल योग सूत्र-8
12– शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः।। तत्रैव सूत्र-9
13– अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा।। तत्रैव सूत्र-10
14– अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः।। तत्रैव सूत्र-11
15– अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः क्लेशाः।। तत्रैव साधन पाद सूत्र-3

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्मिता– अंहङ्कार के अनुचित आधिक्य को अस्मिता कहते हैं।

राग– किसी वस्तु में अत्यधिक आसक्ति को राग कहते हैं।

द्वेष– दूसरों की अपेक्षा अपने का दुःख की स्थिति में देखना द्वेष है। अपने को दयनीय स्थिति में देखने से दूसरों के प्रति ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होती है।

अभिनिवेश– सदैव मृत्यु के भय का आभास होना अभिनिवेश कहलाता है।

महर्षि पंतजलि ने मन की विश्लेषणात्मक परिभाषा देते हुए नौ प्रकार के मानसिक विकारों का उल्लेख किया है. वे हैं– 1– व्याधि, 2– स्त्यान, 3– संशय, 4– प्रमाद, 5– आलस्य, 6– अविरति, 7– भ्रान्तिदर्शन, 8– अलब्ध भूमिकत्व, 9– अनवस्थित्व[16]

व्याधि– शरीर इन्द्रिय समुदाय और चित्त में किसी प्रकार का रोग उत्पन्न हो जाना व्याधि है।

स्त्यान– अकर्मण्यता अर्थात कार्य में प्रवृत्ति न होने का स्वभाव स्त्यान है।

संशय– अपनी शक्ति में सन्देह हो जाना संशय है।

प्रमाद– करने योग्य, कर्मों की अवहेलना करना प्रमाद है।

आलस्य– चित्त और शरीर में भारीपन हो जाना आलस्य है।

अविरति– किसी कार्य में मन का न लगना अविरति है।

भ्रान्तिदर्शन– किसी वस्तु अथवा तथ्य को विपरीत समझना भ्रान्तिदर्शन है।

अलब्ध भूमिकत्व– प्रयत्न करने के बाद भी असफल होने के कारण उत्साहहीन होना अलब्ध भूमिकत्व है।

16– व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः।। पातञ्जल योग सूत्र–30

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनवस्थितत्व– किसी भी कार्य पर मन का एकाग्र न होना अनवस्थितत्व है।

भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण से मन की विश्लेषणात्मक व्याख्या के उपरान्त् पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा की गयी मन के विश्लेषण की समीक्षा प्रस्तुत किया जा रहा है क्योंकि समस्त संसार में पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा विकसित मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्तों को ही सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है। ज्योतिष के वैज्ञानिक आधारशिलाओं के अन्वेषण हेतु भी यह वांच्छनीय है।

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा मन का विश्लेषणः–

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मानव मन के तीन स्तर हैं:–

1– सचेतनावस्था (Conscious State)
2– अवचेतनावस्था (Sub Conscious State)
3–अचेनावस्था (Unconscious State)

सचेतनावस्था– मन की सचेतनावस्था वह है जो हमें प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। हम जागते हैं, उठते हैं, बैठते हैं, बोलते हैं, खाते–पीते हैं। यही हमारी सचेतनावस्था अथवा जागृत अवस्था है।

अवचेतनावस्था (Sub Conscious State)– अवचेतन की अवस्था में चेतना शान्त हो जाती है, परन्तु पूर्णतः शान्त नहीं होती। आंखे खुली हुई नहीं रहती, फिर भी बिना खुले ही देख रही होती हैं। कान सुन नहीं रहे होते, फिर भी बिना शब्द के ही सुन रहे होते हैं, मनुष्य दौड़ता नहीं, फिर भी बिना दौड़े दौड़ता है। यह स्वप्न की भांति है।

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक स्टाउट[17] ने इसे अवचेतन (Sub Conscious) नाम दिया था।

17– शर्मा, डा0 रामनाथ : सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा– पृष्ठ–106

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अचेनावस्था (Unconscious State)– जब हम स्वप्न में भी नहीं जाते तब अचेतन में पड़े रहते हैं, चेतना शान्त हो जाती है।

चेतना के ये स्तर एक दूसरे से नितान्त पृथक नहीं है। स्टाउड ने लिखा है कि "हमारे चेतन जीवन के आंशिक संघटक एक दूसरे से किसी ऐसी वस्तु से पृथक नहीं किये जाते जो चेतना के स्वभाव से अलग हो।[18]

पाश्चात्य मनोविज्ञान तथा मनोरोगः–

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों में सिगमन्ड फ्रायड, ऐल्फ्रेड एल्डर तथा सी0जी0 जुंग आदि ने मनोरोगों के कारणों पर गहन शोध किया था तथा मनोविश्लेषण पद्धति (Psycho-Analysis) द्वारा उनके समाधान के सिद्धान्त को भी प्रतिपादित किया था।

फ्रायड के अनुसार समस्त मानसिक जीवन अचेतन की शक्ति से परिचालित होता हैं। अचेतन अतृप्त प्रेरकों (Unfulfilled Motives) का भण्डार है। उसमें बाल्यकाल की समस्त दमित अतृप्त यौन इच्छायें (Repressed unfulfilled infantile desires) रहती हैं। फ्रायड के अनुसार मनुष्य की दमित इच्छायें अचेतन में चली जाती हैं और वहां से अभिव्यक्ति के सुअवसर ढूढ़ा करती हैं। इनमें लगभग सभी इच्छायें कामुक (Sexual) होती हैं। कामेच्छायें ही मनुष्य के अनेक कार्यों का कारण हैं। इस काम शक्ति को फ्रायड ने लिविडो (Libido) का नाम दिया है। लिविडो (Libido) एक प्रेरक शक्ति है।[19]

इस प्रकार फ्रायड के अनुसार मानव के अचेतन मन, मानव के मूल प्रवृत्तियों, अतृप्त इच्छाओं और दमित अनुभूतियों का भण्डार है।

फ्रायड के अनुसार "जिस प्रकार समुद्र में तैरते हुए बर्फ के पहाड़ का केवल 10वां भाग पानी से ऊपर रहता है और दस में से नौ भाग पानी के अन्दर छिपा रहता है, उसी प्रकार मनुष्य के मन का चेतन स्तर उसके मन का बहुत छोटा सा अंश है।"[20]

18– शर्मा डा0 रामनाथ : सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा, पृष्ठ–106
19– तत्रैव, अध्याय–व्यक्तित्व और उसका माप; पृष्ठ–438
20– तत्रैव, अध्याय–चेतना के स्तर और स्वप्न, पृष्ठ–109

CC0. Mahamahopadhyay Pandit Ramesh Yoga Vedic Shodh Sansthan Jayanti Trust, Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्त द्वारा मानसिक रोगों का निराकरणः—

मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति जो भी कार्य सचेतनावस्था में करता है उनमें अनेक अनुचित कार्य होते हैं, जो कुण्ठा (Complex) के रूप में अचेतन मन में सञ्चित होते रहते हैं। इन कुण्ठा (Complex) से अनेक प्रकार के मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। मनोविश्लेषक इन कुण्ठाओं को अचेतन मन से बाहर निकालकर मन को स्वस्थ करते हैं।

महर्षि पतञ्जलि का चित्त तथा फ्रायड के अचेतन मन में समानताः—

महर्षि पतञ्जलि का चित्त तथा फ्रायड का अचेतन मन कई अर्थों में एक समान है। जिस प्रकार पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अचेतन मन में मानसिक कुण्ठा पड़ी रहती है, उसी प्रकार पतञ्जलि के अनुसार चित्त में वासना तथा संस्कार पड़े रहते हैं।

डा0 आई0पी0 सचदेव ने अपने शोधपूर्ण ग्रन्थ "योग एण्ड डेप्थ साइकोलॉजी (Yoga and Depth Psychology) में यह प्रश्न उठाया है कि क्या चित्त तथा अचेतन मन स्वरूपतः एक समान हैं? उन्होंने स्वयं उत्तर देते हुए कहा है कि इस प्रश्न का उत्तर हाँ भी है और नहीं भी। हाँ, इस अर्थ में कि पञ्जजलि के समान ही फ्रायड ने यह माना था कि चित्त में पिछले कर्मों से उत्पन्न वासना तथा संस्कार इकट्ठे होते रहते हैं। नहीं, इस अर्थ में कि पतञ्जलि के पिछले कर्मों का तात्पर्य फ्रायड से भिन्न है। फ्रायड के अनुसार वर्तमान जन्म के कर्म ही कुण्ठा (Complex) के रूप में संग्रहित होते हैं जबकि पतञ्जलि के अनुसार पिछले अनेक जन्मों के कर्म वासना तथा संस्कार के रूप में संग्रहित होते हैं।[21]

21- Can Chitta be identified with the unconscious of western psychology? The answer to this question is both 'yes' and 'no'. The answer is in affirmative in so far as Yoga Psychology agrees with the freudean view that unconscious is the depository of individual past experiences. But the answer is in negative in so far as Yoga theory readically differs as to the interpretation to past experience.....thus it might be said that the unconcious is in the Chitta and Chitta is more than the unconscious of western psychology and has a much larger containt.
- I.P. Sachdeva,

Yoga and Depth Psychology,
Page-17

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

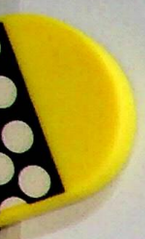

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहां यह उल्लेखनीय है कि आयुर्वेद तथा भारतीय ज्योतिष दोनों ही पूर्व जन्म से प्राप्त कुसंस्कारों को रोगों का कारण मानते हैं।

प्राचीन भारतीय दार्शनिकों तथा अनेक आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने भी मन तथा मनोरोगों के विश्लेषण के लिये मुख्यतः अन्तर्दर्शन विधि को ही अपनाया है। इस विधि में अपने स्वयं के अन्दर की क्रियाओं का निरीक्षण किया जाता है। ऐसे निरीक्षणों में यंत्रों की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह जब चाहे, अपने मानसिक अवस्थाओं और क्रियाओं का अध्ययन कर सकता है। परन्तु अन्तर्दर्शन की अपनी सीमायें भी हैं। इसके आधार पर किसी क्रिया के सम्बन्ध में सामान्य तथा विज्ञान सम्मत नियम नहीं बनाये जा सकते।

अतएव आधुनिक मनोचिकित्सक इन विषयों में निरीक्षण तथा प्रयोग की विधियों को अधिक लाभदायक मानते हैं। इस हेतु उन्होंने मानसिक तथा शारीरिक क्रियाओं का संचालन करने की प्रक्रिया को समझने के लिए भौतिक मस्तिष्क तथा अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों के अध्ययन को अधिक महत्व दिया है।

शारीरिक और मानसिक क्रियाओं के घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण आधुनिक मनोविज्ञान में शारीरिक क्रियाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिये एक अलग शाखा ही बन गयी है जो शारीरिक मनोविज्ञान (Physiological Psychology) कहलाती है। इसमें ज्ञानेन्द्रियों, स्नायु मण्डल, मस्तिष्क आदि के अतिरिक्त अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों (Endocrine Glands) का भी अध्ययन किया जाता है। आधुनिक शोधों से यह ज्ञात हुआ है कि अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों का भी मानसिक व्यवहार से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

आधुनिक शारीरिक मनोचिकित्साः

आज ज्योतिष के दृष्टिकोण से भी आधुनिक शारीरिक मनोचिकित्सा, केन्द्रीय स्नायु संस्थान तथा मस्तिष्क के विभिन्न भागों तथा उनकी क्रिया–प्रक्रियाओं का ज्ञान वांच्छनीय है, क्योंकि महर्षि इण्टरनेशनल यूनिवर्सिटी, फेयरफील्ड, इवोवा, यू0एस0ए0 से सम्बन्धित "वैदिक ज्योतिष" के अनुसंधानकर्ताओं ने नौ ग्रहों, बारह राशियों तथा सत्ताइस नक्षत्रों से आने वाली रश्मियों का मानव मस्तिष्क तथा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केन्द्रीय स्नायु संस्थान के विभिन्न भागों के मध्य अन्तर्सम्बन्ध के रहस्यों को उजागर किया है[22] (इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण तथा अनुसंधानकर्ताओं द्वारा प्रकाशित चित्रावलियां अध्याय–दशम् में दर्शनीय हैं।)

महर्षि इण्टरनेशनल यूनिवर्सिटी के अनुसंधानकर्ताओं ने ज्योतिष को विज्ञान तथा तकनीक (Science & Technology) की संज्ञा दी है।[23]

आधुनिक शारीरिक मनोचिकित्सा के अनुसार विभिन्न प्रकार की चेतनाओं का उद्गम मस्तिष्क, ज्ञान तन्तुओं, ज्ञानेन्द्रियों और मांसपेशियों आदि के परस्पर सम्बन्ध तथा क्रियाओ–प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप होता है। इन चिकित्सकों के अनुसार मन और शरीर का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। बहुधा शारीरिक रोगों के साथ–साथ मानसिक व्याधियां भी लगी होती हैं। अतः व्याधियों को दूर करने के लिए आधुनिक चिकित्सक मनोवैज्ञानिकों की भी सहायता लेते हैं।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार सभी शारीरिक तथा मानसिक क्रियायें मनुष्य के केन्द्रीय स्नायु संस्थान द्वारा संचालित होती हैं।

केन्द्रीय स्नायु संस्थान के दो भाग होते हैं– 1– सुषुम्ना, और 2– मस्तिष्क।

1– सुषुम्ना– यह मनुष्य की रीढ़ की हड्डी के अन्दर स्थित होता है, इसका ऊपरी भाग सफेद रंग के पदार्थ (White matter) से तथा अन्दर का भाग भूरे रंग के पदार्थ (Grey matter) से बना होता है।

सुषुम्ना में दो प्रकार की नाड़ियां होती हैं– 1– सांवेदनिक (Sensory) और 2– क्रियावाहक (Motor)

सांवेदनिक नाड़ी संवेदना को संग्राहक (ज्ञानेन्द्रियों) से स्नायु केन्द्र तक

22– परिशिष्ट नं0–4 दर्शनीय है।

23– Jyotish is the science and technology that is able to calculate and predict the type of influence, created by our past actions which will return to us at a particular time and place.
(www.maharishiinternationaluniversity+vedicastrology) इण्टरनेट द्वारा प्राप्त उद्धरण।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पहुचाती हैं और क्रियावाहक नाड़ियां स्नायु केन्द्र से मांसपेशियों तक पहुंचाती हैं।

सुषुम्ना प्रतिवर्ती क्रियाओं (Reflex Action) का संचालन करती हैं। सांवेदनिक नाड़ी संवेदना को मस्तिष्क तक पहुंचाती हैं। मस्तिष्क से आदेश प्राप्त कर कार्यवाहक नाड़ियां (Motor Nerves) स्नायुयों तक ले जाती हैं और इस प्रकार क्रिया प्रक्रिया होती है।

यह क्रियायें इतनी शीघ्र होती हैं कि इनमें नहीं के बराबर समय लगता है। संवेदनाओं का आना और संदेशों का जाना सुषुम्ना के भूरे रंग के पदार्थ में होता है।[24]

2— मस्तिष्क (**Brain**)— मस्तिष्क के तीन भाग होते हैं:—

1—वृहद् मस्तिष्क (Cerebrum), 2—लघु मस्तिष्क (Cerebellum) और 3— मध्य मस्तिष्क (Medulla oblongata)

वृहद् मस्तिष्क चार खण्डों में बंटा हुआ है। यह खण्ड निम्नलिखित हैं:—

1— अग्रखण्ड (Frontal lobe):— यह लेटरल सल्कस के दरार से सेन्ट्रल सल्कस की दरार तक फैला हुआ है।

2— पार्श्वकपाल (Parietal Lobe):— यह खण्ड सेन्ट्रल सल्कस की दरार से सर के पृष्ठ भाग (Hind part) तक फैला हुआ रहता है।

3— पश्च कपाल खण्ड (Occipital lobe):— यह सर के बिल्कुल पीछे के भाग में है।

4— शंख खण्ड (Temporal lobe):— यह मस्तिष्क के नीचे का तना है।

मस्तिष्क के चारो खण्ड एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। इनको संवेदनावाहक सूत्र (SensoryProjection Fibres) एक दूसरे से मिलाते हैं।[25] (वृहद् मस्तिष्क के

24- शर्मा, डा0 रामनाथ - सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा- अध्याय- अनुक्रिया यन्त्र, पृष्ठ-109
25- तत्रैव पृष्ठ-87

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभिन्न खण्डों और दरारों तथा संवेदना अधिष्ठानों (sense area) को परिशिष्ट नं0–5 में दिखलाया गया है।)

वृहद् मस्तिष्क के ये विभिन्न खण्ड भिन्न–भिन्न प्रकार की संवेदनाओं से सम्बन्धित हैं, जो निम्नलिखित हैं:–

1– चिन्तन– अग्रखण्ड के विशेष कार्य, चिन्तन से सम्बन्धित है। जटिल विचार के कामों में यह अग्रखण्ड ही अधिक कार्य करता है।

2– चेष्टा अधिष्ठान– मध्य भाग में सेन्ट्रल सल्कस के एक ओर चेष्टा अधिष्ठान (Motor Area) या क्रिया करने का क्षेत्र है। यह माध्यमिक दरार (Central sulcus) से कुछ आगे के खण्ड में स्थित है।

3– इसे चेष्टा अधिष्ठान कहने का कारण निम्नलिखित है–

इस भाग को क्षीण विद्युत धाराओं से उत्तेजित करने पर शरीर के विभिन्न भागों में गति उत्पन्न होती है, इसके एकदम ऊपर वाले भाग में उत्तेजना पहुंचाने पर पैरों में गति होती है। इस भाग से कुछ नीचे हटकर उत्तेजना पहुंचाने से धड़ में गति होती है। इसमें नीचे के भाग में उत्तेजना पहुंचाने से भुजाओं में गति उत्पन्न होती है। इससे भी नीचे के भाग में उत्तेजना पहुंचने पर सिर, चेहरा और मुख में गति उत्पन्न होती है।[26]

त्वक् पेशी सम्वेदना अधिष्ठान– पार्श्व कपाल खण्ड में माध्यमिक दरार के ठीक पीछे त्वक् पेशी संवेदनाधिष्ठान (Somaesthetic Area) अर्थात् वह क्षेत्र है जहां त्वचा और पेशियों में संवेदनायें प्राप्त होती हैं। इसकी स्थिति का पता इस प्रकार चलता है कि इस पट्टी में चोट पहुंचाने से त्वचा अथवा मांसपेशियों की संवेदना नष्ट हो जाती है।

श्रवण अधिष्ठान– शंख खण्ड के ऊपरी सिरे में श्रवण अधिष्ठान (Auditory Area) अर्थात् वह क्षेत्र है जहां सुनने की संवेदनायें प्राप्त होती हैं। श्रवणाधिष्ठान का

26– शर्मा डा0 रामनाथ : सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा, पृष्ठ–88

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पता इस बात से चलता है कि इस छोटे से क्षेत्र में आघात पहुंचने पर व्यक्ति बहरा हो जाता है।

दृष्टि अधिष्ठान– मस्तिष्क के पृष्ठ भाग में पार्श्व कपाल खण्ड में दृष्टि अधिष्ठान (Visual Area) अर्थात वह क्षेत्र है, जहां देखने की संवेदनायें प्राप्त होती हैं। लेटरल सल्कस के निकट स्वाद और घृणा के क्षेत्र हैं।

साहचर्य क्षेत्र (Associative Area) साहचर्य क्षेत्र लाखों साहचर्य सूत्रों से बनते हैं इस साहचर्य सूत्रों पर चोट आ जाने से मस्तिष्क के संवेदना के क्षेत्र को किसी न किसी प्रकार की हानि पहुंचती है। उदाहरणार्थ प्रान्तस्थ (Memory Area) में साहचर्य सूत्रों के नष्ट होने से सभी सीखा हुआ ज्ञान विस्मृत हो जाता है।[27]

कार्यकारी प्रान्तस्था (Cortex Area) के समीप के क्षेत्र के नष्ट हो जाने से लिखी हुई भाषा का समझना असम्भव हो जाताा है।

इसके अग्र भागों के क्षेत्र को अधिक चोट पहुंचने से हाल में सीखी हुई या देखी हुई बात याद नहीं रहती यद्यपि बचपन की बाते याद आ जाती है।

मानसिक स्थितियों को प्रभावित करने वाले कारकों में मस्तिष्क के अतिरिक्त शरीर की अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों की भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह नलिकाविहीन ग्रन्थियां हैं जो बिना नलिका के ही सीधे रक्त में अपना स्त्राव भेजती है। इनके स्त्राव हार्मोन्स (Hormones) कहलाते हैं। यह ग्रन्थियां निम्नलिखित हैं–[28]

1– पैंक्रियाज (Pancreas)– इसकी मात्रा में परिवर्तन से रक्त में शर्करा तत्व की मात्रा में परिवर्तन होता है। रक्त में शर्करा तत्व की कमी होने से मानसिक शक्तियां क्षीण होती हैं। भावावस्था (mood) में परिवर्तन हो जाता है। व्यक्ति का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और भय की भावना बढ़ जाती है।[29]

27– शर्मा डा0 रामनाथ : सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा, पृष्ठ-90
28– तत्रैव, अध्याय-व्यक्तित्व और उसका माप, पृष्ठ-420
29– तत्रैव पृष्ठ-420

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– थायरायड ग्रन्थि– इस ग्रन्थि के स्राव के कम होने से मस्तिष्क की पेशियों की क्रिया मन्द पड़ जाती है। स्मृति मन्द हो जाती है। जन्म से ही इस ग्रन्थि के न होने पर बालक की बुद्धि का विकास नहीं हो पाता, बौने, कुरूप तथा मूढ़ बुद्धि बालक इसी ग्रन्थि के अभाव के परिणाम हैं।

इस ग्रन्थि के अधिक क्रियाशील होने पर व्यक्ति तनाव और चिड़चिड़ापन का शिकार हो जाता है।[30]

3– एड्रेनल गन्थि– इस ग्रन्थि की अधिकता से पुरूष या स्त्री में पुरूषोचित गुणों की अधिकता होती है।

इसके नितान्त अभाव में यौन क्रिया में अरूचि हो जाती है। ऐसे व्यक्तियों में चिड़चिड़ापन और असहयोग दिखाई पड़ता है।

4– जनन ग्रन्थियां (Gonades)– इसके स्राव से पुरूषों में पुरूषोंचित यौन लक्षण तथा स्त्रियों में स्त्री सुलभ लक्षण उत्पन्न होते हैं। इस स्राव की अधिकता से कामुकता में वृद्धि होती है तथा इसकी कमी से यौन सम्बन्धी आकर्षण कम हो जाता है।[31]

5– पिट्यूटरी ग्रन्थि– इसकी कमी से शारीरिक विकास पर भारी प्रभाव पड़ता है। विकास काल में इसकी कमी होने से व्यक्ति बौना हो जाता है। विकास काल में इसकी वृद्धि होने पर व्यक्ति की अस्थियां तथा पेशियां बड़ी तेजी से बढ़ती हैं।

सभी ग्रन्थियों के स्राव एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

शारीरिक रसायन (Bio-Chemistry)– मस्तिष्क रचना तथा अन्तस्रावी ग्रन्थियों के अतिरिक्त मानसिक स्थिति के जैवकीय कारणों में शारीरिक रसायन का उल्लेख भी आवश्यक है।

(शारीरिक रसायन तथा ज्योतिष के अन्तर्सम्बन्धों पर विचार करते हुए ओशो रजनीश ने वैज्ञानिक जियाँजारजी गिंआरडी द्वारा लिखित पुस्तक "कास्मिक कैमिस्ट्री" (Cosmic Chemistry) का उल्लेख किया है, जिसमें उक्त वैज्ञानिक ने यह सिद्ध किया है कि सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड एक जीवन्त इकाई (Organic Unit) है तथा ब्रम्हाण्ड की कोई भी घटना हमारे शारीरिक रसायन को प्रभावित करती है।[31B] मैरीलैन्ड विश्वविद्यालय (University of Maryland, USA) के आधुनिक वैज्ञानिक जे0 रालोफ (J. Raloff) ने भी शारीरिक रसायन तथा ब्रम्हाण्ड के मध्य विद्यमान अन्तर्सम्बन्धों पर गहन शोध करने के उपरान्त उक्त सिद्धान्त का ही प्रतिपादन किया है।[31C] यह नवीनतम शोध ज्योतिष के वैज्ञानिक आधारशिलाओं के अन्वेषण हेतु अति महत्वपूर्ण है।)

30– शर्मा डा0 रामनाथ : सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा, पृष्ठ-420
31– तत्रैव पृष्ठ-421
31B– आशो रजनीश– मै कहता आंखन देखी– ज्योतिष : अद्वैत का विज्ञान पृष्ठ-197
31C– www.sciencefrontiers.com (विस्तार के लिए परिशिष्ट-६ देखें।)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शरीर के रसायनिक तत्वों से व्यक्ति का स्वभाव निर्धारित होता है। चिड़चिड़े व्यक्ति में पित्त (Bile) की अधिकता होती है। शान्त व्यक्ति में कफ की अधिकता और उदास रहने वाले व्यक्ति में तिल्ली तथा स्नावयिक द्रव्य (Nervous pluid) की अधिकता मानी जाती है।[32]

इस प्रकार आधुनिक चिकित्सक मस्तिष्क तथा केन्द्रीय स्नायु संस्थान तथा विभिन्न ग्रन्थियों के स्राव की प्रतिकूलता एवं शारीरिक रसायन में असाम्य की स्थिति से विभिन्न रोगों की उत्पत्ति मानकर उनकी चिकित्सा करते हैं।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में मानसिक रोग–

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में मानसिक रोगों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है– 1– आर्गेनिक मानसिक विकृति, 2– नानआर्गेनिक मानसिक विकृति।

आर्गेनिक मानसिक विकृति को पुनः आठ भागों में विभक्त किया गया है:–

1– डेलिरियम (Delirium)
2– डेमेन्शिया (Dementia)
3– अम्नेस्टिक डिस्आर्डर (Amnestic Disorder)
4– आर्गेनिक हैलुशिनेशन्स (Organic Hallucination)
5– आर्गेनिक डिल्यूशनल डिसआर्डर (Organic delusional disorder)
6– आर्गेनिक एंजाइटी डिसआर्डर (Organic Anxiety disorder)
7– आर्गेनिक मूड डिसआर्डर (Organic mood disorder)
8– आर्गेनिक परसनालिटी डिसआर्डर (Organic Personality Disorder)

<u>नानआर्गेनिक मानसिक विकृतिः–</u>

नान आर्गेनिक मानसिक विकृति का निम्न विभाग किया गया है:–

1– साइकोटिक डिसआर्डर (Psychotic Disorder)

32– शर्मा डा0 रामनाथ : सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा, पृष्ठ–422

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– सीजोफ्रेनिया (Schizophrenia)

3– मूड डिसआर्डर (Mood Disorder)

4– अदर साइकिक डिसआर्डर (Other Psychic Disorder)

उपरोक्त विभागों के अतिरिक्त अनेक उपविभाग भी बनाये गये हैं तथा इनके अलग–अलग नाम दिये गये हैं।

आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार मानस रोगों का वर्गीकरण

आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार मानस रोगों को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया गया है[33]:–

क– उन्माद

ख– अपस्मार

ग– अतत्वभिनिवेश

घ– मनोविक्षिप्ति (Psychosis) मूर्च्छा

ङ– विषाद–अवसाद (Depression)

च– अव्यवस्थितचित्तता–अन्तराबन्ध (Schizophrenia)

छ– भ्रम (Illusion)

ज– विभ्रम (Halucination) या अवस्तुबोधन

झ– संविभ्रम स्थिर व्यामोह (Paranoia)

ञ– व्यामोह–मिथ्या विश्वास – संघर्ष (Delusion)

ट– मनःसंघर्ष – मनोनाड़ीदौर्बलय– मनःश्रान्ति (Neuresthenia)

ठ– मनोग्रन्थि तथा वृद्धावस्थानन्य मनोविकार (Obsession Compulsive Neurosis)

मनोरोगों का ज्योतिषीय निदानः–

ज्योतिष के अनुसार सभी ग्रहों नक्षत्रों तथा राशियों एवं भावों की अलग–अलग अपनी प्रकृति होती है। उनकी प्रकृति के अनुसार उनका प्रभाव भी जातकों पर

33– चरक संहिता - निदानस्थानम, अध्याय-7 तथा सुश्रुत संहिता उत्तरतंत्र, अध्याय 60-62

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तदनुसार पड़ता है। भारत के अतिरिक्त अन्य प्राचीन संस्कृतियों में भी तत्सम्बन्धी सिद्धान्तों की खोज हुई तथा अनेक ग्रन्थ भी लिखे गये।

प्राचीन संस्कृतियों में मिश्र देश का नाम उल्लेखनीय है जहां 200 ई0पू0 में क्रांडियस टालेमी ने टेट्रा विबलास (Tetrabiblos) नामक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना की जिसमें अन्य ज्योतिषीय सिद्धान्तों के साथ–साथ विभिन्न रोगों से भी सम्बन्धित ज्योतिषीय सिद्धान्तों का विषद उल्लेख है। इस प्राचीन ग्रन्थ का श्री एफ0ई0 राबिन्स (F.E. Robins) द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद हार्वड युनिवर्सिटी प्रेस (U.S.A.) से प्रकाशित हुआ है।[34]

इस प्राचीन ग्रन्थ ने यूरोप तथा अन्य देशों में ज्योतिष को अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया तथा अनेक परवर्ती चिकित्सकों ने अपने चिकित्सा कार्य में ज्योतिष का उपयोग किया है।

आज तो अनेक देशों में ज्योतिष को चिकित्सा की एक विधा के रूप में अपनाया जा रहा है। चिकित्सा ज्योतिष (Medical Astrology) पर अनेक ग्रन्थ अमेरिका तथा यूरोप के देशों में प्रकाशित हो रहे हैं।[35] जो इसकी उत्तरोत्तर बढ़ती हुई लोकप्रियता का द्योतक है।

प्राचीन भारत में ज्योतिष शास्त्र के आचार्यों ने ग्रहों, राशियों तथा नक्षत्रों की गतियों तथा मनुष्य के स्वास्थ्य एवं उनमें होने वाले विकारों पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर उनमें अन्तर्निहित सम्बन्धों की खोज की तथा तत्सम्बन्धी ज्योतिषीय सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया।

भारतीय ज्योतिष को तीन स्कन्धों में विभक्त किया गया है:– 1– होरा, 2– सिद्धान्त, 3– संहिता।

34– www.book.tetrabiblos.ferobins.com
35– www.book.medicalastrology.com

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होरा स्कन्ध– होरा शब्द ऊपर से देखने पर विदेशी शब्द आवर (Hour) अर्थात समय का रूपान्तरण प्रतीत होता है। यदि इस शब्द की व्युत्पत्ति भारतीय शब्दों में ढूढ़ा जाये तो कहा जा सकता है कि "अहोरात्र" शब्द के आदि वर्ण 'अ' तथा अन्तिम वरण 'त्र' का लोप कर देने से होरा शब्द बनता है।[36] इसी का दूसरा नाम जातक शास्त्र भी है।[37]

सिद्धान्त स्कन्ध– सिद्धान्त स्कन्ध को गणित स्कन्ध भी कहा जाता है। इसमें त्रुटि से लेकर कल्पान्त तक की गणना की गयी है। इनमें ग्रह नक्षत्रों की गतियां तथा उनके मार्गत्व तथा बक्रत्व आदि भेदों का निरूपण किया गया है। इसमें न केवल ग्रह गणित का ही अपितु अंकगणित, बीजगणित तथा अनुपातीय रेखागणित आदि का भी विवेचन किया गया है।[38]

संहिता स्कन्ध– संहिता स्कन्ध का विषय क्षेत्र इतना विस्तृत है कि जीवन से सम्बन्धित सभी लौकिक विषय इसके अन्तर्गत आ जाते हैं।[39] फलित ज्योतिष की कुछ शाखायें जैसे– प्रश्न शास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, शकुन शास्त्र एवं वास्तु शास्त्र आदि सभी शास्त्रों का समावेश संहिता में किया गया है।

होरा तथा संहिता स्कन्ध ही मुख्य रूप से फलित ज्योतिष में समाहित होते हैं। ग्रहों तथा नक्षत्रों के गतियों के आधार पर उनके प्रभावों का प्रतिपादन करने वाली जितनी भी पद्धतियां आज तक विकसित एवं प्रचलित हुई हैं, वे सभी फलित ज्योतिष की हीं शाखायें हैं इनमें प्रमुख है– 1– जातक, 2– ताजिक, 3– प्रश्न, 4– सामुद्रिक, 5– शकुन, 6– मुहुर्त

उपर्युक्त सभी फलित शास्त्रों में जातक ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है। इसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए आचार्य कल्याण वर्मा ने प्राचीन ग्रन्थ

36– आद्यन्तवर्णलोपाद्धोरा सिद्ध्यत्यहोरात्रात्। सारावली 2/2, पृष्ठ-3

37– जातकमिति प्रसिद्धं यल्लोके तदिह कीर्त्यते होरा। तत्रैव 2/4, पृष्ठ-3

38– त्रुट्यादिप्रलयान्तकालकलना मानप्रभेदः क्रमा-
च्चारश्च द्युसदां द्विधा च गणितं प्रश्नास्तथा सोत्तराः।
भूधिष्ण्यग्रहसंस्थितेश्च कथन यन्त्रादि यत्रोच्यते,
सिद्धान्तः स उदाहृतोऽत्र गणितस्कन्धप्रबन्धे बुधैः।। सिद्धांत-शिरोमणि गणिताध्याय। 1/6

39– ज्योतिःशास्त्रमनन्तभेदविततं स्कन्धत्रयाधिष्ठित्,
तत्काश्यॉपनयस्य नाम मुनिभिः संकीर्त्यते संहिता। वृहत्संहिता 2/2

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सरावली में कहा है कि "होरा (जातक) दैवज्ञ की वह दिव्य दृष्टि है जिससे वह विधाता के द्वारा मनुष्य के ललाट पर लिखी भाग्य पंक्ति को आसानी से पढ़ लेता है तथा हृदयंगम कर लेता है"।[40]

जातक शास्त्र में रोग विचार के उपकरण–

जातक शास्त्र में ग्रहों के योग को ही सङ्क्षेप में योग कहा जाता है। योग की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि ग्रहों की इष्ट अथवा अनिष्ट स्थानों में स्थित होने के कारण जो परिणाम व्यक्ति को भुगतने पड़ते हैं, इसे ही योग कहते हैं।[41]

योगों के तीन सहायक तत्व हैं– 1– दृष्टि, 2– युति, 3– स्थिति

1– <u>दृष्टिः–</u>

सभी ग्रह स्थान विशेष से ग्रह अथवा भाव को देखते हैं, जिन्हें उनकी दृष्टि कहा जाता है।

2– <u>युतिः–</u>

किसी ग्रह का किसी अन्य ग्रह के साथ किसी राशि या भाव में बैठना युति कहलाता है।

3– <u>स्थितिः–</u>

किसी ग्रह, भाव या राशि से इष्ट या अनिष्ट स्थानों में ग्रह आदि के बैठने को स्थिति कहते हैं।

जातक शास्त्र में सूर्य चन्द्र, मंगल, बुध आदि सभी ग्रहों को मनुष्य के शरीर के अङ्ग धातु एवं दोष का प्रतिनिधि माना जाता है।

जातक शास्त्र का यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि जब कोई ग्रह अनिष्ट स्थान में स्थित होने के कारण अनिष्ट प्रभाव का द्याोतक बन जाता है तो वह शरीर के जिस अंग, धातु या दोष का प्रतिनिधित्व करता है, उसमें विकार या रोग की सूचना

40 विधात्रा लिखिता याऽसौ ललाटेक्षरमालिका।
दैवज्ञस्तां पठेद्व्यक्तं होरानिर्मलचक्षुषा।। सारावली 2/1, पृष्ठ 2

41 ग्रहाणां स्थितिभेदेन पुरूषान् योजयन्ति हि।
फलैः कर्मसमुद्भूतैरिति योगाः प्रकीर्तिताः।। प्रश्नमार्ग 9/48 पृष्ठ 141

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देता है। इसी प्रकार जब कोई ग्रह इष्ट स्थान में स्थित होने के कारण इष्ट प्रभावयुक्त हो जाता है तो वह शरीर के जिस अङ्ग, धातु एवं दोष का प्रतिनिधित्व करता है उसमें समता, पुष्टि या आरोग्य की सूचना देता है।

इस सिद्धान्त के आधार पर ही जातक शास्त्र में सभी प्रकार के रोगों का विचार ग्रह–योगों के द्वारा किया जाता है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रह, 12 राशियों तथा 27 नक्षत्र एवं 12 भाव, मनुष्य के शरीर के विविध अङ्ग धातु एवं दोषों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतएव ग्रह, राशि, नक्षत्र तथा भावों द्वारा बने योग शरीर के विविध अंग धातु या दोष में विकार या रोग की सूचना देते हैं। (परिशिष्ट नं0–6 दर्शनीय है)

योगों के तीन प्रमुख तत्त्व होते हैं– 1–ग्रह, 2–राशि, 3–भाव।

ग्रह, राशि तथा भाव के आधार पर बनने वाले योग सात प्रकार के माने गये हैं जो निम्नलिखित हैं[42]:–

1– <u>स्थान (राशि) से बनने वाले योग–</u>

द्वादश राशियों, उनके भेद (चर, स्थिर, आदि तथा राशियों के वर्ग (लग्न, द्रेष्काण आदि) को ग्रहों का स्थान कहते हैं। इनके द्वारा बनने वाले योगों को स्थान (राशि) से बनने वाला योग कहा जाता है।)

2– <u>भाव से बनने वाले योग–</u>

कुण्डली में लग्न से प्रारम्भ कर 12 भाव होते हैं, जिनके नाम हैं:– 1–तनु, 2–धन 3–सहज, 4–सुख, 5–पुत्र, 6–रोग, 7–जाया, 8–मृत्यु, 9–धर्म, 10–कर्म, 11–आय, 12–व्यय। इनके द्वारा बनने वाले योगों को भाव से बनने वाले योग कहते हैं।

42- स्थानतो भावतः खेटैः स्थानभावनभश्चरैः।
स्थानभावसमायोगाद्भावखेचरयोगतः। प्रश्न मार्ग 9/49
योगाः स्युः षड्विधाः स्थानखेचराभ्यां तु सप्तमः।
उच्चमूलत्रिकोणादिगतानां स्थानमुच्यते।।50।। प्रश्न मार्ग 9/50, पृष्ठ 142

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3– <u>ग्रहों से बनने वाले योग–</u>

ज्योतिष शास्त्र में शुभ–अशुभ फल के सूचक कुल नव ग्रह माने गये हैं:– 1–सूर्य, 2–चन्द्र, 3–मङ्गल, 4–बुध, 5–गुरू, 6–शुक्र, 7–शनि, 8–राहु, 9–केतु। इन ग्रहों की परस्पर युति से बनने वाले योगों को ग्रहों से बनने वाला योग कहा जाता है।

4– <u>स्थान, भाव तथा ग्रहों से बनने वाले योग:–</u>

अनेक योग ऐसे मिलते हैं जो स्थान, भाव एवं ग्रह– इन तीनों के आधार पर बनते हैं। इन योगों में स्थान (राशि), भाव एवं ग्रह–इन तीनों का समान रूप से महत्त्व होता है।

5– <u>स्थान एवं भाव से बनने वाले योग:–</u>

अनेक योग स्थान एवं भाव के प्रभाववश बनते हैं। ऐसे योगों में स्थान तथा भाव का समान रूप से महत्त्व होता है।

उपर्युक्त योगों के भी अनेक सहायक तत्व होते हैं जो योगों के प्रभाव में वृद्धि या ह्रास करते हैं।

उपर्युक्त योगों को सम्यक् प्रकारेण समझने के लिए उनके आधारभूत तथ्यों तथा नियमों पर प्रकाश डाला जायेगा।

1– **ग्रहों की प्रकृति:–**

सभी ग्रहों की उनकी प्रकृति के अनुसार सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण से युक्त माना गया है।

सतोगुण प्रधान ग्रह– जिन ग्रहों में सतोगुण अधिक होता है, उनमें से अमृतमयी तथा शुभ फलदायक रश्मियां निकलती हैं।

रजोगुण प्रधान ग्रह– जिन ग्रहों में रजोगुण अधिक होता है, उनमें उभय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुण अर्थात् शुभ तथा अशुभ दोनों प्रभाव होते हैं।

तमोगुण प्रधान ग्रह– जिन ग्रहों में तमोगुण अधिक होता है, उनकी किरणें हानिकारक होती हैं तथा अशुभ फल देते हैं।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार गुरू, सूर्य, चन्द्रमा, सत्त्वगुणी, बुध और शुक्र रजोगुणी तथा शनि तथा मङ्गल तमोगुणी ग्रह हैं।[43]

2– शुभ तथा पाप ग्रहः–

कुछ ग्रहों को शुभ फलदायक तथा कुछ को अशुभ फलदायक अर्थात् पाप ग्रह माना गया है।[44]

शुभ ग्रह– बृहस्पति, शुक्र, बुध, वर्धमान चन्द्रमा शुभ ग्रह माने गये हैं।

पाप ग्रह– सूर्य, शनि, मङ्गल, क्षीण चन्द्रमा और राहु तथा केतु पाप ग्रह माने गये हैं।

शुभ ग्रह जन्म कुण्डली में शुभ फल प्रदाता होते हैं और पाप ग्रह अशुभ फल देने वाले होते हैं।

3– ग्रहों का उच्चत्व तथा नीचत्व होना–

ग्रहों का उच्च तथा नीच वर्गों में विभक्त किया गया है, उच्च ग्रह जातक को शुभ फल देते हैं तथा नीच ग्रह अशुभ फल देते हैं। उच्च ग्रह निम्न तालिका में दिखाये गये है।[45]

43- जीवसूर्येन्दवः सत्वं बुधशुक्रौ रजस्तथा।
सूर्यपुत्रधरापुत्रौ तमः प्रकृतिकौ द्विज।।23।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् अध्याय-3, श्लोक-23, पृष्ठ-48

44- अथ खेटा रविश्चन्द्रो मंगलश्च बुधस्तथा।
गुरूः शुक्रः शनी राहुः केतुश्चैते यथाक्रमम्।।11।।
तत्रार्क-शनि-भूपुत्राः क्षीणेन्दु-राहु केतवः।
क्रूराः शेषग्रहा सौम्याः, क्रूरः क्रूर युतो बुधः।।12।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् अध्याय 3, श्लोक 11 तथा 12, पृष्ठ 24

45 मेषो वृषो मृगः कन्या कर्को मीनस्तथा तुला।
सूर्यादीनां क्रमादेते कथिता उच्चराशयः।। 49।।
भागादशत्रयोऽप्यस्य स्तिथ्योऽप्यभिमता नखाः।।
उच्चात् सप्तमर्मं नीचं तैरेवांशैः प्रकीर्तितम् ।।50।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् अध्याय 3 श्लोक 49 तथा 50 पृष्ठ

CC0. Maharshi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्च ग्रह

क्रमसङ्ख्या	ग्रह	राशि	अंश
1.	सूर्य	मेष	10 अंशो तक
2.	चन्द्र	वृष	3 अंशो तक
3.	मंगल	मकर	28 अंशो तक
4.	बुध	कन्या	15 अंशो तक
5.	बृहस्पति	कर्क	5 अंशो तक
6.	शुक्र	मीन	27 अंशो तक
7.	शनि	तुला	20 अंशो तक

नीच ग्रह

क्रमसंख्या	ग्रह	राशि	अंश
1.	सूर्य	तुला	10 अंशो तक
2.	चन्द्र	वश्चिक	3 अंशो तक
3.	मंगल	कर्क	28 अंशो तक
4.	बुध	मीन	15 अंशो तक
5.	बृहस्पति	मकर्र	5 अंशो तक
6.	शुक्र	कन्या	27 अंशो तक
7.	शनि	मेष	20 अंशो तक

उच्च–नीच ग्रहों के बोध से कुण्डली का फलादेश स्पष्ट और प्रमाण–पूर्वक किया जा सकता है। यदि किसी जातक की कुण्डली में सूर्य मेष राशि में 10 अंशों तक का हो तो उच्च का कहलायेगा। दश अंशों से अधिक अंशों का होने पर वह सूर्य साधारण श्रेणी में ही गिना जायेगा। इसी प्रकार तुला राशि में भी 10 अंशों तक ही सूर्य नीच का रहता है, इससे अधिक अंशों का सूर्य निर्मल सूर्य माना जायेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

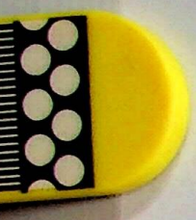

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4– ग्रहों का मैत्री विचार–

ग्रहों में परस्पर पांच प्रकार की मित्रता होती है। 1– अधिमित्र, 2– मित्र, 3– सम, 4– शत्रु 5– अधिशत्रु।[46]

कुण्डली में यदि कोई ग्रह अपने मित्र के घर में स्थित हो तो शुभ फल एवं शत्रु क्षेत्र में पहुंचकर अशुभ फल देता है। जातक पारिजात में इसे स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित तालिका दी गयी है।

पंचधा मैत्री चक्र

ग्रह / मित्र / शत्रु / सम	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
अतिमित्र	बृ.	0	चं. बृ.	शु.	सू. मं.	बु.	0
मित्र	0	मं. शु. श.	श.	बृ. के.	0	0	0
सम	चं. मं. शु.	सू. बु.	सू.	सू.	चं. बु.	चं. श.	चं. मं.बु. शु.
शत्रु	बु.	बृ.	शु.	मं. श.	श.	मं. बृ.	बृ.
अतिशत्रु	श.	0	बु.	चं.	शु.	सू.	सू.

(जातक पारिजातः–ग्रह नामरूपगुणभेदाध्यायः से उद्धृत)

46- तत्काले च निसर्गे च मित्रं स्यादधिमित्रकम्।
मित्रं मित्रसमत्वेतु शत्रुः शत्रुसमत्वके।।60।।
समो मित्ररिपुत्वे तृभयत्राधिरिपू रिपौ।
एवं विविच्य दैवज्ञो जातकस्य फलं वदेत्।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् अध्याय 3, श्लोक 60 तथा 61 पृष्ठ 35

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

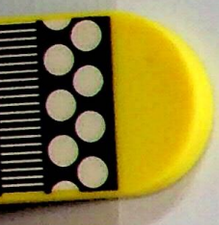

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊपर जो मैत्री--चक्र दिया गया है वह ग्रहों की पञ्चधा मैत्री का ही है, इसके अतिरिक्त ग्रहों में तात्कालिक मैत्री भी होती है।

तात्कालिक मैत्री

जो ग्रह जिस स्थान पर होता है उससे 2,3,4,10,11 और 12वें भाव में स्थित ग्रह के साथ तात्कालिक मित्रता रखता है तथा 1,5,6,7,8 और 9वें भाव में स्थित ग्रह के साथ तात्कालिक शत्रुता रखता है।[47] जातक पारिजात में इसे स्पष्ट करने हेतु निम्नलिखित तालिका दी गयी है:-

तात्कालिक मैत्री-चक्र

ग्रह	तात्कालिक मित्र	तात्कालिक शत्रु
सूर्य	शुक्र, बृह. रा. के.	चन्द्र, मं., श., बु.
चन्द्रमा	मं., श., शु. रा.	सू., बु., शु., रा.
मंगल	चं., श., बृ., के.	सू., बु., शु., रा.
बुध	बृ., शु., रा., के.	सू., चं., मं., श.
बृहस्पति	सू., बु., मं., के.	चं., शु., श., रा.
शुक्र	सू., बु., चं., रा.	मं., बृ., श., के.
शनि	चं., मं., रा., के	सू., बु., बृ., शु.
राहु	सू., बु., शु., चं., श.	मं., बु., के.
केतु	सू., बु., बृ., मं., श.	चं., शु., रा.

(जातक पारिजातः-ग्रह नामरूपगुणभेदाध्यायः से उद्घृत)

---

47 दशायबन्धुसहज स्वान्त्यस्थास्ते परस्परम्।
तत्काले सुहृदोऽन्यत्र मंस्थिताः रिपवो मताः।।59।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् श्लोक 3/59. पृष्ठ-35

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रहों का भाव कारकत्वः–

प्रत्येक भाव का विशेष कारक ग्रह होता है। यदि उस भाव में वह कारक ग्रह बैठा हो या उसकी दृष्टि हो तो वह भाव अत्यन्त ही उच्च और श्रेष्ठ फल देने में सहायक होता है। निम्नलिखित तालिका में प्रत्येक भाव का कारक ग्रह स्पष्ट किया गया है।[48]

क्र0सं0	ग्रह	सम्बन्धित कारक भाव
1.	सूर्य	पहला तथा नवां भाव
2.	चन्द्रमा	चौथा भाव
3.	मङ्गल	तीसरा छठा भाव
4.	बुध	चौथा, दसवां भाव
5.	गुरू	दूसरा, पांचवा, नवां, दसवां तथा ग्यारहवां भाव
6.	शुक्र	सातवां भाव
7.	शनि	छठा, आठवां, दसवां तथा बारहवां भाव

6– ग्रहों का विशिष्ट प्रभावों का कारकत्व होनाः–

प्रत्येक ग्रह कुछ विशिष्ट प्रभावों तथा प्रवृत्तियों के कारक होते हैं जो निम्नलिखित तालिका में स्पष्ट किया गया है।[49]

48- ग्रहों के भावकारकत्व
द्युमणिरमरमन्त्री भूसुतः सोमसौम्यौ
गुरूरिनतनयारौ भार्गवो भानुपुत्रः।
दिनकरदिविजेज्यौ जीवभानुज्ञमन्दाः
सुरगुरूरिनसूनुः कारकाः स्युर्विलग्नात्।।49।। जातक परिजात 2/51, पृष्ठ-68

49- गहों का कारकत्वः-
शुक्रः शुक्रं च नेत्रं च चन्द्रमाः मनसस्तथा।
आत्मा वै दिनकृत्तत्र जीवो जीवितसौख्दः।।16।।
क्रोधः पराक्रमः भौमो बुधो बालत्वधीमतः।
शनिर्दुःखप्रदो ज्ञेयः प्रपदः पार्श्वकस्तथा ।। 17।।
गहुरैश्वर्यकं विदिध योगेक्षणवशान्मुने।
संक्षेपेणैतदुदितमन्यद् बुद्ध्यनुसारतः । 18।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् अध्याय 12, श्लोक-16, 17 तथा 18, पृष्ठ 127

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

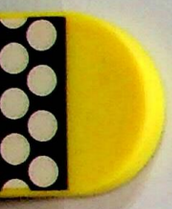

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1.	सूर्य	आत्मा
2.	चन्द्रमा	मन
3.	मङ्गल	क्रोध तथा पराक्रम
4.	बुध	चञ्चलता तथा बुद्धि
5.	गुरू	जीवनी शक्ति
6.	शुक्र	वीर्य
7.	शनि	दुःखदायक
8.	राहु	ऐश्वर्यदायक
9.	केतु	हानिकारक

7. ग्रहों का स्वामित्वः–

बारह राशियों के नव स्वामी हैं। नीचे राशियां और उनके स्वामी स्पष्ट किए गये हैं।[50]

क्र0सं0	राशियां	सम्बन्धित राशियों के स्वामी
1.	मेष	मंङ्गल
2.	वृष	शुक्र
3.	मिथुन	बुध
4.	कर्क	चन्द्र
5.	सिंह	सूर्य
6.	कन्या	बुध
7.	तुला	शुक्र
8.	वृश्चिक	मंङ्गल

50- मेषादि द्वादश राशियों के स्वामी
धराजशुक्रज्ञशशीनसौम्यार्किगुरूजीवार्कजमन्दजीवाः
क्रमेण मेषादिषु राशिनाथास्तदंशनाथाश्चेति-
वदन्ति सन्तः।।25।। जातक परिजात ।/1 पृष्ठ 11

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

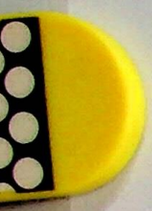

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

9.	धनु	बृहस्पति
10.	मकर	शनि
11.	कुम्भ	शनि
12.	मीन	बृहस्पति

8– ग्रहों की दृष्टि–

प्रत्येक ग्रह अपने से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से, तीसरे और दसवें भाव की एक चरण दृष्टि से, पांचवें और नवें भाव को दो चरण दृष्टि से तथा चौथे–आठवें भाव की तीन चरणों की दृष्टि से देखता है।[51] परन्तु मंगल चौथे–आठवें भाव को, गुरू पांचवें–नवें भाव को तथा शनि तीसरे–दसवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है।[52]

ग्रहों की दृष्टि

क्रम संख्या	ग्रह दृष्टि	एक चरण दृष्टि	दो चरण दृष्टि	तीन चरण दृष्टि	सम्पूर्ण दृष्टि
1.	सूर्य	3,10	9,5	8,4	7
2.	चन्द्र	3,10	9,5	8,4	7
3.	मंगल	3,10	9,5	X	4,7,8
4.	बुध	3,10	9,5	8,4	7
5.	बृहस्पति	3,10	X	8,4	5, 7, 9
6.	शुक्र	X	9,5	9,5	7
7.	शनि	X	9,5	8,4	3,7,10
8.	राहु	3,6	2,10	8,4	5,7,9
9.	केतु	3,6	2,10	8,4	5,7,9

51- पादेक्षणं भवति सोदरमानराश्यो-
रर्धं त्रिकोणयुगलेऽखिलखेचराणाम्।
पादोनदृष्टिनिचयश्चतुरस्रयुग्मे
सम्पूर्णदृग्लमनङ्गगृहे वदन्ति॥३०॥ जातक परिजात 7/30, पृष्ठ 56

52 शनिरतिबलशाली पाददृग्वीर्ययोगे
सुरकुलपतिमन्त्री कोणदृष्टौ शुभः स्यात्।
त्रितयचरणदृष्ट्या भूकुमारः समर्थः
सकलगगनवासाः सप्तमे दृग्बलाढ्याः॥३१॥ जातक पारिजात 7/31, पृष्ठ 56

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

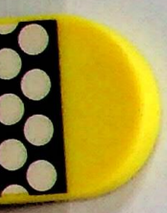

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

9– ग्रहों के बल का अनुमानः–

ग्रहों के बल छः प्रकार के माने गये हैं– 1– स्थान बल, 2– दिग बल, 3– काल बल, 4– चेष्टा बल, 5– दृग्बल बल एवं 6– नैसर्गिक बल

1– स्थान बल–

जो ग्रह अपनी राशि, मित्रग्रह की राशि, उच्च राशि या मूलत्रिकोण राशि में ही वह स्थानबली कहलाता है। अपने नवांश, द्रेष्काण या पारिजातादि वैशेषिकबर्ग में स्थित ग्रह स्थानबली कहा जाता है। अष्टक वर्ग में जिस राशि पर 4 से अधिक रेखाएं हों, वहां स्थित ग्रह भी स्थानबली माना जाता है। इस प्रकार देखा जाता हैं कि कतिपय राशि या स्थानों पर ग्रह के स्थित हो जाने पर उसे बल मिलता है। इस प्रकार के बल को स्थान बल कहते हैं।[53]

2– दिग्बल–

दिशा में स्थितिवश प्राप्त होने वाले बल को दिग्बल कहते हैं। कुण्डली में लग्न पूर्व को,दशम दक्षिण को, सप्तम पश्चिम को तथा चतुर्थ भाव उत्तर को सूचित करता है। तथा बुध, गुरू पूर्व में, सूर्य मङ्गल दक्षिण में, शनि पश्चिम में और चन्द्रमा एवं शुक्र उत्तर में बली होते हैं। इस प्रकार लग्न में बुध एवं गुरू दशम में सूर्य एवं मङ्गल, सप्तम में शनि, तथा चतुर्थ में चन्द्रमा एवं शुक्र शुक्र दिग्बल के कारण बलवान् हो जाते हैं।[54]

3– कालबल–

समयानुसार प्राप्त होने वाला बल कालबल कहलाता है। यथा–

53– स्वोच्चत्रिकोणस्वसुहृद्दृग्गाणराश्यंशवैशेषिकवर्गवन्तः।
आरोहवीर्याधिकबिन्दुकास्ते खेचारिणः-
स्थानबलाधिकाः स्युः ।।33।। जातक पारिजात 2/33, पृष्ठ-59

54– विलग्नपातालवधून भोगा बुधार्कजौ भृगुसूनुचन्द्रौ।
मन्दो धरासूनुदिवाकरौ चेत्क्रमेण ते दिग्बलशालिनः स्युः ।।35।। जातक पारिजात 2/35, पृष्ठ 59

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

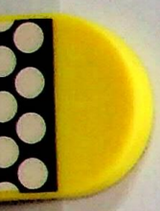

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चन्द्रमा, मङ्गल एवं शनि रात्रि में सूर्य, गुरू एवं शुक्र दिन में तथा बुध दिन रात दोनों में बली होता है। सभी ग्रह अपनी–अपनी काल होरा में, अपंने वर्ष में (जिसमें वे वर्षेश हों), अपने मास में तथा अपने दिन में बली होते हैं तथा शुभ ग्रह शुक्ल पक्ष एवं पाप ग्रह कृष्ण पक्ष में बली होते हैं।[55]

4– चेष्टाबल–

सूर्य एवं चन्द्रमा उत्तरायण (मकर से मिथुन तक 6 राशियों) मं बलवान होते हैं। मंङ्गल, बुध, गुरू, शुक्र एवं शनि– ये यदि ग्रह युद्ध में विजयी हों, वक्रगति हो या चन्द्रमा के साथ हों तो चेष्टाबली कहलाते हैं।[56]

5– दृक्बल–

दृष्टि के प्रभाववश प्राप्त होने वाले बल को दृक्बल कहते हैं। जिन ग्रहों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो वे दृक्बली होते हैं और जिन पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो वे निर्बल कहलाते हैं।

6– नैसर्गिक–

ग्रहों के स्वाभाविक बल को नैसर्गिक बल कहते हैं। इस दृष्टि से सूर्य सर्वाधिक बली तथा शनि सबसे निर्बल होता है। शनि से मङ्गल, मङ्गल से बुध, बुध से गुरू, गुरू से शुक्र, शुक्र, से चन्द्रमा एवं चन्द्रमा से सूर्य निसर्गतः बलवान् होता है।[57]

7– ग्रहों की अवस्था–

ग्रहों के फल देने की क्षमता का मूल्याङ्कन करने के लिए उनकी 5 अवस्थायें मानी गयी हैं– 1– बाल्यावस्था, 2– कुमारावस्था, 3– युवावस्था, 4– वृद्धावस्था, 5–

55- निशीन्दुमन्दावनिजाः परेऽहनि स्वकीयहोरासममासवासराः।
सितादिपक्षद्वयगाः शुभाशुभा बुधः सदा-
कालजवीर्यशालिनः।।36।। जातक पारिजात 2/36, पृष्ठ-60

56- जैत्रा वक्रसमागमोपगसितज्ञारामरेज्यासिताः,
दिव्याशायनगेन्दुतिग्मकिरणौ चेष्टाबलांशाधिकाः।
सौम्यक्षेपयुता महीसुतमुखाश्चेष्टाबलाढ्याः क्रमात्
नैसर्गस्य बलाधिकाः-
शनिकुजज्ञाचार्यशुक्रेन्दिनाः ।।37।। जातक पारिजात 2/37, पृष्ठ-60

57 तत्रैव

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

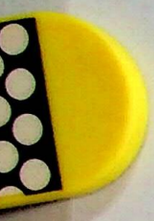

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मृतावस्था। विषम राशियों में 1 से 6 अंश तक स्थित ग्रह की बाल्यावस्था, 7 से 12 अंश तक स्थित ग्रह की कुमारावस्था, 13 से 18 अंश तक स्थित ग्रह की युवावस्था, 19 से 24 अंश तक स्थित ग्रह की वृद्धावस्था तथा 25 से 30 अंश तक स्थित ग्रह की मृतावस्था होती है। समराशियों में इसके विपरीत 1 से 6 तक स्थित ग्रह की मृतावस्था, 6 से 12 अंश तक स्थित ग्रह की बृद्धावस्था, 13 से 18 अंश तक स्थित ग्रह की युवावस्था, 19 से 24 अंश तक स्थिति ग्रह की कुमारावस्था तथा 25 से 30 अंश तक स्थित ग्रह की बाल्यावस्था होती है।[58]

11– राशियों के भेदः–

जातक शास्त्र में राशियों को भी उनकी प्रकृति के अनुसार अनेक भेदों में विभक्त किया गया है।[59] जैसे–

1– ह्रस्व तथा दीर्घ

2– स्त्री तथा पुरूष

3– दिशा

4– क्रूर तथा सौम्य

5– चर, स्थिर तथा द्विस्वभाव

6– पृष्ठोदय तथा शीर्षोदय

7– चतुष्पादादि भेद

8– वर्ण भेद

9– दिवा तथा रात्रि बली

58– बालः कुमारोऽथ युवा च वृद्धो मृतश्च राशावयुजि क्रमेण।
त्रिंशल्लवैर्व्यत्ययतः समे स्युरेकैकशोऽशाः पुनरेव कार्याः ।।84।। जातक पारिजात 2/84, पृष्ठ-81

59– ह्रस्वा गोऽजघटाः समा मृगनृयुक्चापान्त्यकर्कटिकाः
दीर्घा वृश्चिककन्यकाहरितुला मेषादिपुंयोषितौ।
प्रागादिक्रियगोनृयुक्कटक भान्येतानि कोणान्विता-
न्याहुः क्रूरशुभौ चरस्थिरतरद्वन्द्वानि तानि क्रमात् ।।13।।
वीर्योपेता निशि वृषनृयुक्कर्किचापाजनक्राः
हित्वा युग्मं भवनमपरे पृष्ठपूर्वादयश्च।
शेषाः शीर्षोदयदिनबलाः श्रेष्ठता राशयस्ते
मीनाकीरद्वयमुभयतः काललग्ने समेते ।।14।। जातक पारिजात 1/13 तथा 1/14, पृष्ठ-5 तथा 6

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kanpur Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

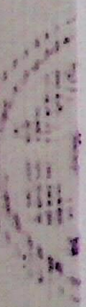

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रत्येक राशियों के उपर्युक्त सभी भेदों को स्पष्ट करने के लिए जातक पारिजात में निम्नलिखित तालिका दी गयी है[60]:-

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ह्रस्व/दीर्घादि भेद	ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	सम
स्त्री /पुरूश	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री
दिशा	पूर्व	दक्षिण	पष्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पष्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
क्रूर /सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
चर /स्थिर/द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व.	चर	स्थिर	द्विस्व.
पृष्ठोदय/शीर्षोदय	पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीर्षो	पृष्ठो.	शीर्षो	शीर्षो	शीर्षो	शीर्षो	पृष्ठो.	पृष्ठो.	शीर्षो	उभयो
चतुष्पदादि भेद	चतु	चतु	द्विपद	जल	चतु	द्विपद	द्विपद	की. /ज.	द्वि /च.	च. /ज.	द्विपद	जल
वर्णभेद	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
दिवा /रात्रिबली	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	रात्रि	रात्रि	दिवा	संध्या

12- राशियों की दृष्टि:-

महर्षि पाराशर ने ग्रहनिष्ठ दृष्टियों की तरह राशिनिष्ठ दृष्टियों का भी विवरण दिया है। उन्होंने राशियों की दृष्टियों को ज्ञात करने के लिये एक दृष्टि चक्र बनाने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है जिससे दृष्टिभेद सर्वथा स्पष्ट हो जाता है।[61]

पूर्व में मेष, वृष, दक्षिण में कर्क, सिंह, पश्चिम में तुला वृश्चिक, उत्तर में मकर कुम्भ लिखें।

अग्निकोण में मिथुन नैऋत्य कोण में कन्या, वायव्य में धनु तथा ईशान में मीन राशि की स्थापना करने से दृष्टि चक्र बनता है।

इस चक्र को चौकोर या वृत्ताकार लिखा जाता है।

60- जातक पारिजात- राशिशीलाध्याय- पृष्ठ-7

61- दृष्टिचक्रोद्धार:-
चक्रन्यासमहं वक्ष्ये यथावद् ब्रह्मणोदितम्।
यस्यविज्ञान मात्रेण दृष्टिभेद: प्रकाश्यते ।।3।।
पूर्व मेषवृषौ लेख्यौ कर्कसिंहौ च दक्षिणे।
तुलाली वारूणे विप्र! मृगकुम्भौ तथोत्तरे ।।4।।
अग्निकोणे तु मिथुनं नैऋत्यां कन्यकां द्विज।
वायव्यां धनुषं लेख्यमीशाने मीनमालिखेत् ।।5।।
चतुरस्रं च विन्यासं ज्ञायते द्विजसत्तम।
वृत्ताकारं विशेषेण ब्रह्मणा वेदितं पुरा ।।6।। बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 2/3, 4, 5, 6,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

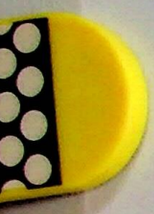

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दृष्टि चक्र[62]

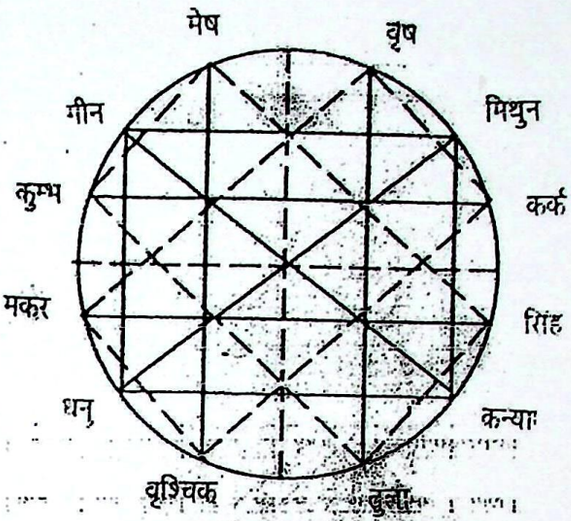

सीधी रेखा पर पड़ने वाली राशियाँ 'अभिमुख' कहलाती हैं। यह प्रत्यक्ष है। इस चक्र के अनुसार निर्णय करने पर निष्कर्ष निकलता है कि–

मेष वृश्चिक, कर्क कुम्भ, तुला वृष, मकर सिंह एक सीध में या सम्मुख पड़ रही है। अतः ये जोड़े अपने–अपने जोड़े की दूसरी राशियों को देखते हैं। यह अभिमुख दृष्टि है। पार्श्व दृष्टि के सिद्धान्त से आजू–बाजू की रेखाओं पर मेष की दृष्टि सिंह तथा कुम्भ पर कर्क की वृश्चिक तथा वृष पर इत्यादि प्रकार से निश्चित होती है। इसी बात को सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि सभी चर राशियाँ, अपने से दूसरी स्थिर को छोड़कर शेष सब स्थिर राशियों को देखती हैं।

उपर्युक्त कथन को पुनः स्पष्ट करते हुए महर्षि पाराशर ने कहा है कि अपनी पास की राशि को छोड़कर चर राशि तीन स्थिरों को, स्थिर राशि समीपस्थ चर रहित तीन चरों को व द्विस्वभाव स्वयं को छोड़कर शेष तीन द्विस्वभावों को देखती हैं।[63]

62– वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् पृष्ठ-108

63– यथा चरः स्थिरानेवं स्थिरः पश्यति वै चरान्।
द्विस्वभावों विनात्मानं द्विस्वभावानम् प्रपश्यति।।
समीपस्थं परित्यज्य राशीस्त्रीन् ननु पश्चति ।।7।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 9/7, पृष्ठ-109

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

13– ग्रहों का रोग कारकत्व–

ग्रहों का स्वभाव सदैव रोगकारक नहीं होता। ग्रहों की प्रकृति त्रिगुणात्मक है तथा सम्पूर्ण प्रकृति एवं मानव शरीर भी त्रिगुणात्मक है। अतएव इनमें एक लयबद्धता (Harmoney) विद्यमान रहता है। ग्रह कुछ विशेष स्थितियों में ही मनुष्य के शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न करते हैं।

रोगों के सम्बन्ध में ग्रहों की निम्नलिखित स्थितियों के आधार पर विचार किया जाता है।[64]

1– छठे भाव में स्थित ग्रह

2– अष्टम भाव में स्थित ग्रह

3– बारहवें भाव में स्थित ग्रह

4– छठे भाव का स्वामी

5– छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित ग्रह

सभी ग्रह उपर्युक्त स्थितियों में युति, दृष्टि, इष्ट या अनिष्ट भाव तथा राशि में स्थिति के अनुसार रोगोत्पत्ति के कारण बनते हैं जो अग्रलिखित है–

1– सूर्य रोग कारक की स्थिति में–

जब सूर्य रोग कारक की स्थिति में होता है तो वह मन्दाग्नि, अतिसार, हृदय रोग, नेत्र रोग, चर्मरोग, पित्त रोग, बात प्रकोप आदि शारीरिक रोग तथा चित्त व्याकुलता तथा अपस्मार आदि मानसिक रोगों का कारण बनता है।[65]

64– रोगस्य चिन्तामपि रोगभावस्थितैर्ग्रहैर्वा व्यायमृत्युसंस्यैः।
रोगेश्वरेणापि तदन्वितैर्वा द्वित्रयादिसम्बादवशाद्वदन्तु ।।1।।फल दीपिका अध्याय रोग निर्णय श्लोक-14/1, पृष्ठ-265

65– पित्तोष्णज्वरतापदेहतपनापस्मारहृत्क्रोडज-
व्याधीन्वक्ति रदिर्दृ गार्त्यरिभयं त्वग्दोषमस्थिर्त्रुतिम्।
काष्ठाग्न्यस्त्रविषार्तिदारतनयव्यापच्चतुष्पाद्भयं
चोरक्ष्मापतिधर्मदेवफणभृद्भूतेशभूतं भयम् ।।2।। तत्रैव 14/2, पृष्ठ-265

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– चन्द्रमा रोग कारक स्थिति में–

जब चन्द्रमा रोग कारक स्थिति में होता है तो वह रक्त, विकार, कफ रोग, पीलिया, जलोदर आदि शारीरिक रोग तथा निद्रारोग, आलस्य तथा अनेक प्रकार के मानसिक रोगों को उत्पन्न करता है।[66]

3– मङ्गल रोग कारक स्थिति में–

जब मङ्गल रोगकारक स्थिति में होता है तो वह मित्र प्रकोप, विषपीड़ा, नेत्ररोग चर्मरोग, अङ्ग या हड्डी का टूटना आदि शारीरिक रोग तथा अपस्मार आदि मानसिक रोग उत्पन्न करता है।[67]

4– बुध रोग कारक स्थिति में–

जब बुध रोग कारक स्थिति में होता है तो वह कर्ण रोग आन्त्र रोग, उदर विकार, सङ्ग्रहणी आदि शारीरिक रोग तथा भ्रान्ति, जड़ता तथा मूर्च्छा आदि मानसिक रोग होते हैं।[68]

5– गुरू रोग कारक स्थिति में–

जब गुरू रोग कारक स्थिति में होता है तो आन्त्र स्वर, कर्ण रोग, कफज आदि शारीरिक तथा मोह जन्य, शोकजन्य, मूर्च्छा आदि मानसिक रोग होते हैं।[69]

66– निद्रालस्यकफातिसारपिटकाः शीतज्वरं चन्द्रमाः
श्रङ्गयन्जाहतिमग्निमाद्यमरूचिं योषिव्द्यथाकामिलाः।
चेतःशान्तिनसृग्विकारमुदकाद्भीर्ति च बालग्रहाद्
दुर्गाकिन्नरधर्मदेवफणभृद्यक्ष्याश्रव भीतिं वदेत् ।।3।। फलदीपिका 14/3, पृष्ठ-265

67– तृष्णासृक्कोपपित्तज्वरमनलविषास्त्रार्तिकुष्ठाक्षिरोगान्।
गुल्मापस्मारमज्जाविहतिपरूषतापमिकादेहभङ्गान्।
भूपारिस्तेनपीडां सहजसुतसुहृद्वैरियुद्धं विधत्ते
रक्षोगन्धर्वघोरग्रहभयमवनीसूनुरूर्ध्वाङ्गरोगम् ।।4।। तत्रैव 14/4, पृष्ठ-266

68– भ्रान्तिं दुर्वचनं दृगामयगलघ्राणोत्थरोगं ज्वरं
पित्तश्लेष्मसमीरजं विषमपि त्वग्दोषपाण्ड्वामयान्।
दुःस्वप्नं च विचर्चिकाग्निपतने पारूष्यबन्धश्रमान्।
गन्धर्वक्षितिहर्म्यवाहिभिरपि ज्ञो वक्ति पीडां ग्रहैः ।।5।।तत्रैव 14/5, पृष्ठ-266

69– गुल्मान्त्रज्वरशोकमोहकफजान् श्रोत्रर्तिमोहामयान्
देवस्थाननिधिप्रपीडनमहीदेवेशशापोदभ्वम् ।।6।। तत्रैव 14/6
रोगं किन्नरयक्षदेवफणभृद्विद्याधराद्युद्भवं
जीवः सूचयति स्वयं बुधगुरूत्कुष्टापचारोद्भवम् ।।6।।, पृष्ठ-266

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

6— शुक्र रोग कारक स्थिति में—

शुक्र रोगकारक स्थिति में हो तो मोतियाबिन्द, मूत्र रोग, वीर्य विकार, सन्धि रोग, क्षय रोग, स्त्रीजन्य रोग तथा नपुंसकता आदि शारीरिक रोग तथा कामोन्माद आदि मानसिक रोग पैदा होते हैं।[70]

7— शनि रोगकारक स्थिति में—

यदि शनि रोग कारक स्थिति में हो तो पेट रोग, उदरशूल, सन्धि रोग, कफजन्य रोग स्नायुरोग आदि शारीरिक तथा भ्रान्ति आदि मानसिक रोग हो जाते हैं।[71]

8— राहु रोग कारक स्थिति में—

यदि राहु रोग कारक स्थिति में हो तो हृदय रोग, विष कीटाणुओं के रोग, पैर में चोर गण्डमाला आदि शारीरिक रोग तथा अरूचि, अपस्मार तथा प्रभार आदि मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं।[72]

9— केतु रोग कारक स्थिति में—

यदि केतु रोग कारक स्थिति में हो तो श्वेत कुष्ट, गर्भस्राव, चर्मरोग, विष व्याधि आदि शारीरिक रोग तथा चिन्ता—ग्रस्तता आदि मानसिक रोग होते हैं।[73]

70— पाण्डुश्लेष्ममरूत्प्रकोपनयनव्यापत्प्रमेहामयान्
गुह्यस्यामयमूत्रकृच्छमदनव्यापत्तिशुक्लस्तुतिम्।
वारस्त्रीकृतदेहकान्तिविहतिं शोषामयं योगिनी-
यक्षीमातृगणाद्भ्यं प्रियसुहृद्भङ्ग सितः सूचयेत् ।।7।। फलदीपिका 14/7, पृष्ठ-266

71— वातश्लेष्मविकारपादविहतिं चापत्तितन्द्राश्रमान्।
भ्रान्ति कुक्षिरूगन्तरूष्णभृतकध्वंसं च पार्श्वाहतिम्
भार्यापुत्रविपत्तिमङ्गविहतिं हृत्तापमर्कात्मजो
वृक्षाश्मक्षतिमाह कश्मलगणैः पीडां पिशाचादिभिः ।।8।। तत्रैव 14/8

72— स्वर्भानुर्हृदि तापकुष्ठविमतिव्याधिं विषं कृत्रिमं
पादाति च पिशाचपन्नगभयं भार्यातनूजापदम्।
ब्रह्मक्षत्रविरोधशत्रुजभयं केतुस्तु संसूचयेत
प्रेतोत्थं च भयं विषं च गुलिको देहार्तिमाशौचजम् ।।9।। तत्रैव 14/9, पृष्ठ-266

73— तत्रैव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

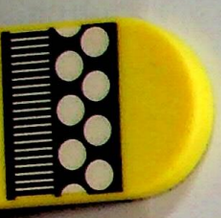

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

14– रोग विचार के परिप्रेक्ष्य में राशियों की भूमिका:–

राशियों का स्वरूप शुभाशुभत्व, बल एवं अन्य सञ्ज्ञाएं ज्योतिष शास्त्र के सामान्य ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक बतलायी गयी हैं। यहां हम उनका विचार न करके केवल रोग विचार के लिए उपयोगी बातों पर ही प्रकाश डालेंगे।

इस अङ्ग विभाजन का यदि विस्तारपूर्वक अवलोकन किया जाय, तो यह कहा जा सकता है कि मेष आदि 12 राशियां मनुष्य के शरीर के निम्नलिखित अंङ्गों का प्रतिनिधित्व करती हैं[74]:–

राशियां	सम्बन्धित अङ्ग
मेष	शरीर एवं सिर के बाल, मस्तिष्क
वृष	होठ, दांत, मुंह, गाल, आंख, कान, नाक जिह्वा एवं गला
मिथुन	कन्धा, ग्रीवा, भुजा, कोहनी, मणिबन्ध, हथेली, वक्ष एवं स्तन
कर्क	फेफड़ा, श्वासनली एवं हृदय
सिंह	नाभि, पेट, आंते, जिगर, तिल्ली
कन्या	कमर, नितम्ब
तुला	बस्ति, मूत्राशय एवं गर्भाशय का ऊपरी भाग
वृश्चिक	गर्भाशय, जनेन्द्रिय एवं गुदा
धनु	ऊरू, दोनों जंघाओं।
मकर	जानु एवं घुटना।
कुम्भ	जंघा, पिंडली।
मीन	टखना, पैर, पादतल एवं पैर की उंगलियाँ।

74- कालात्मकस्य च शिरोमुखदेशवक्षो-
हृत्कुक्षिभागकटिवस्तिरहस्यदेशाः।
ऊरू च जानुयुगलं परतस्तु जङ्घे
पादद्वयं क्रियमुखावयवाः क्रमेण ।।8।। जातक पारिजात 1/8, पृष्ठ-3

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मेषादि राशियाँ एवं उनके रोग–

मेष आदि द्वादश राशियाँ स्वभावतः जिन–जिन रोगों को उत्पन्न करती हैं वे रोग इस प्रकार हैं[75]:–

राशियां	रोग
मेष	नेत्ररोग, मुखरोग, मेदरोग, सिरदर्द, शारीरिक रोग, मानसिक तनाव, उन्माद एवं अनिद्रा।
वृष	गले एवं श्वासननली के रोग, आंख, नाक एवं गले के रोग।
मिथुन	रक्तविकार, श्वास, फुफ्फुस रोग एवं मज्जारोग।
कर्क	हृदयरोग एवं रक्त विकार।
सिंह	उदरविकार, मेदवृद्धि एवं वायुविकार।
कन्या	जिगर, तिल्ली, अमाशय के विकार, अपचन, मन्दाग्नि एवं कमर में दर्द।
तुला	मूत्राशय क रोग, मधुमेह, प्रदर, मूत्रकृच्छ एवं बहुमूत्र।
वृश्चिक	गुप्तरोग, अर्श, भगंदर, उपदंश, शुक्र एवं संसर्ग–जन्य रोग।
धनु	यकृत् दोष,ऋतु विकार, अस्थिभङ्ग, मज्जारोग एवं रक्त दोष।
मकर	वातरोग, शीतरोग, चर्मरोग एवं रक्तचाप।

75– पैत्यज्वरोष्णैर्जठराग्निनाजे
वृषे त्रिदोषैर्दहनाच्च शस्त्रात्।
युग्मे तु कालश्वसनोष्णशूलै–
रून्मादवातारूचिभिः कुलीरे ।।17।।
मृगज्वरस्फोटजशत्रु जं हरौ
स्त्रियां स्त्रियागुह्यरूजा प्रपातनात्।
तुलाधरे धीज्वरसंनिपातजं
प्लीहालिपाण्डुग्रहणीरूजालिनि ।।18।।
वृक्षाम्बुकाष्टायुधजं हयाङ्ग
मृगे तु शूलारूचिधीभ्रमाद्यैः।
कुम्भे तु कासज्वरयक्ष्मरोगै
र्जले विपद्वा जलरोगतोऽन्त्ये ।।19।। फलदीपिका अध्याय-रोग निर्णय श्लोक-17, 18, 19, पृष्ठ-274

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मेषादि राशियाँ एवं उनके रोग–

मेष आदि द्वादश राशियाँ स्वभावतः जिन–जिन रोगों को उत्पन्न करती हैं वे रोग इस प्रकार हैं[75]:–

राशियां	रोग
मेष	नेत्ररोग, मुखरोग, मेदरोग, सिरदर्द, शारीरिक रोग, मानसिक तनाव, उन्माद एवं अनिद्रा।
वृष	गले एवं श्वासननली के रोग, आंख, नाक एवं गले के रोग।
मिथुन	रक्तविकार, श्वास, फुफ्फुस रोग एवं मज्जारोग।
कर्क	हृदयरोग एवं रक्त विकार।
सिंह	उदरविकार, मेदवृद्धि एवं वायुविकार।
कन्या	जिगर, तिल्ली, अमाशय के विकार, अपचन, मन्दाग्नि एवं कमर में दर्द।
तुला	मूत्राशय क रोग, मधुमेह, प्रदर, मूत्रकृच्छ एवं बहुमूत्र।
वृश्चिक	गुप्तरोग, अर्श, भगंदर, उपदंश, शुक्र एवं संसर्ग–जन्य रोग।
धनु	यकृत् दोष,ऋतु विकार, अस्थिभङ्ग, मज्जारोग एवं रक्त दोष।
मकर	वातरोग, शीतरोग, चर्मरोग एवं रक्तचाप।

75– पैत्त्यज्वरोष्णैर्जठराग्निनाजे
वृषे त्रिदोषैर्दहनाच्च शस्त्रात्।
युग्मे तु कालश्वसनोष्णशूलै–
रून्मादवातारूचिभिः कुलीरे ।।17।।
मृगज्वरस्फोटजशत्रु जं हरौ
स्त्रियां स्त्रियागुह्यरूजा प्रपातनात्।
तुलाधरे धीज्वरसंनिपातजं
प्लीहालिपाण्डुग्रहणीरूजालिनि ।।18।।
वृक्षाम्बुकाष्टायुधजं हयाङ्ग
मृगे तु शूलारूचिधीभ्रमाद्यैः।
कुम्भे तु कासज्वरयक्ष्मरोगै
र्जले विपद्वा जलरोगतोऽन्त्ये ।।19।। फलदीपिका अध्याय–रोग निर्णय श्लोक– 17, 18, 19 पृष्ठ–274

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुम्भ	जलोदर, मानसिक रोग, ऐठन एवं गर्मी।
मीन	असहिष्णुता (एलर्जी), चर्मरोग, रक्त विकार, आमवात, आंव, ग्रन्थि, गठिया।

16– रोग विचार के प्रसङ्ग में भावों की भूमिका–

कुण्डली में लग्न से प्रारम्भ कर 12 भाव माने गये हैं, इनके नाग है– 1– तनु, 2– धन,, 3– सहज, 4– सुख, 5– सुत, 6– रोग, 7– जाया, 8– मृत्यु, 9– भाग्य, 10– कर्म, 11– लाभ एवं 12– व्यय। इन द्वादश भावों द्वारा मानवजीवन से सम्बन्धित प्रायः सभी विषयों के बारे में जाना जा सकता है। भावों के स्वरूप, संज्ञा, शुभाशुभत्व एवं अन्य बातों का विस्तार से विवेचन ज्योतिष शास्त्र के प्रायः सभी ग्रन्थों में किया गया है। यहाँ रोग विचार के लिए उपयुक्त पक्ष का विचार किया जायेगा।

डा0 शुकदेव चतुर्वेदी ने विभिन्न जातक ग्रन्थों के आधार पर सभी भावों तथा विभिन्न रोगों के सम्बन्धों पर प्रकाश डाला है जो निम्नलिखित है।[76]

प्रथम भाव–

इस भाव से सिर दर्द, मानसिक रोग, नजला एवं दिमागी कमजोरी का विचार किया जाता है। यह भाव व्यक्ति के स्वास्थ्य का प्रतिनिधि भाव है। व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता का इस भाव से मूल्याङ्कन होता है।

द्वितीय भाव–

इस भाव से मृत्यु का विचार होता है। यह भाव नेत्र रोग, कर्ण रोग, मुख रोग, नासा रोग, दांतों के रोग तथा गले का खराबी का प्रतिनिधित्व करता है।

तृतीय भाव–

इस भाव से कण्ठ एवं गले की खराबी, गण्डमाला, श्वास, खांसी, दमा, फेफड़े

76– शुकदेव चतुर्वेदी- ज्योतिष शास्त्र में रोग विचार पृष्ठ 22 तथा 23

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के रोग एवं हाथ में होने वाले विकारों लूलापन आदि का विचार किया जाता है।

चतुर्थ भाव–

इस भाव से छाती, हृदय एवं पसलियों में होने वाले रोगों का विचार किया जाता है। पागलपन एवं अन्य मानसिक विकारों के विचार में भी इस भाव का उपयोग होता है।

पंञ्चम भाव–

इस भाव से मन्दाग्नि, अरूचि, पित्तरोग, जिगर, तिल्ली एवं गुर्दे के रोगों का विचार किया जाता है। यह भाव पेट के सभी रोगों का प्रतिनिधित्व करता है।

षष्ठ भाव–

इस भाव से कमर का दर्द, एपेन्डिक्स, आंतों की बीमारी, हार्निया एवं अश्मरी का विचार किया जाता हैं।

सप्तम भाव–

इस भाव से प्रमेह, मुधमेह, प्रदर, उपदंश, पथरी, गर्भाशय के रोग तथा बस्ति में होने वाले रोगों का विचार किया जाता है।

अष्टम भाव–

इस भाव से गुप्त रोग, वीर्य–विकार, अर्श, भगंदर; उपदंश, संसर्गजन्य रोग, वृषण रोग एवं मूत्रकृच्छ का विचार किया जाता है।

नवम भाव–

इस भाव से स्त्रियों के मासिक धर्म सम्बन्धी रोग, यकृत दोष, रक्त विकार, वायु विकार, कूल्हे का दर्द एवं मज्जा रोगों का विचार होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दशम भाव–

इस भाव से गठिया, कम्पवात, चर्म रोग, घुटने का दर्द एवं अन्य वायु रोगों का विचार किया जाता है।

एकादश भाव–

इस भाव से पैर में चोट, पैर की हड्डी टूटना, पिंडलियों में दर्द, शीत विकार एवं रक्त विकार का विचार किया जाता है।

द्वादश भाव–

इस भाव से असहिष्णुता (अलर्जी), कमजोरी, नेत्र–विकार, पोलियो एवं शरीर में रोगों के प्रतिरोध की क्षमता की कमी का विचार किया जाता है।

17– द्रेष्काण के आधार पर अङ्गों के प्रतिनिधि भाव–

मनुष्य के शरीर के किस अङ्ग में घाव, चोट या गांठ होगी? इसका विचार करने के लिए प्राचीन आचार्यों ने द्रेष्काण के आधार पर शरीर के तीन भागों की कल्पना कर लग्न आदि भावों को शरीर के विभिन्न अंगों का प्रतिनिधि माना है[77]। यथा–

यदि लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्न आदि भाव शिर से लेकर मुख तक के विभिन्न अङ्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहां लग्न शिर का द्वितीय एवं द्वादश भाव क्रमशः दाहिने एवं बायें नेत्र का, तृतीय एवं एकादश भाव क्रमशः दाहिने एवं बायें कान का, चतुर्थ एवं दशम भाव क्रमशः दाहिने एवं बायें नथुने का, पञ्चम एवं नवम भाव क्रमशः दाहिने एवं बायें गाल का, षष्ठ एवं अष्टम भाव क्रमशः ठोडी के दाहिने एवं बायें भाव का तथा सप्तम भाव मुख का प्रतिनिधित्व करता है।

77– द्रेष्काण के अनुसार अङ्ग-ज्ञान
कन्दृक्श्रोत्रनसाकपोलहनवो वक्त्रञ्च होरादय-
स्ते कण्ठांसकबाहुपार्श्वहृदयक्रोडानि नाभिस्ततः।
बस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी
जङ्घाङ्घ्रीत्युभयत्र वाममुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा ।।77।। जातक पारिजात 3/77,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपर्युक्त तथ्यों को निम्नलिखित तालिका में स्पष्ट किया गया है।[78]

लग्नस्थ द्रेष्काण के अनुसार शरीर के विभिन्न अंगों का द्वादश भावों में न्यास क्रम

लग्नराशि 0°–30°	लग्न	द्वि.भाव	तृ.भाव	चं.भाव	पं.भाव	ष.भाव स. भाव	
प्रथम द्रेष्काण 0°–10°	शिर	द.नेत्र	द.कान	द.नासा-रन्ध्र	द. कपोल	ठुड्डी मुख	
द्वितीय द्रेष्काण 10°–20°	कण्ड	स्कन्ध	भुजा	पार्श्व	हृदय	उदर नाभि	
तृतीय द्रेष्काण 20°–30°	बस्ति	लिङ्ग, गुदा	अण्ड-कोश	जङ्घा	घुटना	पिण्डली पैर	
लग्नराशि 0°–30°	लग्न	द्वादश भाव	एकादश भाव	दशम भाव	नवम भाव	अष्टम सप्तम भाव भाव	
प्रथम द्रेष्काण 0°–10°	शिर	वा.नेत्र	वा.कान	वा.नासा-रन्ध्र	वा. कपोल	वा.ठुड्डी मुख	
द्वितीय द्रेष्काण 10°–20°	कण्ठ	स्कन्ध	भुजा	पार्श्व	हृदय	उदर नाभि	
तृतीय द्रेष्काण 20°–30°	बस्ति	लिङ्ग, गुदा	अण्ड-कोश	जङ्घा	घुटना	पिण्डली पैर	

उपर्युक्त तालिका में यह भी प्रदर्शित किया गया है कि यदि लग्न में द्वितीय द्रेष्काण हो तो लग्नादिभाव कण्ठ से लेकर नाभि तक के विभिन्न अङ्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यथा– लग्न कण्ठ का, द्वितीय एवं द्वादश भाव क्रमशः दाहिने एवं बायें कन्धे का, तृतीय एवं एकादश भाव क्रमशः दाहिने एवं बायें हाथ का, चतुर्थ एवं दशम भाव क्रमशः दाहिनी एवं बायीं बगल का, पञ्चम एवं नवम भाव क्रमशः हृदय (वक्ष) के दाहिने एवं बाये भाग का, षष्टम एवं अष्टम भाव क्रमशः पेट के दाहिने एवं बायें भाग का तथा सप्तम नाभि का प्रतिनिधित्व करता है।

यदि लग्न में तृतीय द्रेष्काण हो तो लग्न आदि भाव बस्ति से लेकर पैर तक के विभिन्न अंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, यथा लग्न बस्ति का, द्वितीय एवं द्वादश

78– जातक पारिजात पृष्ठ 139

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाव क्रमशः लिंग एवं गुदा का, तृतीय एवं एकादश भाव क्रमशः दाहिने एवं बायें वृषण का, चतुर्थ एवं दशम भाव क्रमशः दाहिने एवं बायें ऊरू का, पञ्चम एवं नवम भाव क्रमशः दाहिने एवं बायें घुटने का, षष्ठ एवं अष्टम भाव क्रमशः दाहिनी एवं बायीं जंघा का तथा सप्तम भाव पैर का प्रतिनिधित्व करता है–

18– **मारक भावः–**

कुण्डली में अष्टम तथा अष्टम से अष्टम–अर्थात् तृतीय ये दोनों भाव आयु के भाव माने गये हैं। अर्थात् अष्टम तथा तृतीय भाव से आयु का विचार किया जाता है तथा जिस प्रकार कुण्डली में बारहवाँ भाव 'व्यय' कहा जाता है, उसी प्रकार अष्टम एवं तृतीय भावों से बारहवें भाव–अर्थात् सप्तम एवं द्वितीय भाव आयु के व्यय के सूचक होते हैं। आयु का व्यय मृत्यु ही है। इसलिए सप्तम एवं द्वितीय भाव– ये दोनों भाव मृत्यु के सूचक होते हैं। यही कारण है कि इन भावों से मृत्यु या जीवन में मिलने वाले मृत्यु तुल्य कष्टों का विचार किया जाता है। इन दोनों भावों को मारक भाव कहते हैं।[79]

भाव विचार की सामान्य विधिः–

द्वादश भावों जो जो भाव शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट होंगे उनका शुभ फल व पापयुक्त या दृष्ट का अशुभ फल होगा। जिस भाव में अति शत्रु की राशि गत, नीच या मित्रगहों से रहित अर्थात् शत्रुयुक्त ग्रह होंगे, उस भाव की भी हानि होगी। इसके विपरीत शुभ दृष्ट युक्त भाव द्रष्टा या स्थित ग्रह के बलानुसार फल देंगे।[80]

79– अष्टमं मारक स्थानमष्टमादष्टमं च यत्।
तयोरपिव्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते।
तत्राप्याद्यव्ययस्थानादुत्तरं बलवत्तरम् ।।2।।
तयोरीशौ तत्रगताः पापिनस्तेन संगताः।
पापिनस्ते च सर्वे हि ज्ञेयाः मारकसंज्ञका ।।3।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 40/2 तथा 3, पृष्ठ-320

80– भाव विचार की सामान्य विधिः-
लग्नादिव्ययपर्यन्तं भावाः संज्ञानुरूपतः।
फलदाः शुभसंदृष्टा युक्ता वा शोभनप्रदाः ।।13।।
पापदृष्टयुता भावः कल्याणेत्तरदायकाः।
नितरां शत्रुनीचस्थैर्न मित्रोपगतैश्च तैः।।
सौम्येदृष्टयुताभावा ग्रहवीर्यात्फलाप्रदाः ।।14।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 5/13 तथा 14, पृष्ठ-57

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वस्तुतः जातक शास्त्र के सिद्धान्त इतने अधिक विस्तृत हैं कि उन्हें प्रस्तुत अध्याय में समाहित करना अत्यन्त कठिन है। अतएव सङ्क्षेप में मात्र उन्हीं आधारभूत नियमों का उल्लेख किया गया है जो हमारी शोध प्रक्रिया के लिए अति उपादेय हैं।

भावों की कुछ महत्वपूर्ण संज्ञाएं–

इस शोध–प्रबन्ध के अग्रिम–अध्यायों में योगों का विचार करते समय जिन ग्रह योगों का वर्णन किया गया है, उनमें भावों की केन्द्र, त्रिकोण, त्रिक आदि संज्ञाओं का यथा–स्थान स्वाभाविक रूप से उपयोग हुआ है। अतः योग एवं उनके योगों का विचार करने से पहले भावों की उन महत्वपूर्ण संज्ञाओं पर संक्षेप में प्रकाश डाला जा रहा है, जिनका आगे उपयोग किया जायेगा।

केन्द्र–

कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव की केन्द्र कहा जाता है।[81]

त्रिकोण–

कुण्डली के पञ्चम एवं नवम भाव को त्रिकोण कहते हैं।[82]

पणफर–

कुण्डली के द्वितीय, पञ्चम, अष्टम एवं एकादश भाव को पणफर कहते हैं।[83]

आपोक्लिम–

कुण्डली के तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश भाव को आपोक्लिम कहते हैं।[84]

81- भावों की केन्द्रादि संज्ञाएँ
मेषूरणोदयकलत्ररसातलानि
स्युः केन्द्रकण्टकचतुष्टयसंज्ञितानि। जातक पारिजात 1/53, पृष्ठ-33

82- लग्नात्त्रिकोणभवनं नवपञ्चमं च
स्यात्त्रित्रिकोणमुदयान्नवमं वदन्ति ।।53।। तत्रैव

83- तनुसुखमदनाज्ञा राशयः केन्द्रसंज्ञाः
पणफरभवनानि स्वायपुत्राष्टमानि।
वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 1/54

84- व्ययरिपुगुरूश्चिक्यानि चापोक्लिमानि
प्रभवति चतुरस्त्रं मृत्युबधुद्वयं च ।।54।। तत्रैव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्रिषडाय–

कुण्डली के तृतीय, षष्ठ एवं एकादश भाव को त्रिषडाय कहते हैं।[85]

त्रिक–

कुण्डली के षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश भाव को त्रिक कहते हैं।

द्विद्वांदश–

कुण्डली के द्वितीय तथा द्वादश– इन दोनों भावों को द्विद्वादंश कहते हैं।

उपचय–

कुण्डली में तृतीय, षष्ठ, दशम एवं एकादश भाव को उपचय कहते हैं।[86]

पीडर्क्ष–

कुण्डली के लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम एवं द्वादश भाव को पीडर्क्ष कहते हैं।[87]

ज्ञातक शास्त्रों में सभी द्वादश भावों के लिए भिन्न–भिन्न पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया गया है जो निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित है।

भाव	संज्ञा	पर्याय
प्रथम	लग्न	1–उद्गम, 2–आद्य, 3– तनु, 4– काय, 5– कलेवर 6–अंग, 7–होरा, 8–वपुष्, 9–मूर्ति, 10–विलग्न, 11–कल्प
द्वितीय	धन	1–वित्त, 2–द्रविण, 3–कोष, 4–कुटुम्ब, 5–भुक्ति, 6–स्व, 7–अर्थ, 8–वसु, 9–वाक्, 11–नयन, 12–आनन[88]

85- त्रिषडायेशों (3.6.11) का नियम :-
त्रिषडायाधिपाः सर्वे ग्रहाः पापफलप्रदाः ।।4।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् -32/4, पृष्ठ-245

86- दुश्चिक्यायारिमानान्युपचयभवनान्याहुराचार्यमुख्याः
शेषाः पीडर्क्षसंज्ञा नवधनजलधीकामरन्ध्रान्त्यहोराः।जातक परिजात 1/55, पृष्ठ-33

87- तत्रैव

88- लग्नोद्गमाद्यतनुकायकलेवराङ्ग-
होरावपुःप्रथममूर्त्तिविलग्नकल्पाः।
वित्तं धनं द्रविणकोशकुटम्बभुक्ति-
स्वार्थं द्वितीय वसुवाङ्नयनाननानि। जातकभूषणम् अधयाय-1 श्लोक 24.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृतीय	सहज	1–भाई, 2–सहोदर, 3–पराक्रम, 4–कर्ण, 5–धैर्य, 6–दुश्चिक्य, 7–शूरता, 8–बल, 9–विक्रम, 10–भुजा
चतुर्थ	सुख	1–सौख्य, 2–हिबुक, 3–मित्र, 4–रसातल, 5–अम्बा, 6–जल, 7–बान्धव, 8–गृह, 9–निकेत, 10–तुरीय, 11–तूर्य[89]
पंचम	सुत	1–संतान, 2–संतति, 3–पुत्र, 4–आत्मज, 5–नन्दन, 6–प्रबन्ध, 7–तनय, 8–मति, 9–मंत्र, 10–विद्या
षष्ठ	शत्रु	1–वैरी, 2–विपक्ष, 3–रिपु, 4–शात्रव, 5–षष्ठ, 6–द्वेष्य, 7–सपत्न, 8–पर, 9–राग, 10–क्षत, 11–मान्द्य, 12–रूक्[90]
सप्तम	जाय	1–काम, 2–कलत्र, 3–मदन, 4–अस्मय, 5–अस्त, 6–जामित्र, 7–मनवत, 8–मद, 9–द्यून, 10–दारा, 11–मार
अष्टम	मृत्यु	1–मृति, 2–प्रलय, 3–याम्य, 4–निमीलन, 5–आयु, 6–रन्ध्र, 7–क्षय, 8–वध, 9–आह्व, 10–नैधन[91]
नवम्	भाग्य	1–विधि, 2–नियति, 3–पुण्य, 4–तन, 5–शुभ, 6–अध यवन्, 7–अंक, 8–त्रित्रिकोण, 9–करूणा, 10–गुरू, 11–तीर्थ, 12–धर्म
दशम्	कर्म	1–आस्पद, 2–जनक, 3–राज्य, 4–पद, 5–अम्बर, 6–आज्ञा, 7–मेषूरण, 8–ऋतु, 9–ख, 10–मान, 11–नभ, 12–वणिज्या[92]

89– भ्राता सहोदरपराक्रमकर्णधैर्य्य- दुश्चिक्यशौर्य्यबलविक्रमदोःसहोत्थाः।
सौख्यं सुखं हिबुकमित्ररसातलाम्बा-ऽम्भोबान्धवालयनिकेततुरीयतुर्य्याः।जातकभूषणम्- अधयाय-1 श्लोक-25, पृष्ठ-32

90– सन्तानसन्ततिसुतात्मजनन्दनात्म- पुत्रप्रबन्धतनया मतिमंत्रविद्याः।
वैरी विपक्षरिपुशात्रवशत्रुषष्ठ द्वेष्याः सपत्नपररूक्क्षतमान्द्यरोगाः।।तत्रैव- श्लोक-26, पृष्ठ-32

91– कामः कलत्रमदनास्तमयास्तजाया- जामित्रमन्मथमदद्युनदारमाराः।
मुत्युर्मृतिः प्रलययाभ्यनिमीलनायू- रन्ध्राष्टमक्षयवधाहवनैधनानि।। तत्रैव- श्लोक-27, पृष्ठ-33

92– भाग्यं विधिर्नियतिपुण्यतपःशुभाध्वा- ङ्कत्रित्रिकोणकरुणागुरूतीर्थधर्म्माः।
कर्मास्पदं जनकराज्यपदाम्बराज्ञा- मेषूरणऋतुखमाननभोवणिज्याः।।तत्रैव- श्लोक-28, पृष्ठ-33

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एकादश	आय	1–लभन, 2–लब्धि, 3–भव, 4–लाभ, 5–उपान्त्य, आगम, 6–समवाप्ति, 7–अवाप्ति, 8–आप्ति
द्वादश	व्यय	1–प्रान्त्य, 2–अवसान, 3–चरम, 4–व्यय, 5–रिफ, 6–बाधा, 7–अपाय, 8–व्यथा, 9–व्यथन, 10–पीड़न, 11–मन्त्रिन, 12–अक्[93]

जातक ग्रन्थों में सभी ग्रहों के लिये भी भिन्न–भिन्न पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित हैं।

ग्रह का नाम	पर्याय
सूर्य	1–इन, 2–भानु, 3–अर्क, 4–भग, 5–अरूण, 6–अर्यमा, 7–मार्त्तण्ड, 8–भास्वत्, 9–रवि, 10–सूर, 11–भास्कर,
चन्द्र	1–शशी, 2–ग्लौ, 3–विधु, 4–इन्दु, 5–चन्द्रमा, 6–सोम, 7–अब्ज, 8–शीतांशु, 9–भप, 10–छपाकर[94]
मंगल	1–वक्र, 2–अस्त्र, 3–महीज, 4–मंगल, 5–अंगारक, 6–असृक्, 7–कुज, लोहितांशु
बुध	1–सौम्य, 2–ऐन्दव, 3–ज्ञ, 4–बुध, 5–चान्द्रि, 6–बोधन, 7–विद् 8–रौहिणेय, 9–इन्दुज, 10–हेम्न 11–कोविद[95]
बृहस्पति	1–इज्य, 2–अमरमंत्री, 3–वाक्पति, 4–सुरेज्य, 5–जीव, 6–आंगिरस, 7–अर्चित
शुक्र	1–सित, 2–उशना, 3–अच्छ, 4–असुरवन्द्य, 5–भार्गव, 6–भ, 7–काव्य, 8–आस्फुजित्, 9–भृगु, 10–कवि[96]

93- एकादशोलभनलब्धिभवायलाभो-
पान्त्यागमानि समवाप्तिरवाप्तिराप्ति:।
प्रान्त्यावसान चरमव्ययरि: फबाधा-
ऽपायव्यथाव्यथनपीडनमंत्रिणोऽकम्। ज़ातकभूषणम्- अध्याय-1, श्लोक-29, पृष्ठ-34

94- सूर्य्येनभान्वर्कभगारूणार्य्यम- मार्त्तण्डभास्वद्रविसूरभास्करा:
चन्द्र शशीग्लौर्विधुरिन्दुचन्द्रम- स्सोमाब्जशीतांशुभपक्षपाकरा:।।जातकभूषणम्- अध्याय-2,श्लोक-3, पृष्ठ-37

95- भौमारवक्रास्रमहीजमङ्गला अङ्गारकासृक्कुजलोहितांशव:।
सौम्यैन्दवज्ञा बुधचान्द्रबोधना विद्यौहिणेयेन्दुजहेम्नकोविदा:।।तत्रैव- श्लोक-4, पृष्ठ-37

96- बृहस्पतीज्यामरमन्त्रिवाक्पति गुरेत्यजीवाङ्गिरसार्च्चिता गुरू:।

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शनि	1–मन्द, 2–मृदु, 3–कृष्ण, 4–शनैश्चर, 5–छायाज, 6–कोण, 7–असित, 8–सौरि, 9–सूर्यज
राहु	1–स्वर्भानु, 2–सिंहीज, 3–तम, 4–असुर, 5–अहि, 6–अगु, 7–उरग
केतु	1–अनिल, 2–ध्वज, 3–शिखिन्[97]

जातक ग्रन्थों में सभी द्वादश राशियों के लिए भी भिन्न–भिन्न पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो निम्नलिखित है–[98]

मेष	1–अज, 2–विश्व, 3–क्रिय, 4–तुम्बुर
वृष	1–उक्ष, 2–गौ, 3–ताबरू, 4–गोकुल
मिथुन	1–द्वन्द्व, 2–नृयुग्म, 3–जुतुम, 4–यम, 5–युग, 5–तृतीय
कर्क	1–कुलीर, 2–कर्काटक, 3–कर्कट
सिंह	1–कण्ठीरव, 2–मृगेन्द्र, 3–लेय
कन्या	1–पाथोन, 2–रमणी, 3–तरूणी
तुला	1–तौली, 2–वाणिक्, 3–जूक, 4–घट
वृश्चिक	1–अलि, 2–अष्टम, 3–कौर्पि, 4–कीट
धनु	1–धन्वी, 2–चाप, 3–शरासन
मकर	1–मृग, 2–मृगास्य, 3–मकर, 4–नक्र
कुम्भ	1–घट, 2–तोय
मीन	1–अन्त्य, 2–मत्स्य, 3–पृथुरोमा।

97– मन्दो मृदुः कृष्णशनी शनैश्चर- च्छायाजकोणासितसौरिसूर्य्यजाः।
स्वर्भाणुसिंहीजतमोऽसुराह्यगु राहूरगाः केत्वनिलध्वजाः शिखी।।जातकभूषणम्- अधयाय-2, श्लोक-6, पृष्ठ-38

98– मेषाजविश्वक्रियतुम्बुराद्या वृषोक्षगोताबुरूगोकुलानि।
द्वन्द्वं नृयुग्मं जुतुमं यमं च युगं तृतीयं मिथुनं वदन्ति।।
कुलीरककर्काटककर्कटाख्याः कण्ठीरवः सिंहमृगेन्द्रलेयाः।
पाथ्रोनकन्यारमणीतरूण्यस्तौली वणिक्जूकतुलाघटाश्च।।
अल्यष्टमं वृश्चिककौर्पिकीटाः धन्वी धनुश्चापशरासनानि।
मृगो मृगास्यो मकरश्च नक्रः कुम्भो घटस्तोयधराभिधानः।।
मीनान्त्यमत्स्यपृथुरोमझषा वदन्ति।6 (जातक पारिजात अध्याय 1.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जातक ग्रन्थों में उल्लिखित श्लोकों तथा सूत्रों में उपर्युक्त पर्यायों का भरपूर प्रयोग किया गया है। अतएव इन श्लोकों तथा सूत्रों में अन्तर्निहित तथ्यों को भली–भांति समझने के लिए इनका सम्यक् ज्ञान अति आवश्यक है।

यद्यपि यहां जिन ज्योतिषीय सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है, वे सर्वत्र प्राप्त होते हैं, तथापि इन्हें अत्यन्त संक्षेप में यहां प्रस्तुत किया गया है। रोग विचार के सन्दर्भ में सामान्य ज्योतिषीय बातों का निदर्शन अवश्य किया जाना चाहिए। एतदर्थ यह विषय केवल ज्योतिष के चञ्चु प्रवेश हेतु आवश्यक जानकर उपनिबद्ध किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट-3

NASA Images Discover Ancient Bridge (Adam's Bridge) between India and Sri Lanka

(Courtesy : NASA Digital Image Collection)

Space images taken by NASA reveal a mysterious ancient bridge in the Palk Strait between India and Sri Lanka. The recently discovered bridge currently named as Adam´s Bridge is made of chain of shoals, c.18 mi (30 km) long.

The bridge´s unique curvature and composition by age reveals that it is man made. The legends as well as Archeological studies reveal that the first signs of human inhabitants in Sri Lanka date back to the a primitive age, about 1,750,000 years ago and the bridge´s age is also almost equivalent.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट-3

This information is a crucial aspect for an insight into the mysterious legend called Ramayana, which was supposed to have taken place in tredha yuga (more than 1,700,000 years ago).

In this epic, there is a mentioning about a bridge, which was built between Rameshwaram (India) and Srilankan coast under the supervision of a dynamic and invincible figure called Rama who is supposed to be the incarnation of the supreme.

This information may not be of much importance to the archeologists who are interested in exploring the origins of man, but it is sure to open the spiritual gates of the people of the world to have come to know an ancient history linked to the Indian mythology.

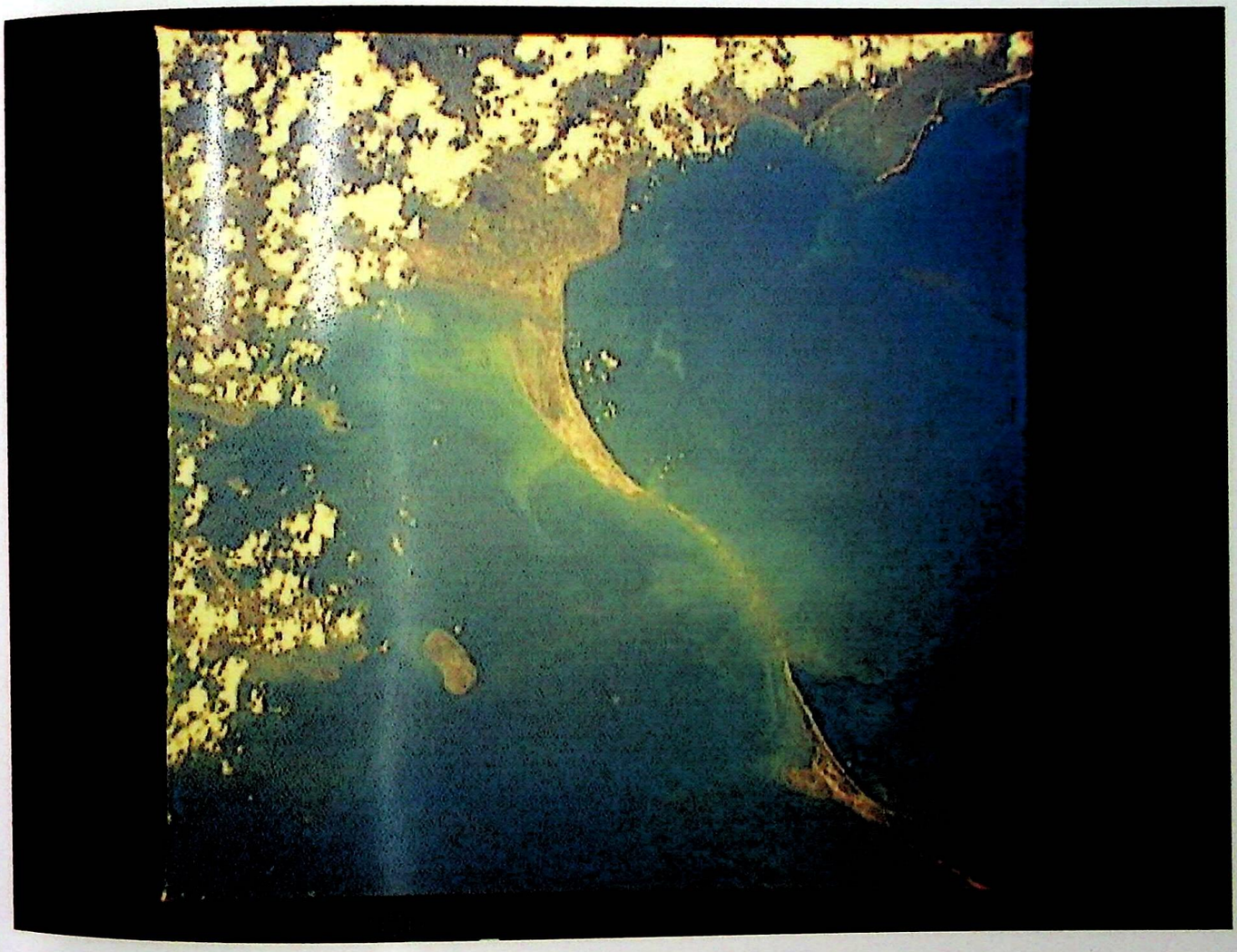

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

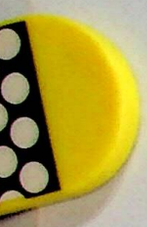

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट-4

COSMIC COUNTERPARTS OF HUMAN PHYSIOLOGY

Professor Tony Nader, M.D., Ph.D., has discovered the precise one-to-one relationship between the fundamental structures and functions of human physiology (individual life) and the fundamental structures of Natural Law (cosmic life). The fundamental structures of Natural Law connect individual intelligence with cosmic intelligence—the basic structures of the human nervous system with their 'cosmic counterparts'

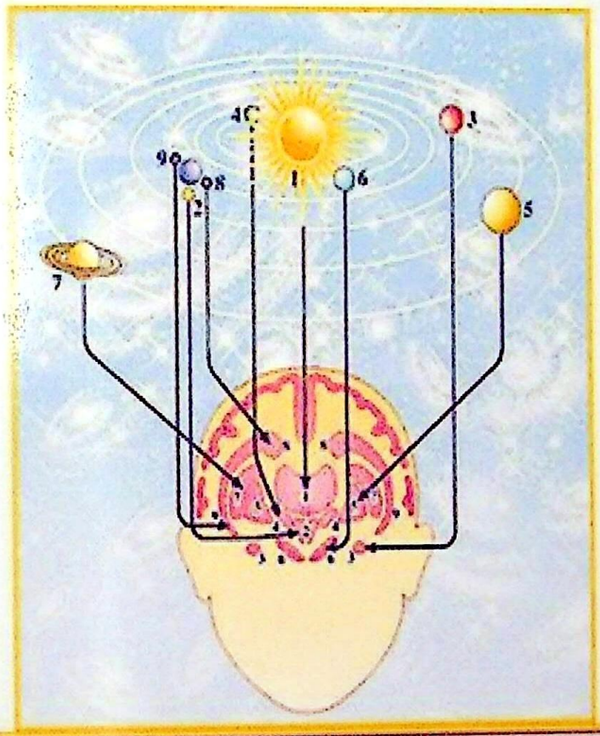

① • Surya or Sun ① • Thalamus	④ • Budha or Mercury ④ • Subthalamus	⑦ • Shani or Saturn ⑦ • Putamen
② • Chandra or Moon ② • Hypothalamus	⑤ • Guru or Jupiter ⑤ • Globus Pallidus	⑧ • Rahu or Ascending Lunar Node ⑧ • Nucleus Caudatus, head
③ • Mangala or Mars ③ • Amygdala	⑥ • Shukra or Venus ⑥ • Substancia Nigra	⑨ • Ketu or Descending Lunar Node ⑨ • Nucleus Caudatus, tail

This illustration from Professor Nader's book, Human Physiology, Expression of Veda and the Vedic Literature, presents a coronal section of the brain with its internal structures, and their one-to-one relationship with the nine 'cosmic counterparts,' the nine Grahas (planets).

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट-4ए

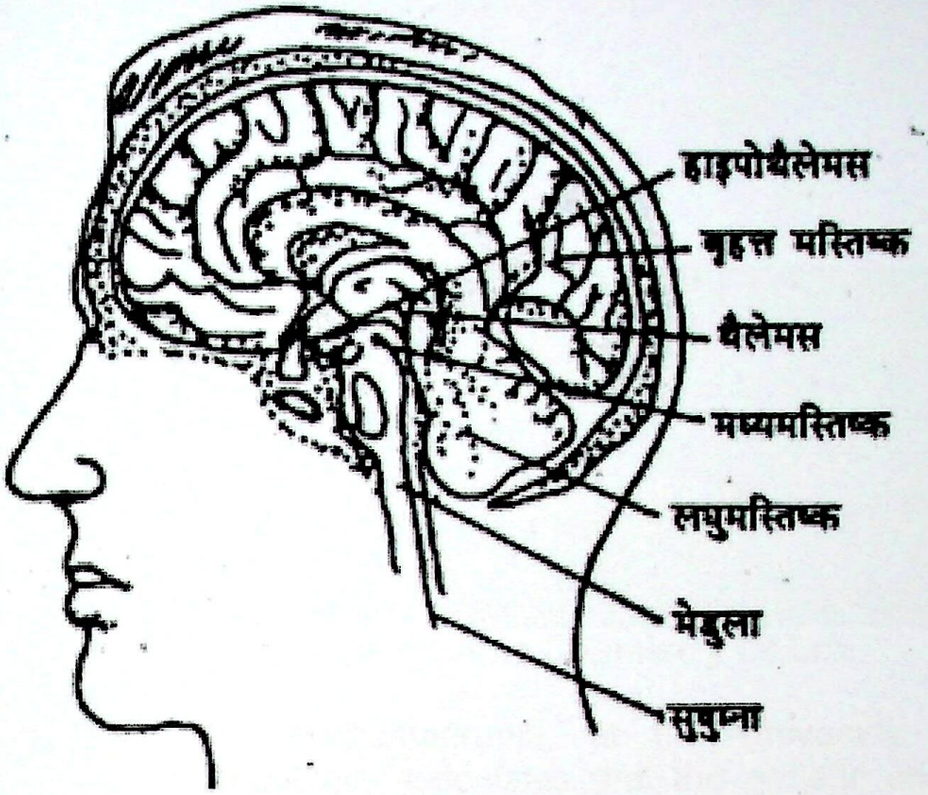

मानव मस्तिष्क के विभिन्न भाग

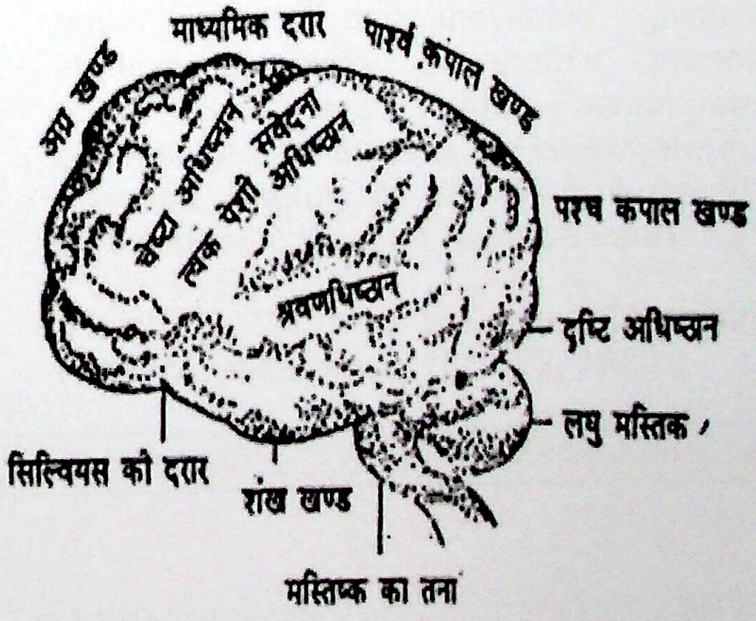

चित्र 1– बृहद् मस्तिष्क के खण्ड, दरारें तथा अधिष्ठान

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट-5

Science Frontiers
ONLINE

No. 48: Nov-Dec 1986

Issue Contents

The Cosmic Chemistry Of Life

C. Ponnamperuma, at the University of Maryland, speculates that the genetic code employed by earth life may, in fact, reflect a universal chemistry. His lab data "suggest that the formation and linking of life's building blocks -- amino acids and nucleotides -- may have been all but inevitable, given the starting chemistry of earth's 'primordial soup.'" Going even further Ponnamperuma believes that "if there is life elsewhere in the universe, chemically speaking it would be very similar to what we have on earth."

(Raloff, J.; "Is There a Cosmic Chemistry of Life?" *Science News*, 130:182, 1986.)

Other pages

- Home Page
- Science Frontiers Online
  - All Issues
  - This Issue
- Sourcebook Project
- Sourcebook Subjects

From Science Frontiers #48, NOV-DEC 1986. © 1986-2000 William R. Corliss

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

।। काल पुरुष नक्षत्र पुरुष चक्र ।।

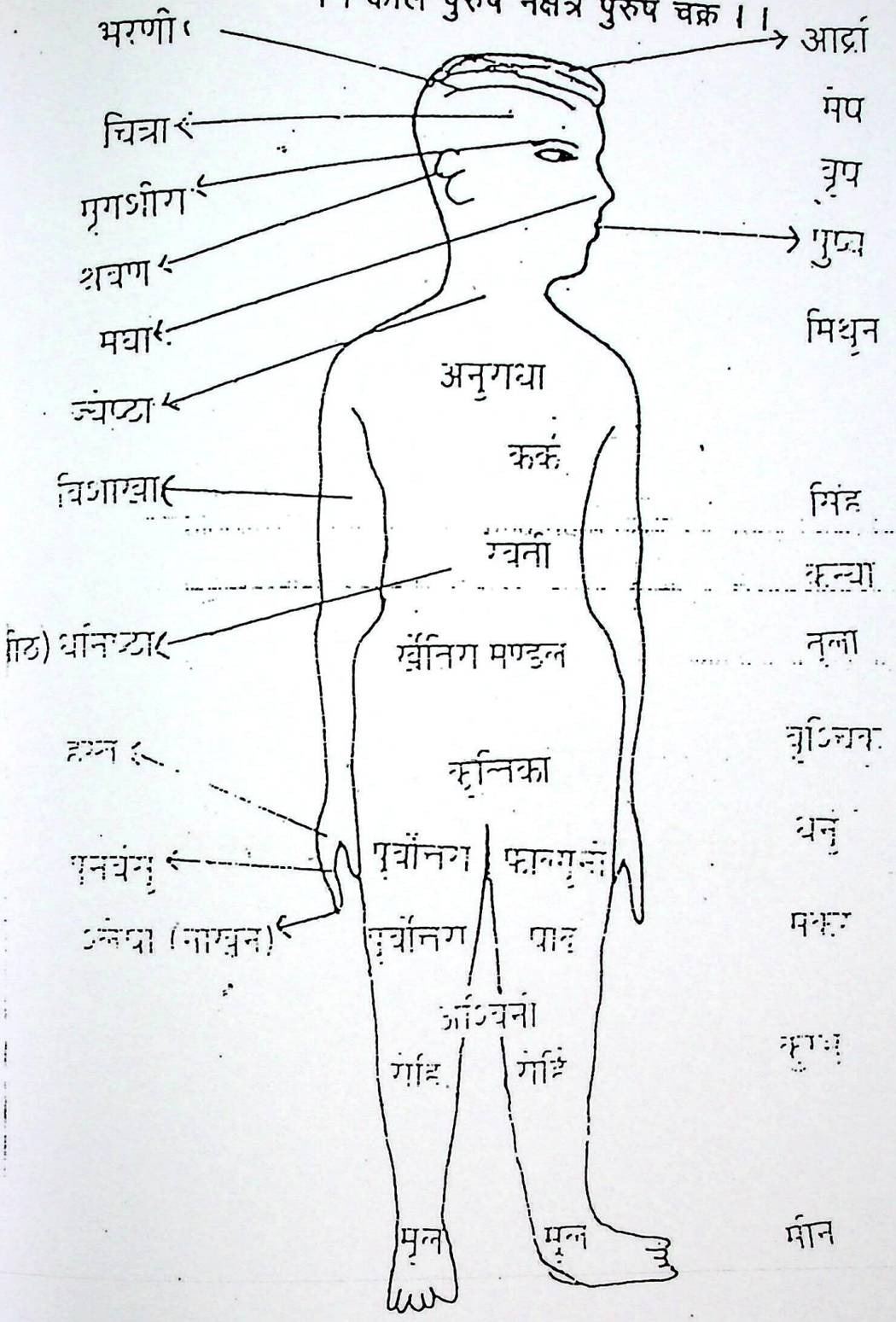

स्वाती---दाँत, शतभिषा–हँसी

काल पुरुष का अंग विभाग–

कालाङ्गानि वराङ्गमानन मुरो वक्षोऽवसो भृतो,
वस्तिर्व्यञ्जनमूरुजानुयुगलं जङ्घे ततोऽङ्घिद्वयम् ।
मेषादिप्रथमा नवर्क्ष चरणाश्चक्रस्थिता राशयो
राशिक्षेत्रगृहर्क्षभानि भवनं भैकार्थसाम्यस्थले ।। 4 ।।

(शार्दूलविक्रीडित)

नक्षत्रभानवतनुप्रतिमे विभागे,
लग्नादिशेत् तुहिनरश्मिदिनेशयुक्ते ।। 17 ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-द्वितीय
जातक शास्त्र में मनोरोग विमर्श

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय द्वितीय

जातक शास्त्र में मनोरोग विमर्श

यद्यपि ज्योतिष शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र नहीं है तथापि इसमें विभिन्न रोगों तथा उनको उत्पन्न करने वाले अनेक ग्रहीय स्थितियों का विवरण प्राप्त होता है।

जिस प्रकार आयुर्वेद में शारीरिक रोगों तथा मानसिक रोगों का भेद बतलाया गया है उसी प्रकार का विवरण जातक ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है।

चरक संहिता में शारीरिक तथा मानसिक रोगों का भेद बतलाते हुए कहा गया है कि– 1– वात, 2– पित्त, 3–कफ– ये तीनों शरीर सम्बन्धी दोष हैं और मानस दोष हैं– 1– रज तथा 2– तम्।[1]

जातक शास्त्र में भी शारीरिक तथा मानसिक रोगों का भेद बतलाते हुए कहा गया है कि– "वात, पित्त और कफ के विकार से उत्पन्न अथवा इनमें किन्हीं दो के संसर्ग से उत्पन्न तथा सन्निपात आदि दोषों से उत्पन्न रोगों को शारीरिक रोग कहा जाता है।[2]

मानसिक रोगों के सम्बन्ध में कहा गया है कि क्रोध, हर्ष और शोक आदि आवेगों से उत्पन्न रोग मानसिक रोग कहे जाते हैं।[3]

इन रोगों को उत्पन्न करने वाले ज्योतिषीय कारणों का विवरण देते हुए पूर्व अध्याय में यह स्पष्ट किया गया है कि सभी ग्रह, नक्षत्र, राशियां तथा भाव शरीर

1- वायुः पित्तं कफश्चोक्तः शरीरो दोष संग्रहः।
मानसः पुनरूद्दिष्टो रजश्च तमएव च।। (चरक संहिता- सूत्र स्थान 1/57 पृष्ठ 28

2- शारीरिक रोगः-
वातपित्तकफोद्भूताः पृथक्संसर्गजास्तथा।
सन्निपातभवांश्चैते शारीराः कीर्तिता गदाः।। 12/20 प्रश्नमार्ग पृष्ठ 177

3- क्रोधसाध्वसशोकादिवेगजातास्तुमानसाः।
ज्ञेया रन्ध्रमनोनाथमिथोयोगेक्षणादिभिः।। 12/22 प्रश्नमार्ग पृष्ठ 177

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के भिन्न–भिन्न अङ्गों के प्रतिनिधि हैं तथा अपनी रोग कारक स्थितियों में तत्सम्बन्धी अङ्गों को रोगग्रस्त करते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का यह भी सिद्धान्त है कि प्रत्येक ग्रह की अलग–अलग मानसिक स्थितियां भी होती हैं। "जातक पारिजात" में उल्लिखित सिद्धान्त के अनुसार ग्रहों की मानसिक स्थितियां 10 प्रकार की होती है। 1– दीप्त, 2– प्रमुदित, 3– स्वस्थ, 4– शान्त, 5– शक्त, 6– प्रपीडित, 7– दीन, 8– खल, 9–विकल, 10–भीत।[4]

भिन्न–भिन्न ग्रह कब किन मानसिक स्थितियों में होंगे इनका भी उपर्युक्त ग्रन्थ में उल्लेख है, जो निम्नलिखित है:–[5]

1– अपनी उच्च राशि में मूलत्रिकोण में स्थित ग्रह प्रदीप्त होते हैं।

2– स्वगृह अर्थात् अपनी राशि में स्थित ग्रह स्वस्थ होते हैं।

3– मित्र राशि में प्रमुदित होते हैं।

4– शुभग्रहों के वर्ग में शान्त होते हैं।

5– स्फुटरश्मिजाल से युक्त ग्रह शक्त होते हैं।

6– युद्ध में पराजित ग्रह अतिपीड़ित होते हैं।

7– शत्रु राशि में और शत्रु नवमांश में अतिदीन होते हैं।

8– पापग्रह के वर्ग में खल होते हैं।

9– अपनी नीचराशि में अतिभीत होते हैं।

4- दीप्तः प्रमुदितः स्वस्थः शान्तः शक्तः प्रपीडितः।
दीनः खलस्तु विकलो भीतोऽवस्था दश क्रमात्।। 2/16 जातक पारिजात पृष्ठ 48

5- स्वोच्चत्रिकोणोपगतः प्रदीप्तः स्वस्थः स्वगेहे मुदितः सुहृद्भे।
शान्तस्तु सौम्यग्रहवर्गयातः शक्तोऽतिशुद्धः स्फुटरश्मिजालैः।।
महाभिभूतस्त्वतिपीडितः स्यादरातिराश्यंशगतोऽतिदीनः।
खलस्तु पापग्रहवर्गयोगान्नीचेऽतिभीतो विकलोऽस्तयातः।। 2/17 तथा 2/18 जातक पारिजात पृष्ठ 48

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

10– अस्त ग्रह विकल होते हैं।

"जातक पारिजात" में उल्लिखित ग्रहों की दश मानसिक स्थितियों के समान ही जातक ग्रन्थ "सारावली" में भी ग्रहों की नौ मानसिक स्थितियों का विवरण है। इनके नाम भी वही हैं, जैसे दीप्त तथा स्वस्थ आदि।[6]

"सारावली" के अनुसार ग्रहों की सभी स्थितियों का फल निम्नलिखित है:–

1– **दीप्त ग्रह का फलः–**

यदि ग्रह अपनी दीप्त स्थिति में हो तो जातक प्रताप एवं यश से युक्त होता है तथा वह हर प्रकार के सुख का अनुभव करता है।[7]

2– **स्वस्थ ग्रह का फलः–**

यदि ग्रह स्वस्थ अवस्था में हो तो जातक पूर्ण स्वस्थ होता है तथा आनन्दित रहता है।[8]

3– **मुदित ग्रह का फलः–**

यदि ग्रह मुदित अवस्था में हो तो जातक प्रसन्नचित्त होकर विलास करता है तथा समस्त सुखों का भोगकर्ता होता है।[9]

4– **शान्त अवस्थागत ग्रह का फलः–**

यदि ग्रह शान्त स्थिति में हो तो चित्त में अधिक शान्ति होती है तथा जातक

6- दीप्तः स्वस्थो मुदितः शान्तः शक्तो निपीडितो भीतः।
7- विकलः खलश्च कथितो नवप्रकारो ग्रहो हरिणा।। सारावली 5/2 पृष्ठ 26
दीप्ते विचरति पुरूषः प्रतापविषमाग्निदग्धरिपुवर्गः।
8- लक्ष्म्यालिङ्गितदेहो गजमदसंसिक्तभूपृष्ठः।। सारावली 5/5 पृष्ठ 26
स्वस्थ करोति जन्मनि रत्नानि सुखानि कनकपरिवारान्।
9- नृपतेर्दण्डपतित्वं गृहधान्यकुटुम्बपरिवृद्धिम्।। तत्रैव 5/6 पृष्ठ 26
मुदिते विलसति मुदितो विलासिनीकनकरत्नपरिपूर्णः।
विजितसकलारिपक्षः समस्तसुखभाङ् नरो भवति।। तत्रैव 5/7 पृष्ठ 27

CC-0.Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुखी एवं पसेपकारी होता है।[10]

5– **शक्त अवस्थागत ग्रह का फलः–**

यदि ग्रह शक्त अवस्था में हो तो जातक आनन्दित होता है। उसकी कीर्ति सदा विस्तृत होती है और संसार में ख्याति प्राप्त करता है।[11]

6– **पीड़ित अवस्थागत ग्रह का फलः–**

यदि ग्रह पीड़ित अवस्था में हो तो जातक नाना प्रकार के दुःखों तथा पीड़ाओं से घिरा रहता है। वह सन्तप्त होकर देश देशान्तर में विचररण करता है।[12]

7– **भीत अवस्थागत ग्रह का फलः–**

यदि ग्रह भीत अवस्था में हो तो जातक निर्बल या पराजित होकर परम दीनता का अनुभव करता है।[13]

8– **विकल अवस्थागत ग्रह का फलः–**

यदि ग्रह विकल अवस्था में हो तो जातक शत्रु से भयभीत होकर अपने स्थान से पृथक् होता है और क्लेश का अनुभव करता है, उसका चित्त मलीन रहता है।[14]

9– **खल अवस्थागत ग्रह का फलः–**

यदि खल अवस्था में ग्रह हो तो जातक परिवार के दुःख से दुःखी तथा

10- शान्ते प्रशान्तचित्तः सुखधनभागी महीपतेः सचिवः।
विद्वान्तपरोपकारी धर्मपरो जायते पुरूषः।। सारावली 5/8 पृष्ठ 27

11- स्त्रीवस्त्रमाल्याग-धैर्विलसति पुरूषः सदा विततकीर्तिः।
दयितः सर्वजनस्य च शक्ताख्ये भवति विख्यातः।। तत्रैव 5/9 पृष्ठ 27

12- दुःखैर्व्याधिभिररिभिः प्रपीडयते पीडिताख्ये तु।
देशाद्देशं विचरति बन्धुवियोगाभिसंतप्तः।। तत्रैव 5/10 पृष्ठ 27

13- बहुसाधनोऽपि राजा प्रध्वस्तबलः प्रपीडितो रिपुणा।
नाशमुपयाति विजितो भीते दैन्यं परं प्राप्तः।। तत्रैव 5/11 पृष्ठ 27

14- स्वस्थानपरिभ्रष्टः विकलष्टो मलिनः प्रयाति परदेशम्।
विध्वस्तबलो विकले रिपुबलसंचकितचित्तश्च।। तत्रैव 5/12 पृष्ठ 27

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलुषित मन वाला तथा अन्तःकरण के शोक के भार को दूर नहीं कर पाता।[15]

"जातक पारिजात" तथा "सारावली" आदि ग्रन्थों में उल्लिखित दीप्तादि मानसिक स्थितियों के अतिरिक्त "बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" में ग्रहों की मानसिक स्थितियों को तीन अन्य वर्गों में विभक्त किया गया है:– 1– जाग्रतादि अवस्थायें, 2– लज्जितादि अवस्थायें और 3– शयनादि अवस्थायें।

1– **जाग्रतादि अवस्थायें:–**

जाग्रतादि अवस्थाओं को तीन प्रकार का बतलाया गया है:– 1– जाग्रत, 2–स्वप्न, 3– सुषुप्ति।[16]

जाग्रत अवस्था में पूर्ण फल, स्वप्न अवस्था में मध्यम फल तथा सुषुप्ति अवस्था में शून्य फल होता है।[17]

2– **लज्जितादि अवस्थायें:–**

इस वर्ग में छः अवस्थायें हैं:– 1– लज्जित, 2– गर्वित, 3– क्षुधित, 4– तृषित, 5– मुदित, 6– क्षोभित

1– **लज्जित अवस्था–** जो ग्रह अपने पुत्र ग्रह (जैसे सूर्य शनि के घर में तथा चन्द्र बुध के घर में) की राशि में स्थित है या जो ग्रह राहु, केतु से युक्त हो अथवा जो ग्रह सूर्य, मङ्गल, शनि से युक्त हो वे लज्जित ग्रह होते हैं।[18]

15– स्त्रीभरण दुःखतप्तः समस्तधननाशकलुषितमनस्कः।
न जहाति शोकभारं कथमपि खलसंज्ञिते पुरूषः।। सारावली 5/13 पृष्ठ 28

16– विज्ञाय प्रथमं पुंसां जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिकाः।
विशेषेण परीक्षा स्याज्जाग्रतः कार्यसाधकः।। वृहतपाराशरहोराशास्त्रम् 42/6 पृष्ठ 363

17– स्वप्नावस्था मध्यफला विज्ञेया मुनिसतम।
निष्फला चरमावस्था फलमेवं हि कल्पितम्।। वृहतपाराशरहोराशास्त्रम् 42/7 पृष्ठ 363

18– पुत्रगेहगतः खेटो राहु केतुयुतोऽथवा।
रविमन्दकुजैर्युक्तो लज्जितो ग्रह उच्चयते।। तत्रैव 42/23 पृष्ठ 366

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फल– लज्जितावस्थागत ग्रह से नास्तिकता, बुद्धि की हानि, वृथा भ्रमण, कलहकारी बातों में रूचि तथा अच्छे कामों में मन नहीं लगता है।[19]

2– **गर्वितावस्था**– स्वोच्चगत, मूल त्रिकोणगत, ये दोनों ग्रह गर्वित होते हैं।[20]

फल– गर्वित ग्रह की दशा में नये मकान का सुख, उपवन, उद्यान का सुख, कला प्रेम तथा कला योग्यता तथा सम्पर्क आदि में वृद्धि होती है।[21]

3– **क्षुधितावस्था**– शत्रुक्षेत्री, अशुभयुक्त, अशुभ दृष्ट तथा शनि से युक्त ग्रह क्षुधित होते हैं।[22]

फल– क्षुधितावस्था में ग्रह से शोक, मोह, परिवार का कष्ट, मानसिक विक्षोभ, कमजोरी, कलह, शत्रुओं से वैर भाव तथा विषाद के कारण बुद्धि विपर्यय होता है।[23]

4– **तृषितावस्था**– जल राशि (कर्क, मीन) में स्थित ग्रह यदि शत्रु दृष्ट भी हों तथा शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो तृषितावस्था होती है।[24]

फल– तृषितावस्था में अपनी स्त्री को रोग, दुष्टतापूर्ण कार्यों में लिप्त होना,

---

19– दिशति लज्जितभाववशाद्रतिं विगतराममतिं विमतिक्षयम्।
सुतगदागमनं गमनं वृथा कलिकथाभिरूचिं न रूचिं शुभे।। वृहतपाराशरहोराशास्त्रम् 42/37 पृष्ठ 368

20– तुङ्गस्थानगतो वापि त्रिकोणेऽपि भवेत्पुनः।
गर्वितः सोऽपि गदितो निर्विशंक द्विजोत्तम।। तत्रैव 42/24 पृष्ठ 366

21– नृपालयारामसुखं नृपत्वं कलापटुत्वं विदधाति पुंसाम्।
सदार्थलाभं व्यवहारवृद्धिं फलं विशेषादिह गर्वितस्य।। तत्रैव 42/35 पृष्ठ 368

22– शत्रुगेही शत्रुयुक्तो रिपुदृष्टो भवेद्यदा।
क्षुधितः स च विज्ञेयः शनियुक्तो यथा तथा। तत्रैव 42/25 पृष्ठ 366

23– क्षुधितखगवशाद्वै शोकमोहादिपातः।
परिजनपरितापादाधिभीत्या कृशत्वम्।।
कलिरपि रिपुलोकैरर्थबाधा नराणा-
मखिलबलनिरोधो बुद्धिरोधो विषादात्।। तत्रैव 42/39 पृष्ठ 368

24– जलराशि स्थितः खेटः शत्रुणा चावलोकितः
शुभग्रहाः न पश्यन्ति तृषितः स उदाहृतः।। तत्रैव 42/26 पृष्ठ 366

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपने लोगों में बदनामी, धन हानि, मान हानि तथा कमजोरी आदि होती है।[25]

5– **मुदितावस्थाः–** मित्र क्षेत्री, मित्र ग्रह से युक्त, मित्र से दृष्ट, गुरू से युक्त ग्रह मुदित होते हैं।[26]

फल– मुदितावस्थागत ग्रह से आवास का सुख, स्वच्छ उत्तम वस्त्र, आभूषण, अपने लोगों में महत्व, शत्रुओं का नाश तथा बुद्धि में वृद्धि होती है।[27]

6– **क्षोभितावस्था–** सूर्य से युक्त होकर केवल अपने शत्रु ग्रह से या कई पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो क्षोभितावस्था होती है।[26]

फल– क्षेभित ग्रह की दशा में शोक, कुबुद्धि, दरिद्रता, धन नाश तथा पैरों में कष्ट आदि होते हैं।[29]

3– **शयनादि अवस्थायेंः–**

शयनादि अवस्थाओं को बारह प्रकार का बतलाया गया हैः– 1– शयन, 2– उपवेशन, 3– नेत्रपाणि, 4– प्रकाशन, 5– गमन, 6– आगमन, 7– सभावास, 8– आगम, 9– भोजन, 10– नृत्यलिप्सा, 11– कौतुक, 12– निद्रा।[30]

25- तृषितखगभवे स्वांगनासंगमध्ये,
भवति गदविकारो दुष्टकार्याधिकारः।
निजजनपरिवादादर्थहानिः कृशत्वं
खलकृतपरितापो मानहानिः सदैव।। वृहतपाराशरहोराशास्त्रम् 42/40 पृष्ठ 369

26- भित्रगेही मित्रयुक्तो मित्रेण च विलोकितः।
गुरूणा सहितो यश्च मुदितः पश्यन्ति सर्वथा।। तत्रैव 42/27 पृष्ठ 366

27- भवति मुदित योगे वासशाला विशाला,
विमलवसनभूषा भूमियोषासु सौख्यम्।
स्वजनजनविलासो भूमिपागारवासो,
रिपुनिवहविनाशो बुद्धिविद्याप्रकाशः।। तत्रैव 42/36 पृष्ठ 368

28- रविणा सहितो यश्व पापाः पश्यन्ति सर्वथा।
क्षोभितं तं विजानीयाच्छत्रुणा यदि वीक्षितः।। तत्रैव 42/28 पृष्ठ 367

29- सङ्क्षोभितस्यापि फलं विशेषाद् दरिद्रजातं कुमतिं च कष्टम्।
करोति वित्तक्षयमंघ्रिबाधां धनाप्तिबाधामवनीशकोपात्।। तत्रैव 42/38 पृष्ठ 368

30- शयनं चोपवेशं च नेत्रपाणिः प्रकाशनम्।
गमनागमनं चैव सभायां वसतिस्तथा।
आगमं भोजनं चैव नृत्यलिप्साम् च कौतुकम्।
निद्रा चैव 42/41-42 पृष्ठ 369

CC-0. Mahamahopadhyaya Dr. Sudhakar Dvivedi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्य आदि सभी ग्रह अपने प्रकृति के अनुसार सभी बारह अवस्थाओं में भिन्न–भिन्न फल देते हैं, जिनका विवरण जातक ग्रन्थों में प्राप्त होता है।[31]

प्रस्तुत सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि विभिन्न प्रकार की ग्रहीय स्थितियां विभिन्न प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोगों को उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार की ग्रहीय स्थितियां (योग) निम्नलिखित हैं:–

1– त्रिक स्थान (षष्ठम्, अष्टम् तथा द्वादशभाव) से सम्बन्ध।

2– लग्न (प्रथम भाव) में स्थित ग्रह तथा लग्नेश।

3– अवरोहीपन

4– क्रूर षड्यंश में स्थिति

5– पाप ग्रहों से प्रभावित होना।

6– राशि या भाव के स्वामी की अनिष्ट स्थान में स्थिति।

7– भाव, राशि एवं उनके स्वामियों की निर्बलता।

7– भाव से चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश भाव में या त्रिकोण स्थान में पाप ग्रहों का स्थित होना।

8– शुभ ग्रहों का प्रभाव न होना।

अब उपर्युक्त रोग कारक स्थितियों का विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

31- विस्तार के लिए देखिये "वृहतपाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-42 श्लोक-43 से 268 तक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– **त्रिक स्थानः–**

षष्ठम, अष्टम तथा द्वादश भावों को त्रिक स्थान कहते हैं। जातक ग्रन्थ फलदीपिका के अनुसार रोग के सम्बन्ध में निर्णय करने के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर विचार किया जाता है।[32]

क– षष्ठम भाव में स्थित ग्रह

ख– अष्टम भाव में स्थित ग्रह

ग– द्वादश भाव में स्थित ग्रह

घ– षष्ठम भाव का स्वामी

ङ– षष्ठम भाव के स्वामी से युति करने वाला ग्रह

इस प्रकार इन ग्रहों के विचार से दो या तीन प्रकार से जब एक ही रोग निर्दिष्ट प्रतीत हो तो वह रोग उत्पन्न होगा, इसे निश्चित किया जा सकता है।

त्रिक स्थानों के सम्यक ज्ञान के लिए अब तीनों भावों (षष्ठम, अष्टम तथा द्वादश) का पृथक्–पृथक् विवरण प्रस्तुत किया जा रहा हैः–

क– **षष्ठम भाव–**

षष्ठम भाव रोग का भाव है। जातक पारिजात के अनुसार रोग, शत्रु और क्षत (चोट) आदि का विचार षष्ठम भाव से किया जाता है।[33]

32- रोगस्य चिन्तामपि रोगभावस्थितैर्ग्रहैर्वा व्ययमृत्युसंस्थैः।
रोगेश्वरेणापि तदन्वितैर्वा द्वित्र्यादिसम्वादवशाद्वदन्तु।। फलदीपिका- रोग निर्णय, 14/1, पृष्ठ 265

33- रोगारिव्यसनक्षतानि वसुधापुत्रारितश्चिन्तये
दुक्तं रोगकरं तदेव रिपुगे जीवे जितारिर्भवेत्। जातक पारिजात 13/71 पृष्ठ 566

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

षष्ठम भाव में स्थित ग्रहः–

षष्ठम भाव में स्थित सूर्य आदि ग्रह जिस रोग के कारक होते हैं, उन रोगों से जातक पीड़ित होता है।[34]

इसके अतिरिक्त छठे भाव में स्थित ग्रह जिस राशि या भाव का स्वामी हो या कारक हो तो वह राशि या भाव काल पुरूष के जिस अङ्ग में पड़ती हो अथवा जिस अङ्ग का कारक हो उस अंग में रोगोत्पत्ति करता है।[35]

षष्ठेश की स्थिति के अनुसारः–

षष्ठेश यदि लग्न में हो तो जातक के शरीर में, पंचम भाव में स्थित हो तो पिता और पुत्र के शरीर में, यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो तो माता के शरीर में, तृतीय भाव में हो तो छोटे भाई के शरीर में, एकादश भाव में स्थित हो तो बड़े भाई के शरीर में, और यदि पाप ग्रह से युक्त षष्ठेश अष्टम भाव में हो तो जातक के पृष्ठ भाग में व्रण आदि होते हैं।[36]

यदि षष्ठेश से युत ग्रह सूर्य हो तो सिर में, चन्द्रमा हो तो मुख में, यदि भौम हो तो कण्ठ या ग्रीवा में, यदि बुध हो तो नाभि से अधोभाग (वस्तिप्रदेश) में, यदि बृहस्पति हो तो रोग मुक्ति, शुक्र हो तो नेत्र में और शनि हो तो वायु जन्य व्रण से कष्ट होता है। राहु और केतु यदि षष्ठेश से युक्त हों तो उदर विकार देते हैं। स्वराशि में बुध यदि लग्नेश से षष्ठ भाव में संयुक्त हो तो जातक के गुह्य प्रदेश में व्रण आदि होते हैं।[37]

34- षष्ठस्थानगतेषु भास्करमुखव्योमाटनेषु क्रमात्।
तत्तत्कारकखेटवर्गरिपुणा सम्पीडितः सन्ततम्।। जातक पारिजात 13/74 पृष्ठ 567

35- डा0 शुकदेव चतुर्वेदी- ज्योतिष शास्त्र में रोग विचार पृष्ठ-9

36- पापे लग्नगते सपत्नपयुते देहव्रणं देहिनां
पुत्रस्थे पितृपुत्रयोः सुखगते मातुः कलत्रे स्त्रियाः।
धर्मस्थे सति मातुलस्य सहजे तस्यानुजस्य व्रणं
लाभस्थे तु तदग्रजस्य निधने जातो गुदार्तो भवेत्।। जातक पारिजात 13/77 पृष्ठ 568

37- भानुर्मूर्ध्नि शशी मुखेऽवनिसुतः कण्ठे तु नाभेरध
श्चान्द्रिः सूरिरनामयं प्रकुरूते नेत्रामयं भार्गवः।
मन्दो वातमहिश्च केतुरूदरव्याधिं बुधक्षेत्रगो
लग्नेशः शशिजेन वीक्षितयुतो गुह्यव्रणं यच्छति।। तत्रैव 13/78 पृष्ठ 568

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

षष्ठम भाव की समीक्षाः—

यह सामान्य सिद्धान्त है कि ग्रह जब पाप प्रभाव से युक्त हों तभी रोग उत्पन्न कर सकते हैं, शुभ प्रभाव में होने पर नहीं, किन्तु षष्ठम भाव के सम्बन्ध में यह सिद्धान्त कार्यशील नहीं होता।

कुछ आचार्यों का कथन है कि यद्यपि षष्ठम भाव रोग भाव है तथापि इस भाव में स्थित ग्रह यदि पाप प्रभाव युक्त हों तो रोग उत्पन्न नहीं होने देते किन्तु यदि इस भाव में स्थित ग्रह शुभ प्रभाव से युक्त हों तो रोग वृद्धि में सहज सहायक होते हैं।

"जातक पारिजात" में भाव से फल ज्ञान के प्रकार का विश्लेषण करते हुए कहा है कि "जो भाव शुभ ग्रह या अपने स्वामी से दृष्टि युत हों, वह अपने प्राकृतिक फल की वृद्धि करता है, किन्तु वही भाव पाप प्रभाववश प्राकृतिक फल की हानि करता है।[18]

वस्तुतः छठा भाव रोग भाव है और इसका प्राकृतिक फल रोगोत्पत्ति अथवा रोग वृद्धि है। अतः शुभ ग्रह इस प्राकृतिक फल को वृद्धि कर रोगोत्पत्ति में सहायक बन जाते है।

इस प्रकार छठे भाव में नीच राशि एवं शत्रु राशिगत ग्रह रोग विनाशक हो जाते हैं, जबकि उच्च राशि मित्र राशिगत ग्रह रोगकर्ता होते हैं। षष्ठ भावस्थ राहु तथा केतु का फल दृष्टव्य है। "जातक पारिजात" के अनुसार छठे भाव में यदि राहु स्थित हो तो जातक शत्रुंजयी, दीर्घायु, कुलीन,

---

38- तन्वादिभावेषु शुभोदयेषु तदभावनाथोपगतेक्षितेषु।
तदुक्तभावस्य समृद्धिरूक्ता न पापखेटेक्षितसंयुतेषु।। जातक पारिजात 11/2 पृष्ठ 496

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परम सुखी होता है। यदि छठे भाव में केतु स्थित हो तो जातक स्वजनों का प्रेमी, उदार, विख्यात, विद्वान तथा यशस्वी होता है।[39]

यहां यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि यद्यपि राहु तथा केतु पाप ग्रह हैं तथापि छठे भाव में स्थित होने के कारण शुभ फल दाता हो गये हैं।

आधुनिक ज्योतिषाचार्य डा0 शुकदेव चतुर्वेदी ने षष्ठम भाव में पाप ग्रहों के प्रभाव के स्पष्ट निर्धारण हेतु एक प्रायोगिक अनुशीलन प्रस्तुत किया है। डा0 चतुर्वेदी ने अनेक ऐसे व्यक्तियों की जन्म-कुण्डलियों की समीक्षा की है, जिनमें षष्ठम भाव में पाप ग्रह स्थित थे। अपना स्पष्ट मत व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा है कि "हमने अनेक व्यक्तियों की जन्म-कुण्डलियों में प्रत्यक्षतः देखा है- छठे भाव में कर्म राशिगत मङ्गल होने पर वे स्वस्थ, साहसी एवं स्वाभिमानी होते हैं।[40] वस्तुतः इस सिद्धान्त की पृष्ठभूमि में भी ज्योतिष का यह सर्वमान्य सिद्धान्त भी अन्तर्निहित है कि नीच और शत्रुगत ग्रह भाव के नैसर्गिक फल का विनाश करता है, किन्तु मूल त्रिकोण, उच्च एवं मित्र राशिगत ग्रह उसकी वृद्धि करता है।[41]

ख- <u>अष्टम भाव एवं द्वादश भावः-</u>

अष्टम भाव, मृत्यु या नाश भाव होने के कारण देह सुख का ह्रास करता है। द्वादश भाव भी व्यय भाव होने के कारण स्वास्थ्य एवं शरीर के क्रमिक ह्रास का सूचक है।

इन्हीं कारणों से अष्टम तथा द्वादश भाव रोग के कारक माने गये हैं।

इन दोनों भावों में स्थित ग्रह अपनी राशि, भाव एवं कारकत्व के

39- राहौ रिपुस्थानगते जितारिश्चरायुरत्यन्तसुखी कुलीनः।
बन्धुप्रियोदारगुणप्रसिद्धविद्यायशस्वी रिपुगे च केतौ।। जातक पारिजात 8/78 पृष्ठ 411

40- डा0 शुकदेव चतुर्वेदी- ज्योतिष शास्त्र में रोग विचार पृष्ठ-40

41- नीचस्थो रिपुराशिस्थः खेटो भावविनाशकः।
मूलस्वतुङ्गमित्रस्थो भाववृद्धिकरो भवेत।। 11/3 जातक पारिजात पृष्ठ 496

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुसार तत्प्रकार से अशुभ फ़लदायक होकर रोग उत्पन्न करते हैं।

"जातक पारिजात" के अनुसार क्रूर ग्रह से लग्नेश, आठवें एवं बारहवें स्थान में हो तो शारीरिक सुख की हानि होती है।[42]

लगभग सभी जातक ग्रन्थों में इस विलक्षणता को ध्यान में रखकर इस सिद्धान्त को प्रतिपादित किया है कि छठे तथा आठवें एवं बारहवें भाव में स्थित सभी ग्रह नेष्ट होते हैं। अर्थात् जिस भाव का स्वामी त्रिक स्थानों में हो या जिस राशि या भाव में त्रिकेश हो तो उस राशि या भाव का फल नष्ट हो जाता है।[43]

"सारावली" में भी इसी सिद्धान्त को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि– "आठवें या द्वादश भाव में स्थित होने के कारण तथा सूर्य के नेत्रकारक होने के कारण नेत्र पीड़ा उत्पन्न करता है।[44]

2– <u>लग्न भाव :–</u>

लग्न से जातक के शारीरिक गठन वर्ण, आकृति, लक्षण, यश, गुण, स्थान, सुख प्रवास, तेजस्विता तथा दौर्बल्य आदि का विचार किया जाता है।[45]

लग्न भाव में शुभ ग्रह यदि शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो जातक बाल्यावस्था से

42– सक्रूरो देहपो देहसौख्यहाऽन्त्यारिरन्ध्रगः।
सारीशे देहपे दुःस्थे लग्नस्थे वाऽथ रोगवान्।। जातक पारिजात 11/33 पृष्ठ 504

43– यदभावनाथो रिपुरिष्फरन्ध्रे दुःस्थानपो यदभावनस्थितस्तु।
तदभावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः शुभेक्षितश्चेत् फलमन्यथा स्यात्।। जातक पारिजात 11/4 पृष्ठ 497

44– विकलनयनोऽष्टमस्थे धनसुखहीनोऽल्पजीवितः पुरूषः।
भवति सहस्त्रमयूखे स्वभिमतजनविरहसन्तप्तः।।
विकलशरीरः काणः पतितो वन्ध्यापतिः पितुरमित्रः।
द्वादशसंस्थे सूर्ये बलरहितो जायते क्षुदः।। सारावली त्रिंश अध्याय श्लोक 9 तथा 13 पृष्ठ–214 तथा 215

45– शरीरवर्णाकृतिलक्षणानि यशोगुणस्थानसुखासुखानि।
प्रवासतेजोबलदुर्बलानि फलानि लग्नस्थ्य वदन्ति सन्तः।। जातक पारिजात 11/13 पृष्ठ 498

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ही सुख में जीता है। यदि लग्नस्थ ग्रह पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह से दृष्ट हो तो जन्म से ही आजीवन कष्ट में रहता है।[46]

लग्नस्थ ग्रहों का रोगकारकत्वः–

लग्नस्थ सूर्य का फल :–

यदि लग्न में सूर्य स्थित हो तो जातक निर्मम, रणोत्सुक तथा नेत्ररोगी होता है।[47]

लग्नस्थ चन्द्रमा का फलः–

यदि लग्न में क्षीण चन्द्रमा स्थित हो तो जातक अपंग, बधिर तथा अल्पायु होता है।[48]

लग्नस्थ मङ्गल का फलः–

यदि लग्न में मङ्गल स्थित हो तो जातक क्रूर, साहसी, चञ्चल बुद्धि का तथा रोगी होता है।[49]

लग्नस्थ शनि का फलः–

यदि लग्न में शनि स्थित हो तो जातक के नासिका रोगी होने की सम्भावना रहती है।[50]

46- लग्ने शुभे शोभनदृष्टियुक्ते बाल्यात् सुखं तन्नाहि पापयोगात्।
दुःखी भवेत्पापबहुत्वयोगे लग्ने तु बाल्यान्मरणान्तमाहुः।। जातक पारिजात 11/38 पृष्ठ 498

47- मार्तण्डो यदि लग्नगोऽल्पतनयो जातः सुखी निर्घृणः
स्वल्पाशी विकलेक्षणो रणतलश्लाघी सुशीलो नटः। तत्रैव 8/56 पृष्ठ-401

48- क्षीणे शशिन्युदयगे बधिरोऽङ्गहीनः।
प्रेष्यश्च पापसहिते तु गतायुरेव। तत्रैव 8/57 पृष्ठ-402

49- क्रूरः साहसिकोऽटनोऽतिचपलो रोगी कुजे लग्नगे
विद्यावित्ततपःस्वधर्मनिरतो लग्नस्थिते बोधने। तत्रैव 8/58 पृष्ठ-402

50- दुर्नासिको वृद्धकलत्ररोगी मन्दे विलग्नोपगतेऽङ्गहीनः।
महीपतुल्यः सुगणाभिरामो जातः स्वतुङ्गोपगते चिरायुः।। तत्रैव 8/59 पृष्ठ-403

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लग्नस्थ राहु तथा केतु का फलः–

यदि राहु लग्नस्थ हो तो जातक रोगी होता है। यदि केतु लग्नस्थ हो तो भी जातक के रोगी होने की सम्भावना रहती है।[51]

जन्म लग्न का फलः–

जन्म के समय पूर्व क्षितिज में उदित हो रही राशि को जन्म लग्न भी कहते हैं। इन जन्म कालिक उदयशील राशियों का रोगों से सम्बन्धित फल निम्नलिखित है:–

मेष–वृष लग्न का फलः–

मेष राशि के लग्न में उत्पन्न हुआ जातक दुर्बल शरीरधारी, क्रोधी तथा दुर्बल जंघाओं वाला होता है। वृष राशि के लग्न में उत्पन्न जातक कामासक्त होता है।[52]

मिथुन–कर्क लग्न का फलः–

मिथुन राशि के लग्न में उत्पन्न हुआ जातक रोगी तथा कर्क राशि के लग्न में उत्पन्न जातक कायर बुद्धि का होता है।[53]

सिंह–कन्या राशि का फलः–

सिंह राशि के लग्न में उत्पन्न व्यक्ति हिंसक प्रवृत्ति का तथा कामातुर होता

51- क्रूरो दयाधर्मविहीनशीलो राहौ विलग्नोपगते तु रोगी।
केतौ विलग्ने सरूजोऽतिलुब्धः सौयेक्षिते राजसमानभोगी।। जातक पारिजात 8/60 पृष्ठ-403

52- बन्धुद्वेषकरोऽटनः कृशतनुः क्रोधी विवादप्रियो
मानी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरश्च मेषोदये।
गोमान् देवगुरूद्विजार्च्चनरतः स्वल्पात्मजः शान्तधी
र्विद्यावादरतोऽटनश्च सुभगो गोलग्नजः कामुकः।। जातक पारिजात 9/105 पृष्ठ 453

53- भोगी बन्धुरतो दयालुरधिकः श्रीमान् गुणी तत्त्वविद्
योगात्मा सुजनप्रियोऽतिसुभगो रोगी च युग्मोदये। तत्रैव 9/106 पृष्ठ-454

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। किन्तु कन्या लग्न का जातक सात्विक होता है।[54]

तुला लग्न फलः–

तुला लग्न के जातक की दंत पंक्ति विरल होती है। वह शान्तिचित्त, विषादचित्त तथा अत्यन्त भीरू होता है।[55]

वृश्चिक–धनु–मकर लग्न फलः–

वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक मूर्ख, क्रूर, अत्यन्त चपल, अभिमानी तथा विवादप्रिय होता है। किन्तु मिथुन लग्न का जातक बुद्धिमान तथा यशस्वी होता है।

मकर राशि के लग्न में उत्पन्न हुआ जातक दुष्ट तथा दीन होता है।[56]

कुम्भ–मीन लग्न फलः–

कुम्भ लग्न में उत्पन्न व्यक्ति कुटिल अन्तर्मन वाला तथा कृपण होता है, किन्तु मीन लग्न में उत्पन्न जातक विद्वान होता है।[57]

लग्नेश का रोगकारकत्वः–

"बृहतपाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार लग्नेश निम्नलिखित दशाओं में रोगकारक होता है:–

54- जातः सिंहविलग्नकेऽल्पतनयः सन्तुष्टधीर्हिंसकः
शूरो राजवशीकरो जितरिपुः कामी विदेशं गतः।
कन्यालग्नभवः क्रियासुनिपुणः श्रीमान् सुधीः पण्डितः।।
मेधावी वनितावितासरसिको बन्धुप्रियः सात्विकः — जातक पारिजात 9/107 पृष्ठ-454

55- ललितवदननेत्रो राजपूज्यश्च विद्वान्
मदनरतिविलोलः स्त्रीधनक्षेत्रशाली।
विरलदशनमुख्यः शान्तबुद्धिर्विषादी
चलमतिरतिभीरूर्जायते तौलिलग्ने।। — जातक पारिजात 9/108 पृष्ठ-454

56- मूर्खः क्रूरविलोचनोऽतिचपलो मानी चिरायुर्धनी
विद्वान् वृश्चिकलग्नजश्च सुजनद्वेषी विवादप्रियः।
प्राज्ञश्चापविलग्नजः कुलवरः श्रीमान् यशोवित्तवान्
ना कोकेरसमुदभवश्च रमणीलोलः शठो दीनवाक्। — जातक पारिजात 9/109 पृष्ठ-454

57- अन्तःशठः परवधूरतिकेलिलोलः
कार्पण्यशीलधनवान् घटलग्नजातः।
मीनोदयेऽल्परतिरिष्टजनानुकूल — जातक पारिजात 9/110 पृष्ठ-455

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– यदि लग्नेश पापयुक्त अर्थात् छठे, आठवें या बारहवें भाव में गया हो तो शरीर का सुख कम कर देता है।[58]

2– यदि लग्नेश अस्तङ्गत, नीचगत अथवा शत्रुक्षेत्री हो तो शरीर रोगी होता है।[59]

"जातक पारिजात" के अनुसार लग्नेश का रोगकारकत्व निम्नलिखित है:–

1– निर्बल लग्नेश यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक रोगी होता है।[60]

2– लग्नेश जिस राशि में स्थित हो उस राशि का स्वामी यदि अष्टमस्थ हो तो जातक दुर्बल होता है।[61]

3– यदि लग्नेश द्वादश भाव में स्थित हो, सूर्य राशि छठी राशि के स्वामी से संयुक्त हो तो जातक अनेक रोगों से पीड़ित तथा दुर्बल शरीर का होता है।[62]

4– यदि लग्नेश शुष्क राशि (मेष, तुला, धनु, सिंह) का होकर अष्टम भाव में स्थित हो तो जातक रोगी एवं दुर्बल होता है।[63]

जातक ग्रन्था "सारावली" में कहा गया है कि यदि जातक का लग्न या लग्न स्वामी पापग्रह से युत अथवा दृष्ट हो तो पीड़ा उत्पन्न करता है।[64]

58- तनुपः पापसंयुक्तस्त्रिकगो देहसौख्यहृत्।
केन्द्रकोणगतश्चासौ सदा देहसुखं दिशेत्।। बृहतपाराशरहोराशास्त्रम् 13/1 पृष्ठ-128

59- लग्नपोऽस्तंगतो नीचे शत्रुभे रोगकृद् भवेत्।
शुभाः केन्द्रत्रिकोणस्थाः देहें सौख्यप्रदाः स्मृताः। तत्रैव 13/2 पृष्ठ-128

60- बलैर्विहीने यदि लग्ननाथे केन्द्रत्रिकोणे सति रोगभाक् स्यात्।
लग्नेश्वराधिष्ठितराशिनाथे दुःस्थानगे दुर्बलदेहवान् स्यात्।। जातक पारिजात 11/32 पृष्ठ 504

61- देहेशस्थितराशीशे नाशगे दुर्बलो भवेत्।
भावेशाक्रान्तराशीशैर्दुः स्थैर्भावाश्च दुर्बलाः।। तत्रैव 11/35 पृष्ठ-504

62- लग्नेशे यदि रिष्फगे दिनकरस्थारातिनाथान्विते
जायावान् बहुरोगवान् कृशतनुः संरक्तगौरद्युतिः। तत्रैव 11/37 पृष्ठ-505

63- लग्नाधिपे नाशगते तु शुष्कराशौ तनोः कष्टमतीव कृच्छ्रम्।
लग्नांशपस्थांशपराशिनाथः शुष्कग्रहः स्यात्तनुशुष्कमाहुः।। तत्रैव 11/30 पृष्ठ-503

64- लग्नं लग्नाधिपो यस्य पापयुक्तेक्षितो भवेत्।
पीडां करोति जातस्य शुभयुग्दृष्टिताऽल्पिकाम्।। सारावली 10/14 पृष्ठ 63

CC0. Maharishi Mahesh Yogi,Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लग्न भाव की समीक्षाः—

प्रथम भाव अथवा लग्न कुण्डली का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाव है। लग्न ही समस्त भावों का ध्रुव केन्द्र है और लग्न राशि का स्वामी लग्नेश ही कुण्डली का अधिपति माना जाता है।

लग्न के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए आधुनिक ज्योतिषाचार्य डा0 सुखदेव चतुर्वेदी ने अनेक जातक ग्रन्थों के आधार पर लग्न भाव की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है:—[65]

1— जब कोई ग्रह लग्न में स्थित हो जाता है तो वह अपनी अस्थि तथा धातुओं का विशेष या पूर्णरूपेण प्रतिनिधित्व करता है उदाहरणार्थ यदि शुक्र लग्नेतर स्थान में पाप प्रभाव से युत हो तो वीर्य रोग होना सम्भव तो है किन्तु कुछ निश्चित नहीं है, केवल सम्भावना रहती है, परन्तु वही शुक्र जब लग्न में स्थित हो तथा पाप प्रभाव से युक्त हो तो निश्चित रूप से वीर्य विकार उत्पन्न करेगा।

2— जब कोई ग्रह लग्न में स्थित हो या लग्नेश हो तो वह शरीर के उन तत्वों का विशेष प्रतिनिधित्व करता है जो शरीर में अधिक व्यापक हैं। उदाहरणार्थ यद्यपि सूर्य आंख, हृदय एवं हड्डी इन सबका प्रतिनिधि है तथापि जब यह लग्न में स्थित होगा या लग्नेश होगा तो यह हड्डी का विशेष प्रतिनिधित्व करेगा क्योंकि शरीर में हड्डी, आंख या हृदय की अपेक्षा अधिक व्यापक है।

65- डा0 शुकदेव चतुर्वेदी- ज्योतिषशास्त्र में रोगविचार पृष्ठ-30

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3- **अवरोहीपनः-**

जो ग्रह अपने परमोच्च से आगे तथा परमनीच से पहिले अर्थात् परमोच्च एवं परमनीच के बीच की 6 राशियों में कहीं भी स्थित हो वह अवरोही कहलाता है। अवरोही ग्रह की दशा को अवरोहिणी कहते हैं तथा प्रत्येक ग्रह की अवरोहिणी दशा के समय रोगोत्पत्ति होती है। अतः अवरोही ग्रह रोग कारक माना जाता है।[66]

4- **क्रूरषष्ट्यंश में स्थितिः-**

प्रत्येक राशि में 60 षष्ट्यंश होते हैं तथा एक राशि में 30 अंश होते हैं। अतः आधे अंश का एक षष्ट्यंश होता है। इन 60 षष्ट्यंश के स्वामियों के नामों में कुछ नाम शुभ है तथा कुछ अशुभ हैं। उक्त 60 षष्ट्यंशों के स्वामियों में से जिनके नाम शुभ हैं, उन्हें शुभ षष्ट्यंश तथा जिनके नाम क्रूर हैं, उन्हें क्रर षष्ट्यंश कहते हैं। इस क्रर षष्ट्यंश में स्थित ग्रह की दशा में रोग होते हैं। अतः क्रूर षष्ट्यंश में स्थित ग्रह रोगकारक कहलाता है।[67]

5- **पाप ग्रहों से प्रभावित होनाः-**

भाव या राशि प्रायः दो कारणों से पाप ग्रहों से प्रभावित होती हैं।

1- **पाप ग्रहों के मध्य में स्थितिः-**

जो भाव या राशि दो पाप ग्रहों के मध्य में हो वह भाव या राशि पाप प्रभावयुक्त होने के कारण जिस अङ्ग का प्रतिनिधित्व करता है उसमें विकार उत्पन्न कर देता है।[68]

6- भ्रष्टस्यतुङ्गादवरोहिसंज्ञा मध्या भवेत् सा सृहृदुच्चभांशे।
आरोहिणी निम्नपरिच्युतस्य नीचारिभांशेष्वधमा भवेत् सा ।। बृहज्जातकम् 8/6, पृष्ठ-196

7- क्रूरादिषष्टयंशरवेर्दशायां स्थानच्युतिं वा नृपचौरभीतिम्।।

8- कोपाधिकं तत्र शिरोरूजं च पित्रादिनाशं त्वथ वा तदीयम्।। सर्वार्थ चिन्तामणि 13/43 पृष्ठ-209
भावाधीशे च भावे सति बलरहिते च ग्रहे कारकाख्ये
पापान्तरस्थे च पापैरपि समवेक्षिते नान्यखेटैः। प्रश्नमार्ग 14/30 (की प्रथम दो पंक्तियां)
पृष्ठ-212

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– पापकर्तरी योग का होनाः–

यदि भाव या राशि से बारहवें स्थान में स्थित पाप ग्रह मार्गी तथा दूसरे स्थान में स्थित पाप ग्रह वक्री हों तो वह योग पापकर्तरी कहलाता है।[69]

इस पाप कर्तरी योग में अनुलोम एवं विलोम गति से चलने वाले पाप ग्रहों की कैंची उस राशि या भाव से सम्बन्धित अंग के स्वास्थ्य के टुकड़े–टुकड़े कर देती है।

3– पाप ग्रहों से युति तथा पाप ग्रहों की दृष्टिः–

जो राशि या भाव पाप ग्रहों से दृष्ट या युत होता है उसके फल का ह्रास होता है।[70]

6– <u>राशि या भाव के स्वामी की अनिष्ट स्थान में स्थितिः–</u>

राशि या भाव के स्वामी दो प्रकार के होते हैंः– 1–शुभ ग्रह तथा 2–अशुभ ग्रह।

शुभ ग्रहों के लिए तृतीय, षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश स्थान अनिष्ट स्थान होते हैं तथा पाप ग्रहों के लिए तृतीय, षष्ठ एवं एकादश स्थान क अतिरिक्त सभी स्थान अनिष्ट स्थान होते हैं।[71]

इस प्रकार किसी भी राशि या भाव का स्वामी यदि शुभ ग्रह हो और वह कुण्डली में तृतीय, षष्ठ, अष्ठम या एकादश स्थान में बैठा हो तो उस राशि का भाव

69– निःस्वोऽशु चिर्विसुखदारसुतोऽङ्गहीनः। फलदीपिका 6/11 पृष्ठ-117
स्यात्पापकर्तरिभवोऽचिरमायुरेति।।

70– पापास्त्रयोऽपि मिलिताः कुर्वन्ति नरं सुदुर्भगं लोके। सारावली 16/38 पृष्ठ-108
दारिद्र्यदुःखतप्तं गर्हितरूपं विनयहीनम्।।

71– ग्रहाणामिष्टानिष्टभावाश्चोच्यन्ते।
सौम्यानां व्ययमृत्युशत्रुसहजा नेष्टा अभीष्टाः परे।
भावेष्वेषु हि मुख्यता तु वपुषो धर्मात्मजौ तत्समौ
तेषु त्रिष्वधिक शुभाशुभफलं विद्यात् सतां चासताम्।। मानसागरी 14/44 पृष्ठ-216

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रोगकारक हो जाता है तथा किसी राशि या भाव का स्वामी पाप ग्रह हो और वह त्रिषडाय को छोड़कर अन्य स्थान में बैठा हो तो वह राशि या भाव रोगकारक हो जाता है।

7- **भाव, राशि एवं उसके स्वामियों की निर्बलता:-**

जो राशि या भाव निर्बल हों अथवा जिस राशि या भाव का स्वामी निर्बल हो उससे सम्बन्धित अङ्ग में दुर्बलता या रोग होता है, इसका कारण यह है कि भाव या भावेश की निर्बलता भाव के फल को नष्ट कर देती है।[72]

8- **भाव से चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश में या त्रिकोण स्थान में पाप ग्रहों का होना:-**

"प्रश्नमार्ग" नामक जातक ग्रन्थ तथा अनेक अन्य जातक ग्रन्थों के अनुसार जिस भाव से चौथे, आठवें एवं बारहवें स्थान में अथवा पांचवें एवं नौवें स्थान में पाप ग्रह हो उस भाव की हानि होती है। अर्थात् वह भाव शरीर के जिस अंग का प्रतिनिधित्व करता है, उसमें रोग या विकार पैदा हो जाता है।[73]

9- **शुभ ग्रहों का प्रभाव न होना:-**

जिस राशि या भाव पर शुभ ग्रहों का प्रभाव होता है उस राशि से सम्बन्धित अङ्ग पुष्ट एवं स्वस्थ रहते हैं।

इसलिए जिस राशि अथवा भाव पर शुभ ग्रहों का प्रभाव नहीं होता उससे

72- यो यो भावः प्रभुणा युक्तो दृष्टोऽथवा भवेत् प्रश्ने।
गुरूबुधशुक्रैरेवं वक्तव्यं तस्य तस्य शुभम्।। प्रश्नमार्ग 14/26, पृष्ठ-211

73- पापैस्तद्बन्धुमृत्युव्ययभवनगतैस्तत्त्रिकोणस्थितैर्वा।
वाच्या तद्भावहानिः स्फुटमिह भवति द्वित्रसंवाद भावात्। प्रश्नमार्ग 14/30 (अन्तिम दो पंक्तियां) पृष्ठ-212

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सम्बन्धित अङ्ग में भी रोग उत्पन्न होने की सम्भावना होती है।

रोगों का सम्भावित समय

रोगों की कालावधि को ज्ञात करने हेतु भी जातक ग्रन्थों में अनेक सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है।

सभी रोगों के होने की सम्भावना का विचार रोगकारक ग्रह की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यंतर दशा, सूक्ष्म दशा, प्राण दशा, प्रश्नकालीन ग्रह स्थिति एवं गोचरीय ग्रह स्थिति के आधार पर किया जाता है।

यहां यह दृष्टव्य है कि दीर्घकालीन रोग प्रायः ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशा के समय में होते हैं तथा अल्पकालीन रोग उनकी प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म दशा एवं प्राण दशाओं में होते हैं।

कालावधि ज्ञात करने की इस विधि के सम्बन्ध में पाश्चात्य ज्योतिष शास्त्र के विद्वान, गन्थकार तथा सुप्रसिद्ध ज्योर्तिविदि श्री बुयल डी हिगिन्स (Buell. De Higgins) का कथन है कि "विशोंत्तरी पद्धति अत्यन्त प्राचीन पद्धति है जो निःसंदेह पाराशर के साथ आरम्भ हुई। यह पूर्ण रूप से परिक्षित है तथा शताब्दियों से प्रचलित है। यह चक्रीय गति के सिद्धान्त पर आधारित है। यही चक्रीय सिद्धान्त अर्थशास्त्र में तथा राष्ट्रों के इतिहास में एवं व्यक्तिगत जीवन में भी कार्यशील रहता है। इसका आधार जीवन की आदर्श अवधि है जो 120 वर्षों की मानीं गयी है"।[74]

74- VIMSOTTARI DASHA- This is probably the most ancient system of directiong, Originating in India, undoubtedly with Parashara, it has been throughly tested and used for Centuries. It is a valid method, easy to use, and does not require as much time as primary directions. Complex Mathematical camputations are not involved. It is based upon the law of cycles which operates everywhere in economics, among nations, and in individual lives. Its basis is the ideal, original life span of 120 years. (मेजर एस0जी0 खोत- लघपाराशरी सिद्धान्त- पृष्ठ-441 पर दिये हुए अंग्रेजी उद्धरण से)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जातक शास्त्र में विशोंत्तरी अष्टोत्री, षोडशोत्तरी, द्वादशाब्दोत्तरी आदि अनेक प्रकार की दशायें बतलायी गयी हैं। फलादेश करने के लिए मुख्यतः विशेतरी दशा को ही ग्रहण किया जाता है।

विशोंत्तरी दशाः–

वृहद पाराशर होराशास्त्रम् के अनुसार मनुष्य की आयु का अधिकतम मान 120 वर्ष मानकर ग्रहों के दशा वर्षों का विभाजन किया गया है। अतः इसे विशोंतरी दशा कहते हैं। इसमें सूर्य की दशा 6 वर्ष, चन्द्रमा की दशा 10 वर्ष, मंगल की 7 वर्ष, राहू की 18 वर्ष, बृहस्पति 16 वर्ष, शनि की 19 वर्ष, बुध की 17 वर्ष, केतु की 7 वर्ष तथा शुक्रकी दशा 20 वर्ष की मानी गयी है।[75]

जातक ग्रन्थों में दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा, सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा आदि की साधन की रीति तथा विशोत्तरी दशा बोधक चक्र आदि का विस्तृत उल्लेख है। अतएव अति विस्तार के भय से उनका उल्लेख यहां नहीं किया जा रहा है।

रोगोत्पत्ति के सम्भावित समय का निर्धारण दो प्रकार से किया जाता हैः– 1– योग द्वारा तथा 2– दशा द्वारा।

1– योग द्वारा रोगोत्पत्ति काल का ज्ञानः–

योगों द्वारा रोगोत्पत्ति काल का ज्ञान तो होता ही है, इनके द्वारा जीवन भर रहने वाले रोगों की भी जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार के कुछ प्रमुख रोग इस प्रकार हैं:–

75- विंशोत्तरशतं पूर्णमायुः पूर्वमुदाहृतम्।
दशा सभाः क्रमादेषां षड्दशाश्वागजेन्दवः।
भूपतिर्नवचन्द्राश्च नगचन्द्रा नगा नखाः।। वृहतपाराशर होराशास्त्रम 45/13 पृष्ठ-430

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– षष्ठ भाव एवं षष्ठेश पापयुक्त हो तथा शनि राहु से दृष्ट हो तो मनुश्य जीवन भर रोगी रहता है।[76]

2– शनि के साथ चन्द्रमा षष्ठ स्थान में हो तो 55वें वर्ष में रक्तकुष्ठ होता है।[77]

2– <u>दशा द्वारा रोगोत्पत्ति काल का ज्ञानः–</u>

दशा का फल दो प्रकार का होता हैः– 1– साधारण तथा 2– विशिष्ट।

<u>साधारणः–</u>

ग्रह साधारणतया जो फल देते हैं वह साधारण फल कहलाता है।

<u>विशिष्टः–</u>

ग्रह स्थान, स्थिति, बल एवं योग के कारण जो फल देते हैं, वह विशिष्ट फल कहलाता है।[78]

साधारण फल वह है जिसकी अनुभूति मात्र होती है, जबकि विशिष्ट फल जीवन में विलक्षण घटनाओं को घटित करता है।

रोगेश, अष्टमेश, मारकेश, अवरोही, नीचराशिगत, शत्रुराशिगत, नीचांशगत, निर्बल, पापयुत, पापदृष्ट, अनिष्ट स्थान में स्थित, क्रूर षष्ट्यंश में स्थित आदि ग्रह रोगकारक होते हैं। जीवन में जब–जब इन ग्रहों की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यंतरदशा, सूक्ष्मदशा एवं प्राण दशायें आती हैं तब–तब मनुष्यों को रोग होते हैं।

76– रोगस्थानगते पापे तदीशे पासंयुते।।
राहुणासंयुते मन्दे सर्वदा रोगसंयुतः।। वृहतपाराशर होराशास्त्रम 18/12 पृष्ठ–148

77– रिपुस्थानगते चन्द्रे शनिना संयुते यदि।।
पंचपंचाशदब्देषु रक्तकुष्ठं विनिर्दिशेत्। वृहतपाराशर होराशास्त्रम 18/17 पृष्ठ–148

78– साधारणं विशिष्टं च दशानां द्विविधं फलम्।
ग्रहाणां च स्वभावेन स्थानस्थितिवशेन च।। वृहतपाराशर होराशास्त्रम 49/2 पृष्ठ–497

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किस–किस ग्रह की दशा में कौन–कौन सा रोग हो सकता है, यह जानकारी ग्रहों की दशा फल के आधार पर की जाती है।

यद्यपि बृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् तथा सर्वार्थ चिन्तामणि आदि ग्रन्थों में प्रत्येक दशाओं में उत्पन्न होने वाले विभिन्न शारीरिक तथा मानसिक रोगों का उल्लेख है तथापि यहां अति विस्तार के भय से केवल मानसिक रोगों का ही उल्लेख किया जा रहा है।

सूर्य की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोगः–

सामान्यतया सूर्य की दशा में ज्वर, पित्त प्रकोप एवं सिर–दर्द होता है। किन्तु यदि वह किसी विशिष्ट कारण से रोगकारक हो तो विविध स्थितियों में विविध रोगों को उत्पन्न करता है। विविध स्थितियों में इसकी दशा में होने वाले रोगों का विवरण इस प्रकार हैः–

विविध स्थितियां	उत्पन्न होने वाले रोग
नीच ग्रह से युक्त सूर्य की दशा में	मनोविकार[79]
पापदृष्ट सूर्य की दशा में	कृशता या कमजोरी मानसिक क्लेश[80]
स्थान बलहीन सूर्य की दशा में	संताप[81]
क्रूर षष्ट्यंशगत सूर्य की दशा में	क्रोधाधिक्य, सिरदर्द[82]

चन्द्रमा की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोगः–

चन्द्रमा की दशा में सामान्यतया सर्दी, जुकाम, खांसी, मूत्राधिक्य, मानसिक

79- नीचान्वितस्यापि रवेर्दशायां नीचानुवृत्त्या कुनखी कुशीलः।।
स्त्रीपुत्रधान्यार्थपशुक्रियादिमनोविकारं समुपैति हेयम्।। सर्वार्थ चिन्तामणि- अध्याय-13 दशाफलानि सूत्र-15

80- पापान्वितस्य द्युमणेर्दशायां नित्यं मनः क्लिश्यति देयबुद्धया।।
कुभोजनं कुत्सितवस्त्रपाने कुशीलवृत्त्या त्वधनं कृशत्वम्।। तत्रैव अध्याय 13 दशाफलानि-सूत्र-17

81- रवौयदा स्थानबलेन हीने तत्पाककाले बलमर्थनाशम्।।
स्थानच्युतिं बंधुविरोधतापं देशाद्विदेशं समुपैति दुःखम्।। तत्रैव अध्याय 13 दशाफलानि सूत्र-37 पृष्ठ-208

82- क्रूरादिषष्ट्यंशरवेर्दशायां स्थानच्युतिं वा नृपचौरभीतिम्।।
कोपाधिकं तत्र शिरोरूजं च पित्रादिनाशं त्वथ वा तदीयम्।। तत्रैव अध्याय 13 दशाफलानि सूत्र-43 पृष्ठ-209

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्थिरता एवं कामजन्य रोग होते हैं। किन्तु जब यह किसी कारण से रोगकारक हो जाता है तो विविध रोगों को उत्पन्न करता है। विविध स्थितियों में इसकी दशा में उत्पन्न होने वाले रोगों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

विविध स्थितियां	उत्पन्न होने वाले रोग
नीचांशगत चन्द्रमा की दशा में	मानसिक विकार एवं नेत्र रोग[83]
क्षीण चन्द्रमा की दशा में	उन्माद[84]
पापयुक्त चन्द्रमा की दशा में	मनोव्यथा[85]

मङ्गल की दशा में उत्पन्न होने वाले मानसिक रोग:—

मङ्गल की दशा में सामान्यतया रक्तविकार, चोट, दुर्घटना, लड़ाई तथा राजा से शारीरिक दण्ड आदि मिलता है। किन्तु जब यह किसी विशेष कारणवश रोगकारक हो जाता है तो विविध स्थितियों में अपनी दशा के समय में निम्नलिखित रोगों को उत्पन्न करता है।

विविध स्थितियां	उत्पन्न होने वाले रोग
शत्रुराशिगत मङ्गल की दशा में	प्रमाद, मूत्रकृच्छ, गुदा, नेत्ररोग[86]
नीचग्रहयुत मङ्गल की दशा में	मानसिक विकार[87]
पंचमस्थ मङ्गल की दशा में	जड़ता एवं बुद्धि भ्रम[88]

83- नीचांशगस्यापि निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां विविधार्थहानिम्।।
कुभोजनं कुत्सितराजसेवां मनोविकारं समुपैति निद्राम्।। सर्वार्थ चिन्तामणि अध्याय 13 चन्द्र दशाफलानि सूत्र-5 पृष्ठ-211

84- क्षीणेन्दुपाके सुकलाविहीनो राजार्थभूपुत्रकलत्रमित्रम्।।
उन्मादिचित्तं स्वजनैर्विरोधमृणत्वमायाति कुशालवृत्त्या।। तत्रैव अध्याय-13 चन्द्रदशाफलानि सूत्र-14 पृष्ठ-212

85- पापान्वितस्यापि निशाकरस्य पाकेऽग्निचौरक्षितिपालकोपैः।।
दुःखं सुतस्त्रीसुखबंधुहानिं विदेशयानं त्वशुभादिकर्म।। तत्रैव अध्याय 13 चन्द्रदशाफलानि सूत्र-17 पृष्ठ-212

86- भूनंदनास्याप्यरिराशिगस्य दशाविपाके समरे च पीडाम्।।
शोकाग्निभूपालविषैः प्रमादं पीडातिकृछ्रादिगुदाक्षिरोगम्।। तत्रैव अध्याय 14 भौमादि दशाफल विचाराध्यायः सूत्र-9 पृष्ठ-218

87- नीचग्रहेणापि समन्वितस्य धरासुतस्यातिमनोविकारम्।।
प्रेष्यत्ववृत्तिं परकीयमत्र स्त्रीपुत्रनाशं नृपवह्निचौरैः।। तत्रैव सूत्र-13 पृष्ठ-218

88- भ्रातृस्थानगतश्च सौख्यफलदो भूनंदनोऽरातिहा धैर्य वित्तसुतार्थदारसहजैः संगं नृपात्पूज्यताम्।।
पुत्रस्थानगतस्य पुत्रमरणं बुद्धिभ्रमं जाडयता शत्रुक्षेत्रगतस्य भूमिसहजैः [illegible] तत्रैव अध्याय सूत्र-25 पृष्ठ-220

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Jabalpur. MH Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुध की दशा में होने वाले मानसिक रोगः–

बुध की दशा में सामान्यतया ज्वर, चर्मरोग एवं मानसिक अस्थिरता रहती है। किन्तु जब यह किसी विशिष्ट कारणवश रोगकारक बन जाता है, तो इसकी दशा में अनेक रोग उत्पन्न होतें हैं। इसके रोगकारक बनने के कारण तथा दशाकाल में उत्पन्न होने वाले रोगों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः–

विविध स्थितियां	उत्पन्न होने वाले रोग
अवरोही बुध की दशा में	विज्ञानहीनता मानसिक कमजोरी[89]
नीचराशिगत बुध की दशा में	मानसिक रोग[90]
तृतीयभावस्थ बुध की दशा में	जड़ता एवं गुल्म[91]
पञ्चमस्थ बुध की दशा में	क्रूर बुद्धि[92]
अस्तङ्गत बुध की दशा में	मानसिक व्यथा[93]

गुरू की दशा में होने वाले मानसिक रोगः–

गुरू की दशा में सामान्यतया गुल्म, उदरविकार एवं स्थूलता बढ़ जाती है। किन्तु जब यह किसी विशिष्ट कारणवश रोगकारक बन जाता है, तो उसकी दशा के समय में निम्नलिखित रोग उत्पन्न होते हैंः–

89- शशांकसूनोस्त्ववरोहिणी या दशा महत्कष्टतरं च दुःखम।।
90- विज्ञानहीनं परदारसंगं नृपाग्निचौरैर्भयमत्र कष्टम्।। तत्रैव अध्याय 14 बुधदशाफलम् सूत्र-4 पृष्ठ-223
नीचखेचरसंयुक्तसौम्यदायेतिकष्टताम्।।
91- पदभ्रमं बंधुनाशं कर्मनाशं मनोरूजम्।। तत्रैव अध्याय 14 बुधदशाफलानि सूत्र-13 पृष्ठ-225
तृतीराशिस्थितचंद्रसूनोर्दशाविपाके जडतां समेति।।
92- उद्गानमाजीवनगुल्मरोगन्नार्तियोगे नृपमाननं च।। तत्रैव सूत्र-22 पृष्ठ-226
पंचमस्थशशिनंदनस्य वा क्रूरबुद्धिरतिकष्टता भवेत्।।
93- हीनवृत्तिरपि राजसेवया कृच्छ्रलब्धधनमेति संपदम्।। तत्रैव सूत्र-24 पृष्ठ-226
अर्कगसौम्यदशायां लभते विविधापदं मनोदुःखम्।।
स्वकुलजनविरोधं निंदाभीर्वाक्षिकर्णरोगं च।। तत्रैव सूत्र-35 पृष्ठ-227

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV); Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विविध स्थितियां	उत्पन्न होने वाले रोग
अतिनीचांशगत गुरू की दशा में	मन में वैर भाव[94]
नीचग्रहयुत गुरू की दशा में	मानसिक रोग[95]

शुक्र की दशा में होने वाले मानसिक रोगः–

शुक्र की दशा में सामान्यतया, वीर्य रोग, काम रोग एवं स्त्रीजन्य रोगों के होने की सम्भावना रहती है। किन्तु जब यह रोगकारक हो जाता है तो विविध स्थितियों में अपनी दशा में विविध रोगों को उत्पन्न करता है।

विविध स्थितियां	उत्पन्न होने वाले रोग
अवरोही शुक्र की दशा में	हृदय शूल[96]
परम नीचगत शुक्र की दशा में	उद्वेग रोग से सन्तप्त[97]

शनि की दशा में होने वाले मानसिक रोगः–

शनि की दशा में सामान्यतया कृशता, वायु विकार एवं व्यग्रता रहती है। किन्तु जब यह किसी कारणवश रोगकारक हो जाता है तब यह विविध परिस्थितियों में अपनी दशा में विविध रोग उत्पन्न करता है–

विविध स्थितियां	उत्पन्न होने वाले रोग
लग्नस्थ शनि की दशा में	कृशता, सिर–दर्द[98]
द्वितीयस्थ शनि की दशा में	मनोरोग[99]

94- अतिनीचभागभाजो गुरोर्दशायां प्रभग्नगृहपुंजः।।
अन्योन्यहृदयवैरं कृषिनाशं याति परभृत्यः।। सर्वार्थ चिन्तामणि अ-15 गुर्वादिदशाफल सूत्र-6 पृष्ठ-230

95- नीचखेचरसंयुक्तजीवदाये मनोरूजम्।।
परप्रेष्यापवादं च पुत्राणां च विरोधिताम्।। तत्रैव अ-15 सूत्र-14 पृष्ठ-232

96- भृगोः सुतस्याप्यवरोहकाले प्रचंडवेश्यागमनं धनाप्तिम्।।
स्त्रीपुत्रबंध्वार्तिमनोविकारं हृच्छूलरोगं मदनार्तिमेति।। तत्रैव अ-15 शुक्र दशाफलम् सूत्र-4 पृष्ठ-236

97- उद्वेगरोगतप्तः कर्मसु विफलेषु सर्वदाभिरतः।।
अतिनीचगस्यदाये शुक्रस्यात्मार्थदारपुत्रार्तिम।। तत्रैव सूत्र-5 पृष्ठ-237

98- लग्नस्थितशनेर्दाये देहकृच्छ्रमुपैति च।।
स्थानच्युतिं प्रवासं च राजकोपं शिरोरूजम्।। तत्रैव अ-15 शनि दशाफल विचार सूत्र-20 पृष्ठ-244

99- द्वितीयस्थ शनेर्दाये वित्तनाशमथाक्षिरूजम्।।

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kanpur Jabalpur. MH Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृतीयस्थ शनि की दशा में	मानसिक जड़ता उत्साहहीनता[100]
पञ्चमस्थ राशिगत शनि की दशा में	मनोरोग, विभ्रम[101]

राहु की दशा में होने वाले मानसिक रोगः–

राहु की दशा के समय में सामान्यतया उदारविकार, मानसिक उद्वेग तथा छोटी–मोटी बीमारियां चलती रहती है। इसकी दशा के समय में शत्रुओं के प्रपंच तथा अभिचार, अन्य रोग भी होते हैं। जब यह किसी विशिष्ट कारणवश रोगकारक हो जाता है तब विविध स्थितियों में निम्नलिखित रोगों को उत्पन्न करता है।

विविध स्थितियां	उत्पन्न होने वाले रोग
द्वितीयस्थ राहु की दशा में	मानसिक विकार[102]
चतुर्थ राहु की दशा में	मनोव्यथा[103]
पञ्चमस्थ राहु की दशा में	बुद्धि भ्रम[104]
व्ययराशिगत राहु की दशा में	मानसिक रोग[105]

केतु की दशा में होने वाले मानसिक रोगः–

केतु की दशा के समय में सामान्यतया, भ्रम, भय एवं मन में चंचलता रहती है किन्तु जब किसी विशिष्ट कारणवश यह रोगकारक बन जाता है, तब विविध परिस्थितियों में अपनी दशा में विविध रोगों को उत्पन्न करता है।

100- तृतीयस्थशनेर्दये कृषि गोधनसंपदः।।
मनोजाडयं मनोत्साहं भ्रातृतद्वर्गनाशनम्।। सर्वार्थ चिन्तामणि सूत्र-25 पृष्ठ-245

101- पंचमस्थशनेर्दये पुत्रनाशं मनोरूजम्।।
राजकोपं भूलाशं बंधुस्त्रीवित्तविभ्रमम्।। तत्रैव सूत्र-26 पृष्ठ-245

102- राहोर्दशायां धनराशिगस्य राज्यं च वित्तं हरते विशेषात्।।
कुभोजनं कुत्सितराजसेवा मनोविकारं त्वनृतं प्रकोपम्।। तत्रैव अ-16 राहुकेतु दशाफलम् सूत्र-7 पृष्ठ-248

103- चौराग्निबंधार्तिमनोविकारं दारात्मजानामपि रोगपीडा।।

104- चतुर्थराशिस्थितराहुदाये प्रभग्नसंसारकलत्रपुत्रम्।। तत्रैव सूत्र-10 पृष्ठ-249
बुद्धिभ्रमं भोजनसौख्यानाशं विद्याविवादं कलहं च दुःखम।।

105- कोपं नरेन्द्रस्य सुतस्य नाशं राहोः सुतस्थस्य दशाविपाके।। तत्रैव सूत्र-11 पृष्ठ-249
व्ययगतराहुदशायां देशभंशं मनोदुखं कुरुते।।
विच्छिन्नदारपुत्रं कृषिपशुधनधान्यसम्पदां नाशम्।। तत्रैव सूत्र-20 पृष्ठ-250

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विविध स्थितियां	उत्पन्न होने वाले रोग
द्वितीय भावगत केतु की दशा में	मानसिक व्यथा[106]
तृतीय भावगत केतु की दशा में	मानसिक विकलता[107]
पञ्चम भावगत केतु की दशा में	बुद्धि भ्रम[108]
सप्तम भावगत केतु की दशा में	मूत्रकृच्छ, मानसिक रोग[109]
दशम भावगत केतु की दशा में	मन में जड़ता आदि विकार[110]

अन्तर्दशा द्वारा रोगोत्पत्ति काल का निर्णय:–

जातक शास्त्र के आचार्यों का मत है कि प्रत्येक ग्रह अपनी दशा में अपने सम्बन्धी या सधर्मी ग्रह की अन्तर्दशा में अपना फल देता है। जो ग्रह परस्पर एक दूसरे को देखते हैं, एक दूसरे की राशि में होते हैं या एक साथ किसी भी राशि में होते हैं– आपस में सम्बन्धी कहलाते हैं तथा जो ग्रह आपस में मिलकर कोई योग बनाते हैं या एक जैसे प्रभाव का प्रतिनिधित्व करते हैं– वे सधर्मी कहलाते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी भी रोगकारक ग्रह की दशा में जब–जब उसके सम्बन्धी या सधर्मी ग्रह की अन्तर्दशा आती है, तब–तब मनुष्य की शरीर में रोग पैदा होते हैं।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रहों की अन्तर्दशाओं में भी रोग उत्पन्न होते हैं:–

106- धनराशिगतस्यापि केतोर्दाये धनक्षयम्।।
वाक्पारूष्यं मनोदु:खं कुत्सितान्नं मनोरूजम्।। सवार्थ चिन्तामणि केतु दशाफलम् सूत्र-5 पृष्ठ-251

107- तृतीयराशिगस्यापि केतोर्दाये महत्सुखम्।।
मनोवैकल्यमायाति भ्रातृभिर्द्वेषणं परम् तत्रैव केत दशाफलम् सूत्र-6 पृष्ठ-252

108- पञ्चमस्थस्य केतोस्तु दशाकाले सुतक्षयम्।।
बुद्धिभ्रमं विशेषेण राजकोपं धनक्षयम्।। तत्रैव सूत्र-8 पृष्ठ-252

109- कलत्रराशिसंयुक्तकेतोर्दाये महदभ्यम्।।
दारपुत्रार्थनाशं च मूत्रकृच्छ्रं मनोरूजम्।।

110- केतोरष्टमयुक्तस्य दशाकाले महदभ्यम्।। तत्रैव सूत्र-10 पृष्ठ-252
कर्मस्थकेतो: संप्राप्तौ दशायां सुखमेति च।।
मानहानिं मनोजाडयमपकीर्ति मनोरूजम्।। तत्रैव सूत्र-13 पृष्ठ-252

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– षष्ठेश की अन्तर्दशा में।

2– अष्टमेश की अन्तर्दशा में।

3– दशाधीश से षष्ठस्थ पाप ग्रह की अन्तर्दशा में।

4– दशाधीश से व्ययगत पाप ग्रह की अन्तर्दशा में।

5– दशाधीश से अष्टमस्थ पाप ग्रह की अन्तर्दशा में।

6– मारकेश ग्रह की अन्तर्दशा में।

7– अरिष्ट योगकारक ग्रह की अन्तर्दशा में।

8– अनिष्ट स्थान में स्थित ग्रहों की अन्तर्दशा में।

9– पापग्रहों की अन्तर्दशा में।

10– रोगकारक ग्रहों की अन्तर्दशा में।

अन्तर्दशाओं में विभिन्न रोगः–

अन्तर्दशा द्वारा रोगोत्पत्ति के सम्भावित समय का विचार करते हुए फलित ज्योतिष के आचार्यों ने किस ग्रह की अन्तर्दशा में कौन सा रोग होगा?– इस बात का विस्तारपूर्वक विवेचन किया है। इस विवेचन के आधार पर जीवन में होने वाले विविध रोगों के सम्भावित समय का यथार्थ रूप से निर्धारण किया जा सकता है।

सूर्य आदि ग्रहों की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः–

1– सूर्य की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिकाः–

दशापति	अन्तर्दशापति ग्रह	रोग
सूर्य	षष्ठाष्टमव्ययगत चन्द्रमा	जलभय, मानसिक रोग[111]

111– विरोधं राजकलहं धनधान्यपशुक्षयम्।
षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे जलभीतिं मनोरुजम्। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 54 पृष्ठ-542

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्य	त्रिकस्थ मङ्गल	मानसिक रोग[112]
सूर्य	नीचस्थ बुध	मनस्ताप[113]
सूर्य	केतु	देहपीड़ा, मनोव्यथा[114]

2– चन्द्रमा की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिकाः–

दशापति	अन्तर्दशापति ग्रह	रोग
चन्द्रमा	व्यय भाव में स्थित राहु	मनोव्यथा[115]
चन्द्रमा	षष्ठ/अष्टम में स्थित गुरू	मानसिक तनाव[116]
चन्द्रमा	केतु	कलह, मनोव्यथा[117]

3– मङ्गल की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिकाः–

दशापति	अन्तर्दशापति ग्रह	रोग
मंगल	त्रिकस्थ/नीचस्थ/निर्बल गुरू	प्रेत पीड़ा, पित्त रोग[118]

112- दायेशाद् व्ययरन्ध्रस्थे व्ययरन्ध्रस्थे पापैर्युक्तेऽथ वीक्षिते।
आधिपत्य बलैहीने क्रूरबुद्धि मनोरूजम्।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 54/19 पृष्ठ-544

113- दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे रि:फगे नीचगेऽपि वा।।
देहपीड़ा मनस्तापो दारपुत्रादि पीडनम्।। तत्रैव 54/54 पृष्ठ-549

114- सूर्यस्यान्तर्गते केतौ देहपीड़ा मनोव्यथा।
अर्थव्ययं राजकोपं स्वजनादेरूपद्रवम्।। तत्रैव 54/58 पृष्ठ-549

115- चौराहिराजभीतिश्च चतुष्पाज्जीवपीडनम्।
बन्धुनाशोमित्रहानिर्मानहानिर्मनोव्यथा।। तत्रैव 54/14 पृष्ठ-553

116- स्थानभ्रंशो मनोदु:खमकस्मात्कलहो ध्रुवम्।।
गृहक्षेत्रादिनाशश्च वाहनाम्बरनाशनम्। तत्रैव 55/26 पृष्ठ-555

117- शत्रुत: कार्यहानि: स्यादकस्मात्कलहो ध्रुवम्।
द्वितीययद्यूनराशिस्थे देहकष्टं महद्भयम्।। तत्रैव 55/51 पृष्ठ 558

118- षष्ठाष्टम व्यये जीवे नीचे वास्तंगते सति।।
पापग्रहेण संयुक्ते दृष्टे वा दुर्बले सति।
चौराहिनृपभीतिश्च पित्तरोगादि सम्भवम्।।
प्रेतबाधा भृत्यनाश: सोदराणां विनाशनम्। तत्रैव 56/19 तथा 20 पृष्ठ-564

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंगल	द्वितीय सप्तमेश शनि	मानसिक रोग[119]
मंगल	मंगल से त्रिकस्थान में स्थित सूर्य	मानसिक रोग[120]

4– राहु की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिकाः–

दशापति	अन्तर्दशापति ग्रह	रोग
राहु	षष्ठ/व्यय में स्थित नीच/शत्रुराशिस्थ शनि	मानसिक रोग[121]
राहु	अष्टमेश के साथ स्थित केतु	मानसिक व्यथा[122]
राहु	अष्टम/व्यय में स्थित निर्बल केतु	मानसिक रोग[123]

5– गुरू की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिकाः–

दशापति	अंन्तर्दशापति ग्रह	रोग
गुरू	त्रिकस्थान में नीच/अस्तङ्गत शनि	मानसिक रोग[124]
गुरू	गुरू से 6,8 या 12वें में स्थित	

119- द्वितीय द्यूननाथे तु पापयुक्ते महद्भयम्।।
धननाशश्च सञ्चारे राजद्वेषो मनोव्यथा। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 56/26 पृष्ठ-565

120- दायेशात्षष्ठरिःफे वा व्यये वा पापसंयुते।
देहपीडा मनस्तापः कार्यहानिर्महद्भयम्।। तत्रैव 56/65 पृष्ठ-570

121- नीचारिक्षेत्रगे मन्दे रन्ध्रे वा व्ययगेऽपि वा।।
नीचारिराजभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम्।
आत्मबन्धुमनस्तापं दायादजनविग्रहम्।।
व्यवहारे च कलहमकस्माद् भूषणं लभेत्।
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते।।
हृदयरोगो मानहानिश्च विववादः शत्रुपीड्नम्। तत्रैव-57/25, 26, 27 पृष्ठ 575

122- अष्टमाधिपसंयुक्ते देहजाड्यं मनोव्यथा।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे देहसौख्यं धनागमः।। तत्रैव 57/41 पृष्ठ 577

123- रन्ध्रस्थानगते केतौ व्यये वा बलवर्जिते।
तद्भुक्तौ बहुरोगः स्याच्चौराहिव्रणपीडनम्।।
पितृमातृवियोगश्च भ्रातृद्वेषो मनोरूजा।। तत्रैव 54/44 पृष्ठ-577

124- लग्नात् षष्ठाष्टमे मन्दे व्यये नीचेऽस्तगेऽप्यरौ।।
धनधान्यादिनाशश्च ज्वरपीडा मनोरूजः। तत्रैव 58/12 पृष्ठ-585

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	पापयुक्त केतु	मानसिक रोग[125]
गुरू	द्वितीयेश/सप्तेश मंगल	जड़ता[126]

6– शनि की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिकाः–

दशापति	अन्तर्दशापति ग्रह	रोग
शनि	त्रिकस्थ नीचगत/अस्तंगत शुक्र	मानसिक रोग[127]
शनि	शनि से 1, 8 या 12वें में स्थित सूर्य	मानसिक रोग, हृदय रोग[128]
शनि	शनि से 8 या 12 में स्थित निर्बल चन्द्र	आलस्य[129]
शनि	राहु	मानसिक रोग[130]
शनि	गुरू	मानसिक रोग[131]

7– बुध की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिकाः–

दशापति	अन्तर्दशापति ग्रह	रोग
बुध	बुध से 1,8,12 में स्थित पापयुक्त सूर्य	सिरदर्द, मनोव्यथा[132]

125- दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पासंयुते।।
राजकोपो धनच्छेदो बन्धनरोगपीडनम्।
बलहानिः पितृद्वेषी भ्रातृद्वेषो मनोरूजः।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 58/34 पृष्ठ-587

126- द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं मनोरूजः।
वृषभस्य प्रदानं तु सर्वसम्पत्प्रदायकम्।। तत्रैव 58/70 पृष्ठ-592

127- शत्रुनीचास्तगे शुक्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे।।
दारानाशो मनःक्लेशः स्थाननाशो मनोरूजः। तत्रैव 59/27 पृष्ठ-597

128- लग्नाष्टमव्यये सूर्ये दायेशद्वा तथैव च।।
हृद्रोगो मानहानिश्च स्थानभ्रंशो मनोरूजा। तत्रैव 59/38 पृष्ठ-598

129- दायेशाद् द्वादशे भावे रन्ध्रे वा बलवर्जिते।।
शयनं रोगमालस्यं स्थानभ्रैष्टं सुखावहम्।। तत्रैव 59/50 पृष्ठ-599

130- मन्दस्यान्तर्गते राहौ कलहश्च मनोव्यथा।
देहपीडा मनस्तापः पुत्रद्वेषो रूजोभयम्।। तत्रैव 59/62 पृष्ठ-601

131- द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा मनोरूजः।
आत्मसम्बन्धिरमणं भविष्यति न संशयः।। तत्रैव 59/80 पृष्ठ-603

132- लग्नाष्टमव्यये वापि शन्यारफणिसंयुते।
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते।।
चौराग्निशस्त्रपीडा च पित्ताधिक्यं भविष्यति।
शिरोरूङ् मनस्ताप इष्टबन्धु वियोगकृत।। तत्रैव 60/23, 24 पृष्ठ-606

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karaundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुध	बुध से 8 या 12 में स्थित शनि	बुद्धिनाश, मानसिक रोग[133]

8– केतु की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिकाः–

दशापति	अन्तर्दशापति ग्रह	रोग
केतु	केतु से 6,12 में स्थित निर्बल चन्द्रमा	मानसिक व्याकुलता[134]
केतु	शनि	मनस्ताप मनोव्यथा[135]
केतु	अष्टम व्यय में स्थित्त शनि	आलस्य[136]

9– शुक्र की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों की तालिकाः–

दशापति	अन्तर्दशापति ग्रह	रोग
शुक्र	षष्ठाष्टम में नीच राशि/पाप वर्ग में स्थित सूर्य	मानसिक रोग[137]
शुक्र	शुक्र से 6, 8, 12 में नीच/अस्तंगत चन्द्र	मनस्ताप[138]
शुक्र	द्वितीयस्थ/सप्तमस्थ राहु	आलस्य[139]
शुक्र	शुक्र से 8,11 में पापयुक्त केतु	सिरदर्द, मनोव्यथा[140]

133- अष्टमे वा व्यये मन्दे दायोशाद्वा तथैव च।
अरातिदुःखबाहुल्यं दारपुत्रादिपीड़नम्।।
बृद्धिभ्रंशो बन्धुनाशः कर्मनाशो मनोरूजः। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 60/69 पृष्ठ-611

134- दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा बलवर्जिते।
धनधान्यादिहानिश्च मनोव्याकुलमेव च।। तत्रैव 61/33 पृष्ठ-616

135- केतोरन्तर्गत मन्दे स्वदशायां तु पीडनम्।
बन्धो क्लेशो मनस्तापश्चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।। तत्रैव 61/60 पृष्ठ-620

136- स्थानच्युतिः प्रवासश्च मार्गे चौरभयं भवेत्।।
आलस्यं मनसो हानिश्चाष्टमे व्ययराशिगे। तत्रैव 61/60 पृष्ठ-620

137- तथाष्टमे व्यये सूर्ये रिपुराशिस्थितेऽथवा।
नीचे वा पापवर्गस्थे देहतापो मनोरूजः। तत्रैव 62/15 पृष्ठ-624

138- तत्काले धननाशः स्यात् संचरेच्च महद्भयम्।।
देहायासो मनस्तापो राजद्वारे विरोधकृत्।। तत्रैव 62/24 पृष्ठ-624

139- द्वितीये सप्तमे वापि देहालस्यं विनिर्दिशेत्।
तद्दोषपरिहारार्थ मृत्युंजयमनुं जपेत्।। तत्रैव 62/44 पृष्ठ-628

140- चौराहिव्रणपीड़ा च बुद्धिधनाशो महद्भयम्।।
शिरोरूजं मनस्तापम कर्मकलहं वदेत्।। तत्रैव 62/70 पृष्ठ-631

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karounti, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किस ग्रह की प्त्यन्तर दशा में कौन सा रोग होगा:–

प्रत्येक ग्रह की अन्तर्दशा में सभी 9 ग्रहों की प्रत्यन्तर दशाएं चलती रहती हैं। प्रत्यन्तर दशाओं में सबसे छोटी दशा सूर्य की होती है, और 5 दिन 24 घटी रहती है सबसे बड़ी दशा शुक्र की होती है, और 6 माह 20 दिन रहती है। इस प्रकार प्रत्यंतर दशा द्वारा 5 दिन से 6 माह 20 दिन तक के योग मान वाले विविध कालखण्डों में घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी की जा सकती है।

सूर्य आदि ग्रहों की अन्तर्दशा में विभिन्न ग्रहों की प्रत्यन्तर दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:–

अन्तर्दशाधीश	प्रत्यन्तरदशाधीश	रोग
सूर्य	सूर्य	शिरोरोग[141]
सूर्य	चन्द्र	उद्वेग, मनोव्यथा[142]
मंगल	केतु	आलस्य, सिरदर्द[143]
राहु	केतु	बुद्धिनाश[144]
राहु	चन्द्र	उद्वेग, चिन्ता, शरीर में विकलता[145]
शनि	केतु	मन में चिंता, भय एवं त्रास[146]

141- विवादो वित्तहानिश्च दारार्ति: शिरसि व्यथा।
रव्यन्तरे बुधैर्ज्ञेयं तस्य प्रत्यन्तरे फलम्।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 63/2 पृष्ठ-635

142- उद्वेग: कलहश्चैव वित्तहानिर्मनोव्यथा।
रव्यन्तरे विजानीयात् चन्द्रप्रत्यन्तरे फलम्।। तत्रैव 63/3 पृष्ठ-635

143- आलस्यं च शिरं पीडां पापरोगोऽपमृत्युकृत्।
राजभीति: शस्त्रघातो केतो: प्रत्यन्तरे वदेत्।। तत्रैव 63/25 पृष्ठ-638

144- बुद्धिनाशो भयं विघ्नो धनहानिर्महद्भयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगौ केतो: प्रत्यन्तरे फलम्।। तत्रैव 63/33 पृष्ठ-639

145- उद्वेगकलहौ चिन्ता मानहानिर्महद्भयम्।
पितुर्विकलता देहे विधो: प्रत्यन्तरे भवेत्।। तत्रैव 63/36 पृष्ठ-640

146- बन्ध: शत्रोर्गृहे जातो वर्णहानिर्बहुक्षुधा।
वित्ते चिन्ता भयं त्रास: केतो: प्रत्यन्तरे भवेत्।। तत्रैव 63/49 पृष्ठ-641

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुध	सूर्य	मानसिक विकलता[147]
केतु	चन्द्र	मतिभ्रम[148]
केतु	बुध	बुद्धिनाश[149]

किस ग्रह की सूक्ष्म दशा में कौन सा रोग होगा:–

प्रत्येक ग्रह की प्रत्यन्तर दशा में 9 ग्रहों की सूक्ष्मदशाएं चलती हैं। इन सूक्ष्म दशाओं में सबसे छोटी दशा का मान 16 घटी 12 पल तथा सबसे बड़ी दशा का नाम 1 मास 3 दिन 30 घटी होता है। इस प्रकार सूक्ष्मदशा के द्वारा 16 घटी (लगभग 6.30 घण्टा) से लेकर 33 दिन तक के विविध काल खण्डों में घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी की जा सकती है।

सूर्य आदि ग्रहों की प्रत्यन्तरशा में विभिन्न ग्रहों की सूक्ष्म दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:–

प्रत्यन्तरदशाधीश	सूक्ष्मदशाधीश	रोग
सूर्य	शनि	मानसिक वेदना[150]
मंगल	मंगल	अपस्मार[151]
राहु	राहु	मतिभ्रम, शून्यता[152]

147- तेजो हानिर्भवेद्रोगस्तनुपीडा यदा कदा।
जायते चित्तवैकल्यं रवे: प्रत्यन्तरे बुधे।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 63/59 पृष्ठ-642

148- अन्ननाशो यशो हानिर्देहपीड़ा मतिभ्रम:।
आमवातादि वृद्धिश्च विधो: प्रत्यन्तरे भवेत् तत्रैव 63/68 पृष्ठ-644

149- बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महद्भयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत ज्ञस्य प्रत्यन्तरे फलम्।। तत्रैव 63/73 पृष्ठ-644

150- चौर्यसाहस कर्मार्थ देवब्राहमणपीडनम्।
स्थानच्युतिं मनोदु:खं रवौ सूक्ष्मगते शनौ।। तत्रैव 64/7 पृष्ठ-669

151- भूमिहानिर्मन:खेदो ह्यपस्मारी च बन्धुयुक्।
पुरक्षोभमनस्तापो निजसूक्ष्मगते कुजे।। तत्रैव 64/20 पृष्ठ-671

152- लोकोपद्रव बुद्धिश्च स्वकार्ये मतिविभ्रम:।
शून्यता चित्तदोष: स्यात् स्वीये सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।। तत्रैव 64/29 पृष्ठ-672

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरू	शनि	मनस्ताप[153]
बुध	मंगल	विभ्रम, जड़ता, उद्वेग[154]
शुक्र	मंगल	जड़ता[155]
शुक्र	केतु	नेत्र एवं शिर में रोग[156]

किस ग्रह की प्राणदशा में कौन सा रोग होगा?

प्रत्येक ग्रह की सूक्ष्मदशा में सभी ग्रहों की प्राणदशाएं चलती रहती हैं। इन प्राण दशाओं में सबसे छोटी दशा का मान 48 पल 36 विपल अर्थात लगभग 20 मिनट तथा सबसे बड़ी दशा का मान 5 दिन 30 घटी होता है। इस प्रकार हम प्राणदशा द्वारा 20 मिनट से लेकर 5 दिन तक के विविध काल खण्डों में घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी कर सकते हैं।

सूर्य आदि ग्रहों की सूक्ष्मदशा में विभिन्न ग्रहों की प्राण दशा आने पर उत्पन्न होने वाले रोगों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

सूक्ष्मदशाधीश	प्राणदशाधीश	रोग
चन्द्र	मङ्गल	भूत का आवेश[157]
चन्द्र	सूर्य	मनोव्यथा[158]

153- व्रतभंगो मनस्तापो विदेशे वसुनाशनम्।
विरोधो बन्धुवर्गैश्च गुरो: सूक्ष्मगते शनौ।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 64/39 पृष्ठ-674

154- अग्निदाहो विषोत्पत्तिर्जडत्वं च दरिद्रता।
विभ्रमश्च महोद्वेगो बौधे सूक्ष्मगते कुजे।। तत्रैव 64/61 पृष्ठ-677

155- जडत्वं रिपुवैषम्यं देहभ्रंशो महद्भयम्।
व्याधिदु:खसमुत्पत्तिर्भृगो: सूक्ष्मगते कुजे।। तत्रैव 64/77 पृष्ठ-679

156- अग्निरोगो महापीडा मुखनेत्रशिरोव्यथा।
संचितार्थत्मन: पीडा भृगो: सूक्ष्मगते ध्वजे।। तत्रैव 64/82 पृष्ठ-680

157- क्षयं कुष्ठं बन्धुनाशं रक्तस्रावान्महद्भयम्।
भूतावेशादि जायते विधो: प्राणगते कुजे।। तत्रैव 65/12 पृष्ठ-682

158- क्रूरता कोपवृद्धिश्च प्राणहानिर्मनोव्यथा।
देशत्यागो महाभीतिश्चन्द्रप्राणगते रवौ।। तत्रैव 65/19 पृष्ठ-683

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मङ्गल	सूर्य	सिर में रोग[159]
बुध	सूर्य	उन्माद[160]

गोचरीय ग्रहस्थिति द्वारा रोगारम्भकाल का ज्ञानः–

ज्योतिषशास्त्र में गोचरीय ग्रह स्थिति से भी रोगारम्भकाल का विचार किया जाता है। गोचरीय ग्रहस्थिति से रोगारम्भ का निर्णय निम्नलिखित योगों के द्वारा किया जाता हैः–

1– रोगकारक ग्रह जब–जब लग्न, लग्नेश एवं चन्द्रमा की युति या दृष्टि द्वारा प्रभावित करता है, तब–तब रोग होता है।

2– रोगकारक ग्रह जब–जब अनिष्ट स्थान में आता है, तब–तब रोग होता है।

3– लग्न, लग्नेश एवं चन्द्रमा की पापग्रहों के साथ जब–जब युति एवं दृष्टि होती है, तब–तब रोग होता है।

4– जन्मकुण्डली में षष्ठेश जिस राशि में हो उस राशि में गोचरीय क्रम से जब–जब चन्द्रमा पहुंचता है, तब–तब रोग होता है।

उक्त विवेचन के द्वारा यह कहा जा सकता है कि मनुष्य के जीवन में आने वाली ग्रहों की दशा तथा गोचरीय ग्रह स्थिति, उसके जीवन में होने वाले रोगों की महत्वपूर्ण सूचना देती है। महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा, प्राणदशा एवं गोचरीय ग्रहस्थिति द्वारा जीवन में समय–समय पर होने वाले रोगों की जानकारी दी जा सकती है।

159– अक्षिपीडाशिरोव्याधिः सर्पशत्रुभयं भवेद्।
अर्थहानिर्महाक्लेशः शनेः प्राणगते रवौ।। वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् 65/51 पृष्ठ-688

160– अन्तर्दाहो ज्वरोन्मादो बान्धवानां रतिः स्त्रियाः।
प्राप्यते स्तेयसम्पतिर्बुधप्राणगते रवौ।। तत्रैव 65/59 पृष्ठ-689

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभिन्न जातक ग्रन्थों में उल्लिखित मनोरोगों के योगः–

अब तक हमने विभिन्न रोगों तथा उनकी अवधि से सम्बन्धित सिद्धान्तों का विवरण प्रस्तुत किया है। वे शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार के रोगों से सम्बन्धित हैं।

ये सभी मूलभूत सिद्धान्त हैं जिनके आधार पर रोगों का निर्णय किया जा सकता है। इनके आधार पर ही ज्योतिषाचार्य विभिन्न योगों (ग्रह, नक्षत्र, राशि तथा भाव की विशिष्ट स्थितियां) का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर फलादेश करने में सक्षम होते हैं।

लगभग सभी जातक ग्रन्थों में जीवन के सभी पक्षों से सम्बन्धित भिन्न–भिन्न योगों का विवरण प्राप्त होता है। यहां हम केवल उन्हीं योगों का विवरण प्रस्तुत करेंगे जिनका सम्बन्ध मानसिक रोगों से है। यह दृष्टव्य है कि जातक ग्रन्थों में भी मानसिक रोगों का वर्गीकरण लगभग वैसा ही है जैसा आयुर्वेद ग्रन्थों में प्राप्त होता है। अतएव तदनुसार ही यहां उन्माद, अपस्मार, अतत्वाभिनिवेश, प्रमाद आदि अनेक रोगों से सम्बन्धित योगों का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

उन्माद रोग के विभिन्न योगः–

जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में व्यक्ति की जन्मकुण्डली के आधार पर उन्माद रोग के कारणों का इस प्रकार निश्चय किया जा सकता है:–[161]

1– लग्न में गुरू व सप्तम स्थान में शनि हो।

2– लग्न में गुरू सप्तम स्थान में मङ्गल हो।

161– लग्नस्थे धिषणे दिवाकरसुते भौमोथवा द्यूनगो
मन्दे लग्नगते मदात्मजतपः संस्थो महीनन्दनः।
मतौ मूढशशीन्दुजौ कृशशशी मन्दश्च रिष्फस्थितौ
पापोपेतकृशामृतांशुरूदयायस्वान्तधर्मोपगः।।
अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्रिषष्ठाष्टमान्त्यगः।
उन्माददायिनो योगा एवमष्टौ समीरिताः।।

प्रश्नमार्ग, अध्याय द्वादश श्लोक 31 तथा 32
पृष्ठ-179, 180

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya Rampur, Karaundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3– लग्न में शनि वं 7, 5 या 9वें स्थान में मंगल हो।

4– लग्न में क्षीण चन्द्रमा और बुध दोनों हों।

5– क्षीण चन्द्रमा और शनि दोनों व्यय स्थान में हो।

6– क्षीण चन्द्रमा पापग्रहों के साथ लग्न, एकादश, पञ्चम या नवम स्थान में हो।

7– सप्तम स्थान में पापग्रहों से युक्त गुलिक हो।

8– तृतीय, षष्ठ अष्टम या व्यय स्थान में पापयुक्त बुधहो तो उन्माद रोग होता है। उन्माद पैदा करने वाले ये आठ योग कहे गये हैं।

पुनः इसी ग्रन्थ में विक्षिप्तता या उन्माद के सूचक निम्नलिखित आठ योगों का विवरण है:—[163]

1– यदि चन्द्रमा, शुक्र और अष्टमेश अनिष्ट स्थानों में हो तो विषम भोजन याउपवास के कारण उन्माद होता है।

2– यदि ये चन्द्रमा, शुक्र और अष्टमेश केतु, गुलिक एवं राहु से युक्त हो तो अपवित्र भोजन से उन्माद होता है।

3– पञ्चम स्थान में पाप ग्रह होने पर भय के कारण उन्माद होता है।

4– षष्ठ स्थान में मङ्गल होने पर शत्रुकृत अभिचार के कारण उन्माद होता है।

5– नवम स्थान में पाप ग्रह होने पर गुरू, अग्नि एवं देवता आदि के शाप से उन्माद होता है।

जातक ग्रन्थ "जातक तत्त्व (प्रकीर्ण तत्त्व) के अनुसार जिस व्यक्ति के जन्म कुण्डली में निम्नलिखित योगों में से कोई एक योग हो तो वह विक्षिप्त (पागल) हो

162- चन्द्रशुक्राष्टमाधीशागोचरेतरगायदि।
विषमाष्टयुपवासोत्थ उन्माद इति निर्दिशेत्।।
केतुमान्द्यहियुक्तेषु चैतेष्वशुचिभुक्तिजः।
सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे।।
क्रोधजोथाभिचारोत्थः षष्ठगेष्वशुभेषु सः।
गुर्वादिशापसम्भूतः पापे नवमसंस्थिते।
कल्याणपंचगव्याजयसेवाद्येषु विधीयताम्।। प्रश्नमार्ग अध्याय द्वादश श्लोक 46, 47, 48, 49 पृष्ठ-182, 183

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाता है।[163]

इन योगों में मनुष्य पूर्णतया विक्षिप्त होता है अथवा उसकी विचार शक्ति व विवेक शक्ति क्षीण होने के कारण वह अर्धविक्षिप्तावस्था में होता है:-

1- बृहस्पति लग्न में व मगल सप्तम स्थान में अथवा सप्तम में गुरू व लग्न में मंगल हो।

2- लग्न में शनि हो व पञ्चम, सप्तम या नवम में मङ्गल हो।

3- लग्न में शनि, व्यय में सूर्य, त्रिकोण में मंगल या चन्द्रमा हो।

4- यदि तृतीयेश नीचास्तङ्गत होकर षष्ठ स्थान में हो उसे पापग्रह देखते हों तो विष के कारण उन्माद होता है।

5- क्षीण चन्द्रमा व शनि द्वादश स्थान में हो तो उन्माद होता है। शनि व धनेश पापयुक्त हों तो वातविकार के कारण उन्माद होता है।

6- धनेश व शनि सूर्य सहित हो तो राजा के कोप के कारण उन्माद होता है।

7- शनि व धनेश मंगल से युक्त हो तो पित्तविकार के कारण उन्माद होता है।

8- चन्द्रमा व सूर्य त्रिकोण या लग्न में, बृहस्पति केन्द्र में हो तथा जन्म के समय शनि व मङ्गल की काल होरा हो तो व्यक्ति उन्मत्त होता है।

9- चन्द्रमा व सूर्य लग्न में हों तथा उन पर बुध की दृष्टि हो तो मनुष्य मानसिक तनाव से युक्त होता है।

जातक ग्रन्थ "सारावली" में भी उन्माद के लिए निम्नलिखित योग दिये हुए हैं:-

---

163- इज्येऽङ्गे कुजेऽस्ते व्यस्तेवोन्मादी।।
लग्नेशनौ मदत्रिकोणे कुजे उन्मादी।।
मन्देऽङ्गे व्ययेऽर्के कोणे चन्द्रे वा भौमे उन्मादी।।
मूढे नीचे षष्ठे सोत्थेशे पापदृश्टे गरलज उन्माद:।।
क्षीणेन्द्वर्कजावन्त्ये उन्मादी।।
मन्दार्थेशौ सपापौ वातज उन्माद:।।
धनेशार्कजौ सूर्ययुतौ राजकोपज उन्माद:।।
यमार्थेशौ भौमयुतौ पित्तज उन्माद:।।
चन्द्राकौ कोणाङ्गगौकेन्द्रेजीवे यमारक्षणवारे उन्माद:।।
इन्द्वर्कजौ लग्नेज्ञदृष्टौ विह्वल:।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karaundi, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– यदि बुधराशिस्थ सूर्य, गुरू से दृष्ट हो तो जातक–अधिक शास्त्र मुखी अर्थात् बहुज्ञ, राजदूत, विदेश गामी, उग्र एवं पागल होता है।[164]

2– यदि कुण्डली में पञ्चमभाव में शनि हो तो जातक– सुख–पुत्र–मित्र से रहित, बुद्धिहीन, अचेत, पागल तथा दीन होता है।[165]

अपस्मार (मिरगी) के योगः–

जातक तत्व नामक जातक ग्रन्थ में अध्याय "षष्ठविवेक" के अनुसार जिनकी कुण्डली में निम्नलिखित योगों में से कोई एक योग हो, उसे अपस्मार (मिरगी) रोग होता है।

इन योगों में मनुष्य अपस्मार अर्थात् उन्माद अर्थात एक प्रकार के पागलपन से पीड़ित होता है:–[166]

1– शनि व चन्द्रमा को यदि मङ्गल देखता हो।

2– अष्टम स्थान में चन्द्रमा व राहु ये दोनों स्थित हों।

3– षष्ठ या अष्टम स्थान में शनि मङ्गल से युक्त हो।

4– चन्द्रमा, मङ्गल एवं सूर्य लग्न या अष्टम स्थान में हों और क्रूर ग्रह उन्हें दखते हों।

5– ग्रहण के समय जन्म हो तथा शनि व मङ्गल अष्टम या षष्ठ स्थान में हो तथा बृहस्पति लग्न या त्रिकोण स्थानों में न हो।

6– चन्द्रमा षष्ठ स्थान में हो और राहु लग्न में हो।

164– बहुशास्त्रदारितमुखो राज्ञां दूतो विदेशगश्चण्डः।
बुधराशौ दिनभर्तरि गुरूणा दृष्टे सदोन्मादः।। सारावली- द्वाविशं अध्याय श्लोक-23, पृष्ठ-142

165– सुखसुतमित्रविहीनं मतिरहितचेतसं त्रिकोणस्थः।
सोन्मादं रवितनमयः करोति पुरूषं सदा दीनम्।। सारावली त्रिंश अध्याय श्लोक 78 पृष्ठ 226

166– सार्कजे चन्द्र भौमदृष्टऽपस्मारी।।
रन्ध्रे चन्द्रराहू अपस्मारी।।
रन्ध्रे पापश्चन्द्राच्छौ संयुतौ केन्द्रऽपस्मारी।।
षष्ठाष्टमे मन्दे कुजयुतेऽपस्मारी।।
चन्द्रारार्का लग्नमृतिगाः क्रूरदृष्टा अपस्मारी।।
ग्रहणकाले यमारौ रन्ध्र षष्ठे वा गुरूहीने लग्ने त्रिकोणेऽपस्मारी।।
इन्दौ षष्ठेऽङ्गे राहौ अपस्मारी।। जातक तत्वम् प्रकीर्ण तत्वम् षष्ट विवेक श्लोक 73 से 79 तक पृष्ठ-176, 177

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलहप्रिय होने का योगः–

यह उन्माद का ही एक रूप है, इसमें रोगी प्रायः मारपीट या कलह करता रहता है। इस रोग में व्यक्ति बेकाबू हो जाता है।

इस रोग का मुख्य कारण चन्द्रमा पर पाप ग्रहों का प्रभाव तथा उनकी अनिष्ट स्थानों में स्थिति मानी गयी है।

जातक ग्रन्थ "जातक पारिजात" के अनुसार जिस व्यक्ति की कुण्डली में निम्नलिखित योग योग हो तो वह कलहप्रिय होता हैः–

1– पापयुक्त चन्द्रमा राहु के साथ यदि द्वादश, पंचम या अष्टम भाव में स्थित हो तो जातक क्रमशः उन्मादबुद्धि, क्रोधी और कलहप्रिय होता है।[167]

प्रमाद एवं उसके योगः–

यह भी उन्माद का ही एक भेद है। इसमें व्यक्ति को अपनी सुध–बुध नहीं रहता। इस रोग का विचार द्वितियेश से किया जाता है क्योंकि अनवधानतावश बड़बड़ाना द्वितीय भाव का ही गुण है। जब द्वितीयेश पर अधिक पाप ग्रह का प्रभाव होता है तब यह रोग होता है।

जातक ग्रन्थ "सर्वार्थचिन्तामणि" के अनुसार इस रोग के योग निम्नलिखित हैं:–[168]

1– द्वितीयेश, पापग्रह एवं शनि के साथ रोग स्थान में हो तो वातकोप से प्रमाद होता है।

167– चन्द्र सपापे फणिनाथयुक्ते रिःफे सुते रन्ध्रगतेऽथवाऽपि।
उन्मादभाक् तत्र सरोषयुक्तो जातस्तु नित्यं कलहप्रियः स्यात्।। जातक पारिजात, जातक भङ्गाध्याय श्लोक 83 पृष्ठ 288

168– वाक्स्थानपेनापि युतोर्कपुत्रः पापैर्युतो वातभयात्प्रमादः।।
सूर्यस्तु कोपाद्रवति प्रमादो राज्ञां कुजे चोष्णभ्यात्प्रमादः। सर्वार्थचिन्तामणि 3/115 पृष्ठ 71

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– द्वितीयेश पापग्रह एवं सूर्य के साथ रोग स्थान में हो तो राजा स्वामी आदि के कोप से प्रमाद होता है।

3– द्वितीयेश पापग्रह एवं मङ्गल के साथ रोग स्थान में हो तो गर्मी के प्रकोप से प्रमाद होता है।

पिशाच पीड़ा योगः–

अनेक जातक ग्रन्थों में पिशाच पीड़ा रोगों के विभिन्न योगों का विवरण प्राप्त होता है।

जातक ग्रन्थ "जातक पारिजात" के अनुसार निम्नलिखित योग में पिशाच पीड़ा रोग होता है।[169]

1– लग्न, चतुर्थ अथवा दशम भाव में बृहस्पति तथा केन्द्रस्थान में शनिपुत्र मान्दि (गुलिक) स्थित हो तो जातक लोकोत्तर आत्माओं आदि के दर्शनजनित व्याधि में पीड़ित होता है।

2– चर राशि का लग्न शुभग्रहों से युक्त हो, शनि सप्तमस्थ हो तथा चन्द्रमा पापग्रहों से दृष्ट हो तो जातक भूत–प्रेतादिजन्य व्याधियों से पीड़ित होता है।

जातक ग्रन्थ "सर्वार्थ चिन्तामणि " के अनुसार पिशाच पीड़ा निम्नलिखित योग में से उत्पन्न होते हैं:–

1– लग्न में राहु के साथ शनि हो तो भूत, प्रेत या पिशाच की पीड़ा से रोग होता है।[170]

169– जातो निर्जरदर्शनेन जनितं रोगं सुखस्थानगे
माने लग्नगतेऽथवाऽमरगुरौ केन्द्रे समन्दात्मजे।
मन्द्रऽस्ते चरलग्नगे यदि शुभे पापेक्षिते शीतगौ
भूतप्रेतपिशाचदर्शनवशाद् रोगं समेति ध्रुवम्।। जातक पारिजात, जातक भङ्गाध्याय श्लोक 94 पृष्ठ 292

170– लग्ने शनौ राहुयुतेथ वा स्यात्पिशाच वाधा प्रवदंति संतः।। सर्वार्थ चिन्तामणि 2/88, पृष्ठ-51

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– लग्न में स्थित केतु पर अनेक पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो पिशाच पीड़ा होती है।[171]

जड़ता एवं उसके योगः–

जड़ता पागलपन का पूर्व रूप है। इस स्थिति में मनुष्य को अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं होता। आगे चलकर यह अनेक रूप–रूपान्तरों में परिवर्तित होकर अनेक मानसिक रोगों को उत्पन्न करता है। जातक ग्रन्थ "जातक तत्त्व" में जड़ता के योग निम्नलिखित हैं:–[172]

1– चन्द्रमा, शनि व गुलिक यदि ये तीनों केन्द्र स्थानों में हों तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

2– धनस्थान में गुलिक व सूर्य स्थित हो तथा उन्हें पापग्रह देखते हों अथवा शनि व तृतीयेश दोनों एक साथ हों तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

3– यदि द्वितीयेश पापग्रहों से युक्त होकर दशम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य जनसमुदाय के सामने जड़बुद्धि हो जाता है। अर्थात लोगों के सामने उसकी बुद्धि ठीक कार्य नहीं करती हैं।

4– तृतीयेश यदि राहु के साथ हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

5– पञ्चम स्थान में शनि लग्नेश होकर स्थित हो तथा पञ्चमेश को शनि देखता हो तथा पञ्चमेश पापग्रहों से युत हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

171- केतौ विलग्ने बहुपापदृष्टे पिशाचचौरैर्भवति ध्रुवं भीः सर्वार्थ चिन्तामणि 2/90 पृष्ठ 52

172- केन्द्रगा मन्देन्दुगुलिका जडः।।
धनेगुलिकाकौ पापदृष्टौ वा सार्कजे सोत्थपे जडः।।
सपापे धनेशे खे सभाजडः।।
सतमसि सोत्थपे जडः।।
सुतेमन्दे लग्नेशे मन्द्रदृष्टे सुतेशे सपापे जडः।।
गुलिकार्कजौ सुते शुभयोगहीने जडः।। जातकतत्वम् प्रकीर्णतत्वम् पंचम विवेक श्लोक 20 से 25 तक, पृष्ठ 137, 138

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

6– गुलिक व शनि दोनों पञ्चम स्थान में हों तथा शुभग्रहों का कोई सम्बन्ध वहां न हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

शाप एवं अभिचार जन्य रोगः–

शाप– गुरू एवं देवता आदि के शाप से उत्पन्न होने वाले रोगों को शाप जन्य रोग कहते हैं।

अभिचार– मारण, सम्मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन एवं वशीकरण आदि तान्त्रिक क्रियाओं को अभिचार कहते हैं। इन अभिचार प्रयोगों के द्वारा उत्पन्न होने वाले रोग अभिचार जन्य रोग कहलाते हैं।

जातक ग्रन्थ "जातक पारिजात" में शाप एवं अभिचार जन्य रोगों के विभिन्न योगों का विवरण प्राप्त होता है जो निम्नलिखित है।[173]

1– यदि लग्न मङ्गल से दृष्ट हो तथा षष्ठेश दशम, सप्तम भाव अथवा लग्न में स्थित हो तो जातक मन्त्राभिचारजन्य व्याधि से पीड़ित होता है।

2– भौम यदि लग्नेश के साथ लग्न या केन्द्र (1/4/7/10वें) भाव में स्थित हो और छठे भाव का स्वामी लग्नस्थ हो तो जातक मन्त्राभिचारजन्य व्याधि से पीड़ित होता है।

जातक पारिजात में एक अन्य श्लोक में अभिचार जन्य रोग के निम्नलिखित योग बतलाया गया है:–[174]

173– आरेक्षिते यदि विलग्नगृहेऽरिनाथे
मानेऽथवाऽस्ततनुगे कृतमाभिचारम्।
लग्नाधिपेन सहितेऽवनिजे विलग्ने
केन्द्रऽथवा रिपुपतौ तनुगे तथा स्यात्।।
जातक पारिजात, जातक भङ्गाध्याय श्लोक 93 पृष्ठ 291

174– चरे विलग्ने रिपुनाथदृष्टे कुजे च लाभे स्थिरगे च धर्मे।
द्वन्द्वेऽस्तराशौ प्रवदेन्नराणां रोगं रिपूणां कृतमाभिचारम्।।
जातक पारिजात, जातक भङ्गाध्याय श्लोक 77, पृष्ठ 286

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– चर राशि (मेष, कर्क, तुला और मकर) के लग्न को यदि षष्ठ भाव का स्वामी देखता हो अथवा मङ्गल एकादश भाव में स्थित हो अथवा नवम भाव में स्थिर राशि और सप्तम भाव में द्विस्वभाव राशि हो तो शत्रुओं द्वारा किये गये अभिचार (मन्त्रादि प्रयोग) जन्य व्याधियों से ग्रस्त होता है।

2– उपर्युक्त कथन के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इसमें तीन योग बतलाये गये हैं जो निम्नलिखित हैं:–

1– चरराशि के लग्न को षष्ठेश देखता हो,

2– एकादश भाव में मङ्गल स्थित हो,

3– नवम और सप्तम भाव में क्रमशः स्थिर और द्विस्वभाव राशियाँ स्थित हो,

इन तीनों स्थितियों में शत्रु द्वारा कृत अभिचारजन्य (मारण आदि प्रयोगजन्य) व्याधियों की सम्भावना होती है।

बुद्धिहीनता:–

बुद्धिहीनता भी एक प्रकार के मानसिक रोग है। क्योंकि ये दोनों पागलपन के पूर्वरूप होते हैं। इस स्थिति में मनुष्य को उचित–अनुचित या अच्छे–बुरे का ज्ञान नहीं होता है तथा वह पागल एवं मूर्ख जैसी हरकतें करता है।

जातक तत्त्वम् के अनुसार जिस व्यक्ति की कुण्डली में निम्नलिखित योगों में से कोई एक योग हो वह बुद्धिहीन होता है।[175]

177- लग्ने चन्द्रे मन्दारदृष्टे हीनधी:।।
सुतेशे क्रूरषष्ट्यंशे हीनधी:।।
मन्दारार्काश्चचन्द्रं पश्यन्ति मौर्ख्यकरा:।।
सुते जीवे मेधानाश:।।

जातकतत्वम् प्रकीर्णतत्वम् पञ्चम विवेक श्लोक 26 से 29 तक पृष्ठ- 138

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– यदि लग्न में चन्द्रमा स्थित हो तथा उसे शनि व मङ्गल देखते हों तो मनुष्य हीनबुद्धि अर्थात् कम बुद्धि वाला होता है।

2– यदि पञ्चमेश क्रूर षष्ट्यंश में हो तो मनुष्य हीनबुद्धि होता है।

3– शनि, मंगल व सूर्य ये तीनों यदि चन्द्रमा को देखते हों तो मनुष्य मूर्ख होता है।

4– यदि बृहस्पति पञ्चम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य की स्मरणशक्ति का नाश होता है।

अन्य मनोविकारः–

क्रोधी होने का योगः–

जातक तत्वम् के क्रोधी होने के लिये निम्नलिखित यागों का विवरण दिया गया हैः–

इन योगों में मनुष्य क्रोधी होता है–[176]

1– दिन में जन्म हो और बलवान मङ्गल दशम या लग्न में हो।

2– लग्न या सप्तम में निर्बल मङ्गल को शनि देखता हो।

3– लग्न में मङ्गल हो। सप्तम में बलवान मङ्गल हो।

4– चन्द्रराशीश त्रिकोण में कमजोर हो।

5– लग्नेश अष्टम या द्वादश में स्थित हो।

6– धनेश गुलिक से युक्त हो तो मनुष्य क्रोधी होता है।

7– तृतीय स्थान में केतु मनुष्य को झगड़ालू बनाता है।

176- दिवा बल्यारे खेऽङ्गे क्रोधी।।
लग्नेऽस्ते वा निर्बलारे शनि दृष्टे क्रोधी।।
लग्ने भौमे क्रोधी।।
द्यूने बलवति भौमे क्रोधी।।
त्रिकोणेऽल्पवीर्ये राशिपे क्रोधी।।
अन्त्याष्टमेऽङ्गेशे क्रोधी।।
धनेशे गुलिकान्विते क्रोधी।।
केतु युते सोत्थे कलहप्रियः।।

जातकतत्वम् प्रकीर्णतत्वम् प्रथम विवेक श्लोक 82 से 89 तक पृष्ठ- 56

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कायर होने का योगः—

जातक तत्वम् के अनुसार निम्नलिखित योगों में यदि कोई भी योग होगा तो व्यक्ति कायर होगा।

इन योगों में मनुष्य कायर होता हैः—[177]

1— निर्बल मंगल यदि लग्न को देखता हो।

2— रात्रि में जन्म हो व शनि दशम स्थान में स्थित हो।

3— अपनी राशि में स्थित मङ्गल लग्न को देखता हो।

4— कारकांश कुण्डली में तीसरे स्थान में पाप ग्रह हो तो शूर तथा शुभ हो तो कायर होता है।

द्रोहकर्ता योगः—

निम्नलिखित योगों में व्यक्ति द्रोहकारक अर्थात् सर्वत्र विरोध प्रकट करनेवाला होता हैः—[178]

1— तृतीय स्थान में स्थित मङ्गल को बुध व चन्द्रमा देखते हों।

2— बुध लग्नेश होकर षष्ठ स्थान में स्थित हो।

3— आत्मकारक ग्रह के नवांश से नवम स्थान में राहु व शनि हो तो मनुष्य गुरूद्रोही होता है। यदि लग्नेश निर्बल हो तो द्रोही होता है।

177- निर्बलारेणाङ्गे दृष्टे कातरः।।
रात्रौ शनौ दशमे कातरः।।
स्वर्क्षगे भौमदृष्टेऽङ्गे कातरः।।
अंशाद्विक्रमे पापे शूरः शुभे कातरः।। जातकतत्वम् प्रकीर्णतत्त्वम् प्रथम विवेक श्लोक 78 से 81 तक पृष्ठ 56

178- सोत्थे भौमे ज्ञचन्द्रदृष्टे द्रोही।।
लग्नेशे ज्ञें षष्ठेद्रोही।।
राहुर्कजौ धर्मेऽशीद् गुरूद्रोही।।
लग्नेशें निर्बले द्रोही।। जातकतत्वम् प्रकीर्णतत्त्वम् प्रथम विवेक श्लोक 97 से 100 तक पृष्ठ 58

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुर्व्यसन का योगः—

इन योगों में मनुष्य व्यसनों से युक्त होता हैः—[179]

1— बृहस्पति मकर राशि में लग्नगत हो या द्वादश स्थान में हो।

2— द्वादशेश नीच स्थान में हो। लग्नेश नीच राशि में हो या शत्रु क्षेत्र में हो। व्यय स्थान में कोई पापग्रह हो।

3— लग्नेश निर्बल हो या लग्नेश मङ्गल से युक्त हो। अथवा लग्न पर बहुत से पाप ग्रहों की पूर्ण दृष्टि हो।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम" में उल्लिखित बुद्धिहीनता के योगों का विवरण निम्नलिखित हैः—

1— यदि कुण्डली में शत्रु ग्रहों के साथ पापग्रह पंचम भाव में नीचराशि में हो तो जातक मूर्ख होता है।[180]

2— यदि कुण्डली में पंचम भाव में नीच राशि में शुभग्रह अथवा पापग्रह नीच राशि में निर्बल व निस्तेज हो तो जातक बड़ा मूर्ख होता है।[181]

3— यदि कुण्डली में निर्बल पंचमेश पंचम भाव का त्याग करके छटे या सातवें भाव में हो तो जातक मूर्ख होता है।[182]

179- मृगे जीवेऽङ्गे रिष्फे न व्यसनी।।
व्ययेशे नीचे व्यसनी।।
अङ्गपे नीचे वाऽरिक्षेत्रे व्यसनी।।
व्यये पापे व्यसनी।।
लग्नपे निर्बले व्यसनी।।
लग्नपे सारे व्यसनी।।
अङ्गे पापदृष्ट्याधिक्ये व्यसनी।। जातकतत्वम् प्रकीर्णतत्वम् प्रथम विवेक श्लोक 108 से 114 तक पृष्ठ 59

180- बुद्धिभावगताः क्रूराः शत्रुग्रहसमाश्रिताः।
नीचराशिगताश्चैव मूर्खो वै मनुजो भवेत्।।1 होरारत्नम, अध्याय-6, श्लोक-1, पृष्ठ-55

181- क्रूरो वाप्यथवा सौम्यो नीचे वा सुतभावगः।
विनष्टबलतेजो वै महामूर्खो नरो भवेत्।। तत्रैव-श्लोक-2, पृष्ठ-55

182- बुद्धिभावं परित्यज्य रिपुक्षेवेऽस्तगो यदा।
पञ्चमेशो नष्टबली बुद्धिहीनो नरो भवेत्।। तत्रैव-श्लोक-3, पृष्ठ-55

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4– यदि कुण्डली में सूर्य, चन्द्रमा, राहु, शनि में से एक भी पंचम भाव में हो और पंचमेश विनष्ट हो अर्थात् अस्त या पापाक्रान्त हो तो जातक बड़ा मूर्ख होता है।[183]

5– यदि कुण्डली में पंचमेश सूर्य, राहु, शनि से दृष्ट या युक्त हो तो जातक विशेष बड़ा मूर्ख होता है।[184]

6– यदि कुण्डली में पंचमेश छटे या सातवें में हो और पंचम भाव पाप ग्रह से दृष्ट या युक्त हो तो जातक मूर्ख होता है।[185]

7– यदि कुण्डली में पंचमेश तथा लग्नेश छटे आठवें भाव में पाप ग्रह से पृथक् हों या अस्त हों और पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक अशान्त होता है।[186]

जातक ग्रन्थों में उल्लिखित अनेक रोगों के लक्षण तथा उनके ज्योतिषीय कारणों (योगों) का जो विवरण प्राप्त होता है उन्हें हम आयुर्वेद में बतलाये गये मानसिक रोगों के बारह वर्गों में विभक्त किया जा सकता हैं। इन बारह वर्गों का उल्लेख प्रथम अध्याय में किया जा चुका है।

अगले अध्यायों में आयुर्वेद ग्रन्थों में उल्लिखित इन बारह वर्गों में आने वाले मानसिक रोगों का विभिन्न जातक ग्रन्थों में उल्लिखित विभिन्न रोग कारक सिद्धान्तों तथा तत्सम्बन्धी विभिन्न योगों एवं विंशोत्तरी दशा (प्रत्यन्तर) के परिप्रेक्ष्य में अनेक मानसिक रोगियों से सम्पर्क कर तथा उनके जन्म कुण्डलियों का विश्लेषण कर एक प्रायोगिक अनुशील प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा हैं।

183- रविचन्द्राहिमन्दानां स्थितोऽप्येको हि पञ्चमे।
पञ्चमेशो विनष्टो वै महामूर्खो भवेन्नरः।। होरारत्नम, तत्रैव-श्लोक-4, पृष्ठ-55

184- बुद्धिस्वामी विनष्टो वै रविराहुशनैश्चरैः।
दृष्टो युक्तो विशेषण महामूर्खो भवेन्नरः।। तत्रैव-श्लोक-5, पृष्ठ-55

185- बुद्धिनाथो यदा षष्ठे अष्टमे चास्तगो यदा।
क्रूरदृष्टं क्रूरयुक्तं पञ्चमं बुद्धिवर्जितः।। तत्रैव-श्लोक-6, पृष्ठ-55

186- तनयपस्तनुपोऽथ षडष्टगो खलखगैर्वियुतो त्वथवास्तगः।
तनयगो यदि नीचखगो भवेद् विकलतां तनुते जनितस्य तु।। तत्रैव-श्लोक 7, पृष्ठ-55

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-तृतीय

उन्माद

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय तृतीय

उन्माद

आयुर्वेद के अनुसार उन्माद रोग का परिचय, उसके प्रकार तथा उसके लक्षण निम्नलिखित हैं:-

रोग का परिचय:-

यह एक मनोदैहिक रोग है, जिसमें मनोविभ्रम, बुद्धिविभ्रम, संज्ञा विभ्रम, ज्ञानविभ्रम, स्मृतिविभ्रम, शीलविभ्रम, चेष्टाविभ्रम और आचारविभ्रम ये आठ विकृतियाँ मुख्य रूप से होती हैं।[1]

उन्माद के प्रकार:-

उन्माद पांच प्रकार के होते हैं- 1-, वातज, 2-पित्तज, 3-कफज, 4-सन्निपातज, 5- आगन्तुज।[2]

प्रथम चार प्रकार अर्थात वातज, पित्तज, कपज तथा सन्निपातज उन्मादों की उत्पत्ति शरीर के आंतरिक कारणों से होती है, इसलिए इन्हें "निज" कहते हैं।

आगन्तुज उन्माद शरीर के बाहर से आने वाले कारणों से उत्पन्न होते हैं। इसलिए इन्हें आगन्तुज नाम दिया गया है।

आगन्तुज उन्माद तीन प्रकार के होते हैं- 1- मानस दु:खज, 2- विषज, 3- भूतोन्माद।

1- उन्मादं पुनर्मनोबुद्धिसंज्ञाज्ञानस्मृतिभक्तिशीलचेष्टाचारविभ्रमं विद्यात्।। चरक संहिता भाग-प्रथम 7/5 पृष्ट 640

2- इह खलु पञ्चोन्मादा भवन्ति, तद्यथा--वातपित्तकफसन्निपातागन्तुनिमित्ता:।। तत्रैव-7/3 पृष्ठ 639

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– मानस दुःखजः–

इस प्रकार का उन्माद शत्रुओं या हिंसक प्राणियों का भय, धन–जन के नाश अथवा अत्युतकट अभिलाषा के पूर्ण न होने से उत्पन्न होता है।

2– विषजः–

इस प्रकार का उन्माद धतूरा, भांग, अति मद्यपान अथवा विष आदि के कारण होताा है।

3– भूतोन्मादः–

महर्षि चरक के अनुसार भूतोन्माद आठ प्रकार के होते हैं– 1– देवजन्य, 2– शापजन्य, 3– पितृजन्य, 4– गंन्धर्वजन्य, 5– यक्षजन्य, 6– राक्षसजन्य, 7– ब्रम्हराक्षसजन्य, 8– पिशाचजन्य।[3]

उपर्युक्त विभिन्न प्रकार के उन्माद के लक्षण निम्नलिखित हैंः–

वातज उन्माद के लक्षण[4]:–

1– अनवसर (बिना किसी प्रसंग के) हँसना, मुस्कराना, नाचना, गीत गाना।

2– अंगों को नचाना, अकारण रोने लगना।

3– शरीर का रूखा या कड़ा होना, दुबला–पतला और लालवर्ण होना।

3- देवर्षिगन्धर्वपिशाचयक्षरक्षः पितृणामभिधर्षणानि।
आकन्तुहेतुर्नियमव्रतादि मिथ्याकृतं कर्म च पूर्वदेहे।। चरक संहिता- भाग द्वितीय 9/16 पृष्ठ 379

4- अस्थानहासस्मितनृत्यगीतवागङविक्षेपणरोदनानि।
पारूष्यकार्श्यारूणवर्णताश्च जीर्णे बलं चानिलजस्य रूपम्।। तत्रैव 9/10 पृष्ठ 377

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4– भोजन के पच जाने पर पागलपन का दौरा तेज होना, लगातार घूमना।

5– अचानक आंख–भौंह–ओठ–कन्धा–हथेली अथवा पैरों को नचाना।

6– अपने अंगों पर वीणा, बाँसुरी, शंख आदि बजाने का नाटक करना।

7– फटे–पुराने चिथड़े, टाट, कागज के टुकड़ों से शरीर को सजाते रहना।

8– जो भोजन उपलबध हो उसका तिरस्कार करना और जा आंहार द्रव्य न उपलब्ध हो उसे खाने के लिए लालायित होना और द्वेष की भावना रखना, आंख फाड़कर देखना आदि वातज उन्माद के लक्षण हैं।

पित्तज उन्माद के लक्षण[5]:–

1– बहुत क्रोध करना, आडम्बर खड़ा करना, असहिष्णु होना, नंगा हो जाना।

2– लोगों को डराना–धमकाना और मारने–पीटने के लिए दौड़ना।

3– तेज चाल से चलना या भागना, उष्णता की अधिकता से व्याकुल होना।

4– शरीर का पीला पड़ जाना तथा शीतल जल, शीतल आहार और शीतल छाया चाहना, ये सब पित्तज उन्माद के लक्षण हैं।

कफज उन्माद के लक्षण[6]:–

1– कम बोलना, कम चलना–फिरना, कम उत्पात करना, अल्प चेष्टा करना।

5- अमर्षसंरम्भविनग्नभावाः सन्तर्जनातिद्रवणौष्ण्यरोषाः।
प्रच्छायशीतान्नजलाभिलाषाः पीता च भाः पित्तकृतस्य लिंगम्। चरक संहिता भाग-द्वितीय 9/10 पृष्ठ 378

6- वाक्चेष्टितं मन्दमरोचश्च नारीविविक्तप्रियताऽतिनिद्रा।
छर्दिश्च लाला च बलं च भुङ्क्ते नखादिशौक्ल्यं च कफात्मकस्य।। तत्रैव 9/14 पृष्ठ 379

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– अरूचि होना, मुख से लार टपकना, वमन का होते रहना।

3– एकान्त पसन्द करना तथा नींद का अधिक आना।

4– नख–नेत्र–मूत्र एवं शरीर का श्वेत वर्ण का होना और भोजन कर लेने पर उन्माद बढ़ना, ये कफज उन्माद के लक्षण हैं।

सन्निपातज उन्माद[7]:–

यह तीनों दोषों को प्रकुपित करने वाले कारणों से उत्पन्न होता है तथा यह तीनों दोषों के मिश्रित लक्षणों से युक्त होता है और अति भयंकर होता है।

मानस दुःखज उन्माद के लक्षणः–

मानस उन्माद से पीड़ित रोगी के मन में जो भी गोप्य या अगोप्य बात स्थित होती है, उसे वह अज्ञान के वशीभूत होकर व्यक्त कर देता है। इसी तरह कभी हँसता है, कभी रोता है और कभी चेतनाशून्य हो जाता है।

विषज उन्माद के लक्षणः–

धतूरा, भाँग आदि विष अथवा अति मद्यपान करने से विष के प्रभाव से जो उन्माद होता है, उसमें रोगी के नेत्र लाल सुर्ख होते हैं, बल (ओज या उत्साह), इन्द्रियों की शक्ति और शरीर की कान्ति क्षीण हो जाती है। यह मुरझाया सा दिखता है।

7- यः सन्निपातप्रभवोऽतिघोरः सर्वैः समस्तैः स च हेतुभिः स्यात्।
सर्वाणि रूपाणि विभर्ति तादृग्विरूद्धभैषज्यविधिर्विवर्ज्यः।। चरक संहिता भाग-द्वितीय 9/15 पृष्ठ 379

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

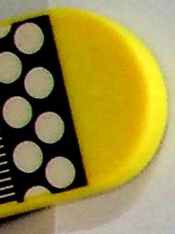

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भूतोन्माद में देवादि का प्रवेश[8]:–

देव आदि ग्रह अपने अलौकिक गुण के प्रभाव से मनुष्य के शरीर को दूषित न करते हुए अदृश्य रूप से शरीर में प्रवेश कर जाते हैं, जैसे शीशा में छाया और सूर्यकान्तमणि में सूर्य की किरणें प्रवेश कर जाती हैं।

भूतोन्माद के सामान्य लक्षण[9]:–

मनुष्य की क्षमता से कहीं अधिक शरीर में बल, वीर्य (शक्ति), पौरूष, पराक्रम (मनोबल) का होना तथा मानवेत्तर ग्रहण–धारण–स्मरण–शास्त्रज्ञान–वचन एवं व्यवहारिक ज्ञान का होना, ये भूतोन्माद के लक्षण हैं।

1– देवोन्माद के लक्षण[10]:–

1–सौम्य दृष्टि, 2– गम्भीर, 3– अक्रोधी, 4– अल्प निद्रा, 5– अल्प भोजन, 6– अल्प स्वेद, 7– अल्प मूत्र, 8– अल्प पुरीष, 9– अल्प अपानवायु, 10– अल्प वाक्, 11– सुगन्धवान, 12– अपराजेय, 13– श्वेताम्बर, 14– शुभ्रमाल्य, 15– संस्कृत वचन, 16– प्रफुल्ल मुखकमल एवं 17– नदीतट–पर्वतप्रान्त और उच्च भवन में रहना पसन्द करने वाला होता है।

8- अदूषयन्तः पुरूषस्य देहं देवादयः स्वैस्तु गुणप्रभावैः।
विशन्तदृश्यास्तरसा यथैव च्छायातपौ दर्पणसूर्यकान्तौ।। चरक संहिता भाग-द्वितीय 9/18 पृष्ठ 380

9- तस्येमानि रूपाणि भवन्ति, तद्यथा-
अत्यात्मबलवीर्यपौरूषपराक्रमग्रहणधारणस्मरणज्ञानवधनविज्ञानानि, अनियतश्चोन्मादकालः।।
चरक संहिता भाग प्रथम 7/13 पृष्ठ 643

10- तद्यथा-सौम्यदृष्टिं गम्भीरमधृष्यकोपनमस्वप्नभोजनाभिलाषिणमल्पस्वेदमूत्रपुरीषवातं शुभगन्धं फुल्लापद्यवदनमिति देवोन्मतं विद्यात्। चरक संहिता भाग-प्रथम 9/19/1 पृष्ठ 380

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– **शापोन्माद के लक्षण**[11]:–

गुरू, वृद्ध, सिद्ध ऋषि आदि के शाप अथवा मारण–मोहन–उच्चाटन के प्रयोग (अभिचार) या चिन्ता आदि से उत्पन्न उन्माद में शाप, अभिचार कर्म या चिन्ता के अनुरूप रोगी का आहार–विहार, रहन–सहन और व्यवहार होता है।

3– **पितृ उन्माद के लक्षण**[12]:–

1–अप्रसन्न दृष्टि, 2– निमीलित नयन, 3– निद्रालु, 4– अवरूद्ध वाक्, 5– अन्नाभिलाषारहित, 6– अरूचि और 7– अपच से ग्रस्त रहता है।

4– **गन्धर्वोन्माद के लक्षण**[13]:–

1–प्रसन्नचित, 2– सदाचारी, 3– प्रसन्ननयन, 4–गीत–नृत्यप्रिय, 5– मुखवाद्य वादक, 6– स्नानप्रिय, 7– गन्ध–माल्यप्रिय, 8– रक्तवस्त्रधारी, 9– हास्यकथा–प्रेमी, 10– सुगन्धवान् 11– वनप्रान्तनिवास का प्रेमी होता है।

5– **यक्षोन्माद के लक्षण**[14]:–

1– बार–बार सोना–रोना–हँसना–नाचना–गाना एवं बाजा बजाना चाहता है।

2– स्तोत्रपाठ–कथा–स्नान–मालाधारण–इत्रलेपन आदि पसन्द करता है।

11- गुरूवृद्धसिद्धर्णीणामभिशापभिचाराभिध्यानानुरूपचेष्टाहारव्याहारं तैरून्मतं विद्यात।
चरक संहिता भाग-द्वितीय 9/19/2 पृष्ठ 381

12- अप्रसन्नदृष्टिमपश्यन्तं निद्रालु प्रतिहतवाचमनन्नभिलाषमरोचकविपाकपरीतं च पितृभिरून्मतं विद्यात्।
तत्रैव 9/19/3 पृष्ठ 381

13- (चण्डं साहसिकं तीक्ष्णं गम्भीरमधृष्यं) मुखवाद्यनृत्यगीतान्नपानस्नानमाल्यधूपगन्धरितं रक्तवस्त्रबलिकर्महास्यकथानुयोगप्रियं शुभगन्धं च गन्धर्वोन्मतं विद्यात्।
तत्रैव 9/19/4 पृष्ठ 381

14- असकृत्स्वप्नरोदनहास्यं नृत्यगीतवाद्यपाठकथान्नपानस्नानमाल्यधूपगन्धरतिं रक्तविप्लुताक्षं द्विजातिवैद्यपरिवादिनं रहस्यभाषिणं च यक्षोन्मतं विद्यात्।
तत्रैव 9/19/5 पृष्ठ 382

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3– भोजन का प्रेमी होता है, ब्राम्हण एवं वैद्य की निन्दा करता है, अपना रहस्य बतलाता है।

4– आँखे लाल तथा सजल होती है।

6– **राक्षसोन्माद के लक्षण**[15]:–

1–नष्टनिद्रा, 2– अन्नपानद्वेषी, 3– भोजन न करने पर भी बलवान, 4– शस्त्राभिलाषी, 5– रक्त–मांसप्रेमी, 6– लाल वस्त्र एवं लाल माला का प्रेमी और 7– डराने वाला होता है।

7– **ब्रम्हराक्षसोन्माद के लक्षण**[16]:–

1– हँसी–मजाक करने वाला, नर्तक, देव–ब्राम्हण एवं वैद्य तथा तिरस्कर्ता।

2– स्तोत्रपाठ, वेदमन्त्रपाठ और शास्त्रवचनों का पाठ करने वाला।

3– लकड़ी के डण्डे से अपने शरीर को पीटने वाला होता है।

8– **पिशाचोन्माद के लक्षण**[17]:–

1– चंचल चित्त, अपने पसन्द का स्थान न पाने वाला, नाचने–गाने–हंसने वाला।

2– असंबद्ध एवं कभी संबद्ध प्रलाप करने वाला, फटे–कर्कश स्वरवाला,

---

15– नष्टनिद्रमन्नपानद्वेषिणमनाहारमप्यतिबलिनं शस्त्रशोणितमांसरक्तमाल्याभिलाषिणं सन्तर्जकं च राक्षसोन्मतं विद्यात्। चरक संहिता भाग-द्वितीय 9/19/6 पृष्ठ 382

16– प्रहासनृत्यप्रधानं देवत्रिप्रवैद्यद्वेषावज्ञाभिः स्तुतिवेदमन्त्रशास्त्रोदाहरणैः काष्ठादिभिरात्मपीडनेन च ब्रम्हराक्षसोन्मतं विद्यात। तत्रैव 9/19/7 पृष्ठ 382

17– अस्वस्थचितं स्थानमलभमानं नृत्यगीतहासिनं बद्धाबद्धप्रलापिनं संङकरकूटमलिनरथ्याचेलतृणा--श्मकाष्ठाधि रोहणरतिं भिन्नरूपक्षस्वरं नग्नं विद्यावन्तं नैकत्र तिष्ठन्तं दुःखान्यावेदयन्तं नष्टस्मृतिं च पिशाचोन्मतं विद्यात्।। तत्रैव 9/20 पृष्ठ 382

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नंगा दौड़ने वाला।

3– गन्दे कूड़ा–कर्कट, गन्दी गली, मलिन वस्त्र एवं लकड़ी या पत्थर की ढेर पर बैठने वाला।

4– एक स्थान पर न रहने वाला और अपने दुःखों को सबसे कहने वाला।

5– स्मरण–शक्तिहीन होकर इधर–उधर दौड़ लगाता रहता है।

जातक ग्रन्थों में उल्लिखित उन्माद रोग, इसके प्रकार तथा लक्षणः–

जातक ग्रन्थों में भी उन्माद रोग के प्रकार तथा लक्षण का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। यह विवेचन भी आयुर्वेद के साथ पूरा–पूरा साम्य रखता है यथा–

उन्माद के कारणः–

हर्ष, इच्छा, भय एवं शोक की प्रबलता से, विरूद्ध एवं अपवित्र भोजन से तथा गुरू देवता आदि के कोप से उन्माद रोग होता है।[18] चरक संहिता में भी उन्माद के यही कारण बतलाये गये हैं।[19]

उन्माद के प्रकारः–

'पृश्नमार्ग' में उन्माद के पांच प्रकार बतलाये गये हैं– 1–वातजन्य,

---

18- हर्षेच्छाभयशोकादेर्विरूद्धाशुचिभोजनात्। गुरूदेवादिकोपाच्च पंचोन्मादा भवन्तथ। प्रश्नमार्ग 12/34 पृष्ठ 180

19- विरूद्धदुष्टाशुचिभोजनानि प्रधर्षणं देवागुरूद्विजानाम्। उन्मादहेनुर्भयहर्षपूर्वो मनोऽभिघातो विषमाश्च चेष्टाः।। चरक संहिता भाग-द्वितीय 9/4 पृष्ठ 374

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– पित्तजन्य, 3– कफजन्य, 4– सन्निपातजन्य, 5– आगन्तुक।[20]

चरक संहिता में भी इस रोग के पूर्वोक्त पांच भेद बतलाये गये हैं।

पंचविध उन्माद के लक्षणः–

जातक ग्रन्थ 'पृश्नमार्ग' में भी पंचविध उन्माद के लक्षण उसी प्रकार हैं, जैसे चरक संहिता में बतलाया गया है यथाः–

1– वातजन्य उन्माद के लक्षणः–

हंसना, चिल्लाना, बिलखना, गाना, नाचना, रोना, एक स्थान पर न ठहरना, हाथ–पैर आदि अंगों को फेंकना–पटकना, लाल और कमजोर शरीर होना, कमजोर हाने पर भी बल होना और अधिक बड़बड़ाना, वात–जन्य उन्माद के लक्षण हैं।[21]

2– पित्तजन्य उन्माद के लक्षणः–

व्याकुलत, क्रोध, गम्भीरता, विद्वत्ता, द्रवीभूत होना, जोर–जोर से बोलना या लड़ना, छाया, ठण्डी चीज तथा पानी की इच्छा, अधिक रोष एवं पीला तथा गरम शरीर होना पित्तजन्य उन्माद का लक्षण माना गया है।[22]

3– कफजन्य उन्माद के लक्षणः–

स्त्रियों से बोलने की इच्छा, निद्रा में बोलना, साधारणतया कम बोलना, मुंह

20- त्रिदोषजाः सान्निपाता आगन्तव इति स्मृताः।। प्रश्नमार्ग 12/35 पृष्ठ 180

21- हसनास्फोटनाक्रन्दगीतनर्तनरोदनम्
अस्थानमङ्गाविक्षेपस्ताम्रा मृदुकृशा तनुः
जीर्णे बलं च वाग्बहवी वातोन्मादस्य लक्षणम्।। प्रश्नमार्ग 12/36 पृष्ठ 180

22- संरम्भामर्षवैदग्ध्यमभिद्रवणतर्जनम्।
छायाशीतान्नतोयेच्छा रोषः पीतोष्णदेहता। प्रश्नमार्ग 12/37 पृष्ठ-181

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

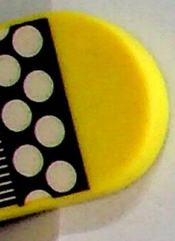

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से लार या झाग निकलना, उल्टी होना, अधिक खाना, नाखून, आंख आदि का सफेद होना, कफजन्य उन्माद का लक्षण है।[23] इस प्रकार उक्त श्लोकों में वात, पित्त और कफजन्य उन्माद की चेष्टाएं कही गयी हैं।

4– **सन्निपातजन्य उन्माद के लक्षणः–**

उक्त लक्षणों के मिश्रण वाला उन्माद सन्निपातजन्य होता है।[24]

5– **आगन्तुक उन्माद के लक्षणः–**

देवता, राक्षण एवं नाग आदि आगन्तुक ग्रह होते हैं। ये अमर होते हैं तथा बल, वाणी, ज्ञान एवं पराक्रम–सम्पन्न होते हैं। इनके कोप से उत्पन्न उन्माद को आगनतुक उन्माद कहते हैं।[25]

जातक ग्रन्थ प्रश्नमार्ग में आगन्तुक उन्माद तथा भूतोन्माद के लक्षण भी उसी प्रकार से हैं जैसे– आयुर्वेद ग्रन्थों में उल्लिखित है। यथाः–

1– **भूत–प्रेत आदि से भय एवं पीड़ाः–**

रोगदायक स्थिति में सूर्य ग्रह के बलवान होने पर कुष्ठ, अग्नि, शस्त्र और विषजन्य विकार, स्त्री एवं पुत्र को रोग, पशु–भय, चोर, राजा, धर्म, देवता,

---

23– नारीविविक्तप्रियतानिद्रारोचौमनाग्वचः।
लाला छर्दिर्बलं भुक्तौ नखदिषु च शुक्लता।। प्रश्नमार्ग 12/38 पृष्ठ 181

24– एताःपित्तकफोन्मादचेष्टाः लोकोदिताः क्रमात्।
संमिश्रलक्षणो वर्ज्य उन्मादः सान्निपातिकः।। तत्रैव 12/39 पृष्ठ 181

25– आगन्तवो ग्रहा ज्ञेयास्तेतु देवासुरादयः।
अमर्त्यालवाक्ज्ञानविक्रमादिसमन्विताः।। तत्रैव 12/40 पृष्ठ 181

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

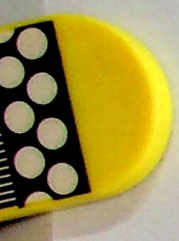

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्प, शिव एवं भूत–प्रेत आदि से भय दिलाता है।[26]

2– **किन्नर तथा यक्ष आदि से भय एवं पीड़ाः–**

रोगदायक स्थिति में चन्द्र के बलवान होने पर मानसिक रोग, रक्तविकार जल से भय, दुर्गा, किन्नर, धर्म, देवता, सर्प एवं यक्ष आदि से पीड़ा दिलवाता है।[27]

3– **ब्रम्ह, राक्षस तथा गन्धर्व आदि से भय एवं पीड़ाः–**

रोगदायक स्थिति में मंगल के बलवान होने पर राजा, शत्रु, चोर, भाई, पुत्र एवं मित्रों से शत्रुता और युद्ध, ब्रम्ह राक्षस, गन्धर्व एवं घोर–ग्रह से भय तथा शरीर के ऊपर के भाग में रोग उत्पन्न करता है।[28]

4– **गन्धर्व तथा किन्नर आदि से भय एवं पीड़ाः–**

रोगदायक स्थित में बुध के बलवान होने पर दुःस्वप्न, चेचक, गिरना (गिरने से चोट लगना), शरीर में कठोरता, बंधन, अधिक परिश्रम तथा गंधर्व, भूदेव, भुवनवासी एवं किन्नरों से पीड़ा दिलवाता है।[29]

5– **शाप, अभिचार, यक्ष एवं किन्नर आदि से भय एवं पीड़ाः–**

रोगदायक स्थिति में गुरू के बलवान होने पर किन्नर, यक्ष, देवता, सर्प एवं

26- कुष्ठाग्न्यस्त्रविषार्त्तिदारतनयव्यापच्चतुष्पाद्भयं
चोरक्ष्मापतिधर्मदैवफणभृत्भूतेशभूताद्भयम्।। प्रश्नमार्ग 12/67 पृष्ठ 186

27- चेतश्शांतिमसृग्विकारमुदकाद्भीतिं च बालग्रहात्
दुर्गाकिन्नरधर्मदैवफणभृद्यक्षाच्च पीडां वदेत। तत्रैव 12/68 पृष्ठ 187

28- भूपरिस्तेनपीडासहजसुतसुहृद्वैरयुद्धंविधते
रक्षोगन्धर्वघोरग्रहभयमवनीसूनुरूर्ध्वाङ्गरोगम्। तत्रैव 12/69 पृष्ठ 187

29- दुस्स्वप्नं च विवर्चिकां निपतनं पारूष्यबन्धश्रमान्।
गंधर्वक्षितिहर्म्यवासिमयुभिर्झों वक्तिं पीडां खगैः।। तत्रैव 12/70 पृष्ठ 187

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विद्याधर आदि के कोप से उत्पन्न रोगों की सूचना देता है। बुध और गुरू दोनों विष्णु कोप के कारण उत्पन्न रोगों के सूचक होते हैं।[30]

6– **योगिनी, यक्षिणी तथा मातृकाओं आदि से भय एवं पीड़ाः–**

रोगदायक स्थिति में शुक्र के बलवान होने पर वस्त्र, स्त्री, खेती और शरीर की कांति का नाश, योगिनी, यक्षिणी एवं मातृकाओं से भय तथा प्रियजन एवं मित्रों से विराध या हार का सूचक होता है।[31]

7– **पिशाच आदि से भय एवं पीड़ाः–**

रोगदायक स्थिति में शनि के बलवान होने पर स्त्री एवं पुत्र पर विपत्ति, अंगभंगता (अंग वैकल्य), हृदय रोग, वृक्ष और पत्थर से चोट, दुष्ट ग्रह और पिशाच आदि से पीड़ा दिलवाता है।[32]

आवश्यक टिप्पणीः–

शाप, अभिचार, पिशाच तथा ब्रम्ह राक्षस से पीड़ित होने की विज्ञानसम्मत समीक्षा अध्याय–10 में की गयी है।

जातक ग्रन्थों में उन्माद रोग के विभिन्न योगः–

पूर्व अध्याय (द्वितीय) में 'प्रश्नमार्ग' 'जातक तत्व' तथा 'जातक पारिजात'

30- रोगं किन्नरयक्षदेवफणभृद्धिद्याराद्युद्भवं।
जीवः सूचयति स्वयं बुधगुरू कृष्णापचारोद्भवम्। प्रश्नमार्ग 12/7 पृष्ठ 188

31- वासस्त्रीकृषिदेहकान्तिविहतिं शोफामयं योगिनी
यक्षीभातृगणाद्भयं प्रियसुहृद्भङ्गांसितः सूचयेत्।। तत्रैव 12/78 पृष्ठ 188

32- भर्यापुत्रविपत्तिमङ्गविहतिंहृत्तापमर्कात्मजो।
वृक्षाश्मक्षतिमाह कश्मलगणैः पीडां पिशाचादिभिः।। तत्रैव 12/73 पृष्ठ 188

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदि जातक ग्रन्थों में उल्लिखित उन्माद रोगों के योगों का विवरण दिया जा चुका है। इस रोग के कुछ अन्य योग निम्नलिखित हैं:-

वृहज्जातक के अनुसार उन्माद रोग के योगः-

1- यदि लग्न में गुरू स्थित हो तथा सप्तम में मंगल हो तो मनुष्य उन्मादयुक्त विक्षिप्त होता है।[33]

2- इसी तरह लग्न में शनि व 5, 9, 7 में मंगल हो तो अथवा शनि व क्षीण चन्द्रमा द्वादश में हो तब भी मनुष्य उन्माद रोगी होता है।[34]

3- यदि चन्द्रमा राहु के मुख में स्थित हो अर्थात चन्द्र ग्रहण के दिन जन्म हो तथा 5, 9 में दोनों मुख्य पाप ग्रह (मंगल, शनि) हों तो मनुष्य सपिशाच अर्थात उन्मत्त, असमंजस में रहने वाला, खोया खोया सा अर्धविक्षिप्त होता है। अथवा भूतप्रेतों से पीड़ित होता है।[35]

अपनी शोध प्रक्रिया के क्रम में मैने अनेक उन्माद रोगियों से सम्पर्क किया है तथा उनके जन्म कुण्डलियों का विश्लेषण किया है जो अग्रलिखित हैः-

---

33- संस्पृष्टः पवनेन भन्दगयुते द्यूने विलग्ने गुरौ,
सोन्मादोऽवनिसूनुनास्तभवने जीवे विलग्नाश्रिते।
तद्वत् सूर्यसुतोदयोऽवनिसुते धर्मात्मजद्यूनगे।
जातो वा ससहस्त्ररश्मितनये क्षीणे व्यये शीतगौ।। वृहज्जातकम् 21/13 पृष्ठ 336

34- तत्रैव।

35- उदयत्युडुफेसुरास्यगे सापिशाचेऽशुभयोस्त्रिकोणयोः।
सोपप्लवमण्डले रवावुदयस्थे नयनापवर्जितः।। वृहज्जातकम् 21/12 पृष्ठ 335

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

0–1

लग्न कुण्डली

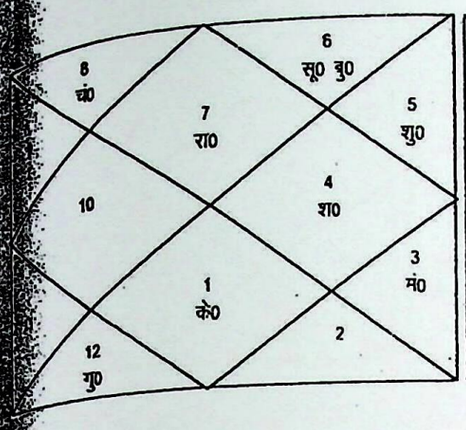

नवमांश

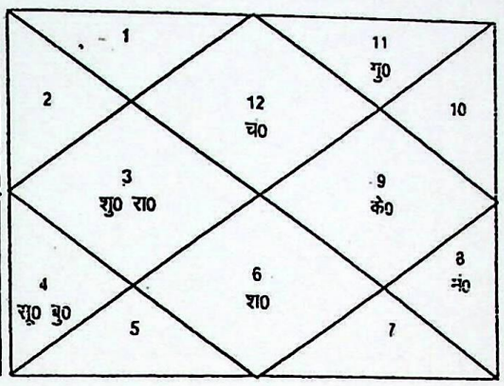

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

सूर्य – राहु	
18-10-2004 से 12-09-2005 तक	
राहु	07–12–2004
गुरू	20–01–2005
शनि	11–03–2005
बुध	27–04–2005
केतु	16–05–2005
शुक्र	10–07–2005
सूर्य	26–07–2005
चंद्र	23–08–2005
मङ्गल	12–09–2005

रोगी का परिचयः–

नाम	–	सुरेश
जन्मतिथि	–	10 अक्टूबर 1975
समय	–	8 AM
स्थान	–	लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक सुरेश उन्माद रोग से ग्रस्त है। मैने 01 नवम्बर 2004 को मानसिक रोग चिकित्सालय नूरमंजिल, सालबाग, लखनऊ में इस रोगी से तथा इसके परिजनों से सम्पर्क स्थापित किया तथा रोग के विवरण की जानकारी प्राप्त कर उसकी जन्म पत्रिका भी प्राप्त की। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तृतीयेश गुरू षष्टम भाव में स्थित है तथा पापी ग्रह सूर्य से दृष्ट है। इस योग के कारण जातक उन्माद रोग से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि तृतीयेश अस्तङत या नीच राशि का होकर षष्ठ भावस्थ हो और यदि पाप ग्रह से दृष्ट हो तो जातक उन्मादी होता है।[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत राहु की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 18 अक्टूबर 2004 से 07 दिसम्बर 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार राहु की अन्तर्दशा में राहु की ही प्रत्यन्तर दशा हो तो इस अविध में बन्धन, अनेक प्रकार के रोग, अनेक प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक कष्ट या मृत्यु से भय होता है।[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- "मूढ़े नीचे षष्ठे सोत्थेशे पापदृष्टे गरलज उन्मादः ।।154।। (जातक तत्वम् प्रकीर्ण तत्वम्- प्रथम विवेक श्लोक--148 पृष्ठ--63)

2- बन्धनं बहुधा रोगो बहुधातः सुहृद्भयम्।
राहवन्तर्दशायां च राहोः प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय 63 श्लोक-29 पृष्ठ 639)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

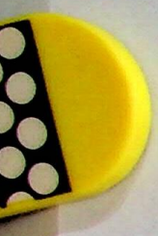

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

-2

लग्न कुण्डली

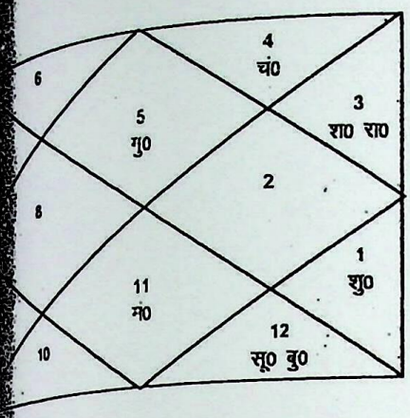

नवमांश

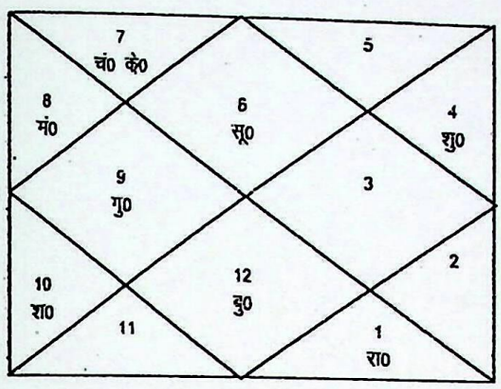

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

चंद्र - राहु	
04-01-2005 से 04-07-2006 तक	
राहु	25–03–2005
गुरू	07–06–2005
शनि	03–09–2005
बुध	19–11–2005
केतु	21–12–2005
शुक्र	21–03–2006
सूर्य	18–04–2006
चंद्र	03–06–2006
मङ्गल	04–07–2006

का परिचयः–

– चन्दा

तिथि – 23 मार्च 1945

– 4.30 PM

– बस्ती।

से सम्पर्कः–

चन्दा नाम की उन्माद रोगी 10 जुलाई सन् 2005 को किंग जार्ज मेडिकल कालेज में मानसिक रोग में चिकित्सा लेने आयी थी। मैने इस रोगी से तथा इसके परिजनों से रोग के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण किया। मैने इस रोगी की जन्म पत्रिका मांगी तो उन लोगों ने कुछ दिनों के उपरान्त उपलब्ध करा दी। रोग सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में लग्न में गुरू है, और सप्तम भाव में मंगल स्थित है, जिससे जातक उन्माद से पीड़ित है।

क ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि लग्न में गुरू स्थित हो तथा सप्तम में मंगल हो तो जातक उन्माद रोग से पीड़ित होता है।"[1]

ोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चन्द्र की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 8 जून 2005 से 03 सितम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "राहु की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर दशा हो तो घोर बन्धन, ख की अत्यधिक कमी, बड़ा भय तथा प्रतिदिन वात रोग से पीड़ा होती है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

[1] संस्पृष्टः पवनेन मन्दगयुते द्यूने विलग्ने गुरौ,
सौम्यादीज्यनिसूनुनास्तभवने जीवे विलग्नाश्रिते। वृहज्जातकम् (आचार्य वराहमिहिर विरचित) श्लोक–13
की प्रथम दोनों पंक्तियां– पृष्ठ–336)

[2] बन्धं जायते घोरं सुखहानिर्महद्भयम्।
प्रत्यहं वातपीडा च शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–31, पृष्ठ–639)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

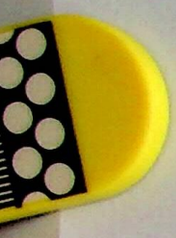

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

0-3

लग्न कुण्डली

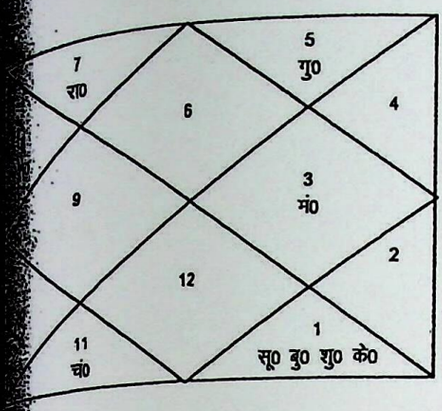

नवमांश

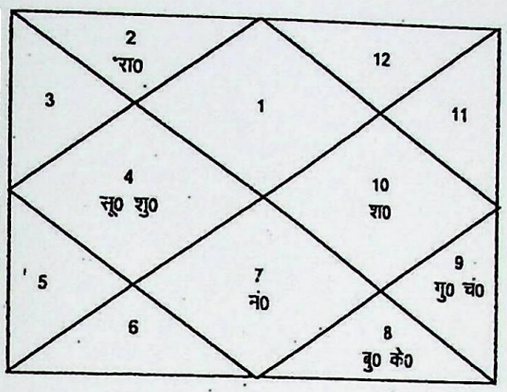

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

शनि - राहु	
13-03-2003 से 19-01-2006 तक	
राहु	17–08–2003
गुरू	04–01–2004
शनि	17–06–2004
बुध	12–11–2004
केतु	12–01–2005
शुक्र	03–07–2005
सूर्य	24–08–2005
चंद्र	20–11–2005
मङ्गल	19–01–2006

ती का परिचयः-

	–	रोहिनी आर्यन
तिथि	–	24 अप्रैल 1957
य	–	4.20 PM
न	–	लखनऊ।

ी से सम्पर्कः–

रोहिनी आर्यन मानसिक चिकित्सालय, नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में 10 दिसम्बर 2004 को उन्माद की चिकित्सा हेतु आयी। मैने इस रोगी से तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा इस रोगी की जन्म ली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर ही उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए ग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में बुध अष्टम भाव में सूर्य तथा केतु के साथ युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है, से जातक उन्माद रोग से पीड़ित है।

क ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि तृतीय, षष्ट, अष्टम या व्यय स्थान में पापयुक्त बुध हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

ोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा र्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 13 नवम्बर 2004 से 12 जनवरी 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक की बुद्धि नाश, भय, विघ्न, धनहानि तथा भय का वातावरण, सर्वत्र कलह तथा उद्वेग होता है।[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. अस्ते पापयुतो भान्दिर्वित्त्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)
2. बुद्धिनाशो भयं विघ्नो धनहानिर्महद्भयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगो केतो प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–33, पृष्ठ–639)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

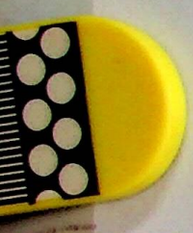

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

0-4

लग्न कुण्डली

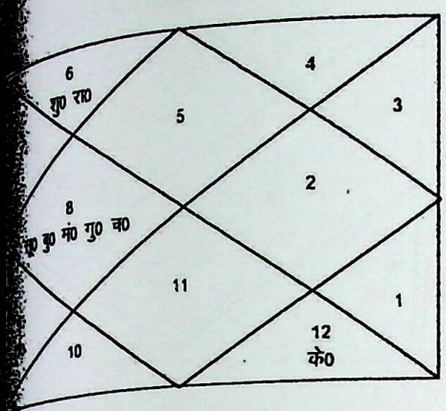

नवमांश

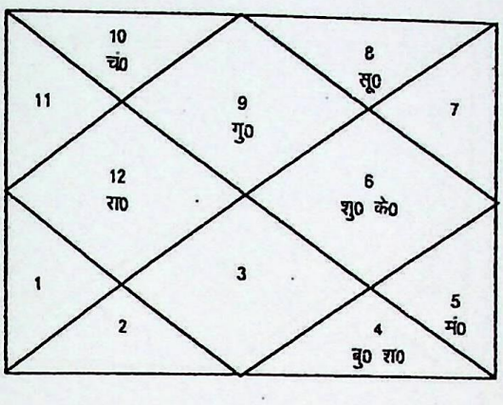

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

चंद्र - मंगल	
09-04-2005 से 09-11-2005 तक	
मङ्गल	22-04-2005
राहु	23-05-2005
गुरू	21-06-2005
शनि	24-07-2005
बुध	24-08-2005
केतु	06-06-2005
शुक्र	11-10-2005
सूर्य	22-10-2005
चंद्र	09-11-2005

रोगी का परिचयः-

नाम	—	संजय अवस्थी
जन्मतिथि	—	01 दिसम्बर 1959
समय	—	1.00 AM
स्थान	—	उन्नाव।

रोगी से सम्पर्कः-

संजय अवस्थी 26 जुलाई 2005 को मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में उन्माद रोग की चिकित्सा लेने आया। मैनें रोगी तथा उसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने कुछ दिनों के उपरान्त उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक उससे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में क्रूर ग्रह मंगल तथा सूर्य आदि स्थित हैं तथा चतुर्थेश मंगल स्वयं पापग्रस्त होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। इसके अतिरिक्त पंचम भाव में भी पापग्रह शनि स्थित है, जिससे जातक उन्माद रोग से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

ये योग जाततक ग्रन्थ "जातकतत्वम्" तथा "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध हैं जो निम्नलिखित हैं:-

"यदि चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह हों तथा चतुर्थेश क्रूर ग्रह से युक्त हो तो जातक चित्त विकार से ग्रस्त होता है।"[1]

तथा

"यदि पंचम भाव में पापग्रह हो तो जातक को भय के कारण उन्माद होता है।"[2]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चंद्र की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 25 जुलाई 2005 से 24 अगस्त 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "मंगल की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, धनहानि, शरीर में ज्वर रोग तथा भोज्य पदार्थों एवं सहयोगियों की भी हानि होती है।"[3]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- सुखं क्रूरे क्रूरान्विते सुखेशे विरूद्धचित.। (जातकतत्वम्-- प्रथम विवेक, श्लोक-322, पृष्ठ--82)

2- सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग- अध्याय-12, सूत्र-47, पेज-182)

3- सर्वथा बुद्धिनाशश्च धनहानिर्ज्वरस्तनौ।
वस्त्रान्नसुहृदां नाशो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् अध्याय--63 श्लोक 24 पृष्ठ-638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

0-5

लग्न कुण्डली

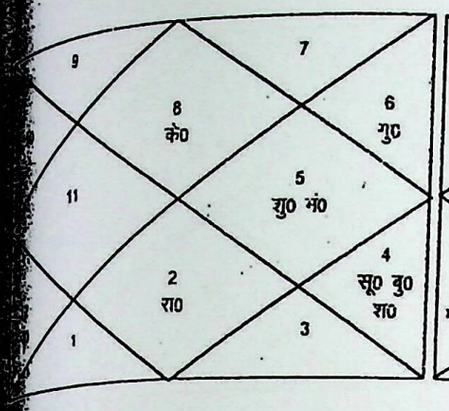

नवमांश

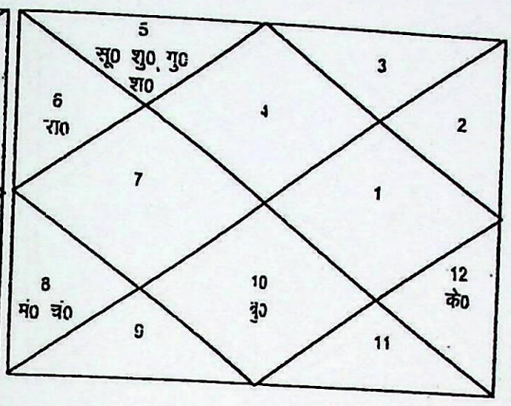

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

चंद्र - केतु	
12-09-2005 से 12-04-2006 तक	
केतु	24-09-2005
शुक्र	29-10-2005
सूर्य	09-11-2005
चंद्र	27-11-2005
मङ्गल	09-12-2005
राहु	11-01-2006
गुरू	09-02-2006
शनि	12-03-2006
बुध	12-04-2006

ी का परिचयः-

म	–	अनिल
तिथि	–	20 जुलाई 1946
य	–	2.30 PM
न	–	सीतापुर।

ी से सम्पर्कः-

जातक अनिल उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में कित्सा हेतु 30 सितम्बर, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने कुछ दिनों के उपरान्त उपलब्ध करा या। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में नवम् भाव में सभी पाप ग्रह सूर्य, बुध तथा शनि युक्त होकर जातक को उन्माद से पीड़ित कर रहे हैं।

क ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"नवम् स्थान में पापग्रह होने पर गुरू, अग्नि, देवता आदि के शाप से उन्माद रोग होता है।"[1]

ोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चंद्र की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा तर्गत शुक्र की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 25 सितम्बर 2005 से 29 अक्टूबर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप प का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "यदि केतु की अन्तर्दशा में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक को लेच्छों से भय, धन नाश, नेत्र रोग तथा सिर पीड़ा आदि होते है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. गुर्वादिशापसम्भूतः पापे नवमसंस्थिते। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–48, पेज–182)
2. म्लेच्छभीस्थैर्यनाशो वा नेत्ररोगः शिरोव्यथा।
   हानिश्चतुष्पदानां च भृगोः प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–66, पृष्ठ–643)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

10-6

लग्न कुण्डली

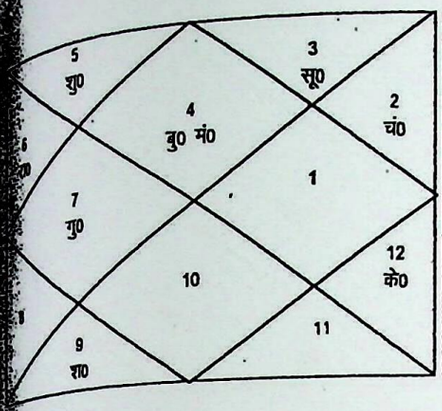

नवमांश

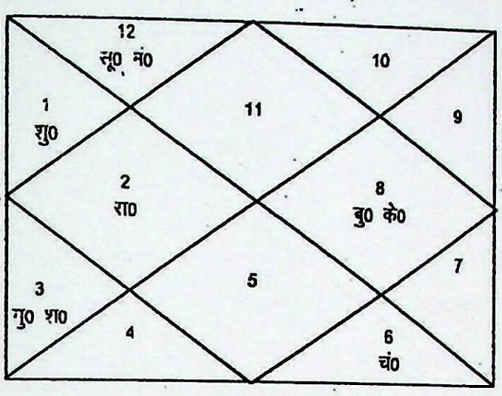

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

शनि - शुक्र	
05-06-2004 से 05-08-2007 तक	
शुक्र	15–12–2004
सूर्य	12–02–2005
चंद्र	17–05–2005
मङ्गल	23–07–2005
राहु	14–01–2006
गुरू	16–06–2006
शनि	17–12–2006
बुध	18–05–2007
केतु	05–08–2007

रोगी का परिचयः–

नाम – सुरेन्द्र लाल

जन्मतिथि – 04 जुलाई 1959

समय – 2.00 PM

स्थान – उन्नाव।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक सुरेन्द्र लाल उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ चिकित्सा हेतु 28 दिसम्बर, 2004 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में बुध राशिस्थ सूर्य, गुरू से दृष्ट होने के कारण जातक को उन्माद रोग से ग्रसित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

"यदि बुद्ध राशिस्थ सूर्य, गुरू से दृष्ट हो तो जातक उन्माद रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 16 दिसम्बर 2004 से 15 फरवरी 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार जब शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा होती है तो जातक वायुजन्य रोग, मस्तक रोग तथा राजा एवं शत्रुओं से पीड़ित होता है।[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1.

2. बुधराशौ दिनभर्तरि गुरूणा दृष्टे सदोन्मादः। (सारावली– अध्याय–20, श्लोक–23, पृष्ठ–142)
वातज्वरः शिरःपीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि शुक्रे शुक्रान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शुक्रविदिशाफलम्, श्लोक–2, पृष्ठ–465)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

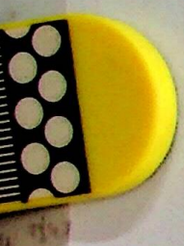

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

-1

लग्न कुण्डली

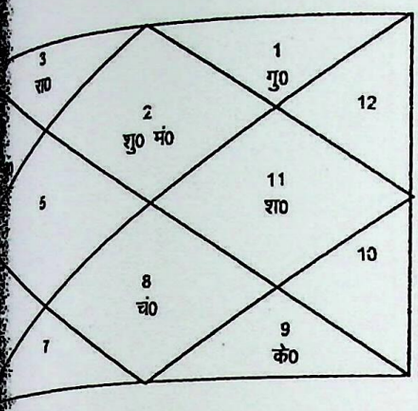

नवमांश

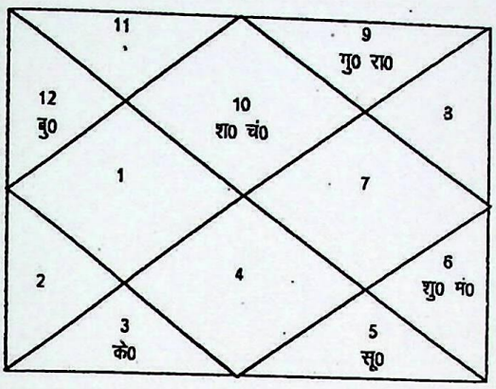

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

सूर्य - केतु	
27-11-2005 से 03-04-2006 तक	
केतु	04-12-2005
शुक्र	25-12-2005
सूर्य	01-01-2006
चंद्र	12-01-2006
मङ्गल	19-01-2006
राहु	08-02-2006
गुरू	25-02-2006
शनि	15-03-2006
बुध	03-04-2006

का परिचयः-

– जतिन

तिथि – 21 जुलाई 1964

– 1.00 AM

– लखनऊ।

से सम्पर्कः-

जतिन नाम उन्माद रोगी किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 मार्च, को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में बुध, सूर्य से युक्त है, जिससे जातक उन्माद रोग से पीड़ित हुआ

ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः-

"यदि तृतीय, षष्ट, अष्टम या व्यय स्थान में बुध पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक को उन्माद रोग होता

तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा मंगल बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 16 मार्च 2006 से 03 अप्रैल 2006 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "यदि केतु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक बुद्धि का नाश, उद्वेग, विद्या का नाश, अधिक भयभीत करने वाला तथा कार्य में असफलता प्रदान करने वाला होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)

बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महाभयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत केतौ केत्वन्तरा बुधः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ केतोर्विंशोत्तरफलम्, श्लोक–9, पृष्ठ–459)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

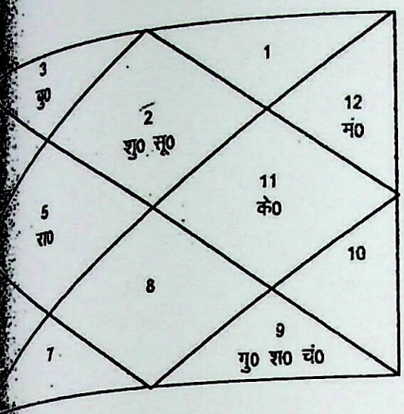

नवमांश

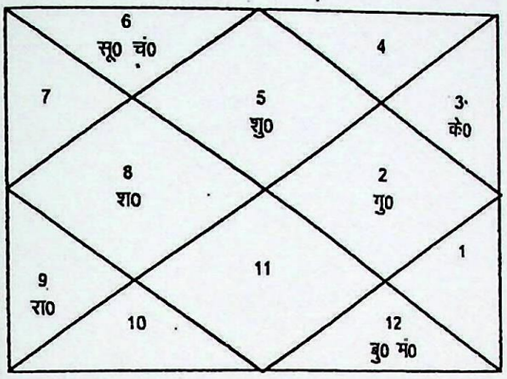

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

राहु - बुध	
03-06-2005 से 21-12-2007 तक	
बुध	13–10–2005
केतु	06–12–2005
शुक्र	09--05–2006
सूर्य	25–06–2006
चंद्र	12--09--2006
मङ्गल	05–11–2006
राहु	23–03–2007
गुरू	25–07--2007
शनि	21--12–2007

का परिचयः–

	–	अरूण
तिथि	–	11 जून 1960
	–	5.00 AM
	–	आजमगढ़।

से सम्पर्कः–

अरूण नाम उन्माद रोगी किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् वेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में चन्द्रमा शनि से युक्त होकर जातक को उन्माद रोग से पीड़ित रहा है।

तक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम्" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेश युक्त हो तो मनुष्य कठोर भाषी, ा का रोगी तथा सदैव शारीरिक शक्ति घटाते रहने वाले किसी बड़े रोग से पीड़ित होता है।"[1]

ोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 14 अक्टूबर 2005 से 06 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का कोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार यदि बुध की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक कठोर भोजन पाने वाला, पेट के रोग से युक्त, पीलिया तथा रक्त पित्त जन्य व्याधियों से पीड़ित होता है।[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- परूषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोके गते परिवेषगे।
रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभः स्थलमाश्रितै–
भृतकमनुजः पूर्वादिदृष्टैर्वराधममध्यमाः।।17।। (वृहज्जातकम् अध्याय-21, श्लोक--17 पृष्ठ--340)

2- कठिनान्नस्य सप्राप्तिरुदरे रोगसंभवः।
कामला रक्तपित्तं च बुधे सौम्यान्तरा शिखी। (होरारत्नम् अध्याय-9 अथ बुधदिदिशाफलम्, श्लोक--2, पृष्ठ--450)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

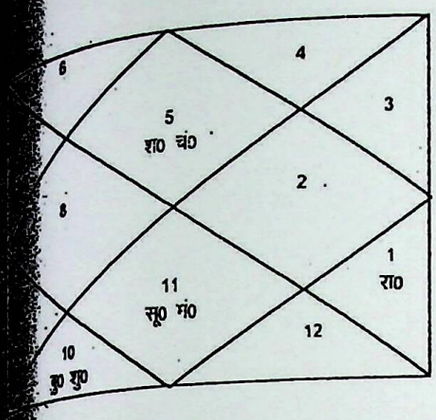

नवमांश

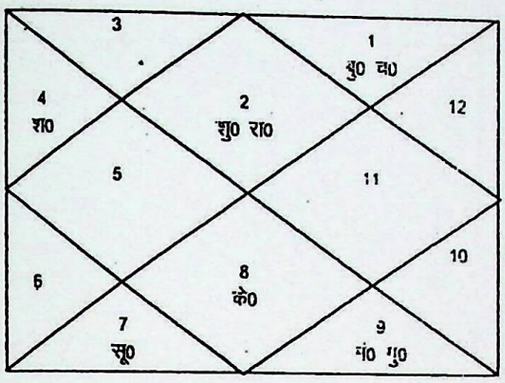

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

राहु - बुध	
27-04-2005 से 15-11-2007 तक	
बुध	07–09–2005
केतु	01–11–2005
शुक्र	04–04–2006
सूर्य	20–05–2006
चंद्र	06–08–2006
मङ्गल	30–09–2006
राहु	17–02–2007
गुरू	20–06–2007
शनि	15–11–2007

का परिचयः–

	–	केसर
तिथि	–	13 फरवरी 1949
	–	6.00 PM
	–	जौनपुर।

से सम्पर्कः–

जातक केसर उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में त्सा हेतु 15 सितम्बर, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग र्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा । रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा की शनि के साथ युति रोग देने वाली बनी। इसके अतिरिक्त इसी लग्न ली में शनि लग्न में तथा मंगल सप्तम भाव में स्थित है। इस योग के कारण जातक उन्माद रोग से ग्रस्त

क ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः–

"यदि लग्न में शनि तथा 5वें, 9वें अथवा 7वें भाव में मंगल हो तो जातक उन्माद रोग से पीड़ित होता

ोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत हु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 08 सितम्बर 2005 से 01 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का कोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "यदि बुध की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक ोर भोजन पाने वाला, पेट के रोग से युक्त, पीलिया तथा अन्य रक्त पित्त आदि विकारों से युक्त होता है।"[2] दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

तद्वत् सूर्यसुतोदयोऽवनिसुते धर्मात्मजजद्यूनगे।
जातो वा सरसहस्ररश्मितनये क्षीणे वयये शीतगौ।।13।। (वृहज्जातकम् अध्याय--21, श्लोक–13, पृष्ठ–336)

कठिनान्त्रस्य सम्प्राप्तिरूदरे रोगसम्भवः।
कामलं रक्तपित्तं च सौम्ये सौम्यान्तरे शिखी। (होरारत्नम् अध्याय 9 अथ बुधादिदशाफलम् श्लोक--2.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

10

लग्न कुण्डली

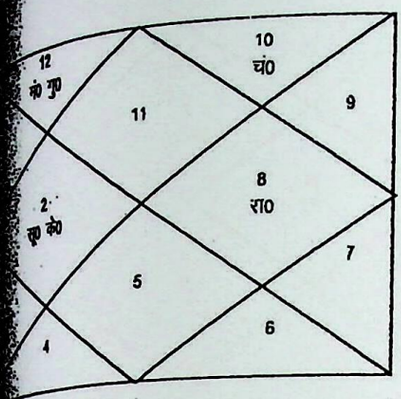

नवमांश

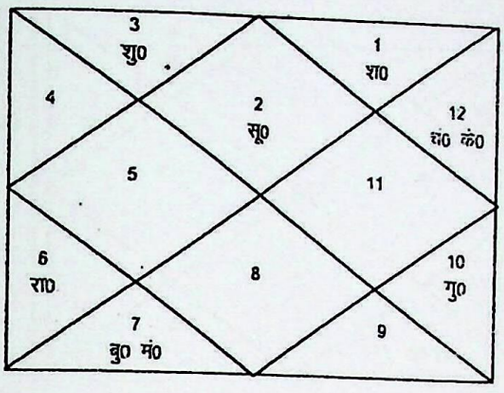

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

राहु - शुक्र	
23-04-2004 से 23-04-2007 तक	
शुक्र	23–10–2004
सूर्य	17–12–2004
चंद्र	17–03–2005
मङ्गल	20–05–2005
राहु	02–11–2005
गुरू	26–03–2006
शनि	17–09–2006
बुध	20–02–2007
केतु	23–04–2007

का परिचयः–

– बबलू

तिथि – 30 मई 1975

– 1.00 AM

– इलाहाबाद।

से सम्पर्कः–

जातक बबलू उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में त्सा हेतु 01 नवम्बर, 2004 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव सूर्य और केतु के कारण पापग्रस्त है तथा चतुर्थेश शुक्र भी पंचम में शनि से युक्त होकर पापयुक्त है। इसके अतिरिक्त पंचम भाव भी शनि के कारण पापग्रस्त हैं तथा पंचमेश पंचम भाव में ही शनि से युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है। इन योगों के कारण से जातक उन्माद रोग ड़ित है।

ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम्" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह हों तथा चतुर्थेश क्रूर ग्रह से युक्त हों तो जातक चित्त विकार से ग्रसित है।"[1]

तथा

"पंचमेश यदि पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होता है।[2]

तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 24 अक्टूबर 2004 से 17 दिसम्बर 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक न्य विकार, मस्तक पीड़ा तथा राजा एवं शत्रुओं से पीड़ित होता है।"[3]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

सुखे क्रूरे क्रूरान्विते सुखेशे विरूद्धचितः। (जातकतत्वम्– प्रथम विवेक, श्लोक–322, पृष्ठ–82)

सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातकतत्वम् पंचम विवेक, श्लोक–19, पृष्ठ–137)

वातज्वरः शिर पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।

जायते स्वल्पलाभोऽपि शुक्रे शुक्रान्तरे रवेः।। (होरारत्नम् अध्याय 9 अंश शुक्रान्तर्दशा सूर्यप्रत्यन्तर्दशा फलम् श्लोक–2

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karanpur, Jabalpur (MP). Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

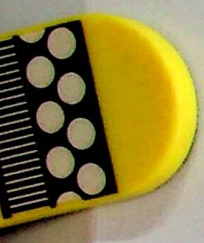

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

0-11

लग्न कुण्डली

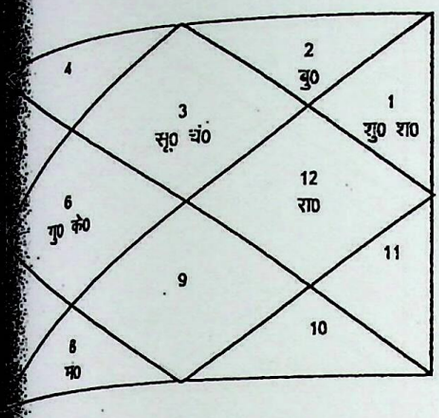

नवमांश

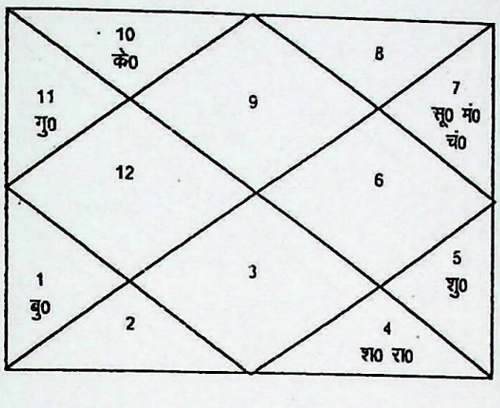

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

गुरू - राहु	
27-01-2004 से 21-06-2006 तक	
राहु	06–06–2004
गुरू	02–10–2004
शनि	18–02–2005
बुध	21–06–2005
केतु	11–08–2005
शुक्र	05–01–2006
सूर्य	18–02–2006
चंद्र	30–04–2006
मङ्गल	21–06–2006

ी का परिचयः–

म	–	अनिल तिवारी
नतिथि	–	15 जून 1969
मय	–	6.00 AM
ान	–	बरेली।

ी से सम्पर्कः–

ज़ातक अनिल तिवारी उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, खनऊ में चिकित्सा हेतु 01 जुलाई, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया ा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर पलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

ग्न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में सूर्य तथा चन्द्रमा लग्न में स्थित है जो जातक की बुद्धि को चंचल बना रहा इसके अतिरिक्त मंगल षष्टम भाव में स्थित होकर जातक को उन्माद रोग से पीड़ित कर रहा है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातकगन्थ "जातकतत्वम" में तथा "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध हैं, जो निम्नलिखित हैंः–

"सूर्य तथा चन्द्रमा लग्न में या त्रिकोण स्थानों में हों तो जातक चंचल बुद्धि वाला होता है।"[1]

तथा

"यदि षष्ट स्थान में मंगल हो तो शत्रुकृत अभिचार के कारण उन्माद होता है।"[2]

शोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत हु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 22 जून 2005 से 11 अगस्त 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप ग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "यदि राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा की अवधि में बुद्धि ा नाश, भय, विघ्न, धनहानि, भय का वातावरण, सर्वत्र कलह तथा उद्वेग होता है।"[3]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. लग्नकोणे चन्द्राकौ चञ्चलधीः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–11, पेज–135)
2. क्रोधज्ञोशाभिचारोत्थः षष्ठगेध्वशुभेषु सः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–48, पेज–182)
3. बुद्धिनाशो भय विघ्नो धनहानिर्महद्भयम्।
   सर्वत्र कलहोद्वेगो केतो प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–33, पृष्ठ–639)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

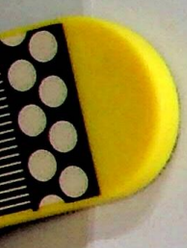

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

12

लग्न कुण्डली

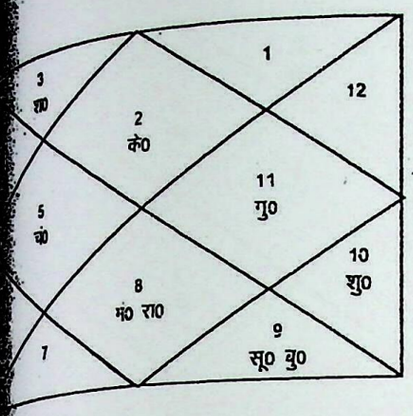

नवमांश

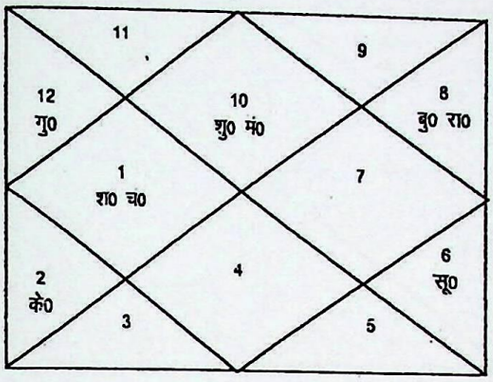

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

सूर्य - बुध	
26-03-2005 से 02-02-2006 तक	
बुध	09–05–2005
केतु	27–05–2005
शुक्र	18–07–2005
सूर्य	04–08–2005
चंद्र	29–08–2005
मङ्गल	17–09–2005
राहु	03–11–2005
गुरू	14–12–2005
शनि	02–02–2006

का परिचयः–

	–	शशीभूषण
तिथि	–	01 जनवरी 1975
य	–	2.15 PM
न	–	लखनऊ।

से सम्पर्कः–

जातक शशीभूषण उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ चिकित्सा हेतु 01 जनवरी, 2006 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा या। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में बुध सूर्य से युक्त होकर पापयुक्त हो गया है, जो जातक को ाद रोग से पीड़ित कर रहा है।

क ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ, "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि तृतीय, षष्ट, अष्टम या व्यय स्थान में पापयुक्त बुध हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

शोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत नि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 15 दिसम्बर 2005 से 02 फरवरी 2006 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का कोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "यदि बुध की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर दशा की अवधि में वात ला की पीड़ा, शरीर पर चोट तथा धन का नाश होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

अस्ते पापयुता मान्दिर्वित्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)

वातपित्तमहापीडा देहघातसमुद्भवा।
धननाशमवाप्नोति शनेः प्रत्यन्तरे जनः।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–64, पृष्ठ–643)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

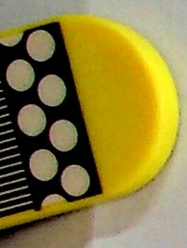

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

0-13

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

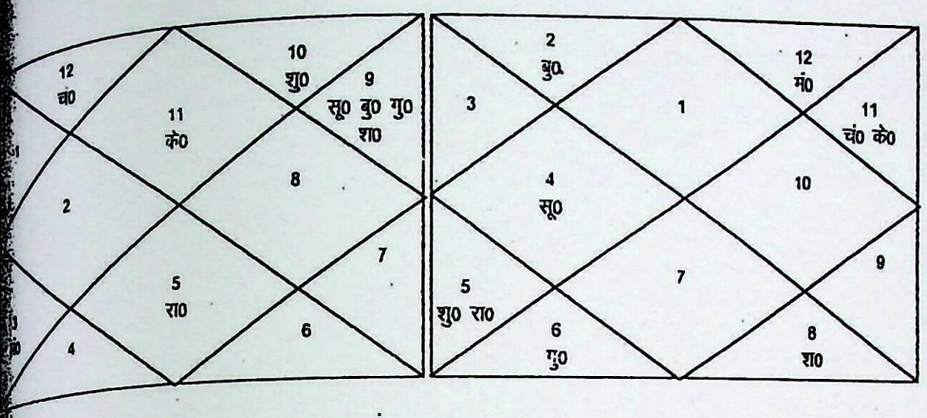

चंद्र - शनि	
14-10-2004 से 14-05-2006 तक	
शनि	14-01-2005
बुध	05-04-2005
केतु	08-05-2005
शुक्र	13-08-2005
सूर्य	12-09-2005
चंद्र	29-10-2005
मङ्गल	02-12-2005
राहु	28-02-2006
गुरू	14-05-2006

ोगी का परिचयः-

ाम	–	महेश वर्मा
न्मतिथि	–	26 दिसम्बर 1960
समय	–	11.00 AM
्थान	–	लखनऊ।

ोगी से सम्पर्कः-

जातक शशीभूषण उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ चिकित्सा हेतु 12 नवम्बर, 2004 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा या। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

ग्न-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में धनेश गुरू तथा शनि एकादश भाव में सूर्य से युक्त है, जिससे जातक उन्माद ग से पीड़ित है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ, "जातकतत्वम्" में उपस्थित है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि धनेष तथा शनि सूर्य सहित हों तो जातक उन्माद रोगी होता है।[1]

ंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चन्द्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा न्तर्गत शनि की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 14 अक्टूबर 2004 से 14 जनवरी 2005 तक चल रही थी। लस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "यदि शनि की अन्तर्दशा में शनि की ही प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक निम्न श्रेणी के लोगों से कष्ट तथा अनेक प्रकार के दुःख होते हैं।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. धनेशार्कजौ सूर्ययुतौ राजकोपज उन्मादः।। (जातक तत्वम्- पंचम विवेक, सूत्र-151, पेज-63)
2. देहपीडा कलेर्भीतिर्भयमन्त्यजलोकतः।
दुःखं शन्यन्तरे नाना शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-47, पृष्ठ-641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

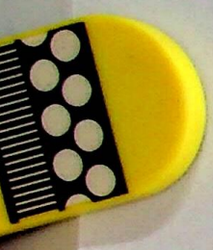

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

14

लग्न कुण्डली

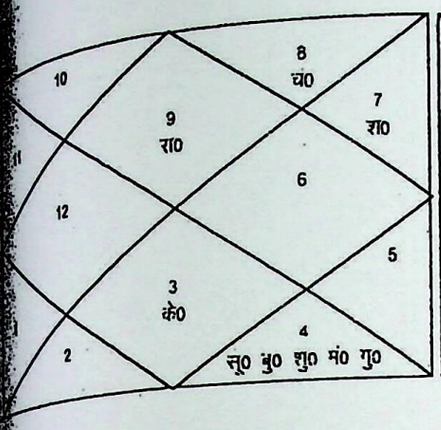

नवमांश

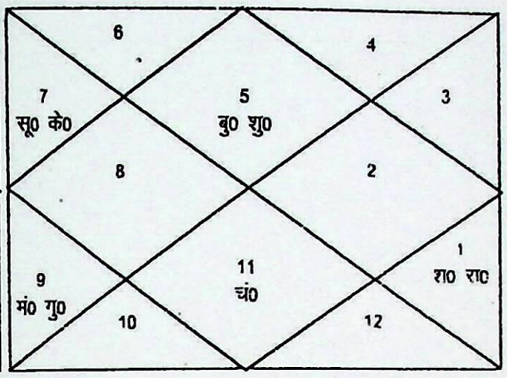

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

मंगल - राहु	
09-07-2005 से 27-07-2006 तक	
राहु	05-09-2005
गुरू	26-10-2005
शनि	26-12-2005
बुध	19-02-2006
केतु	11-03-2006
शुक्र	14-05-2006
सूर्य	03-06-2006
चंद्र	05-07-2006
मङ्गल	27-07-2006

ी का परिचयः-

ाम	–	गीता पाल
न्मतिथि	–	30 जुलाई 1955
समय	–	4.45 PM
थान	–	बलिया।

ी से सम्पर्कः-

गीता पाल नामक जातक किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 लाई, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर सके रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् श्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

न्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में सभी पापी ग्रह बुध, मंगल, सूर्य, शुक्र के साथ अष्टम भाव में स्थित है जो ातक को उन्माद रोगी बनाते है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ, "प्रश्नमार्ग" में उपस्थित है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि तृतीय, षष्टम, अष्टम या व्यय स्थान में पापयुक्त बुध हो तो उन्माद रोग होता है।[1]

िंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा दन्तर्गत राहु की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 09 जुलाई 2005 से 05 सितम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप ोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार यदि राहु की अन्तर्दशा में राहु की ही प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक विविध रोग, आंख में चोट तथा मित्रों से कष्ट पाता है।[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)

2- बन्धन बहुधा रोगो बहुघातः सुहृदभयम्।
राहवन्तर्दशायां च राहोः प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–29, पृष्ठ–639)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

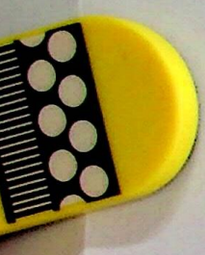

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

0-15

लग्न कुण्डली

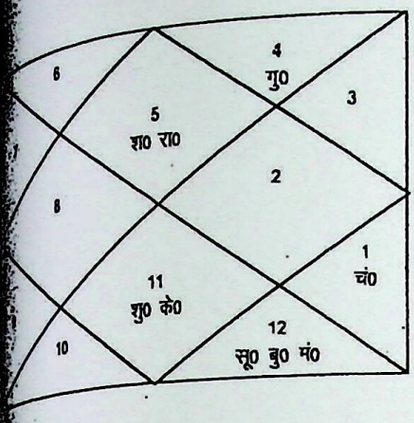

नवमांश

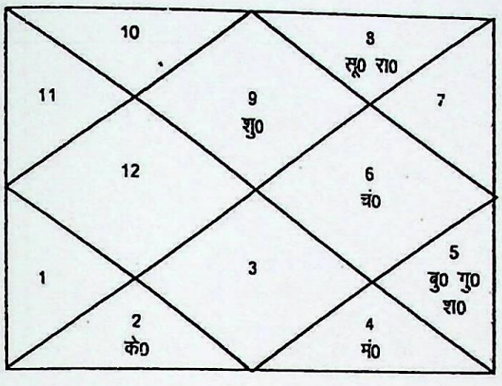

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

चंद्र - शनि	
11-03-2004 से 11-10-2005 तक	
शनि	11–06–2004
बुध	02–09–2004
केतु	05–10–2004
शुक्र	10–01–2005
सूर्य	08–02–2005
चंद्र	26–03–2005
मङ्गल	29–04–2005
राहु	25–07–2005
गुरू	11–10–2005

ली का परिचयः–

ाम	–	सरिता
न्मतिथि	–	30 मार्च 1979
मय	–	5.00 PM
ान	–	सुल्तानपुर।

ी से सम्पर्कः–

सरिता नामक जातक किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 अप्रैल, 05 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे ी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में बुध अष्टम भाव में पापी ग्रह सूर्य तथा मंगल के साथ है, जो जातक को ाद रोगी बनाता है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपस्थित है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि तृतीय, षष्ट, अष्टम या व्यय स्थान में पापयुक्त बुध हो तो जातक उन्माद रोगी होता है।"[1]

ोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चंद्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा ुरन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 27 मार्च 2005 से 29 अप्रैल 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग ा प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "यदि शनि की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यन्तर दशा की अवधि में ेज में कमी, पुत्र को कष्ट, अग्नि से भय तथा वात पित्त आदि से उत्पन्न होने वाले रोग होते हैं।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्त्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)
2. तेजोहानिः पुत्रघातो वह्निन भीन्ती रिपोर्भयम्।
वातपित्तकृता पीड़ा कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–53, पृष्ठ–642)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

16

लग्न कुण्डली

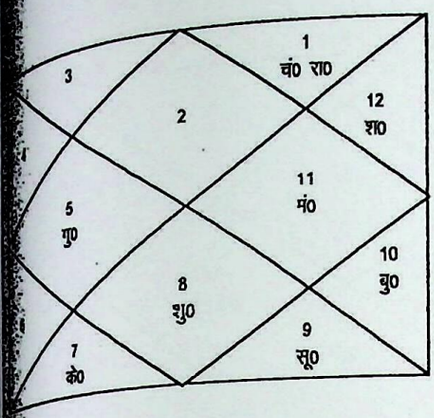

नवमांश

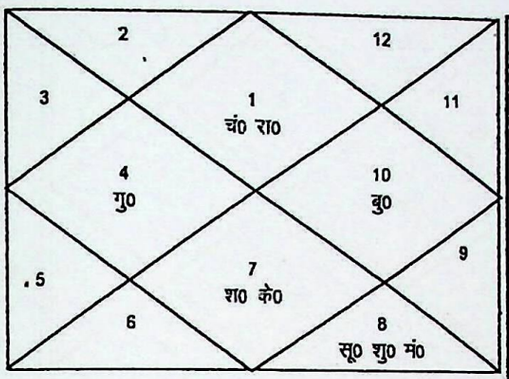

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

चंद्र – शनि	
23-02-2004 से 23-09-2005 तक	
शनि	24–05–2004
बुध	14–08–2004
केतु	18–09–2004
शुक्र	23–12–2004
सूर्य	21–01–2005
चंद्र	09–03–2005
मङ्गल	12–04–2005
राहु	07–07–2005
गुरू	23–09–2005

ी का परिचयः–

ाम	–	हेमा मित्तल
न्मतिथि	–	08 जनवरी 1968
मय	–	2.30 PM
थान	–	लखनऊ।

ी से सम्पर्कः–

जातक हेमा मित्तल उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ चिकित्सा हेतु 07 मई, 2005 को आयी थी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की ज़न्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। ा के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में चन्द्रमा राहु से युक्त है तथा केतु की सप्तम दृष्टि से भी पीड़ित इस योग जातक उन्माद रोग से ग्रस्त है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ, 'जातक पारिजात' में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पापयुक्त चन्द्रमा राहु के साथ द्वादश, पंचम या अष्टम भाव में स्थित हो तो जातक क्रमशः न्मादबुद्धि, क्रोधी और कलहप्रिय होता है।"[1]

ंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चंद्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा दन्तर्गत राहु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 13 अप्रैल 2005 से 07 जुलाई 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "यदि शनि की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक धन का विनाश, वस्त्रों का क्षय करने वाला, भूमि को नष्ट करने वाला, भयभीत रहने वाला तथा मृत्यु की सम्भावना से युक्त होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता मे वृद्धि हुई।

---

1. चन्द्रे सपापे फणिनाथयुक्ते रिःफे सुते सन्धगतेऽथवाऽपि।
उन्मादभाक् तत्र सरोषयुक्तो जातस्तु नित्यं कलहप्रियः स्यात्।। जातक पारिजातः जातक भङ्गाध्यायः– श्लोक–83, पृष्ठ–288

2. धननाशो वस्त्रहानिर्भूमिनाशो भय भवेत्।
निर्देशनामा मृत्युः कोणेकोणान्तरा तम।। होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शनिविदिशाफलम्, श्लोक–8, पृष्ठ 443।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

0-17

लग्न कुण्डली

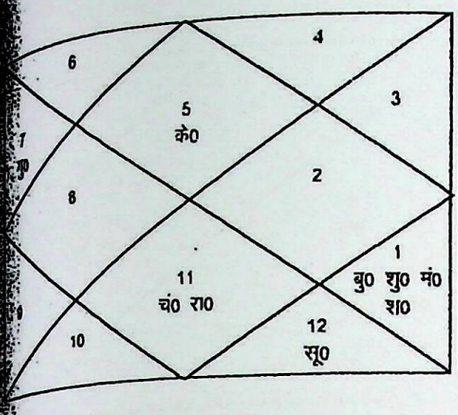

नवमांश

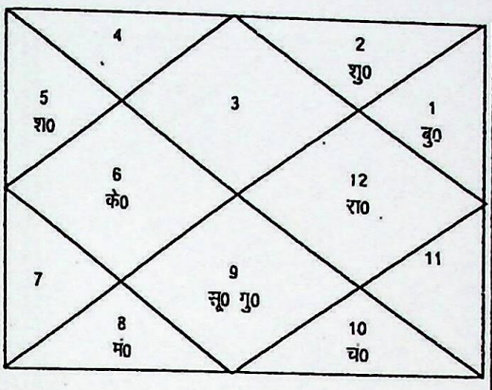

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

शनि - शुक्र	
30-03-2003 से 30-05-2006 तक	
शुक्र	10–10–2003
सूर्य	07–12–2003
चंद्र	12–03–2004
मङ्गल	18–05–2004
राहु	09–11–2004
गुरू	11–04–2005
शनि	12–10–2005
बुध	23–03–2006
केतु	30–05–2006

ी का परिचयः–

ाम	–	शंकर
न्मतिथि	–	03 अप्रैल 1970
ाय	–	3.15 PM
ान	–	लखनऊ।

ी से सम्पर्कः–

शंकर नामक जातक किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 अगस्त, 04 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे ी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में नवम् भाव में सभी पापी ग्रह मंगल, बुध, शुक्र, शनि की युति है, जो जातक न्माद रोगी बनाती है।

तक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ, 'प्रश्नमार्ग' में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"नवम् स्थान में पाप ग्रह होने पर जातक उन्माद रोग से पीड़ित होता है।"[1]

ोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा दन्तर्गत राहु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 19 मई 2004 से 09 नवम्बर 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक ी से लड़ने वाला, अचानक भयभीत तथा राजा और शत्रुओं से पीड़ित होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. गुर्वादिदृश्यसम्भूतः पापे नवमसंस्थिते। (प्रश्नमार्ग-- अध्याय–12, सूत्र–48, पेज--182)
2. कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद्भयसंभवः।
राजतः शत्रुतः पीडा शुक्रे शुक्रान्तरा तमः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शुक्रविदिशाफलम्, श्लोक–5, पृष्ठ–466)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

10-18

लग्न कुण्डली

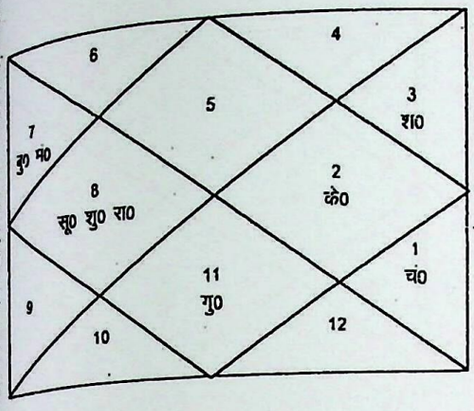

नवमांश

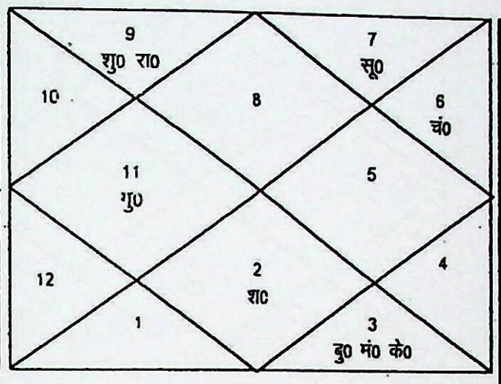

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

मंगल - शनि	
01-03-2005 से 08-04-2006 तक	
शनि	02-05-2005
बुध	29-06-2005
केतु	22-07-2005
शुक्र	28-09-2005
सूर्य	18-10-2005
चंद्र	22-11-2005
मङ्गल	15-12-2005
राहु	15-02-2006
गुरू	08-04-2006

रोगी का परिचयः-

नाम – अख्तर

जन्मतिथि – 28 नवम्बर 1974

समय – 1.00 AM

स्थान – पटियाला।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक अख्तर उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 28 मई, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में बुध मंगल से युति करने के कारण पापयुक्त हो गया है, जो जातक को उन्माद रोगी बनाती है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ, 'प्रश्नमार्ग' में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि तृतीय, अष्टम या व्यय स्थान में पापयुक्त बुध हो तो जातक उनमाद रोगी होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 03 मई 2005 से 29 जून 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "यदि शनि की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, कलह, भय, अभावग्रस्तता और धन की कमी तथा शत्रुओं से भय होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- अस्ते पापयुतो मान्दिवित्रिषष्ठाष्टगोऽन्त्यगः। (प्रश्नमार्ग-- अध्याय-12, सूत्र-32, पेज--180)

2- बुद्धिनाशः कलिर्भीतिर्मन्दापानादिहानिकृत्।
धनक्षतिर्भयं शत्रोः शनेः शन्यन्तरे बुधः।। (होरारत्नम् अध्याय--9, अथ शनिविदिशाफलम्, श्लोक--2, पृष्ठ--443)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

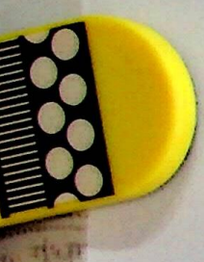

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

19

लग्न कुण्डली

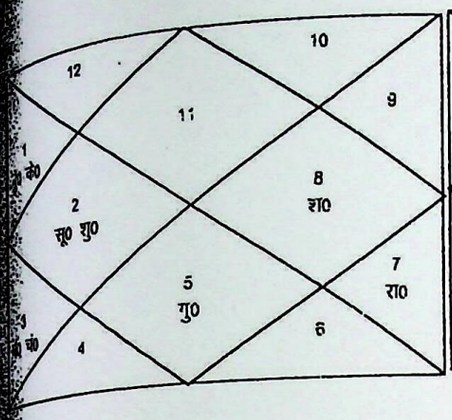

नवमांश

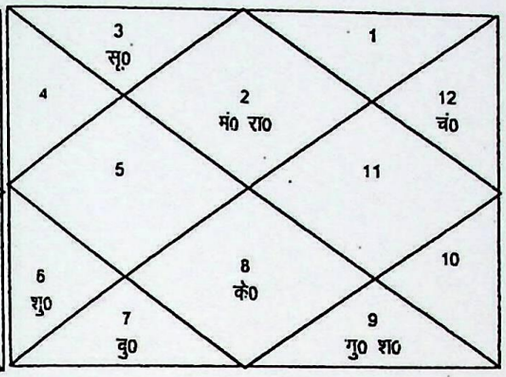

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

बुध - मंगल	
04-01-2005 से 01-01-2006 तक	
मङ्गल	25-01-2005
राहु	18-03-2005
गुरू	06-05-2005
शनि	02-07-2005
बुध	23-08-2005
केतु	14-09-2005
शुक्र	13-11-2005
सूर्य	01-12-2005
चंद्र	01-01-2006

ली का परिचयः-

ाम	–	श्यामली
ातिथि	–	01 जून 1957
ाय	–	1.00 AM
ान	–	लखनऊ।

ी से सम्पर्कः-

श्यामली नामक जातक किंग जार्ज मेडिकल कालेंज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 02 अप्रैल, 05 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे ी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव मंगल के स्थित होने के कारण पापग्रस्त है तथा पंचमेश बुध भी ाव भाव में केतु के साथ युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है। यह योग जातक को उन्माद रोगी बनाता है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" तथा "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"पंचम स्थान में पापग्रह होने पर भय के कारण उन्माद होता है।"[1]

तथा

"पंचमेश यदि पापग्रह से युक्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि वाला होता है।"[2]

ोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा दन्तर्गत गुरू की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 19 मार्च 2005 से 06 मई 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का कोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार यदि मंगल की अन्तर्दशा में गुरू की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक बुद्धि का विनाश, दुःखी, संतापी, कलही और चिन्तित होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)

सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)

मतिनाशं तथा दुःखं संतापकलहो भवेत्।

विफलं चिन्तितं राहौ भौमभौमान्तरे गुरू।। (होरारत्नम् अध्याय- 9 अथ भौमविदिशाफलम्, श्लोक–3,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

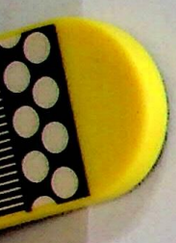

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्माद रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

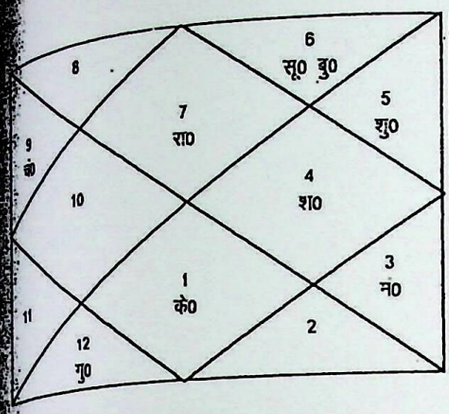

नवमांश

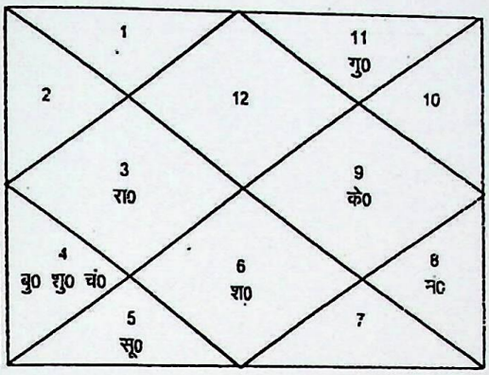

विंशोत्तरी दशा

(प्रत्यंतर)

चंद्र - राहु	
26-08-2003 से 26-02-2005 तक	
राहु	17--11--2003
गुरू	29--01--2004
शनि	25--04--2004
बुध	11--07--2004
केतु	13--08--2004
शुक्र	13--11--2004
सूर्य	10--12--2004
चंद्र	25--01--2005
मङ्गल	26--02--2005

रोगी का परिचयः-

नाम – रमेश कुमार
जन्मतिथि – 11 अक्टूबर 1975
समय – 8.00 AM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक रमेश कुमार उन्माद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 01 फरवरी, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा तीसरे भाव में है, जिस पर मंगल की सातवीं दृष्टि पड़ती है, जिससे जातक उन्माद रोग से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम्" में उल्लिखित है जो निम्नलिखित हैः-

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेष युक्त हो तो मनुष्य कठोर भाषी, मिर्गी का रोगी तथा सदैव शारीरिक शक्ति घटाते रहने वाले किसी बड़े रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चंद्र की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 26 जनवरी 2005 से 26 फरवरी 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "यदि राहु की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक भगन्दर रोग से पीड़ित, रक्त जन्य तथा पित्त जन्य विकारों से युक्त, दुखी, उद्वेगी तथा धन का क्षय करने वाला होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1. परूषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये बकालोकं गते परिवेषगे।
रविमकुटे सौम्यादृष्टैर्नगः स्थलमाश्रितै-
र्मृतकमनुजः पूर्वोदिदष्टैर्वराधममध्यमाः ।।17।। वृहज्जातकम (आचार्य वराहमिहिर विरचित), अध्याय-21, श्लोक-17, पृष्ठ-340)
2. भगन्द[illegible]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-चतुर्थ

अपस्मार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय चतुर्थ

अपस्मार

रोग परिचयः—

स्मरण शक्ति, बुद्धि और मन के विभ्रम से वीभत्स चेष्टायुक्त होकर कदाचित अन्धकार में डूबते हुए की तरह ज्ञानशून्य होने को अपस्मार कहते हैं।[1]

शरीर का काँपना, मुख से झाग निकलना, आंख नचाना, हाथ–पैर पटकना फिर बेहोश होकर टूटे वृक्ष की तरह गिर पड़ना अपस्मार है।

रोग का पूर्वरूपः—

1– हृदय में कम्पन, 2– हृदय में शून्यता का अनुभव, 3– पसीना आना, 4– ध्यानमग्न होना, 5– मूर्च्छा, 6– मन एवं इन्द्रियों की क्रियाहीनता और 7– निद्रानाश होना– ये अपस्मार के पूर्वरूप हैं।[2]

सामान्य लक्षणः—

1– तमःप्रवेश का अनुभव– आंखों के समक्ष अंधेरा सा छा जाना।

2– संरम्भ– भयानक रूप बनाना, आंख नचाना, हाथ–पैर पटकना, टेढ़ा मुख करना आदि।

3– पूर्व के अनुभूत तथा वर्तमानकालीन स्मरण का विनाश होना।

1- स्मृतेरपगमं प्राहुरपस्मारं भिषग्विदः।
तमःप्रवेशं बीभत्सचेष्टं धीसत्त्वसम्प्लवात्। चरक संहिता भाग द्वितीय 10/3 पृष्ठ 405

2- धमनीभिः श्रिता दोषा हृदयं पीडयन्ति हि।
सम्पीडयमानो व्यथते मूढो भ्रान्तेन चेतसा।
[illegible]न्त्यसन्ति रूपाणि पतति प्रस्फुरत्यपि।
[illegible]क्षिभ्रूः स्त्रवल्लालो हस्तौ पादौ च विक्षिपन्।। चरक संहिता भाग द्वितीय 10/6 पृष्ठ 406

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4– प्रलाप करना, अव्यक्त (छू–छू शब्द) ध्वनि करना और क्लेश।

5– मनोविभ्रम, सहसा गिर पड़ना, जिहवा, भौंह और आंखों की चंचलता।

6– मुख के बाहर लार गिरना, हाथ–पैर पटकना, आंखों से पानी आना।[3]

अपस्मार के भेदः–

1– वातज, 2– पित्तज, 3– कफज और 4– सन्निपातज भेद से यह चार प्रकार का होता है।[4]

वातज अपस्मार के लक्षणः–

1– अपस्मार के दौरे के पहले रोगी अपने सामने की वस्तुओं को रूक्ष, अरूण और कृष्ण वर्ण को देखता है।

2– वेगागमन बेला में रोगी को शरीर काँपता है और वह दांतों को किटकिटाता है।

3– उसके मुख से फेन निकलता है और श्वास की गति तीव्र हो जाती है।[5]

पित्तज अपस्मार के लक्षणः–

1– वेग के आने के पूर्व सभी दृश्य पदार्थ पीले या लाल रंग के दिखते हैं।

3- चरक संहिता भाग द्वितीय, 10/6, पृष्ठ-408

4- इह खलु चत्वारोऽपस्मारा भवन्ति वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः।।
चरक संहिता भाग प्रथम 8/3 पृष्ठ 547

5- कम्पते प्रदशंद् दन्तान् फेनोद्गमी श्वसित्यपि। परूषारूणकृष्णानि पश्यंद्रूपाणि चानिलात्।।
चरक संहिता भाग द्वितीय 10/9 पृष्ठ 408

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– शरीर के अंग, मुख, नेत्र और मुख से निकलने वाला फेन पीला होता है।

3– वेग समाप्त होने पर प्यास और गर्मी अधिक महसूस होती है।

4– वह संसार की प्रत्येक वस्तु को जलती हुई देखता है।[6]

कफज अपस्मार के लक्षणः–

1– रोगी सभी वस्तुओं को श्वेतवर्ण का देखता है।

2– उसके मुख से निकलनेवाला फेन, उसके नेत्र, मुख और अंग श्वेत होते हैं।

3– शरीर शीत, रोमांचित और भारी रहता है।

4– अपस्मार का दौरा देर तक बना रहता है।[7]

सन्निपातज अपस्मार के लक्षणः–

1– यह तीनों दोषों के प्रकोपज लक्षणों से युक्त होता है।[8]

जातक ग्रन्थों में उल्लिखित अपस्मार (मिर्गी):–

जातक ग्रन्थों में अपस्मार रोग का विवरण तथा उनके लक्षण भी लगभग उसी प्रकार हैं जैसा आयुर्वेद ग्रन्थों में उल्लिखित है।

6- पीतफेनाङ्ग.वक्त्राक्षः पीतासृग्रूपदर्शनः। सतृष्णोष्णानलव्याप्तलोकदर्शी च पैत्तिकः।।
चरक संहिता भाग द्वितीय 10/10 पृष्ठ 408

7- शुक्लफेनाङ्ग.वक्त्राक्षः शीतो हृष्टाङ्ग.जोगुरूः। पश्यञ्छुक्लानि रूपाणि श्लैष्मिको मुच्यते चिरात्।।
तत्रैव 10/11 पृष्ठ 408

8- सवैरितैः समस्तैस्तु लिङ्गैर्.ज्ञेयस्त्रिदोषजः। अपस्मारः स चासाध्यो यः क्षीणस्यानवश्च यः।।
तत्रैव 10/12 पृष्ठ 409

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जातक–ग्रन्थ 'प्रश्नमार्ग' के अनुसार अपस्मार रोग की बारह दूतियाँ (पूर्व रूप) माने गये हैं जो निम्नलिखित हैं[9]:–

1– श्वसना, 2– मलिना, 3– निद्रा, 4– जृंभिका, 5– अनशना, 6– त्रासिनी, 7– मोहिनी, 8– रोदनी, 9– क्रोधनी, 10– तापनी, 11-- शोषणी और 12– ध्वंसिनी ये प्रसिद्ध बारह दूतियां अपस्मार रोग प्रिया हैं। जैसे प्रिया अपने प्रियतम का साथ नहीं छोड़ती और इन दोनों में अभिन्न सम्बन्ध होता है इसी प्रकार अपस्मार रोग के साथ श्वसना आदि 12 चेष्टाएं दूती के रूप में सदैव रहती हैं।

अपस्मार (मिर्गी) के रोगी को ये सभी दूतियां या इनमें से कुछ प्रमुख दूतियां अपना आश्रय बना लेती हैं और अपने नाम के जैसी चेष्टा रोगी के शरीर में उत्पन्न करती हैं। इनका लक्षणार्थ इस प्रकार है– श्वसना–लम्बी–लम्बी सांस चलना। मलिना–शरीर व मुख की कान्ति की मलिनता। निद्रा–नींद आना। जृंभिका– खूब जंभाई आना। अनशना– भोजन त्याग देना। त्रासिनी–भयभीत होना। मोहिनी–बहोशी होना। रोदिनी–रोना। क्रोधिनी–गुस्सा करना। तापिनी–शरीर गर्म होना। शोषिणी–मुखादि का सूख जाना। ध्वंसिनी–अंगों का मरोड़ना और मृत्यु।[10]

अपस्मार रोग के लक्षणः–

1– इस रोग में व्यक्ति का शरीर शिथिल होकर अकस्मात् गिर जाता है और वह मूर्च्छित हो जाता है।

9- श्वसना मलिना निद्रा जृंभिकानशना तथा।
त्रासिनी मोहिनी चाथरोदनी क्रोधनी तथा।
तापनी शोषणी चैव ध्वंसिनी चेति कीर्तिताः।
दूत्यो द्वादश विख्याता अपस्मारस्य सुप्रियाः।। प्रश्नमार्ग द्वादशाध्यायः श्लोक 53, 54 पृष्ठ 184

10- एताः समस्ता व्यस्ता वा संश्रयन्ति नरं किल।
स्वाख्यानार्थवर्ती चेष्टां तत्राभिव्यंजयन्ति च। प्रश्नमार्ग द्वादशाध्यायः श्लोक 55 पृष्ठ 184

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

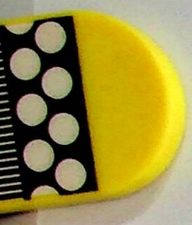

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2- मुंह से फेन और कठोर आवाज निकलती है।

3- अंग कठोर और टेढ़े–मेढ़े हो जाते हैं।

4- आंख की पुतलियां चारों ओर घूमती हैं।

5- दांत भिंच जाते हैं।

6- रंग पीला हो जाता है।

7- प्यास से व्याकुलता और मुखाकृति विकृत हो जाती है। इस प्रकार के स्वरूप वाला (लक्षण वाला) अपस्मार होता है।[11]

अपस्मार रोग के विभिन्न योगः–

जातक तत्व में उल्लिखित अपस्मार रोग के योगों का विवरण पूर्व अध्याय–द्वितीय में दिया जा चुका है। कुछ अन्य ग्रन्थों में उल्लिखित अपस्मार रोग के योग निम्नलिखित हैंः–

'प्रश्नमार्ग' में उल्लिखित अपस्मार रोग के योग निम्नलिखित हैं[12]:–

1- अष्टम स्थान में शनि, त्रिकोण में राहु, और शुभ ग्रहों के बलवान होने पर यदि सूर्य या मङ्गल अनिष्ट स्थानों में हो तो अपस्मार होता है।

11- विस्रस्ताङ्गः पतति सहसा भूतले नष्टसंज्ञः
फेनोद्गारी रसति परूषं सन्नकायश्चिराय।
व्यावृत्ताक्षं दशति दशनं पीतवर्णः प्रमादी
तोयासक्तो विकृतवदनः स्यादपस्मारः एषः। प्रश्नमार्ग द्वादशाध्यायः श्लोक 52, पृष्ठ 183

12- मन्दे रन्ध्रगतेऽहौ च त्रिकोणे बलिनो शुभाः।
योगोऽपरस्मारदो भानुर्भौमश्च गददौ यदि।। प्रश्नमार्ग द्वादशाध्यायः श्लोक 50, पृष्ठ 183

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2- शनि के साथ चन्द्रमा हो तथा इन दोनों पर मङ्गल की दृष्टि हो।

जातक ग्रन्थ बृहज्जातकम (आचार्य वराह मिहिर विरचित) में अपस्मार (मिर्गी) के योग निम्नलिखित हैं[13]:-

यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मङ्गल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो मनुष्य कठोरभाषी, मिर्गी का रोगी तथा सदैव शारीरिक शक्ति घटाते रहने वाले किसी बड़े रोग से पीड़ित होता है।

अपने शोध प्रक्रिया के क्रम में मैनें अनेक अपस्मार रोगियों से सम्पर्क किया है तथा उनके जन्म कुण्डलियों का विश्लेषण किया है जिनका विवरण अग्रलिखित है:-

---

परूषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे।
रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैनभिः स्थलमाश्रितै
र्भृतकमनुजः पूर्वोद्दिदृष्टैर्वराधममध्यमाः।। बृहज्जातकम (आचार्य बाराहमिहिर विरचित)
अध्याय 21 श्लोक 17, पृष्ठ 340

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

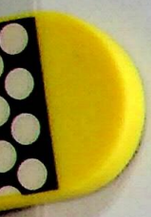

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

10-1

लग्न कुण्डली

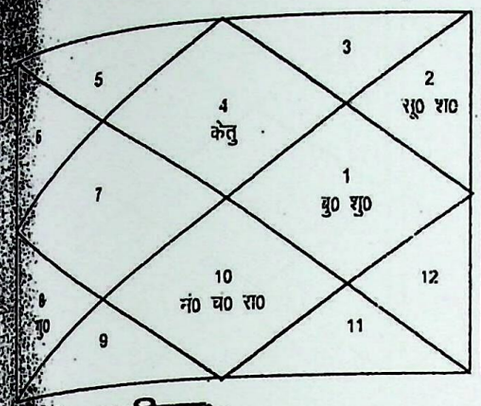

नवमांश

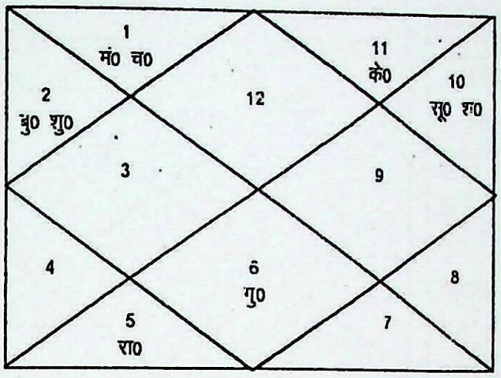

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

राहु – मङ्गल	
30-09-2004 से 18-10-2005 तक	
मङ्गल	22–10–2004
राहु	18–12–2004
गुरू	09–02–2005
शनि	09–04–2005
बुध	02–06–2005
केतु	24–06–2005
शुक्र	27–08–2005
सूर्य	16–09–2005
चंद्र	18–10–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – अश्विनी
जन्मतिथि – 16 मई 1971
समय – 11.20 AM
स्थान – पटना।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक अश्विनी अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 05 जनवरी, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा राहु और मंगल के साथ सप्तम भाव में स्थित है तथा मंगल पांचवी दृष्टि (दो चरण दृष्टि) से शनि को भी देख रहा है। यह योग जातक को अपस्मार रोग से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चंद्रमा परिवेशयुक्त हो तो मनुष्य अपस्मार (मिर्गी) रोग से पीड़ित होता है।"[1]

(इस कुण्डली में मंगल चन्द्रमा के साथ युक्त है तथा शनि को दो चरण दृष्टि से देखकर उपर्युक्त योग के समान ही फल दे रहा है)

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत गुरू की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 19 दिसम्बर 2004 से 9 फरवरी 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार बृहस्पति के प्रत्यन्तर में बुद्धि का नाश दुःख, सन्ताप कलह तथा सारी योजनाओं की विफलता होती है।[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

[1] परूषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे।
रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभः स्थलमाश्रितै–
र्भृतकमनुजः पूर्वोदिदष्टैर्वराधममध्यमाः।।17।। (वृहज्जातकम (आचार्य वराहमिहिर विरचित), अध्याय–21, श्लोक–17, पृष्ठ–340)

[2] मतिनाशस्तथा दुःखं सन्तापः कलहो भवेत्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

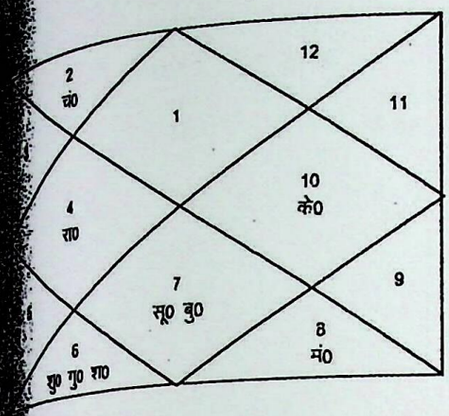

नवमांश

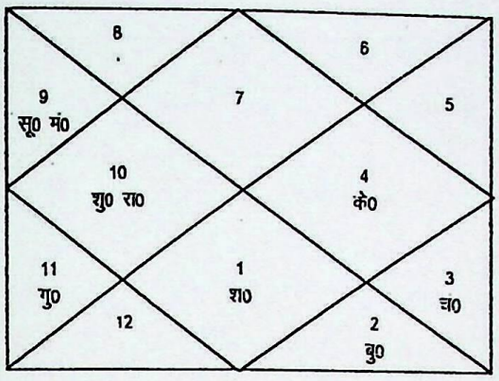

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

राहु - शुक्र	
08-02-2004 से 08-02-2007 तक	
शुक्र	08–08–2004
सूर्य	02–10–2004
चंद्र	02–01–2005
मङ्गल	05–03–2005
राहु	17–08–2005
गुरू	11–01–2006
शनि	02–07–2006
बुध	05–12–2006
केतु	08–02–2007

ी का परिचयः–

म	–	अमित कुमार
तिथि	–	26 अक्टूबर 1980
मय	–	6.00 PM
ान	–	कानपुर, यू0पी0

ी से सम्पर्कः–

जातक अमित अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में कित्सा हेतु 17 जनवरी, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण रण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। ग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

य-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा को मंगल अपनी सप्तम दृष्टि से देखकर जातक को अपस्मार रोगी ाता है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

ंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा न्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 03 जनवरी 2005 से 5 मार्च 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग ा प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "मंगल प्रत्यंतर में रक्त व पित्त का विकार, कलह, अपमान, तिरस्कार था अधिक क्लेश होता है।[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)
2. रक्तपित्तादि रोगश्च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेशो भवेदत्र कुजप्रत्यन्तरे द्विज।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–77, पृष्ठ–645)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

0-3

लग्न कुण्डली

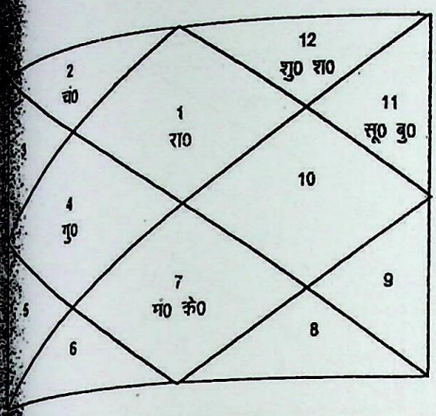

नवमांश

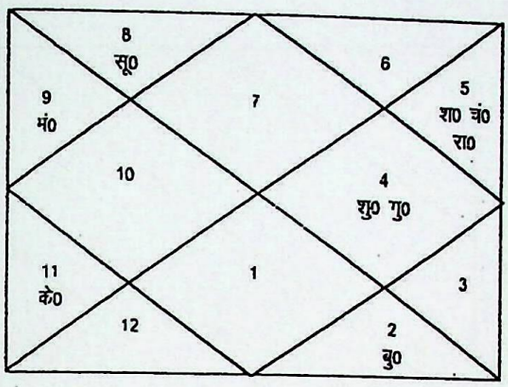

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

गुरू – मङ्गल	
29-04-2004 से 05-04-2005 तक	
मङ्गल	19–05–2004
राहु	09–07–2004
गुरू	24–08–2004
शनि	17–10–2004
बुध	05–12–2004
केतु	25–12–2004
शुक्र	21–02–2005
सूर्य	07–03–2005
चंद्र	05–04–2005

ी का परिचयः–

म	–	संजय
तिथि	–	19 फरवरी 1967
य	–	10.30 AM
न	–	लखनऊ।

ी से सम्पर्कः–

जातक अमित अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में कित्सा हेतु 02 सितम्बर, 2004 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा या। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा पर मंगल की आठवीं (पूर्ण) दृष्टि है। चन्द्रमां शनि की तृतीय दृष्टि से पीड़ित है। इस योग के कारण जातक अपस्मार रोग से पीड़ित है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो तो जातक या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक पस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

शोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा दन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 25 अगस्त 2004 से 17 अक्टूबर 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप ग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "शनि प्रत्यंतर में अपने स्वामी की मृत्यु, पीड़ा, धनहानि, भय का अवसर, बेहाली, विकलता, कलह और मन मे अज्ञात डर होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)
2. स्वामिनाशस्तथा पीडा धनहानिर्महाभयम्।
वैकल्यं कलहश्चासां शनेः प्रत्यन्तरे भवेत।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक--23, पृष्ठ–638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

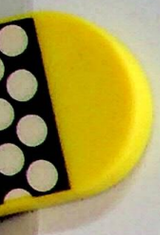

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

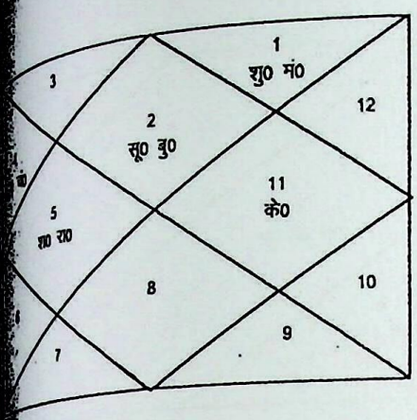

नवमांश

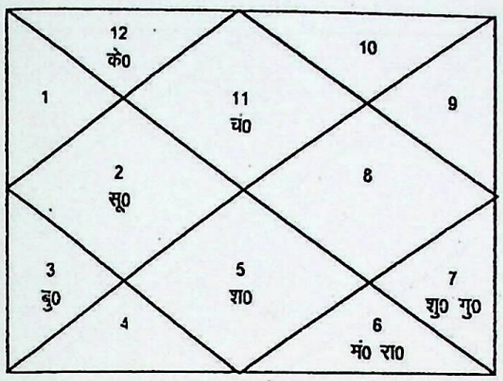

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

शुक्र - गुरू	
01-04-2003 से 01-12-2005 तक	
गुरू	09-08-2003
शनि	11-01-2004
बुध	27-05-2004
केतु	23-07-2004
शुक्र	03-01-2005
सूर्य	21-02-2005
चंद्र	11-05-2005
मङ्गल	07-07-2005
राहु	01-12-2005

ी का परिचयः-

	–	कमलेश
तिथि	–	01 जून 1979
	–	4.30 AM
	–	जौनपुर।

ी से सम्पर्कः-

जातक कमलेश अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 मई, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

ग्न-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा मंगल की चतुर्थ (पूर्ण) दृष्टि से पीड़ित होकर जातक को अपस्मार का रोगी बनाता है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

ंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में गुरू की अन्तर्दशा तथा अन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 12 मई 2005 से 07 जुलाई 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "मंगल के प्रत्यंतर में शस्त्र भय, गुदा द्वार के रोग, अपच, भूख कम लगना, शत्रुओं द्वारा पीड़ा आदि होती है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

[1] "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ-पूर्वोद्धृत)

[2] शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वहिनमान्द्यमजीर्णता।
पीडाशत्रुकृता भूरिर्भौमप्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-45, पृष्ठ-641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

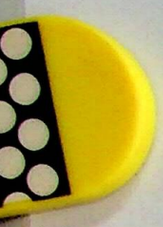

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

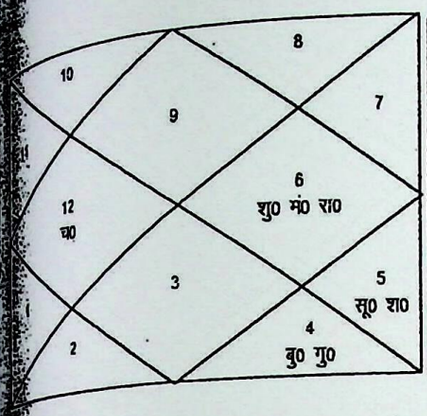

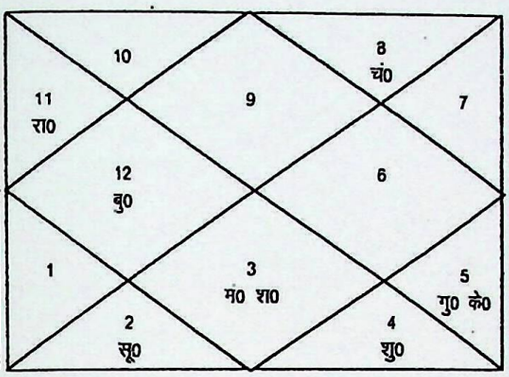

शुक्र - शुक्र	
15-09-2004 से 15-01-2008 तक	
शुक्र	05–04–2005
सूर्य	05–06–2005
चंद्र	15–09–2005
मङ्गल	25–11–2005
राहु	25–05–2006
गुरू	05–11–2006
शनि	15–05–2007
बुध	05–11–2007
केतु	15–01–2008

रोगी का परिचयः–

नाम – सुशीला

जन्मतिथि – 21 अगस्त 1978

समय – 4.00 PM

स्थान – धर्मशाला, उड़ीसा।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक सुशीला अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 28 अप्रैल, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा मंगल की सप्तम (पूर्ण) दृष्टि से पीड़ित होकर जातक को अपस्मार का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 06 अप्रैल 2005 से 05 जून 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "सूर्य प्रत्यन्तर में वातज्वर, सिर में पीड़ा, राजा व शत्रु से पीड़ा तथा पीड़ा लाभ होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

[1] "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)

[2] वातज्वरः शिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि रवेः प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय--63 श्लोक--75, पृष्ठ–644)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

नं0-6

लग्न कुण्डली

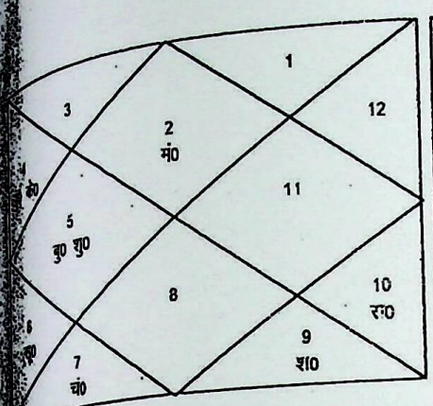

नवमांश

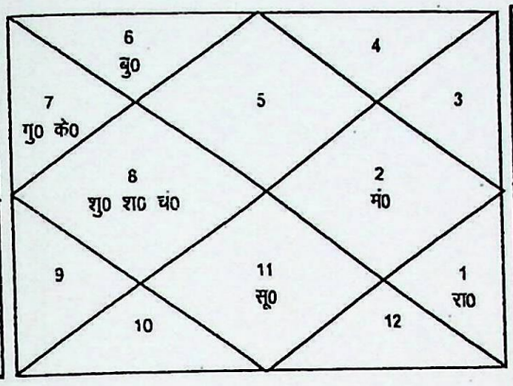

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

राहु - सूर्य	
10-10-2005 से 04-09-2006 तक	
सूर्य	27–10–2005
चंद्र	24–11–2005
मङ्गल	12–12–2005
राहु	01–02–2006
गुरू	14–03–2006
शनि	06–05–2006
बुध	21–06–2006
केतु	10–07–2006
शुक्र	04–09–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – अवधेश कुमार
जन्मतिथि – 21 सितम्बर 1990
समय – 10.30 PM
स्थान – कानपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक अवधेश कुमार अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 15 अक्टूबर, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में शनि त्रिकोण में राहु और लग्न में मंगल है तथा नवमांश में चन्द्रमा शनि के साथ है और मंगल की सप्तम दृष्टि से पीड़ित है, जिससे जातक अपस्मार रोगी हो गया है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

यदि "अष्टम स्थान में शनि, त्रिकोण में राहु हो और शुभ ग्रहों के बलवान् होने पर यदि सूर्य या मंगल दुष्ट स्थानों में हो तो अपस्मार होता है।"[1]

तथा

"यदि चन्द्रमा शनि के साथ हो या मंगल से दृष्ट हो तो जातक अपस्मार रोगी होगा। यह योग उपरोक्त जन्म कुण्डली के नवमांश में है।"[2]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा तथा अन्तर्दशान्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 11 अक्टूबर 2005 से 27 अक्टूबर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक उद्वेगी, मानसी पीड़ा से युक्त, मस्तक में दर्द से पीड़ित और ब्राम्हणों से विवाद करने वाला होता है।"[3]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

मन्दे रन्ध्रगतेऽहौ च त्रिकोणे बलिनो शुभाः।
योगोऽपस्मारदो भानुभौमश्च गददो यदि।। (प्रश्नमार्ग, अध्याय–12, श्लोक-50, पृष्ठ–183)

"वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)

उद्वेगोऽश[illegible] (होरारत्नम् अध्याय- 9 अथ रविदशाफलम्, श्लोक–1, पृष्ठ–406)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

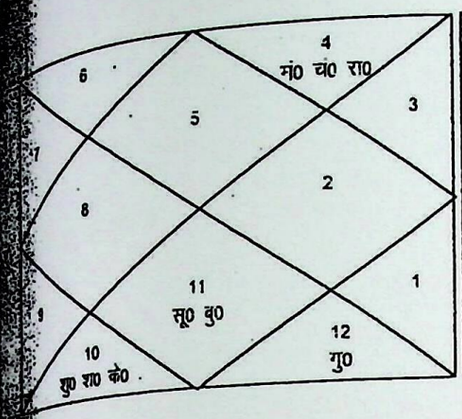

नवमांश

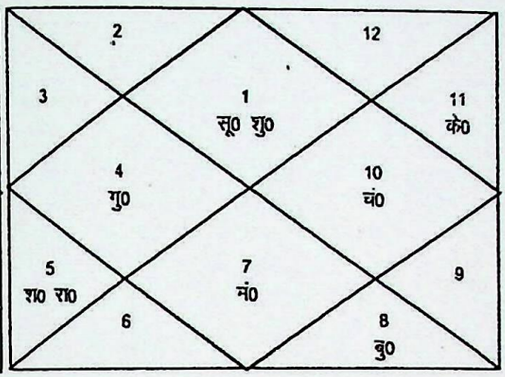

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

सूर्य - शनि	
11-06-2005 से 23-05-2006 तक	
शनि	05–08–2005
बुध	24–09–2005
केतु	14–10–2005
शुक्र	11–12–2005
सूर्य	28–12–2005
चंद्र	26–01–2006
मङ्गल	16–02–2006
राहु	08–04–2006
गुरू	23–05–2006

ी का परिचयः–

म	–	रोमा शर्मा
न्मतिथि	–	07 मार्च 1963
मय	–	4.30 PM
ान	–	लखनऊ।

ी से सम्पर्कः–

जातक रोमा शर्मा अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ चिकित्सा हेतु 08 अगस्त, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

ग्न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि छठे भाव में स्थित है और राहु युक्त चन्द्रमा तथा मंगल की दृष्टि से ड़ित होकर जातक को अपस्मार रोगी बना रहा है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम्" में उल्लिखित है, जो निम्नलिखित हैः–

यदि "षष्ठ या अष्टम स्थान में शनि, मंगल से युक्त हो तो अपस्मार रोग होता है।"[1]

ोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा दन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 06 अगस्त 2005 से 24 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

होरारत्नम् के अनुसार "शनि की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, गड़ा, भय, खाने–पीने की वस्तुओं का अभाव, धन की हानि और शत्रुओं से भय होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- "षष्ठाष्टमे मन्दे कुजयुतेऽपस्मारी" (जातकतत्वम् व्याख्याकार--डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र, षष्ठ विवेक–76 पृष्ठ–176)

2- बुद्धिनाशं कलिं भीतिमन्नापानादिहानिकृत्।
धनहानिभयं शत्रोः शनेः शन्यन्तरे बुधः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शनिविदिशाफलम्, श्लोक–2, पृष्ठ–443)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

नं0-8

लग्न कुण्डली

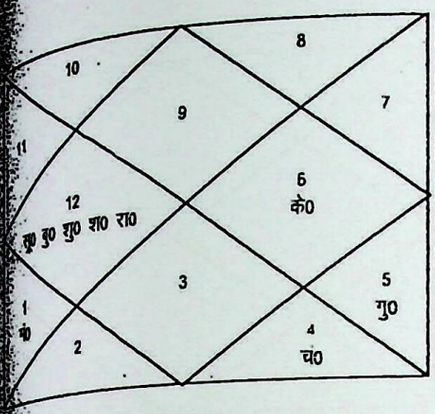

नवमांश

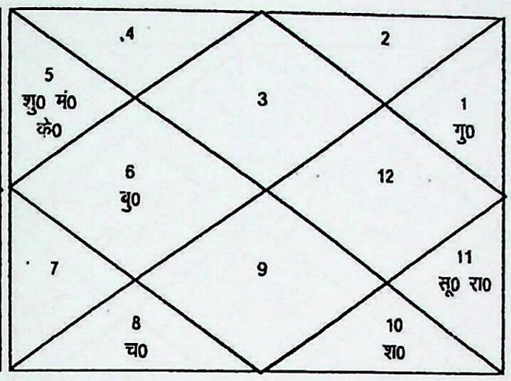

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

शुक्र – राहु	
18–11–2003 से 18–11–2006 तक	
राहु	30--04--2004
गुरू	24--09--2004
शनि	15--03--2005
बुध	18--08--2005
केतु	21--10--2005
शुक्र	21--04--2006
सूर्य	15--06--2005
चंद्र	15--09--2006
मङ्गल	18--11--2006

रोगी का परिचयः–

नाम – रमेश सिंह
जन्मतिथि – 08 अप्रैल 1968
समय – 12.00 बजे रात्रि
स्थान – रायबरेली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक रमेश सिंह अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ चिकित्सा हेतु 01 सितम्बर, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में स्थित चन्द्रमा मंगल की चतुर्थ दृष्टि से पीड़ित है, जिससे जातक अपस्मार रोग से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो मनुष्य कठोरभाषी, मिर्गी, अपस्मार का रोगी हाता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 19 अगस्त 2005 से 21 अक्टूबर 2005 तक चल रहीं थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, भयभीत, विघ्नों से युक्त, धन का क्षय, बड़ा भय, कलह और उद्वेग होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)

2- बुद्धिनाशो भयं विघ्नं धन हानिर्महाभयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगौ राहौ राह्वन्तरा शिखी।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ राहुविदेशाफलम्, श्लोक–5.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

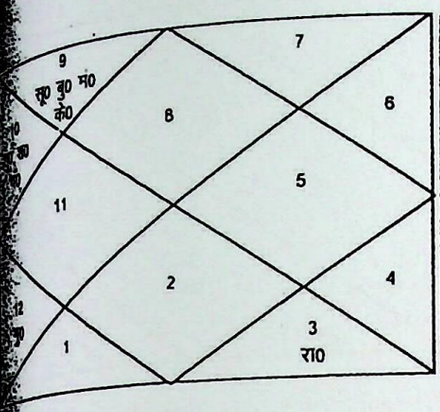

नवमांश

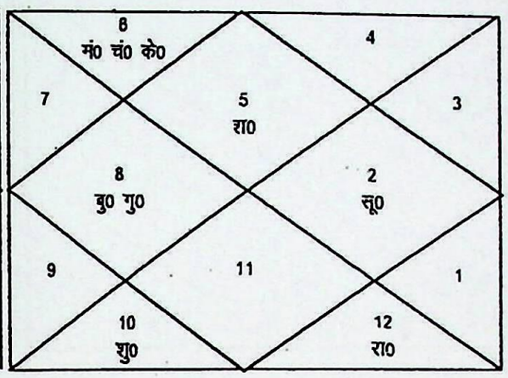

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शनि - बुध	
01-07-2004 से 10-03-2007 तक	
बुध	18-11-2004
केतु	15-01-2005
शुक्र	26-06-2005
सूर्य	15-08-2005
चंद्र	05-11-2005
मङ्गल	02-01-2006
राहु	27-05-2006
गुरू	07-10-2006
शनि	10-03-2007

...ी का परिचयः-

...म — आदित्य श्रीवास्तव
...मतिथि — 21 दिसम्बर 1963
...य — 4.30 AM
...न — लखनऊ।

...ी से सम्पर्कः-

जातक आदित्य श्रीवास्तव अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, ...नऊ में चिकित्सा हेतु 01 जुलाई, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया ...का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर ...लब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

...-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा शनि के साथ तीसरे भाव में है, जिससे जातक अपस्मार रोग से पीड़ित

...तक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ वृहज्जातक में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग ...पीड़ित होता है।"[1]

...शोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा ...दन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 27 जून 2005 से 15 अगस्त 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग ...का प्रकोप उग्र था।

होरारत्नम् के अनुसार "बुध की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक निस्तेज होने वाला, ...गी, शारीरिक कष्ट भोगने वाला और चित्त से अशानत होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. "वृहज्जातकम्" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ-पूर्वोद्धृत)
2. तेजो हानिर्भवेद्रोगो तनुपीडा तु मार्दवी।
जायते चित्तवैकल्यं सौम्ये सौम्यान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय--9. अथ बुधविदेशाफलम्, श्लोक--4. पृष्ठ--451)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

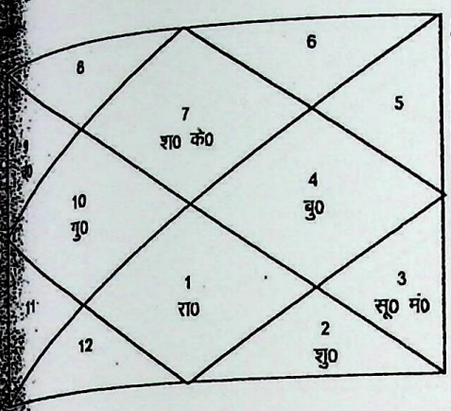

नवमांश

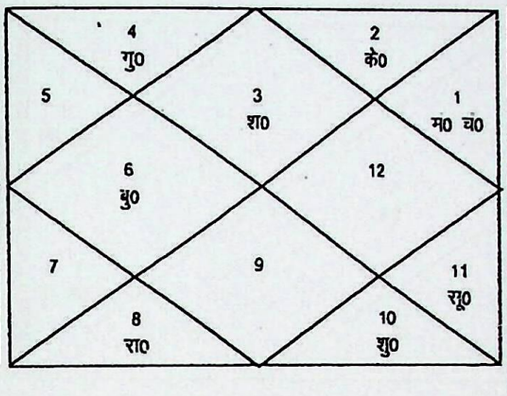

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शुक्र – शनि	
18-08-2004 से 18-10-2007 तक	
शनि	19–02–2005
बुध	30–07–2005
केतु	07–10–2005
शुक्र	17–04–2006
सूर्य	14–06–2006
चंद्र	19–09–2006
मङ्गल	25–11–2006
राहु	16–05–2007
गुरू	18–10–2007

...ी का परिचयः–

...म	–	सरोजिनी
...न्मतिथि	–	01 जुलाई 1985
...समय	–	3.30 PM
...स्थान	–	लखनऊ।

...ी से सम्पर्कः–

जातक सरोजिनी अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग चिकित्सा हेतु 02 अगस्त, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

...ग्न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा तीसरे भाव में मंगल की सप्तम दृष्टि से पीड़ित होकर जातक को अपस्मार रोगी बनाता है।

...तक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग भी वृहज्जातक में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 31 जुलाई 2005 से 07 अक्टूबर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

होरारत्नम् के अनुसार "शनि की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक बान्धव व शत्रु के घर में निस्तेज, अधिक भूख वाला और मानसिक चिन्ता वाला तथा भयभीत होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1-

2- "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)

बन्धुशत्रुगृहे जातो वर्णहानिर्बहुक्षुधा।
चित्ते चिन्ताभय त्रासःशनेः सीरान्तरे शिखी।।(होरारत्नम् अध्याय 9. अथ शनिविदिशाफलम्, श्लोक–3, पृष्ठ–443)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

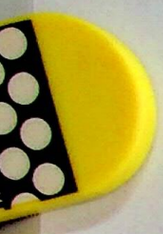

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

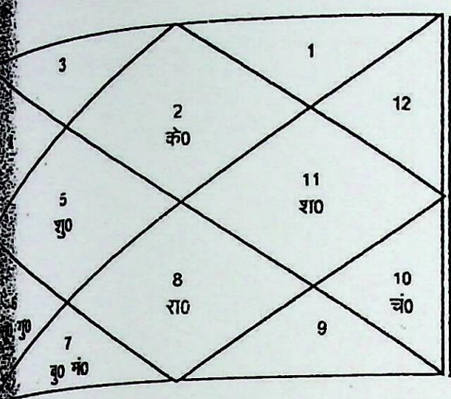

नवमांश

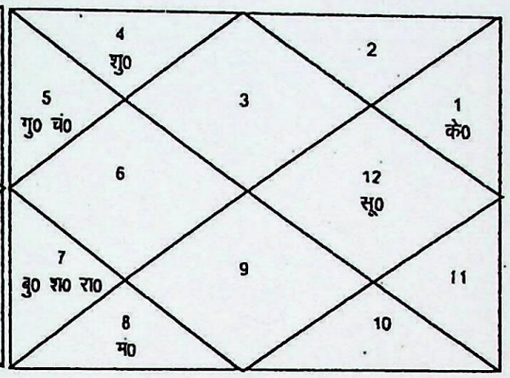

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

राहु - शनि	
26-02-2005 से 02-01-2008 तक	
शनि	08-08-2005
बुध	03-01-2006
केतु	03-03-2006
शुक्र	24-08-2006
सूर्य	16-10-2006
चंद्र	11-01-2007
मङ्गल	11-03-2007
राहु	15-08-2007
गुरू	02-01-2008

...ी का परिचयः-

...म	—	कविता
...मतिथि	—	26 सितम्बर 1993
...य	—	9.45 PM
...न	—	लखनऊ।

...ी से सम्पर्कः-

जातक कविता अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में ...कित्सा हेतु 02 मार्च, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण ...त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग ...सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

...-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में मंगल चन्द्रमा को चतुर्थ दृष्टि से देखकर जातक को अपस्मार रोगी बनाता है।

...तक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग भी "वृहज्जातकम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग ...पीड़ित होता है।"[1]

...शोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा ...दन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 26 फरवरी 2005 से 08 अगस्त 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग ...का प्रकोप उग्र था।

"वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "शनि की अन्तर्दशा में शनि की ही प्रत्यन्तर दशा की अवधि में निम्न ...श्रेणी के लोगों से पीड़ा तथा दुःख की अनेकता होती है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. "वृहज्जातकम्" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ-पूर्वोद्धृत)
देहपीडा कलभीतिर्भयमन्त्यजलोकतः।
दुःखं शन्यन्तरे नाना शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-47, पृष्ठ-641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

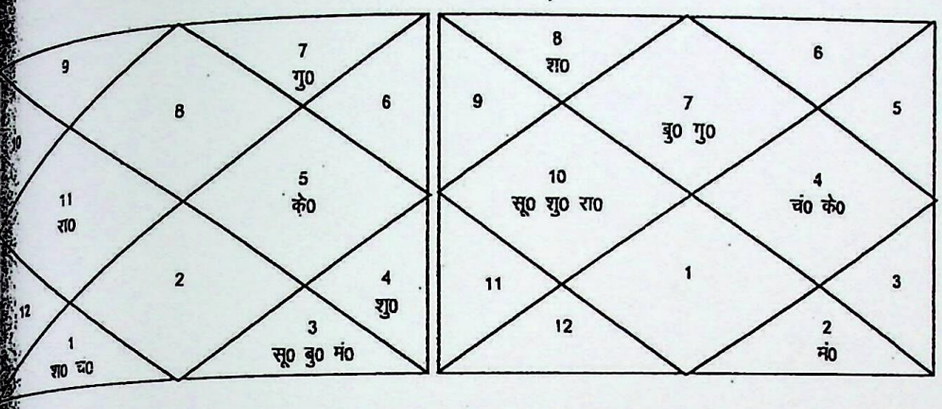

चंद्र - शुक्र	
12-04-2005 से 12-12-2006 तक	
शुक्र	22–07–2005
सूर्य	22–08–2005
चंद्र	12–10–2005
मङ्गल	17–11–2005
राहु	17–02–2006
गुरू	07–05–2006
शनि	12–08–2006
बुध	07–11–2006
केतु	12–12–2006

ली का परिचयः–

ाम	–	दिनेश
मतिथि	–	28 जून 1970
मय	–	4.00 PM
ान	–	गुवाहाटी।

ी से सम्पर्कः–

जातक दिनेश अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में कित्सा हेतु 01 अगस्त, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण वरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा या। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा शनि के साथ षष्ठ भाव में स्थित होकर जातक को अपस्मार रोगी ाता है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग भी "वृहज्जातकम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग पीड़ित होता है।"[1]

शोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चंद्र की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा दन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 23 जुलाई 2005 से 22 अगस्त 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

"वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा की अवधि में वात ज्वर, सिर में पीड़ा, राजा तथा शत्रुओं से पीड़ा आदि होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– "वृहज्जातकम्" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ--पूर्वोद्धृत)

2– वातज्वरः शिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि रवेः प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–75, पृष्ठ–644)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

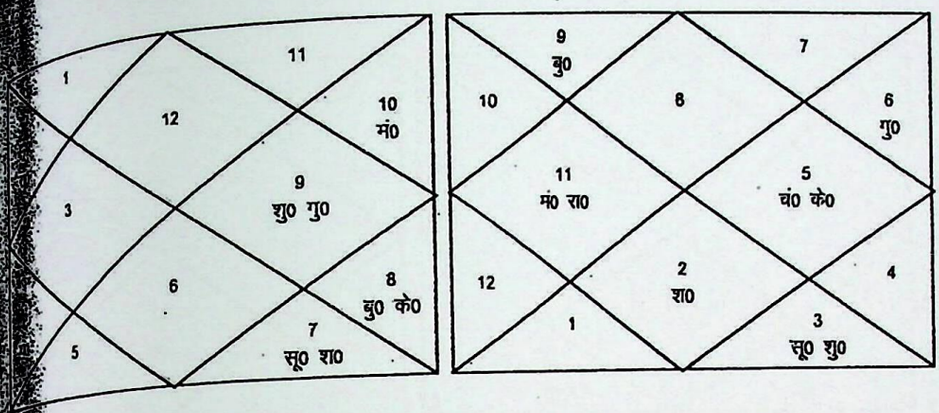

बुध - केतु	
26-05-2004 से 23-05-2005 तक	
केतु	17–06–2004
शुक्र	16–08–2004
सूर्य	04–09–2004
चंद्र	04–10–2004
मङ्गल	25–10–2004
राहु	18–12–2004
गुरू	06–02–2005
शनि	02–04–2005
बुध	23–05–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – कादिर
जन्मतिथि – 14 नवम्बर 1984
समय – 3.00 PM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कादिर अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 अप्रैल, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त जन्म कुण्डली में मंगल चन्द्रमा को सप्तम दृष्टि से और शनि दसवीं दृष्टि से पीड़ित कर जातक को अपस्मार रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग भी "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शुक्र की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 03 अप्रैल 2005 से 23 मई 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र हुआ।

"वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "केतु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर दशा की अवधि में बुद्धि का नाश, महान उद्वेग, विद्या हानि, भय तथा कार्य में असफलता होती है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)
2. बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्भहद्भवम्।
कार्यासिद्धिर्न जायेत ज्ञस्य प्रत्यन्तरे फलम्। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–73, पृष्ठ–644)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

नं0-14

लग्न कुण्डली

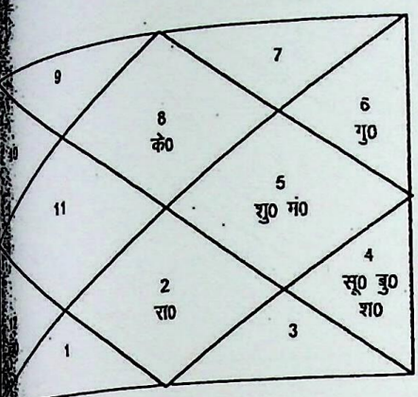

नवमांश

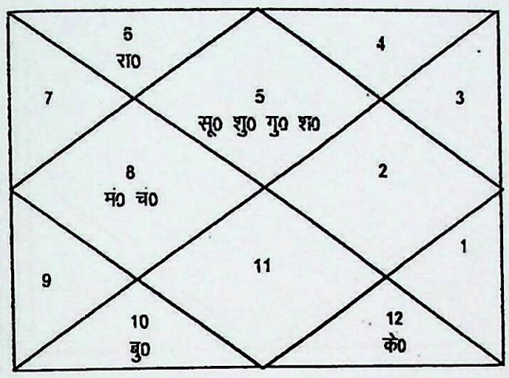

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

चंद्र - शुक्र	
17-11-2005 से 17-07-2007 तक	
शुक्र	27-02-2006
सूर्य	27-03-2006
चंद्र	17-05-2006
मङ्गल	22-06-2006
राहु	22-09-2006
गुरू	12-12-2006
शनि	17-03-2007
बुध	12-06-2007
केतु	17-07-2007

रोगी का परिचयः-

नाम	–	विजय कुमार
जन्मतिथि	–	20 जुलाई 1946
समय	–	3.00 PM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक विजय कुमार अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 मार्च, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा मंगल को अष्टम (पूर्ण) दृष्टि से पीड़ित करके जातक को अपस्मार रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग भी "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चंद्र की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 28 फरवरी 2006 से 27 मार्च 2006 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

"वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा की अवधि में वात ज्वर, सिर में पीड़ा, राजा तथा शत्रु से पीड़ा आदि होते हैं।[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ-पूर्वोद्धृत)

2- वातज्वरः शिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि रवेः प्रत्यनतरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक 75, पृष्ठ-644)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

15

लग्न कुण्डली

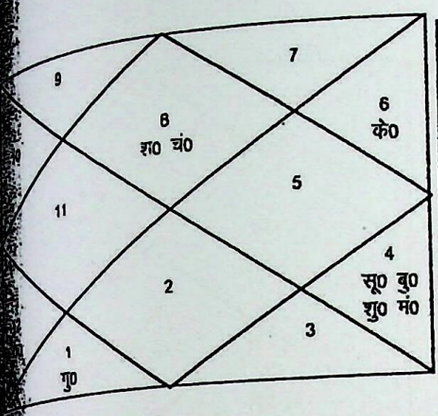

नवमांश

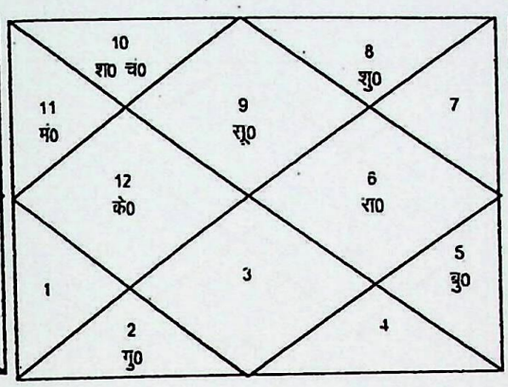

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

शुक्र - शुक्र	
09-09-2004 से 09-01-2008 तक	
शुक्र	29–03–2004
सूर्य	29–05–2005
चंद्र	09–09–2005
मङ्गल	19–11–2005
राहु	19–05–2006
गुरू	29–10–2006
शनि	09–05–2007
बुध	29–10–2007
केतु	09–01–2008

ी का परिचयः–

	–	अशोक कुमार
मतिथि	–	05 अगस्त 1987
ाय	–	3.00 PM
ान	–	दिल्ली।

ी से सम्पर्कः–

जातक अशोक कुमार अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग भाग में चिकित्सा हेतु 15 सितम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

ग्न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि चन्द्रमा के साथ लग्न में स्थित होकर जातक को अपस्मार रोगी बना रहा

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग भी "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

शोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा अन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 10 सितम्बर 2005 से 19 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

"वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के अनुसार "शुक्र की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यन्तर दशा की अवधि में रक्त तथा पित्त का विकार, कलह, अपमान, तिरस्कार तथा अधिक क्लेश होता है।[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

"वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)

रक्तपित्तादि रोगश्च कलहस्ताडनं भवेत्।

महान् क्लेशो भवेदत्र कुजप्रत्यन्तरे द्विज।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–77, पृष्ठ–645)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

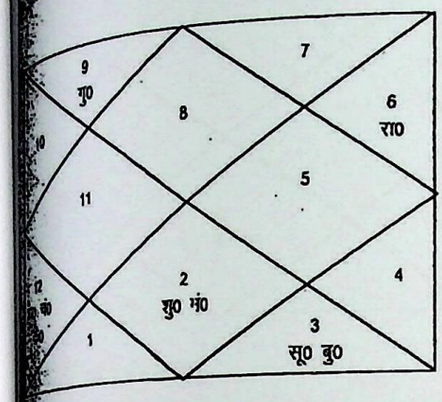

नवमांश

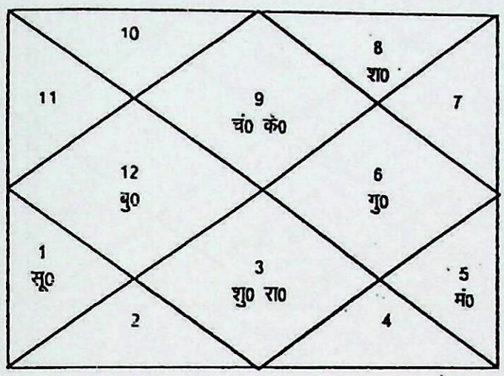

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

बुध - राहु	
06-05-2004 से 24-11-2006 तक	
राहु	23–09–2004
गुरू	26–01–2005
शनि	21–06–2005
बुध	01–11–2005
केतु	25–12–2005
शुक्र	28–05–2006
सूर्य	14–07–2006
चंद्र	30–09–2006
मङ्गल	24–11–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	जमुना रानी
जन्मतिथि	–	07 जुलाई 1996
समय	–	5.00 PM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक जुमना रानी अपस्मार रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 10 नवम्बर, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि व केतु चन्द्रमा के साथ पंचम भाव में स्थित होकर जातक को अपस्मार रोगी बनाते है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग भी "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 02 नवम्बर 2005 से 25 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, भयभीत, विघ्नों से युक्त, धन का क्षय, कलह तथा उद्वेग होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)
2. बुद्धिनाशो भय विघ्नं धन हानिर्महाभयम।
सर्वत्र कलहोद्वेगौ राहौ राहुन्तरे शिखी। (होरारत्नम अध्याय–9, अथ राहुविदिशाफलम्, श्लोक–5,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karondi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

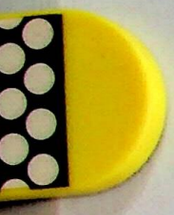

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

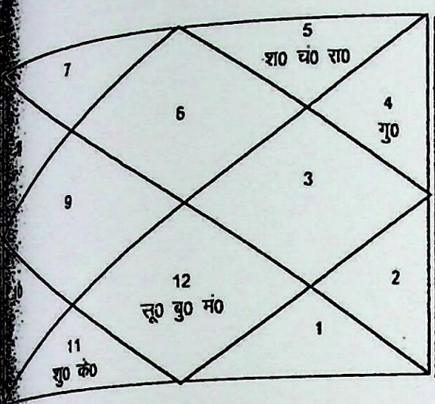

नवमांश

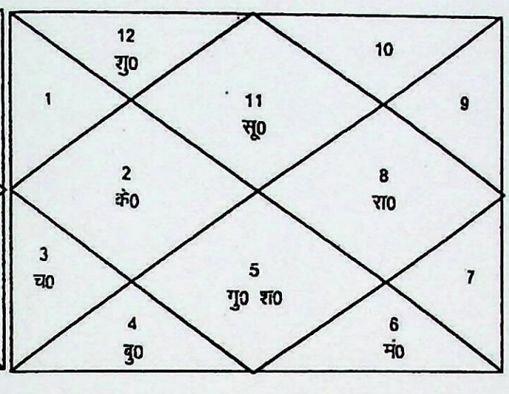

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

सूर्य - बुध	
22-06-2005 से 04-05-2006 तक	
बुध	11–08–2005
केतु	29–08–2005
शुक्र	20–10–2005
सूर्य	06–11–2005
चंद्र	01–12–2005
मङ्गल	19–12–2005
राहु	05–02–2006
गुरू	16–03–2006
शनि	04–05–2006

ली का परिचयः–

	–	लविश
तिथि	–	08 अप्रैल 1979
मय	–	5.00 PM
थान	–	लखनऊ।

ी से सम्पर्कः–

जातक लविश अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 25 अक्टूबर, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपुर्यक्त लग्न कुण्डली में शनि और राहु चन्द्रमा के साथ व्यय भाव में आकर जातक को अपस्मार रोगी बनाते है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग भी "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 21 अक्टूबर 2005 से 06 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "बुध की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक निस्तेज, रोगी, शारीरिक कष्ट भोगने वाला और चित्त से अशान्त होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)
2. तेजो हानिर्भवेद्रोगो तनुपीडा तु मार्दवी।
   जायते चित्तवैकल्यं सौम्ये सौम्यान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ बुधविदिशाफलम्, श्लोक–4,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

18

लग्न कुण्डली

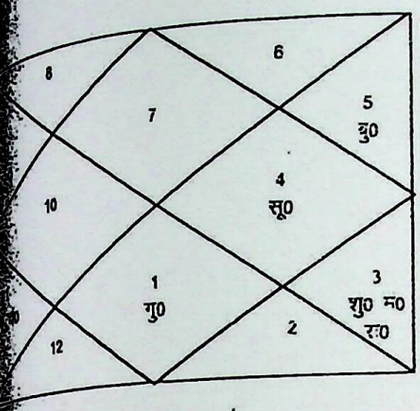

नवमांश

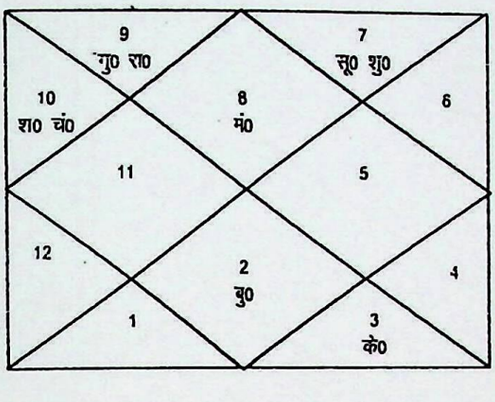

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

शनि – मङ्गल	
23–06–2005 से 02–08–2006 तक	
मङ्गल	16–07–2005
राहु	16–09–2005
गुरू	09–11–2005
शनि	12–01–2006
बुध	09–03–2006
केतु	02–04–2006
शुक्र	09–06–2006
सूर्य	29–06–2006
चंद्र	02–08–2006

ी का परिचयः–

	–	आरती
तिथि	–	27 जुलाई 1964
य	–	12.00 PM (दोपहर)
न	–	लखनऊ।

ी से सम्पर्कः–

जातक आरती अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 10 अक्टूबर, 2005 को आयी था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि चन्द्रमा के साथ पंचम भाव में स्थित होकर जातक को अपस्मार रोगी बनाता है।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग भी "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत गुरू की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 17 सितम्बर 2005 से 09 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "मंगल की अन्तर्दशा में गुरू की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, दुखी, संतापी, कलही और चिन्तित होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. "वृहज्जातकम" (मूल सस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)
2. मतिनाशं तथा दुःखं संतापकलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं भौमभौमान्तरो गुरूः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ भौमविदेशाफलम्, श्लोक–3, पृष्ठ–420)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

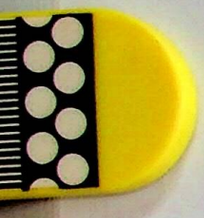

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

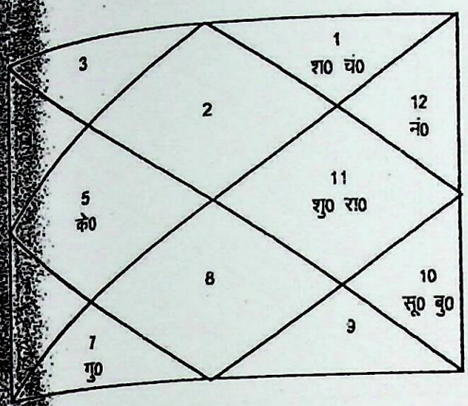

नवमांश

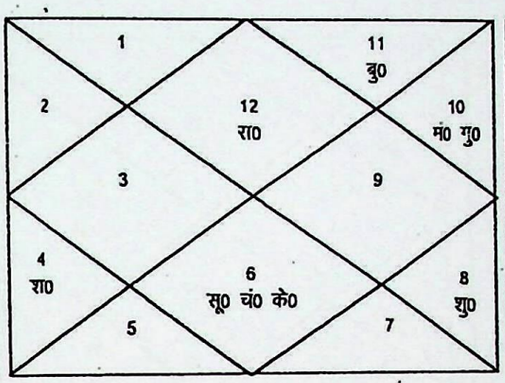

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

राहु - राहु	
25-08-2004 से 07-05-2007 तक	
राहु	21–01–2005
गुरू	01–06–2005
शनि	05–11–2006
बुध	22–03–2006
केतु	19–05–2006
शुक्र	01–11–2006
सूर्य	20–12–2006
चंद्र	11–03–2007
मङ्गल	07–05–2007

रोगी का परिचयः–

नाम – कमल

जन्मतिथि – 12 फरवरी 1970

समय – 12.00 PM

स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कमल अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 05 अगस्त, 2005 को आयी थी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि चन्द्रमा के साथ व्यय भाव में स्थित होकर जातक को अपस्मार रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग भी "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 02 जून 2005 से 05 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "राहु की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक घनघोर बन्धन में पड़ने वाला, सुख से रहित, अधिक भयभीत और प्रतिदिन वायु से पीड़ित रहती है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)

2– बन्धनं जायते घोरं सुखहानिर्महद्भयम्।
प्रत्यहं वातपीडा च राहो राह्वन्तरा शनिः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ राहुविदिशाफलम्, श्लोक–3, पृष्ठ–427)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपस्मार रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

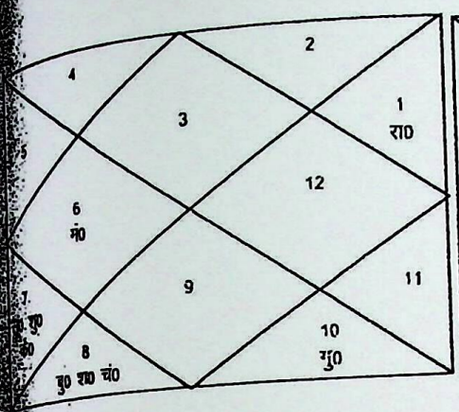

नवमांश

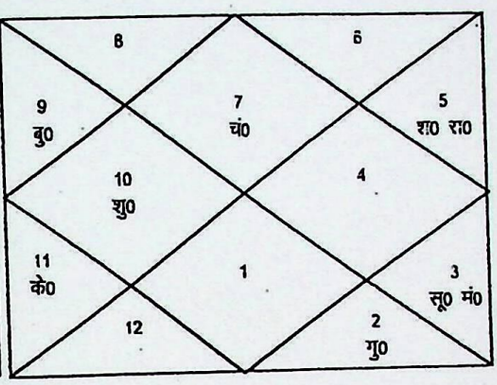

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

बुध - राहु	
03-10-2002 से 21-04-2005 तक	
राहु	21–02–2003
गुरू	23–06–2003
शनि	19–11–2003
बुध	29–03–2004
केतु	22–05–2004
शुक्र	25–10–2004
सूर्य	11–12–2004
चंद्र	28–02–2005
मङ्गल	21–04–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – उषा

जन्मतिथि – 13 नवम्बर 1985

समय – 07.30 PM

स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक उषा अपस्मार रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 05 अप्रैल, 2004 को आयी थी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर तथा इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में षष्ठ स्थान पर बुध, शनि और चन्द्रमा की युति है, जिससे जातक अपस्मार रोग से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग भी "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेषयुक्त हो तो जातक अपस्मार रोग से पीड़ित होता है।"[1]

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 30 मार्च 2004 से 22 मई 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार "राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यन्तर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, भयभीत, विघ्नों से युक्त, धन का क्षय, कलह तथा उद्वेग होता है।"[2]

दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- "वृहज्जातकम" (मूल संस्कृत श्लोक तथा सन्दर्भ–पूर्वोद्धृत)

2- बुद्धिनाशो भय विघ्न धन हानिर्महाभयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगौ राहौ राह्वन्तरा शिखी।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ राहुविदिशाफलम्, श्लोक–5.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

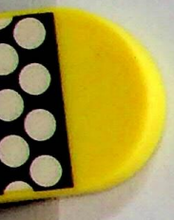

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-पंचम

अतत्वाभिनिवेश तथा मनोविक्षिप्ति

(Psychosis)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

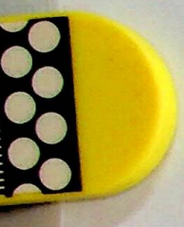

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय पंचम

अतत्वाभिनिवेश तथा मनोविक्षिप्ति (Psychosis)

अतत्वाभिनिवेश रोग का परिचयः–

तत्व का अर्थ तथ्य या वास्तविक होता है अर्थात् जिसका अस्तित्व होता है। तत्व के अभाव को अतत्व (अतथ्य : अवास्तविक– जिसका अस्तित्व न हो) कहते हैं। उसके प्रति अभिनिवेश अर्थात दृढ़ आग्रह को अतत्वाभिनिवेश कहते हैं। इस प्रकार "अतत्वाभिनिवेश वह मानसरोग है, जिसमें रोगी की बुद्धि विपरीत हो जाती है।" इसे ही महागद भी कहते हैं।[1]

चरक संहिता में इस रोग के दो प्रमुख प्रकारों का उल्लेख किया गया है– 1– तत्वोन्माद, 2– अपदार्थगद।

तत्वोन्माद–

कभी–कभी मनुष्य में अध्ययन या अनुसंधानवृत्ति के अति तीव्र हो जाने पर अथवा किसी कारण से मन के आहत होने पर धर्म की ओर अति तीव्र प्रवृत्ति हो जाती है। ऐसी स्थिति में जो सामान्य योग्यता से युक्त व्यक्तियों को या कभी–कभी महापुरूषों को भी यह रोग हो जाता है। इस स्थिति में वह पुरूष अपने को किसी कारण विशेष के बिना ही महान समझने लगता है। वह समझता है कि मेरे ऊपर ईश्वर की विशेष कृपा है। तदनुरूप वह चेष्टायें भी करने लगता है। इस भ्रमोत्पादक मोह को तत्वोन्माद कहा गया है।[2]

अपदार्थगद–

जब कोई व्यक्ति बिना किसी रोग के ही अपने को रोगी समझता है तो इस

1– विषमां कुरूते बुद्धिं नित्यानित्ये हिताहिते।
अनत्वाभिनिवेशं तं प्राहुराप्ता महागदम्।। चरक संहिता भाग–2, चिकित्सा स्थानम, अध्याय–10 श्लोक–60, पृष्ठ–417

2– चरक संहिता भाग–2, चिकित्सा स्थानम, अध्याय–10 पृष्ठ–418

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

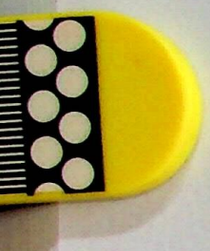

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकार के भ्रम को अपदार्थगद या गदोद्वेग कहा जाता है। पदार्थत्व का अभाव अर्थात जो जैसा है उसे वैसा न समझना अपदार्थगद रोग है।

इन सभी प्रकार के रोगों का मूल कारण है मानसिक स्थिति की अस्वाभाविकता या विषमता।[3]

मनोविक्षिप्ति रोग का परिचय (Psychosis):–

अतत्वाभिनिवेश रोग जब अति उग्र हो जाता है तो यह मनोविक्षिप्ति रोग में परिवर्तित हो जाता है। इस रोग में व्यक्ति अपने मानसिक संवेगों के उथल–पुथल या अस्त–व्यस्त होने से पूर्ण रूप से पागलों जैसा आचरण करने लगता है। उसे अपनी सुध नहीं रहती। वह अपने दैनन्दिन क्रियाकलापों के सम्पादन में और अपनी देख–रेख करने में तथा सामाजिक व्यवहार के निर्वाह करने में भी असमर्थ हो जाता है, तो इसे 'मनोविक्षिप्ति' कहते हैं।

निदान– चरक के अनुसार उपर्युक्त व्याधियों के तीन प्रमुख निदान हैं।[4]

1– मलिन आहार का निरन्तर सेवन

2– उपस्थित वेगों का अवरोध

3– शीत, उष्ण, स्निग्ध आदि परस्पर विरूद्ध हेतुओं का अति सेवन

सम्प्राप्तिः–

सम्प्राप्ति के सम्बन्ध में महर्षि चरक का कथन निम्नलिखित हैः–

"उक्त हेतुओं से प्रकुपित दोष, रज एवं तम से आवृत मन वाले व्यक्ति [illegible] य में पहुंच कर उसके मनोवह और बुद्धिवह सिराओं में स्थान बनाकर स्थित [illegible] ते हैं। रज और तम की विशेष वृद्धि होने पर तथा दोषों द्वारा बुद्धि और म[illegible]

3– चरक संहिता भाग–2, चिकित्सा स्थानम, अध्याय–10 पृष्ठ–418

4– मलिनाहारशीलस्य वेगान् प्राप्तान्निगृहणतः।
शीतोष्णस्निग्धरूक्षाद्यैर्हेतुभिश्चातिसेवितैः।। चरक संहिता भाग–2, चिकित्सा स्थानम, अध्याय–10. सूत्र–57. पृष्ठ–417

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आवृत्त होने से एवं हृदय के व्याकुल होने से न्यून चैतन्य होकर व्यक्ति मोहित हो जाता है।[5]

लक्षण–

अतत्वाभिनिवेश से पीड़ित व्यक्ति नित्य भावों अथवा अनित्य भावों की विवेचना नहीं कर पाता। यही इसका मुख्य लक्षण है। साथ ही हृदय में व्याकुलता, मूढ़ता, अल्पचेतना– ये भी लक्षण मिलती हैं।[6]

जातक ग्रन्थों में उल्लिखित "अतत्वाभिनिवेश तथा मनोविक्षिप्ति" रोग के लक्षण तथा उनके योग :–

जातक ग्रन्थों में इस रोग को "अतत्वाभिनिवेश" नहीं कहा गया है किन्तु इस रोग के योगों तथा लक्षणों का उल्लेख "हीन बुद्धि", "चित्त विकार" तथा विस्मयशील बुद्धि एवं उन्माद आदि के योगों तथा लक्षणों में समाहित हो जाते है।

उन्माद तथा हीन बुद्धि आदि के योगों का उल्लेख प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के अध्याय द्वितीय में किया गया है। जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम" में उल्लिखित चित्त विकार तथा विस्मयशील बुद्धि के योग निम्नलिखित हैं।

चित्त विकार के योगः–

1– यदि बुध, बृहस्पति तथा शुक्र अष्टम स्थान में स्थिर राशि में हों तो मनुष्य कठोर चित्त वाला होता है।[7]

5– हृदयं समुपाश्रित्य मनोबुद्धिवहाः सिराः।
दोषाः सन्दूष्य तिष्ठन्ति रोमोहवृतात्मनः।।
रजस्तमोभ्यां वृद्धाभ्यां बुद्धौ मनसि चावृते।
हृदये व्याकुले दौषैरथ मूढोऽल्पचेतनः।
चरक संहिता भाग–2, चिकित्सा स्थानम, अध्याय–10 पृष्ठ–417, सूत्र–58–59

6– अधयाय–10, सूत्र–58, 59 तथा 60, पृष्ठ–417

7– रन्ध्रे स्थिरे ज्ञेज्यशुक्राः कठिनचित्तः।। (जातक तत्वम्–प्रकीर्ण तत्वम्– प्रथम विवेक) सूत्र–321 पृष्ठ–82

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

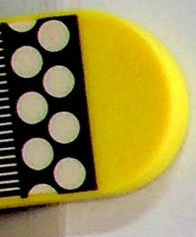

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2– चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह हों तथा चतुर्थेश क्रूर ग्रह से युक्त हों तो जातक विरूद्ध चित्त अर्थात उल्टी खोपड़ी का होता है।[8]

विस्मयशील बुद्धि के योगः–

1– यदि चन्द्रमा षष्ठ, अष्टम या द्वादश स्थान में स्थित हो तथा उसे शुक्र दिखता हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होता है।[9]

2– बुद्धिकारक अर्थात बुध या बुद्धि स्थान का कारक बृहस्पति पाप ग्रह से युक्त हो अथवा क्रूर षष्ट्यंश में हों तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होता है।[10]

3– पंचमेश यदि पाप ग्रह से युक्त हों तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होता है।[11]

आयुर्वेद में चिकित्सा के दृष्टिकोण से मानसिक रोगों का वर्गीकरण किया गया है किन्तु जातक ग्रन्थों में मानसिक रोगों का वर्गीकरण केवल लक्षणों के आधार पर किया गया है।

दोनों वर्गीकरणों में उन्माद तथा अपस्मार तो एक समान हैं किन्तु इनके आगे जो वर्गों के नाम हैं, वह दोनों में भिन्न–भिन्न हैं।

जातक ग्रन्थों में मानसिक रोगों के वर्गीकरण में उन्माद तथा अपस्मार के अतिरिक्त हीन बुद्धि, प्रमाद, कलहप्रिय होना, पिशाच पीड़ा, शाप एवं अभिचार जन्य

8– सुखे क्रूरे क्ररान्विते सुखेशे विरूद्धचित्तः।। (जातक तत्वम्–प्रकीर्ण तत्वम्– प्रथम विवेक) सूत्र–322 पृष्ठ–82

9– त्रिके चन्द्रे शुक्रदृष्टे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्–पंचम विवेक) सूत्र–17 पृष्ठ–137

10– धीकारके सपापे वा क्रूरषष्ट्यंशे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्–प्रकीर्ण तत्वम्– प्रथम विवेक) सूत्र–18 पृष्ठ–82

11– सपापे सुतपे विस्मयशीलः (जातक तत्वम्–प्रकीर्ण तत्वम्– प्रथम विवेक) सूत्र–19 पृष्ठ–82

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

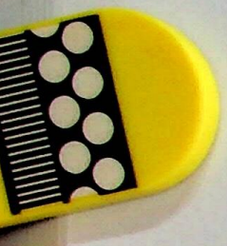

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रोग, क्रोधी होना, द्रोहकर्ता होना, कायर होना तथा दुर्व्यसन आदि के योगों का उल्लेख प्राप्त होता है, जिनका उल्लेख द्वितीय अध्याय में किया गया है।

जब हमने विभिन्न मानसिक रोगियों से सम्पर्क कर उनके रोगों का आयुर्वेद के अनुसार वर्गीकरण किया तो उन सभी रोगियों की जन्म कुण्डलियों में उपरोक्त योगों में से कोई न कोई येाग दृष्टिगोचर हुआ।

वस्तुतः ज्योतिषीय कारणों के अतिरिक्त जातक के रोग उसके सामाजिक, पारिवारिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से भी प्रभावित होते हैं।

अतएव रोगी की जन्म कुण्डली में यदि केवल "हीन बुद्धि" के ही योग हों तो भी उसके सामाजिक, पारिवारिक तथा आर्थिक आदि परिस्थितियों के प्रतिकूल होने पर यही योग पागलपन का कारण बन सकते हैं। इसके विपरीत यदि उपरोक्त परिस्थितियां अनुकूल हों अथवा पर्याप्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध होती रहे तो जातक रोग के उभरते ही उसे नियंत्रित कर लेता है। अग्र पृष्ठों पर "अतत्वाभिनिवेश तथा मनोविक्षिप्ति रोग" के रोगियों के जन्म कुण्डलियों की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

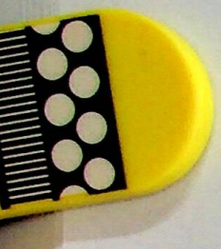

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

1

लग्न कुण्डली

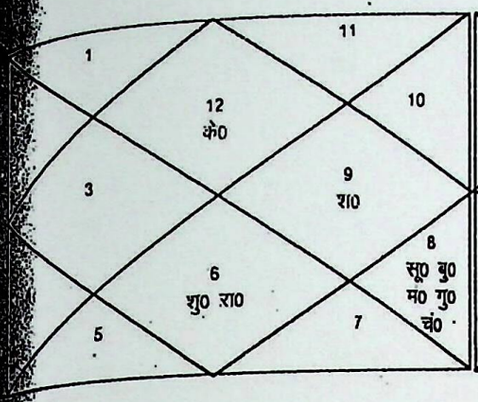

नवमांश

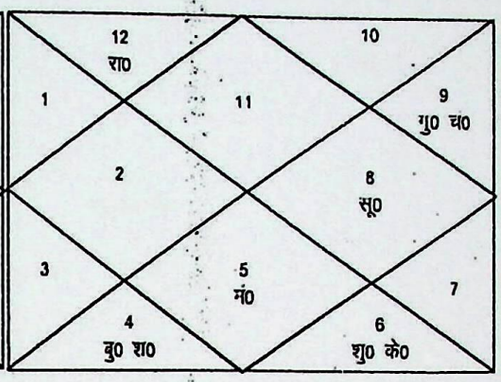

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

सूर्य - राहु	
01-09-2003 से 25-07-2004 तक	
राहु	20–10–2003
गुरू	03–12–2003
शनि	24–01–2004
बुध	10–03–2004
केतु	29–03–2004
शुक्र	23–05–2004
सूर्य	09–06–2004
चंद्र	06–07–2004
मङ्गल	05–07–2004

गी का परिचयः–

ाम	–	कैलाश चन्द्र
न्मतिथि	–	30 नवम्बर 1959
समय	–	08.00 PM
स्थान	–	उन्नाव (उ0प्र0)।

गी से सम्पर्कः–

जातक कैलाश चन्द्र अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, खनऊ में चिकित्सा हेतु 12 जून, 2004 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा ा का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर ुलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक उनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में बुद्धि का कारक बुध तथा बुद्धि स्थान का कारक गुरू नवम् भाव में सूर्य ादि ाप से युक्त होकर पापग्रस्त हो गये हैं, जो जातक को मानसिक रोगी बना रहे हैं।

ातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि बुद्धि का कारक अर्थात बुध तथा बुद्धि स्थान का कारक गुरू पाप ग्रह से युक्त हों तो जा ा विस्मयशील बुद्धि का मनोरोगी होता है"।[1]

इस ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को "विस्मयशील बुद्धि" कहा गया है। रोगी से साक्षात् करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का मनो ाय आयुर्वेद के अनुसार "अतत्वाभिनिवेश" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 10 जून 2004 से 6 जुलाई 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र हो ा।

"वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा उद्वेग, बेचैनी, कलह, चिन्ता, मानहानि, भय, पिता को कष्ट तथा शरीर कष्ट होता है।[2]

1– धीकारके सपापे वा क्रूरषष्ट्यंशे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–18, पेज–137)

2– उद्वेगकलहौ चिन्ता मानहानिर्महद्भयम्।
पितुर्विकलता देहे विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–36, पृष्ठ–640)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

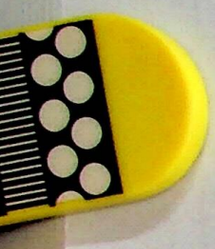

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

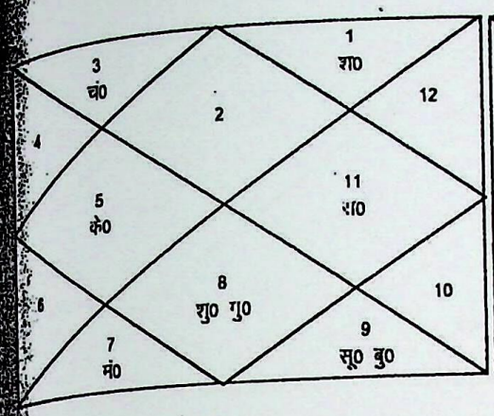

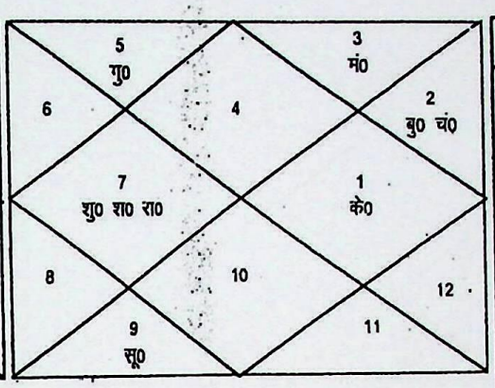

बुद्ध - शुक्र	
05-03-2003 से	
05-01-2006 तक	
शुक्र	25–08–2003
सूर्य	16–10–2003
चंद्र	11–01–2004
मङ्गल	11–03–2004
राहु	14–08–2004
गुरू	10–12–2004
शनि	11–06–2005
बुध	06–11–2005
केतु	05–01–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	स्वीटी अग्रवाल
जन्मतिथि	–	11 जनवरी 1971
समय	–	03.00 PM
स्थान	–	कानपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक स्वीटी अग्रवाल अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, आलबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 20 जनवरी, 2004 को आयी थी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचमेश बुध आठवे भाव में सूर्य के साथ युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है, जो जातक को मनोरोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम में उल्लिखित है जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचमेश पाप ग्रह के साथ हो तो जातक "विस्मयशील बुद्धि" अर्थात मनोरोगी होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग को विस्मयशील बुद्धि कहा गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का विस्मयशील बुद्धि का रोग आयुर्वेद के अनुसार "अतत्वाभिनिवेश" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्र[illegible] दशा दिनांक 12 जनवरी 2004 से 11 मार्च 2004 तक चल रही थी फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

"वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा [illegible] तथा पित्त का विकार, कलह, अपमान तथा क्लेश अधिक होता है।[2]

---

[1]– सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–147)

[2]– रक्तपित्तादि रोगश्च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेशो भवेदत्र कुजप्रत्यन्तरे द्विज।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–77, पृष्ठ–645)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

अ0–3

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

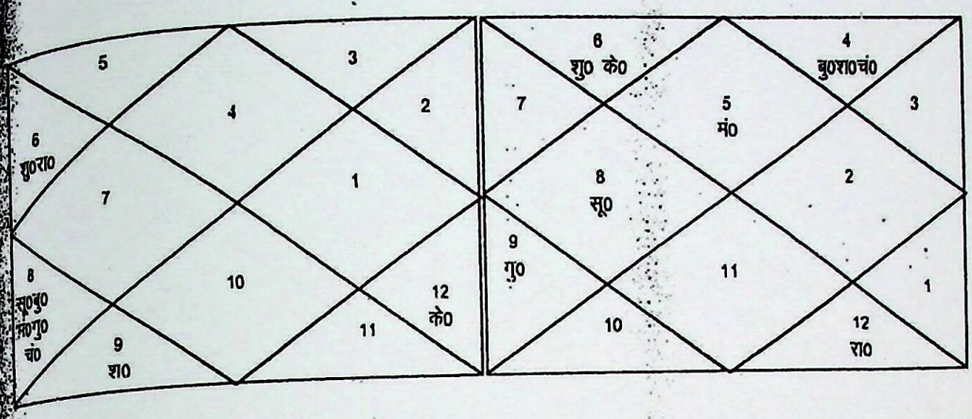

शुक्र - शुक्र	
21-03-2003 से 27-07-2006 तक	
शुक्र	11–10–2003
सूर्य	11–12–2003
चंद्र	21–03–2004
मङ्गल	01–06–2004
राहु	01–12–2004
गुरू	11–05–2005
शनि	21–11–2005
बुध	11–05–2006
केतु	21–07–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – यशवन्त कुमार
जन्मतिथि – 29 नवम्बर 1959
समय – 09.00 PM
स्थान – कानपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक यशवन्त कुमार अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 01 अप्रैल, 2004 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक उनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में पापी ग्रह सूर्य, मंगल चन्द्रमा, बुध तथा गुरू के साथ स्थित है। पंचमेश मंगल भी सूर्य से युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचमेश पाप ग्रह के साथ हो तो जातक "विस्मयशील बुद्धि" अर्थात मनोरोगी होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग को विस्मयशील बुद्धि कहा गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का विस्मयशील बुद्धि का रोग आयुर्वेद के अनुसार "अतत्वाभिनिवेश" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 22 मार्च 2004 से 01 जून 2004 तक चल रही थी फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा में रक्त तथा पित्त का विकार, कलह, अपमान तथा क्लेश अधिक होता है।[2]

1– सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)

2– रक्तपित्तादि रोगश्च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेशो भवेदत्र कुजप्रत्यन्तरे द्विज।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–77, पृष्ठ–645)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

प्र0-3

लग्न कुण्डली

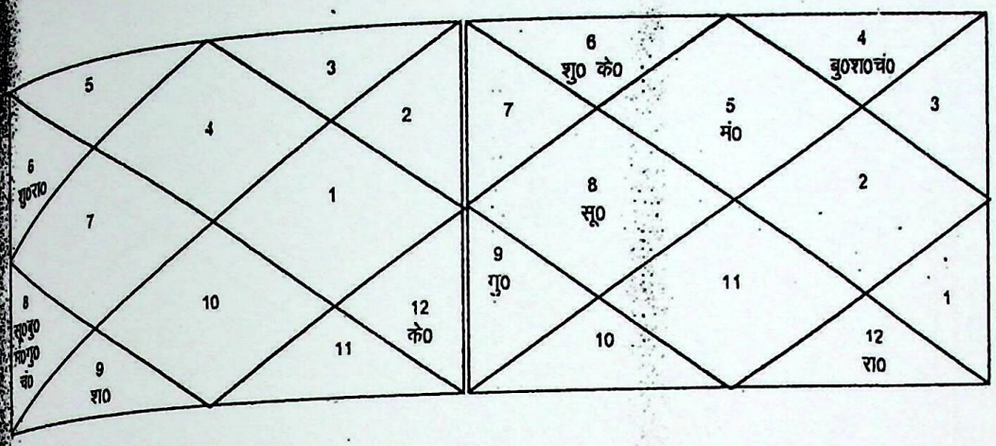

नवमांश

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शुक्र - शुक्र	
21-03-2003 से 27-07-2006 तक	
शुक्र	11–10–2003
सूर्य	11–12–2003
चंद्र	21–03–2004
मङ्गल	01–06–2004
राहु	01–12–2004
गुरू	11–05–2005
शनि	21–11–2005
बुध	11–05–2006
केतु	21–07–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	यशवन्त कुमार
जन्मतिथि	–	29 नवम्बर 1959
समय	–	09.00 PM
स्थान	–	कानपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक यशवन्त कुमार अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 01 अप्रैल, 2004 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक उनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में पापी ग्रह सूर्य, मंगल चन्द्रमा, बुध तथा गुरू के साथ स्थित है। पंचमेश मंगल भी सूर्य से युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचमेश पाप ग्रह के साथ हो तो जातक "विस्मयशील बुद्धि" अर्थात मनोरोगी होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग को विस्मयशील बुद्धि कहा गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का विस्मयशील बुद्धि का रोग आयुर्वेद के अनुसार "अतत्वाभिनिवेश" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 22 मार्च 2004 से 01 जून 2004 तक चल रही थी फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा में रक्त तथा पित्त का विकार, कलह, अपमान तथा क्लेश अधिक होता है।[2]

1– सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)

2– रक्तपित्तादि रोगश्च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेशो भवेदत्र कुजप्रत्यन्तरे द्विज।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–77, पृष्ठ–645)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

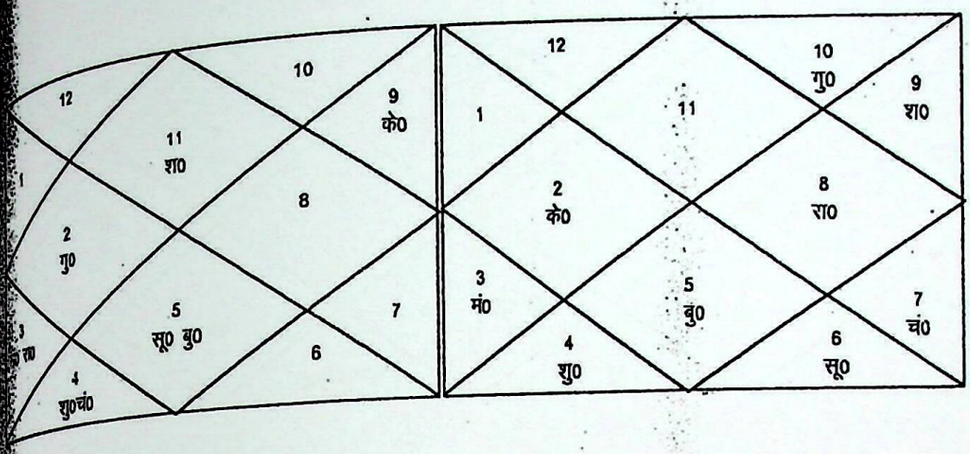

नवमांश

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शुक्र - राहु	
23-09-2001 से 23-09-2004 तक	
राहु	05-03-2002
गुरू	29-07-2002
शनि	20-01-2003
बुध	23-06-2003
केतु	28-08-2003
शुक्र	26-02-2004
सूर्य	20-04-2004
चंद्र	20-07-2004
मङ्गल	23-09-2004

रोगी का परिचयः-

नाम – मुकेश
जन्मतिथि – 03 सितम्बर 1964
समय – 06.00 PM
स्थान – आजमगढ़।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक मुकेश अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 25 अप्रैल, 2004 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में लग्न में शनि तथा पंचम भाव में मंगल राहु से युक्त होकर स्थित है, जो जातक को मनोरोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः-

"शनि लग्न में और मंगल पंचम या सप्तम या नवम भाव में हो तो जातक उन्माद रोग से पीड़ित होता है"[1]

इस ग्रन्थ में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग को "उन्माद" कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार "अतत्वाभिनिवेश" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 21 अप्रैल 2004 से 20 जुलाई 2004 तक चल रही थी फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार- "राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में उद्वेग, अनहोनी, कलह, चिन्ता, मानहानि, भय, पिता को कष्ट तथा शरीर कष्ट होता है।[2]

---

[1] मन्दे लग्नगते मदात्मजतपः संस्थो महीनन्दनः। (प्रश्नमार्ग- अध्याय-12, सूत्र-31, पेज-179)

[2] उद्वेगकलहौ चिन्ता मानहानिर्महद्भयम्।
पितुर्विकलता देहे विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-36, पृष्ठ-640)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

नू0–5

लग्न कुण्डली

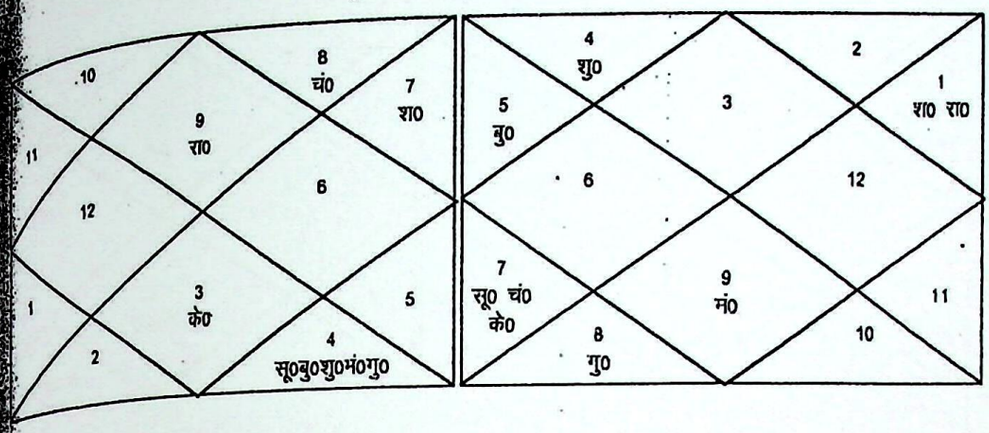

नवमांश

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

सूर्य - सूर्य	
07-07-2004 से 25-10-2004 तक	
सूर्य	12–07–2004
चंद्र	21–07–2004
मङ्गल	27–07–2004
राहु	14–08–2004
गुरू	28–08–2004
शनि	15–09–2004
बुध	30–09–2004
केतु	07–10–2004
शुक्र	25–10–2004

रोगी का परिचयः-

नाम – विकास

जन्मतिथि – 29 जुलाई 1955

समय – 05.00 PM

स्थान – दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक विकास अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 16 जुलाई, 2004 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में बुध अष्टम भाव में सूर्य, मंगल, शुक्र तथा गुरू के साथ युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है, जो जातक को मनोरोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ प्रश्नमार्ग में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

" यदि तृतीय, षष्ठ, अष्टम् या व्यय भाव में पाप युक्त बुध हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार अतत्वाभिनिवेश की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 13 जुलाई 2004 से 21 जुलाई 2004 तक तथा मंगल की प्रत्यंतर दशा 22 जुलाई 2004 से 27 जुलाई 2004 तक तथा राहु प्रत्यन्तर दशा 28 जुलाई 2004 से 14 अगस्त 2004 तक चल रही थी फलतः रोग का प्रकोप उग्र था। यह तीनों प्रत्यंतर दशाएं अनिष्टकारी होती हैं। वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में बेचैनी, कलह, धनहानि तथा मनोव्यथा होती है।[2]

मंगल की प्रत्यंतर दशा में राजभय, शस्त्र भय, बंधन, बहुत से संकट तथा पीड़ा होती है।[3]

राहु की प्रत्यंतर दशा में कफ विकार, शस्त्र भय, धनहानि, राजहानि तथा महान भय होता है।[4]

1– अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्त्रिषष्ठाष्टामात्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)

2– उद्वेगः कलहश्चैव वित्तहानिर्मनोव्यथा।
व्यन्तरे विजानीयात् चन्द्रप्रत्यन्तरे फलम्।।3।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–3से 5, पृष्ठ–640)

3– राजभीतिः शस्त्रभीतिर्बन्धनं बहुसंकटम्।
शत्रुवहिनकृतापीड़ा कुजप्रत्यन्तरे फलम्।।4।। तत्रैव

4– श्लेष्मव्याधिः शस्त्रभीतिर्धनहानिर्महद्भयम्।
राजभंग

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

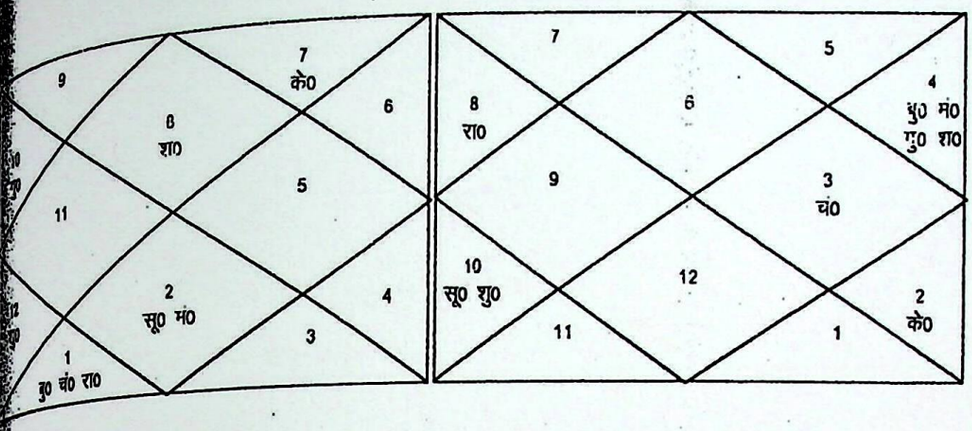

नवमांश

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

शुक्र - बुध	
02-07-2004 से 02-05-2007 तक	
बुध	27–11–2004
केतु	26–01–2005
शुक्र	16–07–2005
सूर्य	07–09–2005
चंद्र	02–12–2005
मङ्गल	02–02–2006
राहु	05–07–2006
गुरू	21–11–2006
शनि	02–05–2007

रोगी का परिचयः–

नाम	–	चन्दू लाल
जन्मतिथि	–	17 मई 1985
समय	–	07.00 PM
स्थान	–	गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक चन्दू लाल अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 26 जुलाई 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि लग्न में है तथा मंगल सप्तम भाव में स्थित है जो जातक को मनोरोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यद्यपि यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित है–

"यदि शनि लग्न में मंगल पंचम, या सप्तम अथवा नवम भाव में हो तो जातक उन्माद रोग से पीड़ित होता है।[1]

इस ग्रन्थ में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता हैं। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात इस निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार अतत्वाभिनिवेश की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 17 जुलाई 2005 से 07 सितम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप हुआ था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर दशा में तेज में कमी, रोग, कभी–कभी शरीर कष्ट, मन में शिथिलता तथा अनुत्साह होता है।[2]

---

[1] मन्दे लग्नगते मदात्मजतपः संस्थौ महीनन्दनः। तैजो हानिर्भवेद्रोगस्तनुपीडा यदा कदा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

(प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–31, पेज–179)

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

दं0-7

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

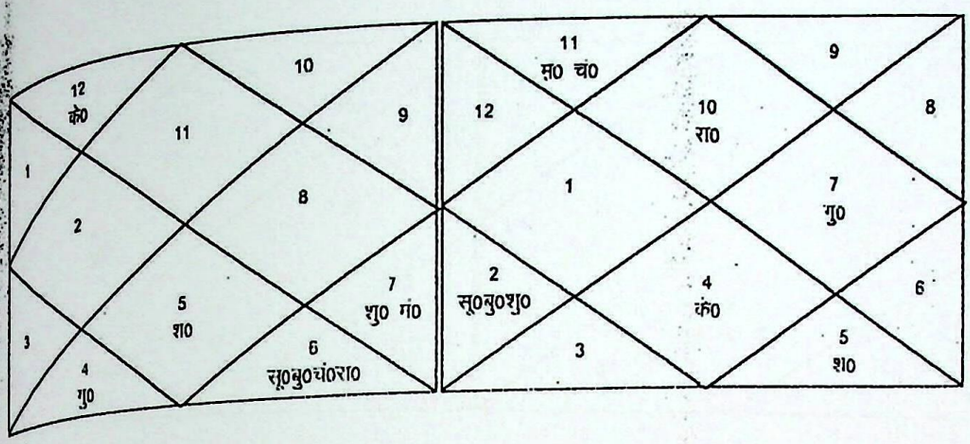

राहु - शनि	
08-05-2003 से 14-03-2006 तक	
शनि	20–10–2003
बुध	15–03–2004
केतु	15–05–2004
शुक्र	06–11–2004
सूर्य	28–12–2004
चंद्र	23–03–2005
मङ्गल	23–05–2005
राहु	27–10–2005
गुरू	14–03–2006

रोगी का परिचयः-

नाम – कमला
जन्मतिथि – 01 अक्टूबर 1978
समय – 04.00 PM
स्थान – गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कमला अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 मार्च, 2007 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में बुध, सूर्य, राहु तथा चन्द्रमा से संयुक्त होकर पापग्रस्त हो गया है जो जातक को मनोरोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ प्रश्नमार्ग में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि बुध तृतीय, षष्ठ, अष्टम अथवा व्यय भाव में पापयुक्त हो तो जातक उन्माद का रोगी होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग को "उन्माद" कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार पागलपन का रोग आयुर्वेद के अनुसार "अतत्वाभिनिवेश" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 16 मार्च 2004 से 15 मई 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

बृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "बुध की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा की अवधि में शत्रुओं द्वारा बंधन, शरीर में कान्तिहीनता,, अपने वर्ण से नीचे स्तर में जाना, अधिक भूख तथा मन में चिन्ता एवं भय आदि होते हैं।[2]

1.

2. अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्त्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)
बन्धः शत्रोर्गृहे जाती वर्णहानिर्बहुक्षुधा।
चित्ते चिन्ता भयं त्रासः केतोः प्रत्यन्तरे भवेत।। (बृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् अध्याय–63 श्लोक–49, पृष्ठ–641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

रो0-8

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

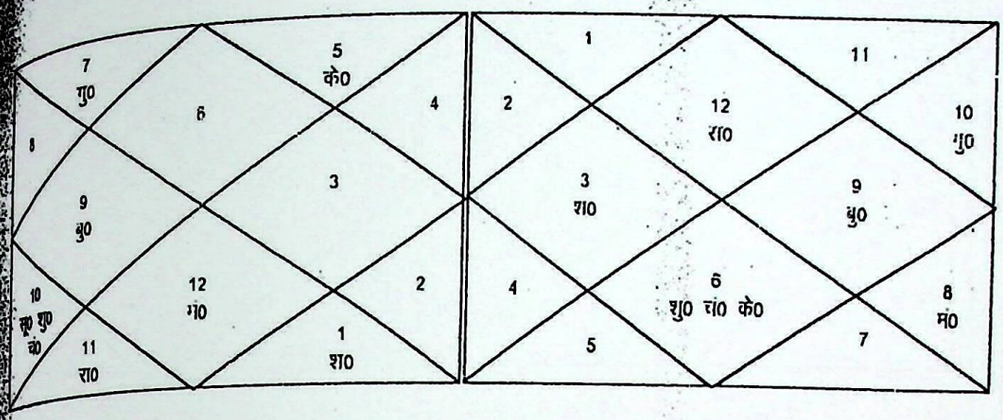

गुरू - चंद्र	
05-07-2003 से 05-11-2007 तक	
चंद्र	15–08–2003
मङ्गल	13–09–2003
राहु	25–11–2003
गुरू	29–01–2004
शनि	15–04–2004
बुध	23–05–2004
केतु	21–07–2004
शुक्र	11–10–2004
सूर्य	05–11–2004

रोगी का परिचयः–

नाम	–	सुमित
जन्मतिथि	–	06 फरवरी 1970
समय	–	09.00 PM
स्थान	–	गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक सुमित अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 05 फरवरी, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में सूर्य, चन्द्रमा तथा शुक्र एक साथ पंचम भाव में स्थित होकर जातक को अतत्वाभिनिवेश रोग से ग्रसित कर रहे हैं।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

ऐसे योग का उल्लेख जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"पंचम स्थान मे पाप ग्रह होने पर भय के कारण उन्माद रोग होता है।[1]

इस ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार "अतत्वाभिनिवेश" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 30 जनवरी 2004 से 15 अप्रैल 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– जब "चन्द्रमा की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा हो तो विशेषतः वातपित्त से कष्ट, धन–धान्य की हानि तथा यश की हानि होती है।[2]

---

[1] सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्, पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)

[2] दुर्दिने लभते पीडां वातपित्ताद् विशेषतः।
धनधान्ययशोहानिः शनिप्रत्यन्तरे सिते।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

रो0–9

लग्न कुण्डली

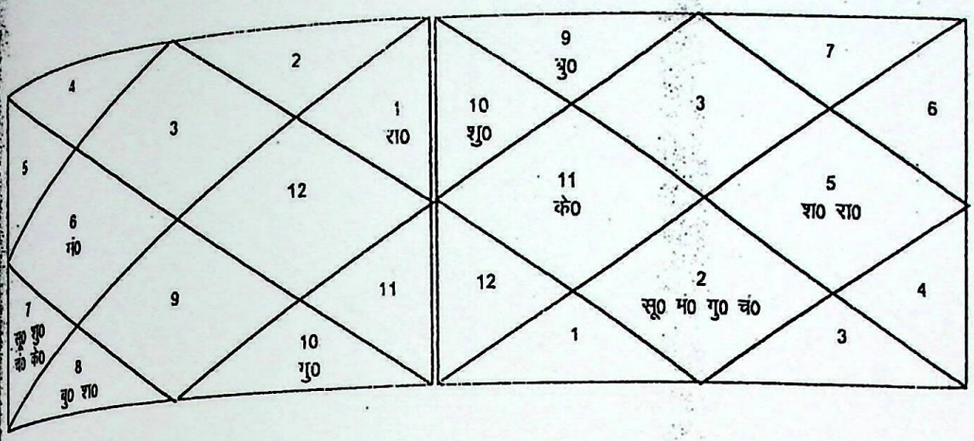

नवमांश

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शनि - सूर्य	
28-04-2004 से 10-04-2005 तक	
सूर्य	15–05–2004
चंद्र	14–06–2004
मङ्गल	04–07–2004
राहु	25–08–2004
गुरू	11–10–2004
शनि	05–12–2004
बुध	23–01–2005
केतु	13–10–2005
शुक्र	10–04–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – नकुल

जन्मतिथि – 12 नवम्बर 1985

समय – 07.30 PM

स्थान – गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक नकुल अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 मई, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसकें परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में लग्नेश बुध पापी ग्रह शनि के साथ छठे भाव में बैठकर जातक के मन को विकार युक्त करता है। पंचम भाव मे सूर्य, चन्द्रमा शुक्र तथा केतु एक साथ बैठकर जातक को अतत्वाभिनिवेश रोग से ग्रसित कर रहे है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह दोनो योग "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध हैं। जो निम्नलिखित हैः–

यदि पाप ग्रह युक्त बुध तृतीय, षष्ठ, अष्टम या व्यय स्थान में हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।

तथा

पंयम भाव में पापग्रह होने पर भय के कारण उन्माद होता है।[2]

इस ग्रन्थ में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार अतत्वाभिनिवेश की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 16 मई 2004 से 14 जून 2004 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– जब "सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यंतर दशा की अवधि में बेचैनी, धन हानि तथा तथा मनोव्यथा होती है।[2]

1.

2. अस्ते पापयुतो मान्दिर्विक्लिष्टाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)

3. सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे।। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)
उद्वेगः कलहश्चैव विसंज्ञानिर्मनोव्यथा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV), Kanchan, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–10

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

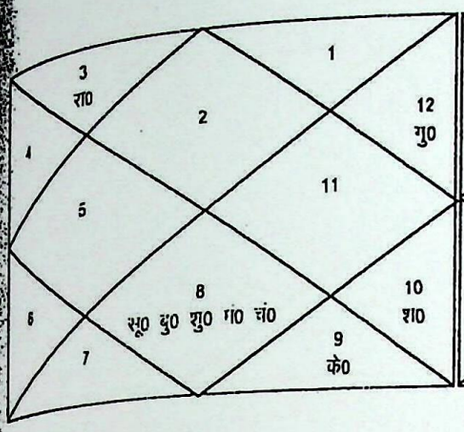

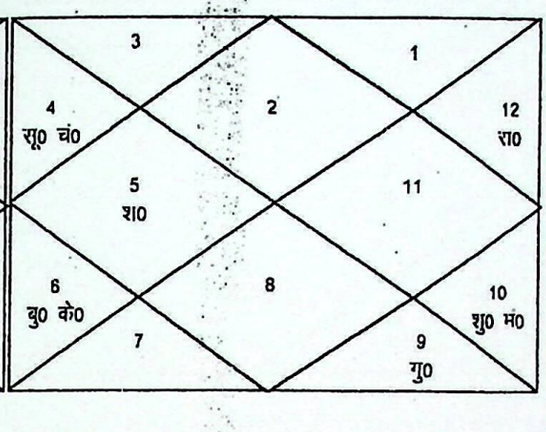

केतु - शनि	
15-08-2005 से 24-09-2006 तक	
शनि	18–10–2005
बुध	15–12–2005
केतु	08–01–2006
शुक्र	15–03–2006
सूर्य	05–04–2006
चंद्र	08–05–2006
मङ्गल	01–06–2006
राहु	01–08–2006
गुरू	24–09–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – धीरज
जन्मतिथि – 16 नवम्बर 1963
समय – 06.00 PM
स्थान – बस्ती।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक धीरज अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 अक्टूबर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में नवम भाव में शनि स्थित है जो जातक को मनोरोगी बना रहा है।[1]

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

इस योग का उल्लेख जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"नवम् स्थान में पाप ग्रह होने पर गुरू या देवता आदि के शाप से उन्माद होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार अतत्वाभिनिवेश की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में केतु की दशा से शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 19 अक्टूबर 2005 से 15 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर दशा में बुद्धि का नाश, कलह, भय, खाने–पीने की कमी, धनहानि और शत्रु से भय होता है।[2]

---

1. गुर्वादिशापसम्भूतः पापे नवमसंस्थिते। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–48, पेज–182)
2. बुद्धिनाशः कलेर्भीतिरन्नपानादि हानिकृत्।
धनहानिर्भयं शत्रोः शनौ प्रत्यन्तरे बुधे।।(वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–48, पृष्ठ–641)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

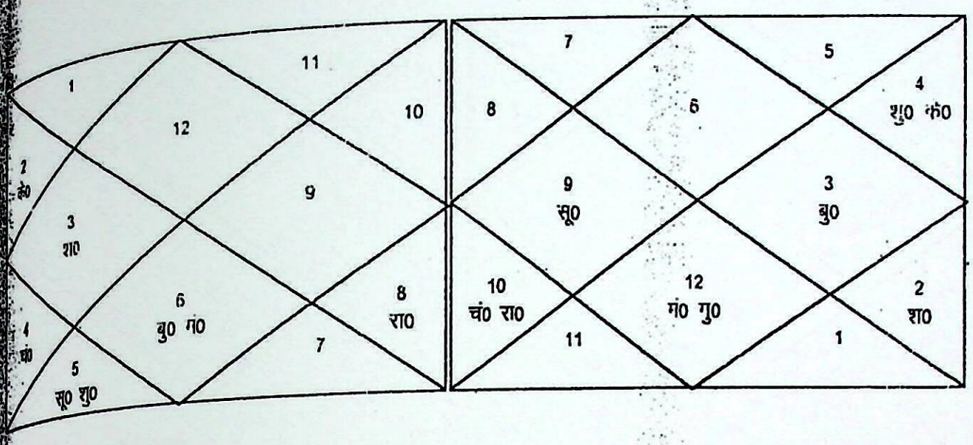

शुक्र - शनि	
09-12-2005 से 09-02-2009 तक	
शनि	09-06-2006
बुध	21-11-2006
केतु	27-01-2007
शुक्र	07-08-2007
सूर्य	04-10-2007
चंद्र	09-01-2008
मङ्गल	16-03-2008
राहु	07-09-2008
गुरू	09-02-2009

रोगी का परिचयः-

नाम – अनिरूद्ध
जन्मतिथि – 13 सितम्बर 1974
समय – 07.00 PM
स्थान – दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक अनिरूद्ध मनोरोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 दिसम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में नवम् भव में पाप ग्रह राहु स्थित है जो जातक को मनोरोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः-

नवम् स्थान में पाप ग्रह होने पर गरू आदि के शाप से उन्माद होता है।

इस ग्रन्थ में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार अतत्वाभिनिवेश की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 09 दिसम्बर 2005 से 09 जून 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार- "शनि की अन्तर्दशा में शनि की ही प्रत्यंतर दशा की अवधि में शरीर में पीडा, कलह तथा अनेक प्रकार का भय एवं दुःख होता है।[2]

1.
2. गुर्वादिशापसम्भूतः पापे नवमसंस्थिते। (प्रश्नमार्ग- अध्याय-12, सूत्र-48, पेज-182)
देहपीडा कलेर्भीतिर्भयमन्त्यजलोकतः।
दुख शयन्तरे नाना शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।(वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-47, पृष्ठ-641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतत्वाभिनिवेश रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–12

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

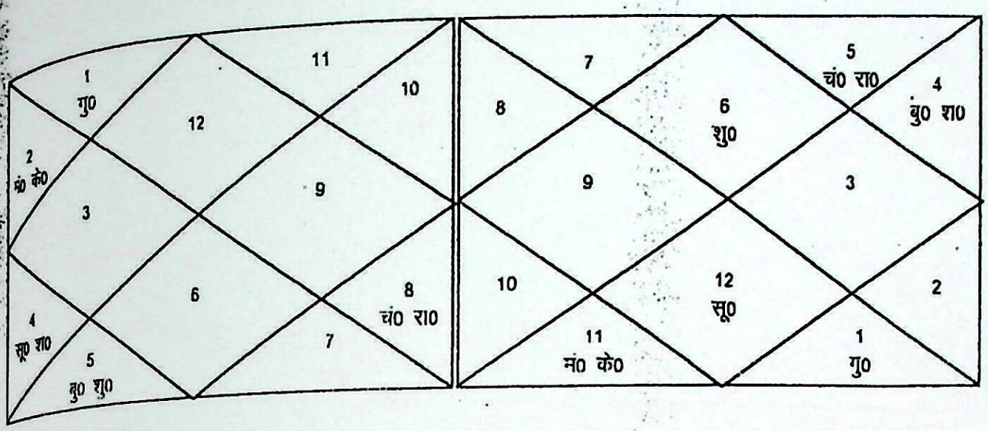

बुद्ध - राहु	
24-05-2002 से 12-12-2004 तक	
राहु	11–10–2002
गुरू	14–02–2003
शनि	09–07–2003
बुध	19–11–2003
केतु	13–01–2004
शुक्र	16–06–2004
सूर्य	01–08–2004
चंद्र	18–10–2004
मङ्गल	12–12–2004

रोगी का परिचयः–

नाम	–	रोली
जन्मतिथि	–	14 अगस्त 1975
समय	–	09.00 PM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक रोली अतत्वाभिनिवेश रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 05 अगस्त, 2004 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में शनि पाप ग्रह सूर्य के साथ स्थित है और पंचमेश चन्द्रमा पापी ग्रह राहु के साथ बैठकर जातक को अतत्वाभिनिवेश रोग से ग्रस्त कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ प्रश्नमार्ग में तथा "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"पंचम स्थान में पाप ग्रह होने पर भय के कारण उन्माद होता है।"[1]

तथा

"यदि पंममेश पाप गह से युक्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि से पीड़ित होता है।"[2]

इन ग्रन्थों में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद तथा विस्मयशील बुद्धि कहा गया है, रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का पागलपन का रोग आयुर्वेद के अनुसार अतत्वाभिनिवेश की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत चन्द्रमा की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 02 अगस्त 2004 से 18 अक्टूबर 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

बृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "राहु की अन्तर्दशा में चन्द्रमा की ही प्रत्यंतर दशा की अवधि में उद्वेग, बेचैनी, कलह, चिन्ता, मान हानि, भय, पिता को कष्ट तथा शरीर कष्ट होता है।[3]

1– सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे।। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)

2– सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)

3– उद्वेगकलहौ चिन्ता मानहानिर्महद्भयम्।
पितुर्विकलता देहे विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।। (बृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् अध्याय–63, श्लोक–36, पृष्ठ-640)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोविक्षिप्त रोगी की जन्म कुण्डली

नं0-13

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

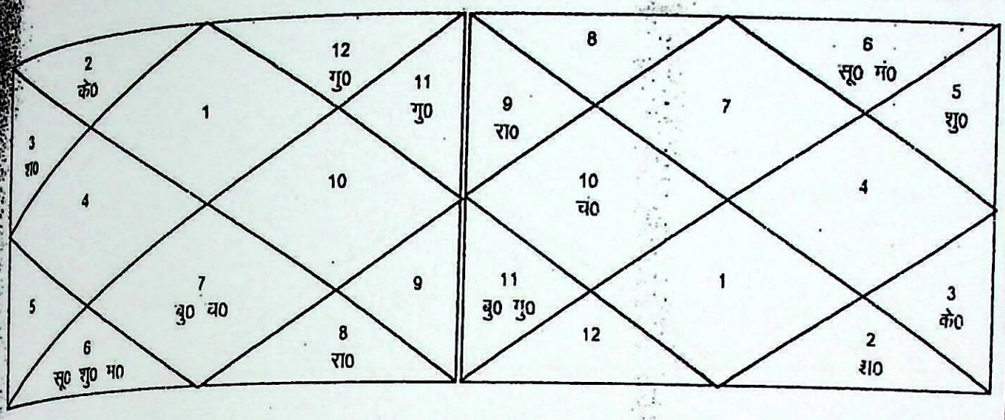

शनि - बुध	
26-04-2003 से 05-01-2006 तक	
बुध	13-09-2003
केतु	09-11-2003
शुक्र	21-04-2004
सूर्य	09-06-2004
चंद्र	30-08-2004
मङ्गल	27-10-2004
राहु	22-03-2005
गुरू	01-08-2005
शनि	05-01-2006

रोगी का परिचयः-

नाम	—	राजेश
जन्मतिथि	—	16 अक्टूबर 1974
समय	—	07.00 PM
स्थान	—	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः--

जातक राजेश मनोविक्षिप्त रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 मई, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचमेश सूर्य षष्टम् भाव में मंगल के साथ युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है, जो जातक को मनोरोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

इस योग का उल्लेख जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो इस निम्नलिखित हैः--

"यदि पंचमेश पापग्रस्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को विस्मयशील बुद्धि कहा गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का विस्मयशील बुद्धि का रोग आयुर्वेद के अनुसार "मनोविक्षिप्ति" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 22 अप्रैल 2004 से 09 जून 2004 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार- "बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत प्रत्यंतर दशा की अवधि में तेज से कभी, रोग, कभी-कभी शरीर कष्ट तथा मन में विकलता होती है।[2]

1- सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्- पंचम विवेक, सूत्र-19, पेज-137)

2- तेजो हानिर्भवेद्रोगस्तनुपीडा यदा कदा।
जायते चित्तवैकल्यं रवेः प्रत्यन्तरे बुधे।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-59, पृष्ठ-642)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोविक्षिप्त रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

नं0-14

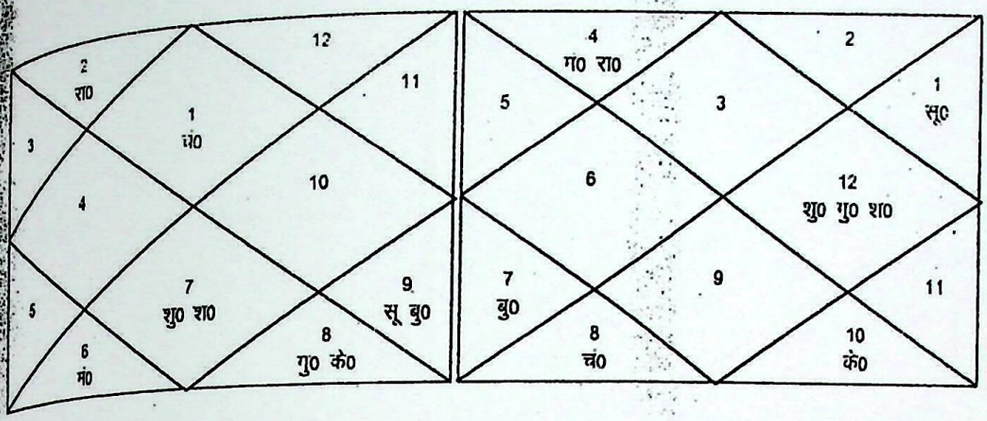

मंगल - केतु	
30-11-2004 से 27-04-2005 तक	
केतु	08–12–2004
शुक्र	03--01–2005
सूर्य	10–01–2005
चंद्र	22–01–2005
मङ्गल	01–02–2005
राहु	23–02–2005
गुरू	13--03–2005
शनि	06--04–2005
बुध	27- 04--2005

रोगी का परिचयः-

नाम	–	कीर्ति
जन्मतिथि	–	17 दिसम्बर 1983
समय	–	02.00 PM
स्थान	–	सुल्तानपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कीर्ति मनोविक्षिप्त रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 10 अप्रैल, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में लग्न में स्थित चन्द्रमा को शनि अपनी सप्तम और मंगल अपनी अष्टम दृष्टि से देखकर जातक को मनोविक्षिप्त रोग से पीड़ित करता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

इस योग का उल्लेख जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

यदि लग्न में चन्द्रमा स्थित हो तथा उसे शनि व मंगल देखते हों तो जातक हीन बुद्धि अर्थात कम बुद्धि वाला होता है।

इस ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को हीन बुद्धि कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का हीन बुद्धि का रोग आयुर्वेद के अनुसार मनोविक्षिप्त की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि मे मंगल की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 07 अप्रैल 2005 से 27 अप्रैल 2005 तक चल रही थी। फलस्वरूप रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर दशा की अवधि में बुद्धि का नाश, महान उद्वेग, विद्या हानि, भय तथा कार्य में असफलता होती है।[2]

1-

2- लग्ने चन्द्रे मन्दारदृष्टे हीनधी:।। (जातकतत्वम पंचम विवेक श्लोक–26, पृष्ठ–138)
बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महद्भवम्।
कार्यसिद्धिर्न

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV) Karoundi, Jabalpur MP. Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोविक्षिप्त रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

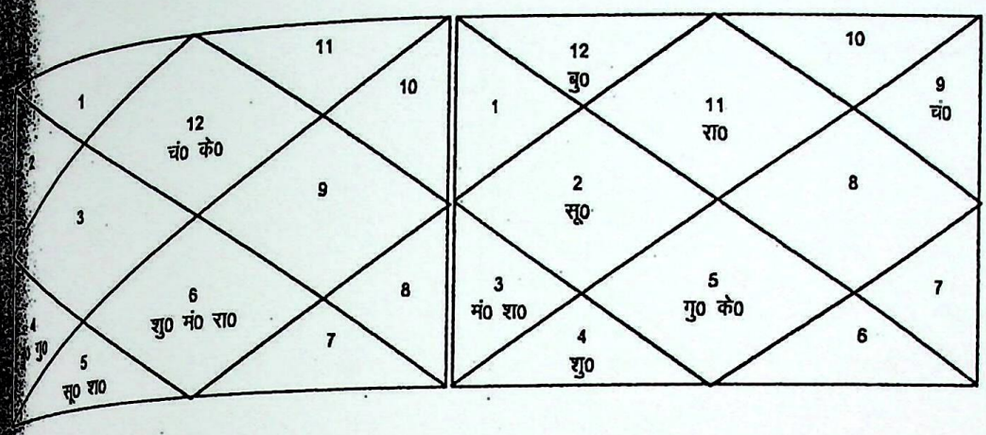

शुक्र - सूर्य	
22-02-2004 से 22-02-2005 तक	
सूर्य	10–03–2004
चंद्र	10–04–2004
मङ्गल	01–05–2004
राहु	25–06–2004
गुरू	13–08–2004
शनि	10–10–2004
बुध	01–12–2004
केतु	22–12–2004
शुक्र	22–02–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – उमेश

जन्मतिथि – 21 अगस्त 1978

समय – 09.00 PM

स्थान – सुल्तानपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक उमेश मनोविक्षिप्त रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 मार्च 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचमेश चन्द्रमा लग्न में केतु के साथ स्थित है, जिसे मंगल तथाा राहु सप्तम दृष्टि से देख रहे हैं, इस प्रकार पंचमेश पापयुक्त होकर जातक को मनोरोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

इस योग का उल्लेख जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखिा हैः–

"यदि पंचमेश पापयुक्त है तो जातक "विस्मयशील बुद्धि" होता है"।[1]

इस ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को विस्मयशील बुद्धि कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों का समानार्थक शब्द है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का विस्मयशील बुद्धि का रोग आयुर्वेद के अनुसार मनोविक्षिप्त की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 11 मार्च 2004 से 10 अप्रैल 2004 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यंतर दशा की अवधि में बेचैनी, कलह, धनहानि तथा मनोव्यथा होती है।[2]

---

1. सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)
2. उद्वेगः कलहश्चैव विलहानिर्मनोव्यथा। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–3से 5, पृष्ठ–640)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur. MP. Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोविक्षिप्त रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

16

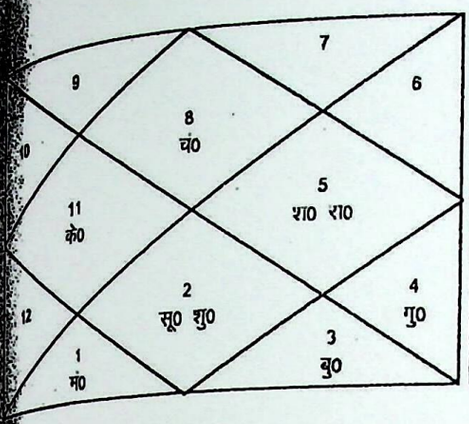

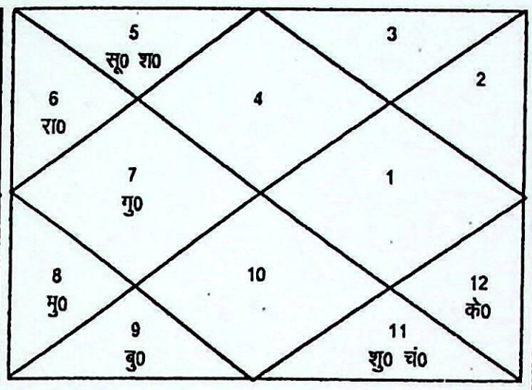

शुक्र - शनि	
26-05-2005 से 26-07-2008 तक	
शनि	26-11-2005
बुध	08-05-2006
केतु	14-07-2006
शुक्र	24-01-2007
सूर्य	21-03-2007
चंद्र	26-06-2007
मङ्गल	03-09-2007
राहु	24-02-2008
गुरू	26-07-2008

रोगी का परिचयः-

नाम	–	पंकज
जन्मतिथि	–	10 जून 1979
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	सुल्तानपुर।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक पंकज मनोविक्षिप्त रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 दिसम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में षष्टम् भाव में मंगल स्थित है जिससे जातक मनोरोग से ग्रसित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

इस योग का उल्लेख जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"षष्ट स्थान में मंगल होने पर शत्रुकृत अविचार के कारण उन्माद होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार "मनोविक्षिप्ति" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 27 नवम्बर 2005 से 08 मई 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार- "शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर दशा की अवधि में बुद्धि का नाश, कलह, धनहानि तथा अनेक प्रकार के भय आदि होते है।[2]

1- क्रोधजोथाभिचारोत्थः षष्ठगेष्वशुभेषु सः। (प्रश्नमार्ग- अध्याय-12, सूत्र-48, पेज-182)

2- बुद्धिनाशः कलेर्भीतिरन्नपानादि हानिकृत्।
धनहानिर्भयं शत्रोः शनौ प्रत्यन्तरे बुधे।।(वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्. अध्याय-63 श्लोक-48, पृष्ठ-641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोविक्षिप्त रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

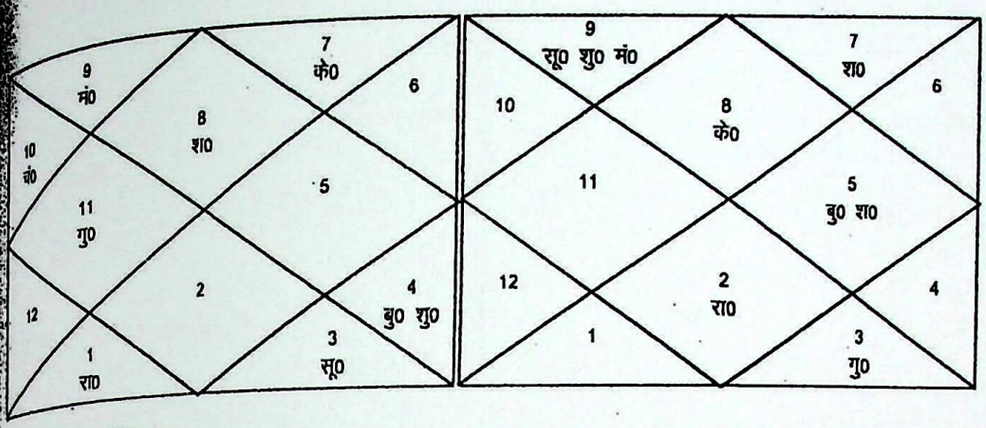

राहु - शुक्र	
16-08-2003 से 16-08-2006 तक	
शुक्र	16--02--2004
सूर्य	10--04--2004
चंद्र	10--07--2004
मङ्गल	13--09--2004
राहु	25--02--2005
गुरू	19--07--2005
शनि	10--01--2006
बुध	13--06--2006
केतु	16--08--2006

रोगी का परिचयः-

नाम	–	आशीष
जन्मतिथि	–	25 जून 1986
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	जौनपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक आशीष मनोविक्षिप्त रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 जुलाई, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि लग्न में है, जो अपनी तृतीय दृष्टि से चन्द्रमा को पीड़ित कर रहा है। साथ–साथ सूर्य भी तीन चरणों से अपनी आठवीं दृष्टि से देख रहा है, जिससे जातक मनोविक्षिप्ति योग से पीड़ित हुआ है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

इस योग का उल्लेख जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः–

"शनि तथा सूर्य यदि चन्द्रमा को देखते हों तो मनुष्य मूर्ख बुद्धि होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को मूर्ख बुद्धि कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का मूर्ख बुद्धि का रोग आयुर्वेद के अनुसार "मनोविक्षिप्ति" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 11 जुलाई 2004 से 13 सितम्बर 2007 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर दशा की अवधि में रक्त तथ पित्त का विकार, कलह, अपमान, तिरस्कार तथा अधिक क्लेश होता है।[2]

1- मन्दारार्काश्चन्द्रं पश्यन्ति मौख्यंकराः।। (जातकतत्वम–पंचम विवेक श्लोक–28 पृष्ठ–138)

2- क्रोधजोथाभिचारोत्थः षष्ठगेष्वशुभेषु सः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–48, पेज–182)
रक्तपित्तादि रोगश्च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेशो भवेदत्र कुजप्रत्यन्तरे द्विज।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–77, पृष्ठ–645)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोविक्षिप्त रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

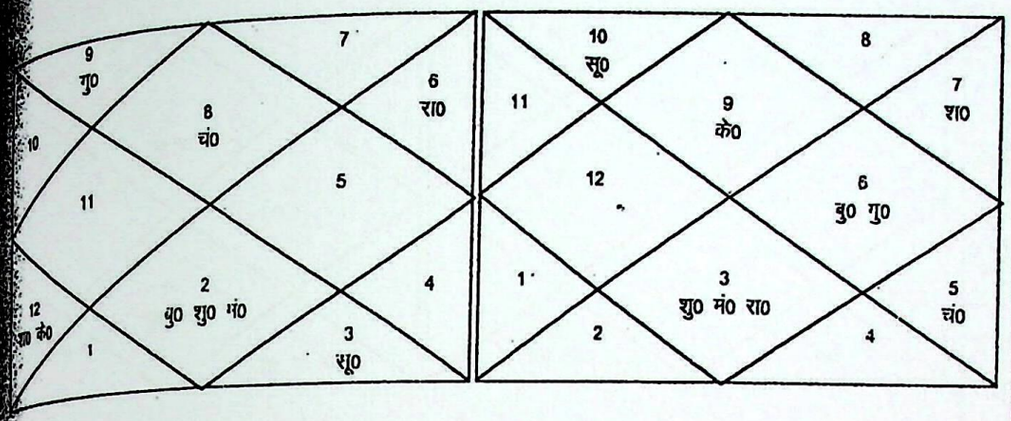

शनि - चंद्र	
16-10-2003 से 16-05-2005 तक	
चंद्र	04-12-2003
मङ्गल	07-01-2004
राहु	02-04-2004
गुरू	18-06-2004
शनि	19-09-2004
बुध	09-12-2004
केतु	13-01-2004
शुक्र	18-04-2005
सूर्य	16-05-2005

रोगी का परिचयः-

नाम	–	विजय
जन्मतिथि	–	28 जून 1996
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	सुल्तानपुर।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक विजय मनोविक्षिप्त रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 25 जून, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि तथा केतु युक्त होकर पंचम भाव को पाप ग्रस्त कर रहे हैं, जिससे जातक मनोरोग से पीड़ित हो गया है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

इस योग का उल्लेख जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हों तो भय के कारण उन्माद होता है।"[1]

इस ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार मनोविक्षिप्त की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 19 जून 2004 से 19 सितम्गर 2004 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार- "चन्द्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर दशा की अवधि में वात पित्त से कष्ट, शरीर में अनेक प्रकार के कष्ट, धन धान्य की हानि तथा यश की हानि होती है।[2]

1- सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे।। (प्रश्नमार्ग- अध्याय-12, सूत्र-47, पेज-182)

2- दुर्दिने लभते पीडां वातपित्ताद् विशेषतः।
धनधान्ययशोहानिः शनिप्रत्यन्तरे विधोः।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63, श्लोक-15, पृष्ठ-637)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Katoundi, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोविक्षिप्त रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

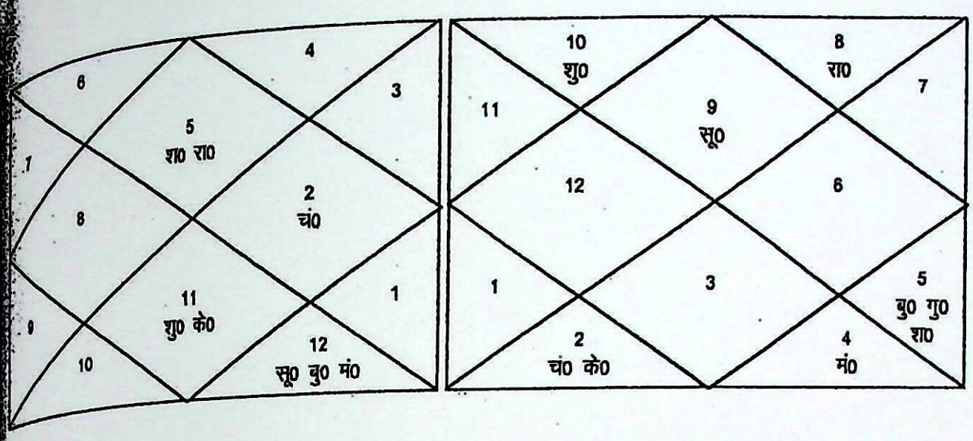

राहु - केतु	
10-12-2003 से 28-12-2004 तक	
केतु	02–01–2004
शुक्र	05–03–2004
सूर्य	24–03–2004
चंद्र	25–04–2004
मङ्गल	17–05–2004
राहु	14–07–2004
गुरू	04–09–2004
शनि	04–11–2004
बुध	28–12–2004

रोगी का परिचयः-

नाम – सुन्दरी रानी
जन्मतिथि – 01 अप्रैल 1979
समय – 05.00 PM
स्थान – दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक सुन्दरी रानी मनोविक्षिप्त रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मैडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 नवम्बर, 2004 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में बुध स्थित है, जो सूर्य और मंगल से युक्त होकर पापयुक्त हो गया है। यह योग जातक को मनोरोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

इस योग का उल्लेख जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"तृतीय, षष्ठ, अष्टम या व्यय स्थान में पापयुक्त बुध हो तो उन्माद रोग होता है।"[1]

इसं ग्रन्थ में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है, जो मानसिक विकृतियों के लिए सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का उन्माद का रोग आयुर्वेद के अनुसार "मनोविक्षिप्ति" की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 05 नवम्बर 2004 से 28 दिसम्बर 2004 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

बृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार– "केतु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा की अवधि में बुद्धि का नाश, महान उद्वेग, विद्या हानि, भय तथा कार्य में असफलता होती है।[2]

---

1. अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)
2. बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महद्भवम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत ज्ञस्य प्रत्यन्तरे फलम्। (बृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् अध्याय–63, श्लोक–73, पृष्ठ–644)

CC0. Mahamahopadhyay Pt. Vedpal Vidyavachaspati Collection, Kalkadih, Jabalpur, MP. Collection 2

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोविक्षिप्त तथा मूर्च्छा रोगी की जन्म कुण्डली

जन्म कुण्डली

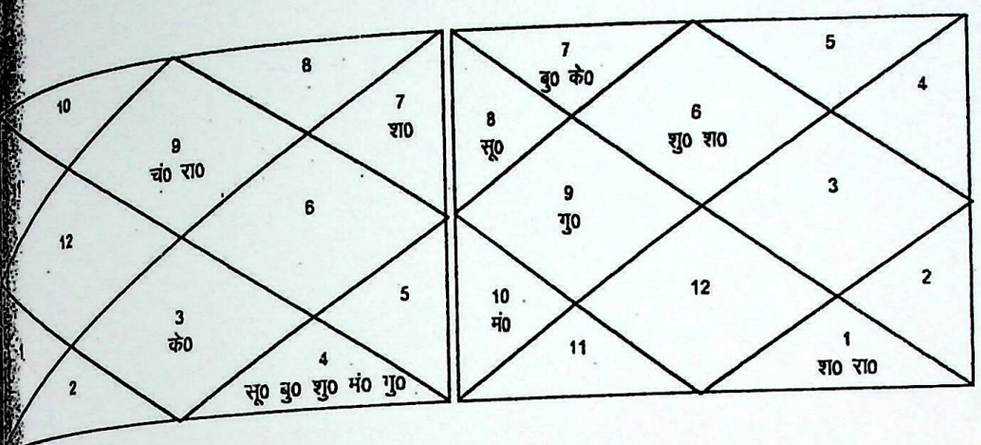

राहु - सूर्य	
28-11-2004 से 22-10-2005 तक	
सूर्य	14-12-2004
चंद्र	11-01-2005
मङ्गल	30-01-2005
राहु	18-03-2005
गुरू	02-05-2005
शनि	23-06-2005
बुध	09-09-2005
केतु	28-08-2005
शुक्र	22-10-2005

रोगी का परिचयः-

नाम	—	सुमन
जन्मतिथि	—	01 अगस्त 1955
समय	—	05.00 PM
स्थान	—	बलिया।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक सुमन मनोविक्षिप्त और मूर्च्छा रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 दिसम्बर, 2004 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में बुध अष्टम भाव में सूर्य तथा मंगल, शुक्र तथा गुरू के साथ स्थित होकर पापयुक्त हो गया है। इसके अतिरिक्त पंचमेश मंगल भी सूर्य के साथ युक्त होकर पापयुक्त हो गया है। यह दोनों ही योग जातक को मनोविक्षिप्त बना रहे हैं।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

इन दोनों योगों का उल्लेख जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में तथा "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"तृतीय, षष्ठ या अष्टम अथवा व्यय स्थान में बुध पापयुक्त हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

तथा

"यदि पंचमेश पापयुक्त हो तो जातक की बुद्धि विस्मयशील हो जाती है।"[2]

रोगी से साक्षात्कार कर उसके रोग का विश्लेषण करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि ये दोनों योग मिलकर रोगी को मनोविक्षिप्ति तथा मूर्च्छा का रोगी बना दिये हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 15 दिसम्बर 2004 से 11 जनवरी 2004 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

वृहत्पाराशारहोराशास्त्रम् के अनुसार- "सूर्य की अन्तर्दशा में चन्द्रमा की प्रत्यंतर दशा हो तो बेर्चनी, कलह, धन हानि तथा मनोव्यथा होती है।[3]

1- अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्त्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग-- अध्याय-12, सूत्र--32, पेज-180)

2- सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्- पंचम विवेक, सूत्र-19, पेज-137)

3- उद्वेगः कलहश्चैव वित्तहानिर्मनोव्यथा। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-3से 5, पृष्ठ-640)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Narouddi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-षष्टम्

विषाद-अवसाद, अव्यवस्थितचित्तता : अन्तराबन्ध

(Depression, Schizophrenia)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय षष्टम्

विषाद–अवसाद अव्यवस्थित चिन्तता : अन्तराबन्ध

(Depression, Schizophrenia)

विषाद–अवसाद रोग का परिचयः–[1]

यह विषाद–अवसाद का रोग दुख एवं असफलता के बाद उत्पन्न होता है, वस्तुतः यह मानसिक तनाव का प्रतिफल है। मानसिक तनाव और अवसाद एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। व्यक्ति में जब तक संघर्ष क्षमता रहती है, वह तनावग्रस्त रहता है और जब संघर्ष–क्षमता कम होने लगती है तो वह हताशा–निराशा में डूब कर अवसाद ग्रस्त हो जाता है। ऐसे रोगियों में दुखद पहलू यह होता है कि उनमें आत्महत्या की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है, उनके शरीर में अनेक रोगों के लक्षण मिलने लगते हैं। चरक के अनुसार– ''अवसादो रोग वर्धनाम्'' अवसाद रोग बढ़ाने वालों में प्रमुख है। अवसाद के कारण प्रायः शिरः शूल, निद्राल्पता, आलस्य, अनुत्साह, अंग शैथिल्य, अरूचि, अपचन आदि लक्षण मिलते हैं।

विषाद–अवसाद के सामान्य लक्षणः–[2]

1. रोगी का चेहरा फीका, पीतवर्णी, निस्तेज और मुरझाया दिखता है।
2. किसी भी रोग से ग्रस्त व्यक्ति जब 'विषाद' से पीड़ित हो जाता है, तो उसका वह रोग बढ़ जाताा है और दीर्धकाल तक बना रहता है।
3. रोगी भूत, भविष्य और वर्तमान इन तीनों कालों के दुःखों का स्मरण करता रहता है और सदैव खिन्न रहता है।
4. उसे नींद कम आती है या नहीं भी आती। भोजन में रूचि नहीं होती और किया हुआ भोजन ठीक से नहीं पचता तथा मलावरोध रहता है।

1– आयुर्वेदीय मानस रोग चिकित्सा, डा0 गोविन्द प्रसाद उपाध्याय, प्रपाठक एवं विभागाध्यक्ष श्री आयुर्वेद महाविद्यालय, नागपुर, संस्करण–2000।

2– काय चिकित्सा– विद्याधर शुक्ल, पृष्ठ–239

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5. उसे कोई नया कार्य करने का उत्साह नहीं होता और दैनिक कार्य करने में भी रूचि नहीं होती। वह समाज से अलग रहना पसन्द करता है। लोगों से मिलने–जुलने एवं बात करने से कतराता है।

6. निराशा और असफलताजन्य क्षोभ की अधिकता होने पर उसे भूख नहीं लगती। वह खाने–पीने की परवाह नहीं करता। उसका मुँह सूखा रहता है, शरीर दुर्बल हो जाता है और वजन घट जाता है।

7. दुर्बलता और चिन्ता बढ़ जाने पर वह किसी से बात करना पसन्द नहीं करता। वह अकेला रहना चाहता है और उसकी गतिविधि मन्द से मन्दतर होती जाती है।

8. रोगी किसी प्रकार का शारीरिक या मानसिक कार्य नहीं करना चाहता। वह हाथ–पैर हिलाने से जी चुराता है और विचारशून्य स्थिति में पड़ा रहता है। उसका मन अस्थिर रहता है। वह धीमी आवाज में रूक–रूक कर बोलता है।

9. वह स्व–कपोलकल्पित आशंकाओं और चिन्ताओं के जाल में फंसा रहता है, जिस प्रकार मकड़ी अपने द्वारा बुने जाल में फंस जाती है। वह निराशावादी अकर्मण्य औरआलसी एवं मन्दचेतन होता है।

महर्षि चरक का कथन है कि– "विषाद से रोगों में वृद्धि होती है तथा शोक से शरीर क्षीण होता है।"[3]

अव्यवस्थितचित्तता : अन्तराबन्धः–[4]

रोग का परिचयः–

विषाद–अवसाद रोग में ही जब अत्यधिक विकृति आ जाती है तो यह

3– विषादो रोगवर्धनानां, शोकः शोषणानां– चरक संहिता भाग–1, अध्याय–25, सूत्र–40, पृष्ठ–454

4– काय चिकित्सा– डा0 विद्याधर शुक्ल, पृष्ठ–239

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यवस्थित चित्तता अथवा अंतराबन्द रोग में परिवर्तित हो जाता है। इस अवस्था में रोगी निराशा और विषाद की साक्षात मूर्ति बन जाता है। उसे वर्तमान और भविष्य दोनों अंधकारमय प्रतीत होने लगते हैं। वह अपने अस्तित्व को सर्वथा निरर्थक समझने लगता है।

सामान्य लक्षणः—[5]

1. वह अकारण हंसने, रोने या कराहने लगता है और अचानक क्रुद्ध होकर समीपस्थ व्यक्ति को मारने—पीटने लगता है। कभी यह अशुभ समाचार सुनकर प्रसन्न और शुभ समाचार सुनकर खिन्न हो जाता है।
2. वह असम्बद्ध , निरर्थक, अप्रसासंगिक और अनर्गल बातें करता है।
3. उसके विचार अस्पष्ट और निरर्थक होते हैं, जिनकी कोई श्रृंखला नहीं होती और वे अपूर्ण एवं उलझे हुए होते हैं।

जातक ग्रन्थों में विषाद—अवसाद रोग के लक्षण तथा उनके योगः—

पूर्व अध्याय में यह बतलाया गया है कि जातक ग्रन्थों में तथा आयुर्वेद में मानसिक रोगों के वर्गीकरण में केवल उन्माद तथा अपस्मार ही एक समान हैं। शेष वर्गों में नामों का भेद है।

जातक ग्रन्थों में विषाद—अवसाद के के लिए विभिन्न समानार्थक शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे— 1— विषादी, 2— सदाहीनः, 3— तीक्ष्ण शोकः 4— शोक संतप्तः, 5— नीच कर्मकर्ता, 6— सशोकः, 7— वृद्धाकारः, 8— महाजड़ प्रकृति, 9— सुदूर्भगम्, 10— कलहशीलः इत्यादि।

5— तत्रैव, पृष्ठ—241

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जातक ग्रन्थों में उपर्युक्त रोगों के योगः–

जातक ग्रन्थ "सारावली" तथा जातक पारिजात आदि ग्रन्थों में विषाद–अवसाद तथा इसके समानार्थक शब्दों (रोगों) के विभिन्न योग प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ जातक ग्रन्थ "सारावली" में उल्लिखित योग इस प्रकार हैः–

रोगार्तो मन्दसुतः प्रवासशीलः स्वबन्धुपरिभूतः।
मायावञ्चनदोषैर्हृतसर्वस्वो विषादी च।।
जिह्मोऽतितीक्ष्णशोको गुरूद्विजावज्ञकः सदा हीनः।
ईप्सितवेत्ता ज्ञाता स्तुतिप्रियोऽत्ये कुजे ख्यातः। (सारावली अध्याय–25 श्लोक–23 तथा 24, पृष्ठ–169)

अर्थात उपरोक्त योग से जातक अनेक रोगों से पीड़ित, सर्वस्व को नष्ट करने वाला, विषाद से युक्त, तीव्र शोक से युक्त तथा सर्वदा हीन बुद्धि वाला होता है।

ऐसे अनेक योग विभिन्न जातक ग्रन्थों में मिलते हैं, जिनके उल्लेख अग्र पृष्ठों पर जन्म कुण्डलियों की समीक्षा के साथ यथास्थान दिये गये हैं।

जातक ग्रन्थों में उल्लिखित अव्यवस्थित चित्तता के योगः–

जातक ग्रन्थों में उल्लिखित अव्यवस्थित चित्तता के योग निम्नलिखित हैंः–

1– जातक ग्रन्थों में उल्लिखित मंत्राभिचार जन्य मानसिक रोगों के योगों से पीड़ित रोगियों को मैने अव्यवस्थित चित्तता का रोगी पाया है।

2– यदि एक ही जन्म कुण्डली में विषाद–अवसाद के योग एक से अधिक हैं तो भी यह रोगी अव्यवस्थित चित्तता का रोगी बन जाता है। जन्म कुण्डलियों के विश्लेषण से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3– यह भी देखने में आया कि जन्म कुण्डलियों में यद्यपि विषाद–अवसाद का एक ही योग है तथापि पारिवारिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के प्रतिकूल होने के कारण यह अवसाद रोग उग्र होकर अव्यवस्थित चित्तता का रोग बन गया।

अग्र पृष्ठों पर विषाद–अवसाद तथा अव्यवस्थित चित्तता रोग से ग्रसित रोगियों की जन्म कुण्डलियों की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

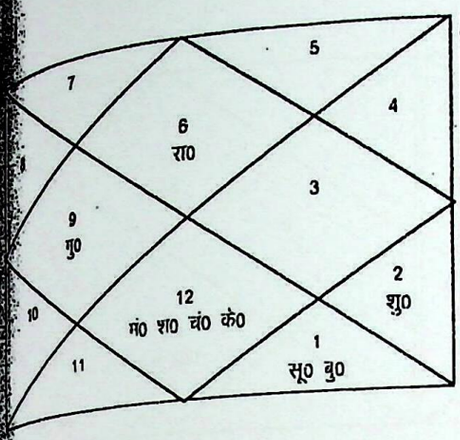

नवमांश

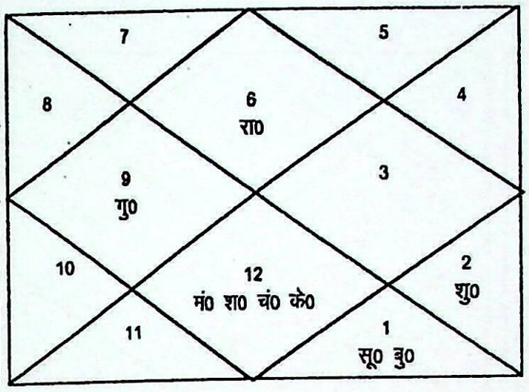

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

केतु - बुध	
17-09-2004 से 14-09-2005 तक	
बुध	08–11–2004
केतु	29–11–2004
शुक्र	28–01–2005
सूर्य	16–02–2005
चंद्र	16–03–2005
मङ्गल	07–04–2005
राहु	30–05–2005
गुरू	18–07–2005
शनि	14–09–2005

रोगी का परिचयः–

नाम	–	रीतिका
जन्मतिथि	–	17 अप्रैल 1996
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	वाराणसी।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक रीतिका विषाद–अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 02 फरवरी, 2005 को आयी थी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में मीन राशि में मंगल सप्तम भाव में स्थित होकर जातक को विषाद–अवसाद का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि मीन राशि में भौम हो तो जातक रोग से पीड़ित, अपने बन्धुओं से तिरस्कृत, कपट व धूर्तता के दोष से सर्वस्व को नष्ट करने वाला, विषादयुक्त, कुटिल और अतितीव्रशोक से युक्त तथा सर्वदा हीन बुद्धि वाला होता है।"[1]

इस श्लोक में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए विषादयुक्त, कुटिल, अति तीव्र शोक से युक्त सर्वदा हीनबुद्धि वाला आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात् यहं निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "विषाद–अवसाद" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में केतु की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 29 जनवरी 2005 से 16 फरवरी 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि बुध की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक निस्तेज होने वाला रोगी, शारीरिक कष्ट भोगने वाला और चित्त से अशान्त होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- रोगार्तो मन्दसुतः प्रवासशीलः स्वबन्धुपरिभूतः।
मायावञ्चनदोषैर्हृतसर्वस्वो विषादी च।।
जिह्मोऽतितीक्ष्णशोको गुरूद्विजावज्ञकः सदा हीनः।
ईप्सितवेत्ता ज्ञाता स्तुतिप्रियोऽन्त्ये कुजे ख्यातः।। (सारावली अध्याय–25, श्लोक–23–24) पृष्ठ–169

2- तेजो हानिर्भवेद्रोगो तनुपीडा तु मार्दवी।
जायते चित्तवैकल्यं सौम्ये सौम्यान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ बुधविदिशाफलम्, श्लोक–4, पृष्ठ–451)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

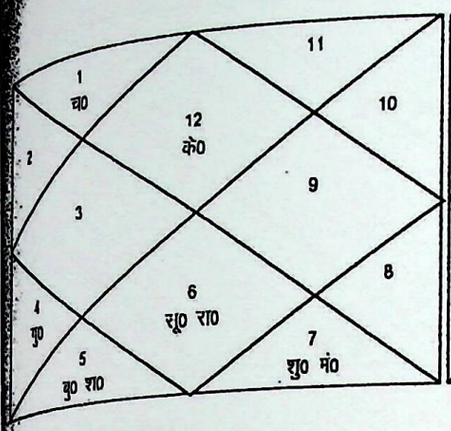

नवमांश

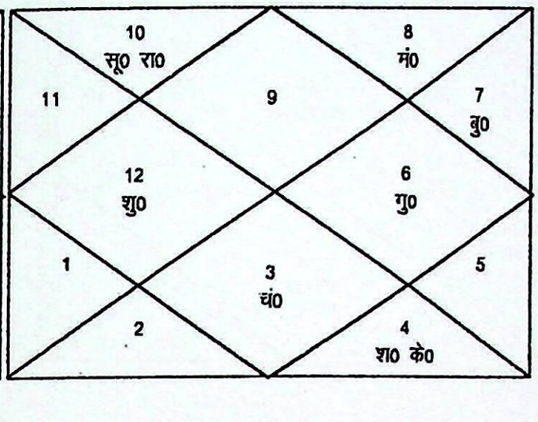

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

सूर्य - केतु	
15-11-2005 से 21-03-2006 तक	
केतु	23–11–2005
शुक्र	14–12–2005
सूर्य	20–12–2005
चंद्र	01–01–2006
मङ्गल	08–01–2006
राहु	27–01–2006
गुरू	14–02–2006
शनि	04–03–2006
बुध	21–03–2006

रोगी का परिचयः-

नाम – अजित
जन्मतिथि – 19 सितम्बर 1978
समय – 07.00 PM
स्थान – दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक अजित विषाद–अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 28 नवम्बर, 2005 को आया था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित होकर जातक को विषाद–अवसाद का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ सारावली में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि कुण्डली में अष्टम भाव में भौम हो तो जातक रोगी, अल्पायु, कुत्सित देहधारी, दूषित कार्यकर्ता तथा शोक से दुःखी होता है।"[1]

इस श्लोक में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए दूषित कार्यकर्ता तथा शोक से दुःखी आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "विषाद–अवसाद" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शुक्र की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 24 नवम्बर 2005 से 14 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि केतु की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो म्लेच्छों से भय, धन का नाश नेत्र रोग, सिर में पीड़ा तथा चौपायों की हानि होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

[1] व्याधिप्रायोऽल्पायुः कुशरीरो नीचकर्मकर्ता च।
निधनस्थे क्षितितनये भवति पुमान् शोकसन्तप्तः।। (सारावली अध्याय–30, श्लोक–33)

[2] म्लेच्छभीरर्थनाशो वा नेत्ररोगः शिरोव्यथा।
हानिश्चतुष्पदानां च भृगोः प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–66, पृष्ठ–643)

CC-0. Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद–अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

0–3

लग्न कुण्डली

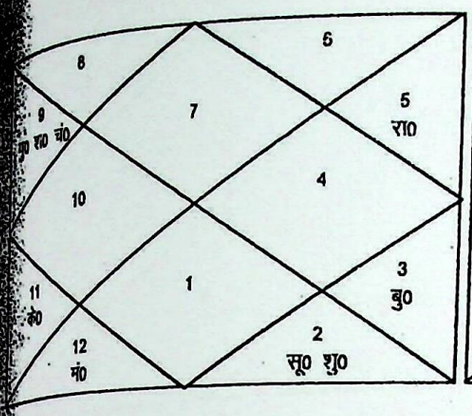

नवमांश

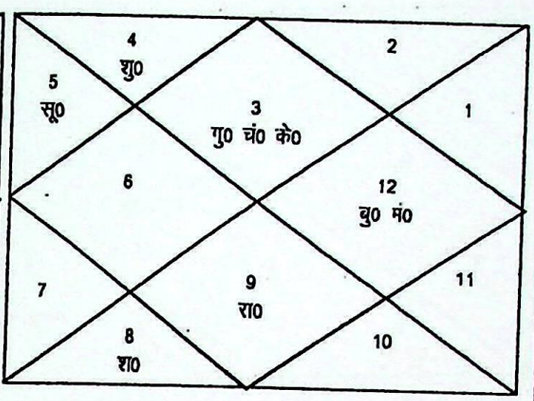

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

मंगल - चंद्र	
09–10–2004 से 09–05–2005 तक	
चंद्र	27–10–2004
मङ्गल	09–11–2004
राहु	10–12–2004
गुरू	08–01–2005
शनि	12–02–2005
बुध	11–03–2005
केतु	24–03–2005
शुक्र	29–04–2005
सूर्य	09–05–2005

रोगी का परिचयः–

नाम	–	दीपक
जन्मतिथि	–	10 जून 1960
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक दीपक विषाद–अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 जनवरी, 2005 को आया। मैने इस रोगी तंथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में छठे भाव में मीन राशि का मंगल लग्न को अष्टम दृष्टि से पीड़ित कर जातक को विषाद–अवसाद का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ सारावली में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि मीन राशि में भौम हो तो जातक रोग से पीड़ित, अपने बन्धुओं से तिरस्कृत, कपट व धूर्तता के दोष से सर्वस्व को नष्ट करने वाला, विषादयुक्त कुटिल और अतितीव्रशोक से युत, सर्वदा हीन बुद्धि वाला होता है।"[1]

इस श्लोक में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए विषादयुक्त, अति तीव्र शोक से युत, सर्वदा हीन बुद्धि वाला आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "विषाद–अवसाद" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में चंद्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 09 जनवरी 2005 से 12 फरवरी 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि चन्द्रमा की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक कष्टकारी दिनों के कारण वात् तथा पित्त से विशेष पीड़ा पाता है तथा धन धान्य एवं यश की हानि होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. रोगार्तो मन्दसुतः प्रवासशीलः स्वबन्धुपरिभूतः।
मायावञ्चनदोषैर्हृतसर्वस्वो विषादी च।।
जिह्मोऽतितीक्ष्णशोको गुरूद्विजावज्ञकः सदा हीनः।
ईप्सितवेत्ता ज्ञाता स्तुतिप्रियोऽन्त्ये कुजे ख्यातः।। (सारावली अध्याय–25, श्लोक–23–24) पृष्ठ–169

2. दुर्दिनैर्लभते पीडां वातपित्ताद् विशेषतः।
धधान्ययशेहानिश्चन्द्रचन्द्रान्तरे शनिः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ चंद्रविदिशाफलम्, श्लोक–5, पृष्ठ–413)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

0-4

लग्न कुण्डली

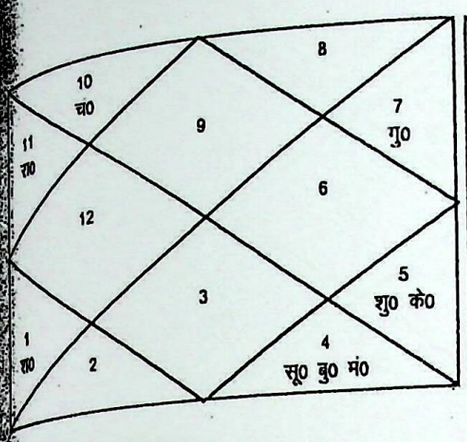

नवमांश

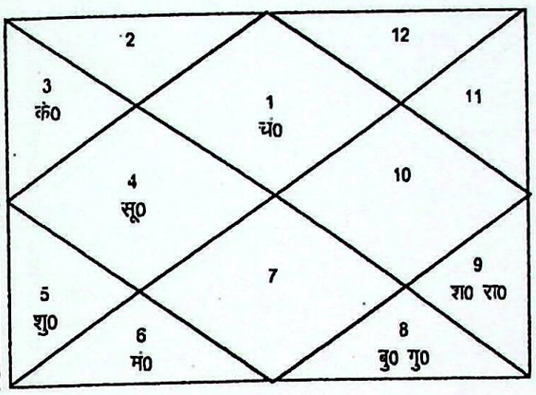

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

गुरू - गुरू	
07-01-2004 से 25-02-2006 तक	
गुरू	20–04–2004
शनि	21--08–2004
बुध	10–12–2004
केतु	25–01–2005
शुक्र	03–06–2005
सूर्य	11–07–2005
चंद्र	15–09–2005
मङ्गल	30–10–2005
राहु	25–02–2006

रोगी का परिचयः-

नाम – केतकी
जन्मतिथि – 19 जुलाई 1970
समय – 05.00 PM
स्थान – गाजियाबाद।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक केतकी विषाद–अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 अक्टूबर, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में मंगल कर्क राशि में अष्टम भाव में बैठा है, जिसे चन्द्रमा सप्तम दृष्टि से देखकर जातक को विषाद–अवसाद का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ सारावली में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि कर्क राशिस्थ भौम, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक– अधिक रोगों से दुःखी निम्न आचरण वाला, कुरूप एवं शोक से युक्त होता है।"[1]

इस श्लोक में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए अधिक रोगों से दुःखी, निम्न आचरण वाला एवं शोक से युक्त आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "विषाद–अवसाद" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में गुरू की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 16 सितम्बर 2005 से 30 अक्टूबर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि गुरू की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को शस्त्र भय, गुदा द्वार के रोग, अपच, भूख में कमी तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ा होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– बहुभिर्व्याधिभिरार्तो नीचाचारो विरूपदेहश्यच।
2– शशिराशौ भुतनये शशिना दृष्टे सशोकश्च।। (सारावली अध्याय–25, श्लोक–44) पृष्ठ–172
शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वहिनमान्द्यमजीर्णता।
पीडाशत्रुकृता भूतिर्भामप्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–45, पृष्ठ–641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

0-5

लग्न कुण्डली

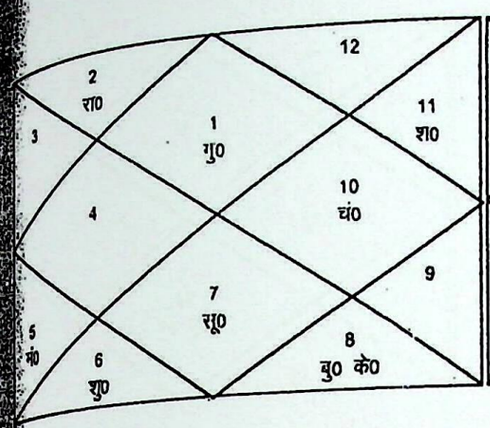

नवमांश

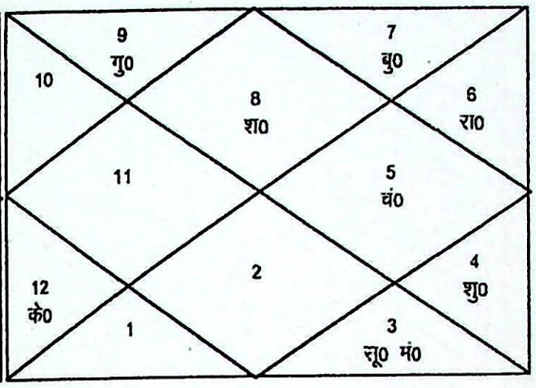

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शनि - शनि	
09-04-2004 से 12-04-2007 तक	
शनि	30-09-2004
बुध	04-03-2005
केतु	07-05-2005
शुक्र	08-11-2005
सूर्य	02-01-2006
चंद्र	02-04-2006
मङ्गल	05-06-2006
राहु	18-11-2006
गुरू	12-04-2007

रोगी का परिचयः-

नाम	–	जुगल
जन्मतिथि	–	12 नवम्बर 1964
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक जुगल विषाद--अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 जनवरी, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में सिंह राशि में मंगल स्थित है जो शनि के सप्तम दृष्टि से पीड़ित होकर जातक को विषाद-अवसाद का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ सारावली में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि सिंह राशिस्थ मंगल शनि से दृष्ट हो तो जातक- वृद्धाकृति, निर्धन तथा दुःखी होता है।"[1]

इस श्लोक में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए वृद्धाकृति तथ दुःखी आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "विषाद-अवसाद" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में शनि की ही अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 01 अक्टूबर 2004 से 04 मार्च 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार- "यदि शनि की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, झगड़ा, भय, भोजन का अभाव, धन की हानि और शत्रुओं से भय होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- वृद्धाकारोनिःस्वः परमवेश्मभ्रमणशीलवान् दुःखो।
दिनकरराशौ रूधिरे दिनकरतनयेन संदष्टे।। (सारावली अध्याय-25, श्लोक-54) पृष्ठ-173

2- बुद्धिनाशं कलिं भीतिमन्नापामादिहानिकृत्।
धनहानिर्भयं शत्रोः शनेः शन्यन्तरे बुधः।। (होरारत्नम् अध्याय-9, अथ शनिविदिशाफलम्, श्लोक-2,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

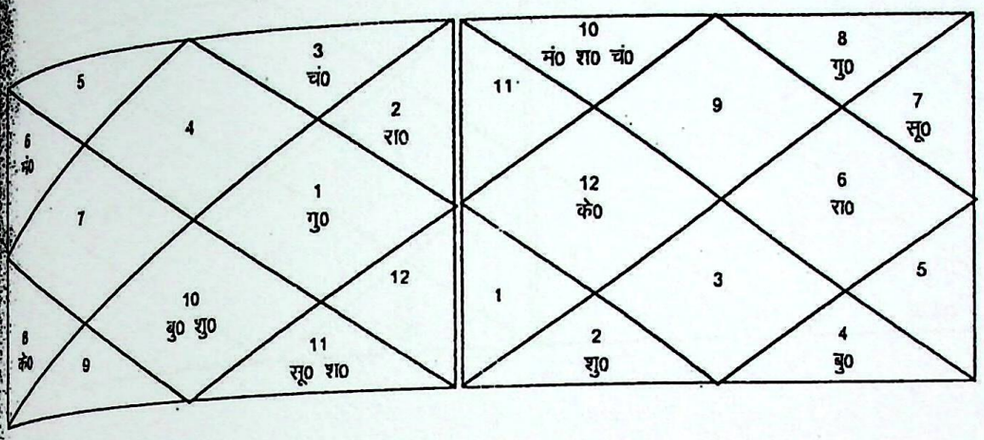

नवमांश

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

शनि – मङ्गल	
13-09-2005 से 22-10-2006 तक	
मङ्गल	06–10–2005
राहु	06–12–2005
गुरू	29–01–2006
शनि	02–04–2006
बुध	29–05–2006
केतु	22–06–2006
शुक्र	29–08–2006
सूर्य	19–09–2006
चंद्र	22–10–2006

रोगी का परिचयः-

नाम – कंचन
जन्मतिथि – 12 फरवरी 1965
समय – 05.00 PM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कंचन विषाद–अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 15 अप्रैल, 2006 को आयी था। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है जो लग्न का स्वामी भी है यह योग जातक को विषाद-अवसाद का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ सारावली में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि कुण्डली में बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक–द्वेषी, पतित, नीच, नेत्र रोगी, आलसी, अशान्त तथा सदा दुःखी होता है।"[1]

इस श्लोक में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए नीच, आलसी, अशान्त तथा सदा दुखी आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "विषाद–अवसाद" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 03 अप्रैल 2006 से 29 मई 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, धन की हानि, शरीर में ज्वर आदि रोग, भोजन की कमी तथा मित्रों की भी कमी होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- द्वेष्यः पतितः क्षुद्रो नयनरूगार्तोऽलसो भवेद्विकलः।
चन्द्रे तथान्यजातो द्वादशगे नित्यपरिभूतः।। (सारावली अध्याय–30, श्लोक–25) पृष्ठ–217

2- सर्वथा बुद्धिनाशाश्च धनहानिर्ज्वरस्तनौ।
वस्त्रान्नसुहृदां नाशो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–24, पृष्ठ–638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

10-7

लग्न कुण्डली

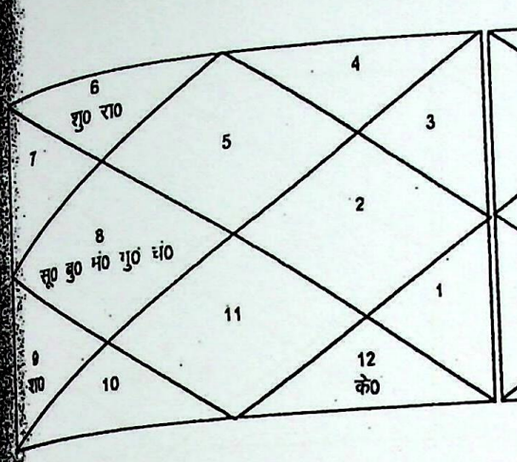

नवमांश

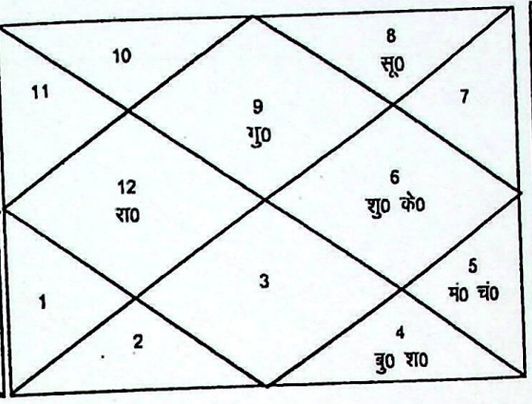

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शुक्र - मङ्गल	
21-10-2005 से 21-12-2006 तक	
मङ्गल	15–11–2005
राहु	18–01–2006
गुरू	14–03–2006
शनि	21–05–2006
बुध	20–07–2006
केतु	15–08–2006
शुक्र	25–10–2006
सूर्य	16–11–2006
चंद्र	21–12–2006

रोगी का परिचयः-

नाम – राजकुमार
जन्मतिथि – 30 नवम्बर 1959
समय – 0/50 AM
स्थान – वाराणसी।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक राजकुमार विषाद-अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 10 फरवरी, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में सूर्य तथा चंद्रमा एक साथ चतुर्थ भाव में स्थित होकर जातक को विषाद-अवसाद का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ सारावली में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि चतुर्थ भाव में सूर्य व चन्द्रमा हों तो जातक-बान्धव-पुत्र-सुख से रहित, दरिद्री महाजड़ प्रकृति व अधिक मूर्ख स्वभाव का होता है।"[1]

इस श्लोक में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए सुख से रहित, दरिद्र, महाजड़ प्रकृति (अधिक मूर्ख स्वभाव) आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "विषाद-अवसाद" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत गुरू की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 19 जनवरी 2006 से 14 मार्च 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार- "यदि मंगल की अन्तर्दशा में गुरू की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, दुखी, सन्तापी, कलही, चिन्तित तथा अभावग्रस्त होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- बान्धवसुतसुखहीनो दारिद्रययुतो महाजडप्रकृतिः।
चन्द्रे रसातलस्थे भास्करसहिते पुमान् जातः।। (सारावली अध्याय-31, श्लोक-3) पृष्ठ-228

2- मतिनाशं तथा दुःखं संतापकलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं भौमभौमान्तरो गुरूः।। (होरारत्नम् अध्याय-9, अथ भौमविदिशाफलम्, श्लोक-3, पृष्ठ-420)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

-8

लग्न कुण्डली

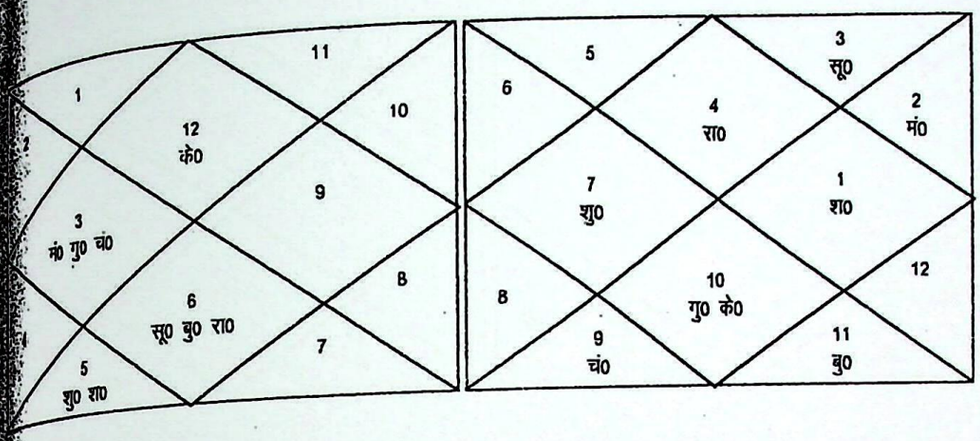

नवमांश

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

गुरू - सूर्य	
07-01-2005 से 25-10-2005 तक	
सूर्य	21–01–2005
चंद्र	15–02–2005
मङ्गल	02–03–2005
राहु	15–04–2005
गुरू	24–05–2005
शनि	09–07–2005
बुध	20–08–2005
केतु	07–09–2005
शुक्र	25–10–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – हरप्रीत कौर
जन्मतिथि – 04 अक्टूबर 1977
समय – 5.00 PM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक हरप्रीत कौर विषाद–अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग् जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 10 जनवरी, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तीन पापी ग्रह सूर्य, बुध, राहु एक ही राशि में उपस्थित होकर जातक को विषाद–अवसाद का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ सारावली में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि जन्म के समय तीन पाप ग्रहों की स्थिति एक राशि में हो तो जातक भाग्यहीन, दरिद्री, दुःखी, बुरे रूप वाला एवं विनय से हीन होता है।"[1]

इस श्लोक में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए भाग्यहीन, दुःखी और विनय से हीन आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "विषाद–अवसाद" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 08 जनवरी 2005 से 21 जनवरी 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की ही प्रत्यंतर दशा हो तो जातक उद्वेगी, स्त्री से पीड़ा युक्त, मस्तक में दर्द से पीड़ित तथा विवादी होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- पापास्त्रयोऽपि मिलिताः कुर्वन्ति नरं सुदुर्भगं लोके।
दारिद्रयदुःखतप्तं गर्हितरूपं विनयहीनम्।। (सारावली अध्याय–16, श्लोक–38 पृष्ठ–108)

2- उद्वेगोऽथ बलं वित्तं दारार्तिः शिरसि व्यथा।
ब्राम्हणन विवादश्र सूर्यः स्वविदशां गतः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ रवेर्विदशाफलम्, श्लोक–1, पृष्ठ–406)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

सं0-09

लग्न कुण्डली

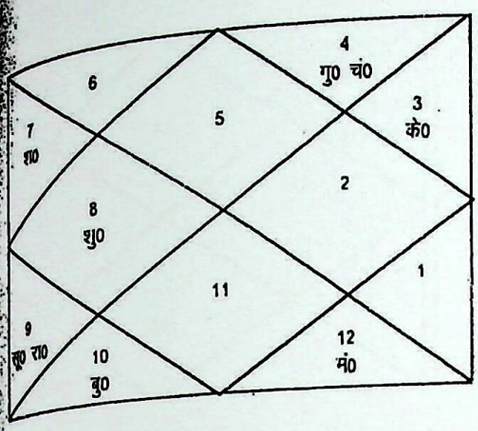

नवमांश

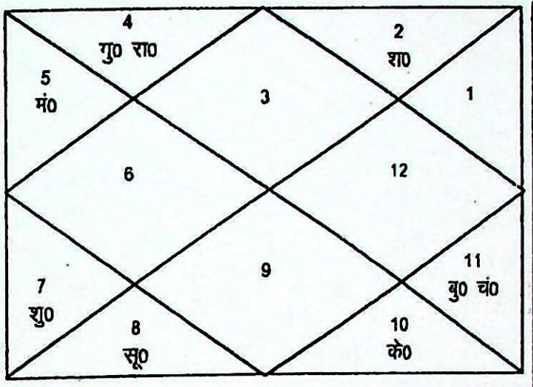

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

मंगल - राहु	
09-11-2005 से 27-11-2006 तक	
राहु	05-01-2006
गुरू	26-02-2006
शनि	26-04-2006
बुध	19-06-2006
केतु	11-07-2006
शुक्र	14-09-2006
सूर्य	03-10-2006
चंद्र	05-11-2006
मङ्गल	27-11-2006

रोगी का परिचयः-

नाम – सरोजनी श्रीवास्तव
जन्मतिथि – 10 जनवरी 1955
समय – 09.00 PM
स्थान – दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक सरोजनी श्रीवास्तव विषाद-अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 05 दिसम्बर, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में लग्नेश सूर्य पंचम भाव में राहु के साथ है और शनि की तीसरी दृष्टि से पीड़ित है। अतएव पंचम भाव पापग्रस्त होकर जातक को अवसाद रोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः-

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो भय के कारण उन्माद रोग होता है।"[1]

रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का रोग आयुर्वेद के अनुसार विषाद अवसाद रोग की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत राहु की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 10 नवम्बर 2005 से 05 जनवरी 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार- "यदि राहु की अन्तर्दशा में राहु की ही प्रत्यंतर दशा हो तो जातक बन्धन, अनेक प्रकार का रोग, अनेक प्रकार की चोट तथा कष्ट एवं मित्रों से भयभीत होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग- अध्याय-12, सूत्र-47, पेज-182)

2- बन्धनं बहुधा रोगो बहुघातः सुहृदभयम्।
राहवन्तर्दशायां च राहोः प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-29, पृष्ठ-639)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

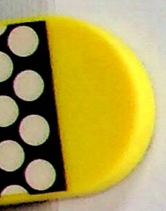

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

10-10

लग्न कुण्डली

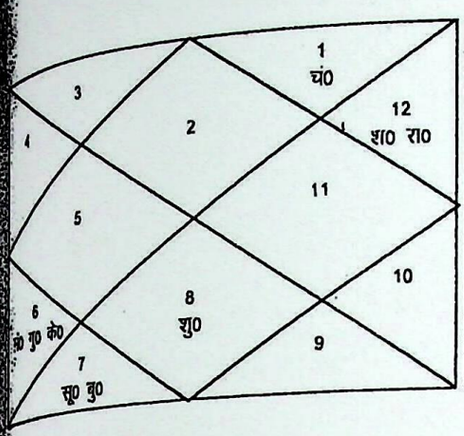

नवमांश

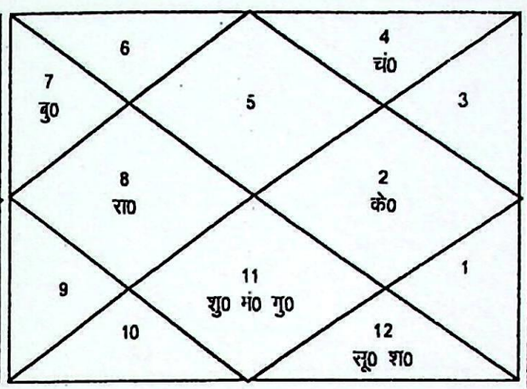

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

मंगल - राहु	
17-11-2005 से 05-12-2006 तक	
राहु	14-01-2006
गुरू	04-03-2006
शनि	04-05-2006
बुध	28-06-2006
केतु	20-07-2006
शुक्र	23-09-2006
सूर्य	12-10-2006
चंद्र	13-11-2006
मङ्गल	05-12--2006

रोगी का परिचयः-

नाम	–	विनीता श्रीवास्तव
जन्मतिथि	–	04 नवम्बर 1968
समय	–	07.30 PM
स्थान	–	फैजाबाद।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक विनीता श्रीवास्तव विषाद-अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 जुलाई, 2006 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में मंगल और केतु स्थित है और पंचम भाव पर राहु ग्रस्त शनि की सप्तम दृष्टि भी है, जो जातक को मानसिक अवसाद रोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः-

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो भय के कारण उन्माद रोग होता है।"[1]

रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का रोग आयुर्वेद के अनुसार विषाद अवसाद रोग की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 29 जून 2006 से 20 जुलाई 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार- "यदि राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, भय, विघ्न, धन हानि, सर्वत्र भय का वातावरण, सर्वत्र कलह तथा उद्वेग होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग- अध्याय-12, सूत्र-47, पेज-182)
2. बुद्धिनाशो भयं विघ्नो धनहानिर्महद्भयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगो केतो प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-33, पृष्ठ-639)

CC0. Mahaarishi Maharishi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

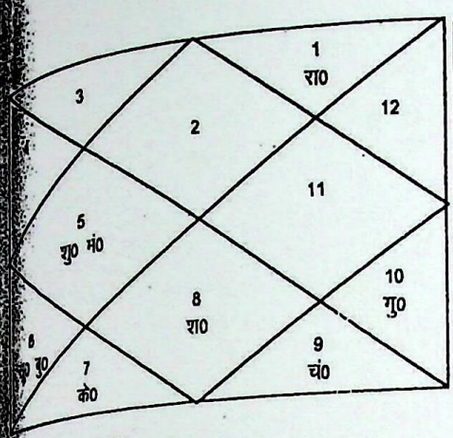

नवमांश

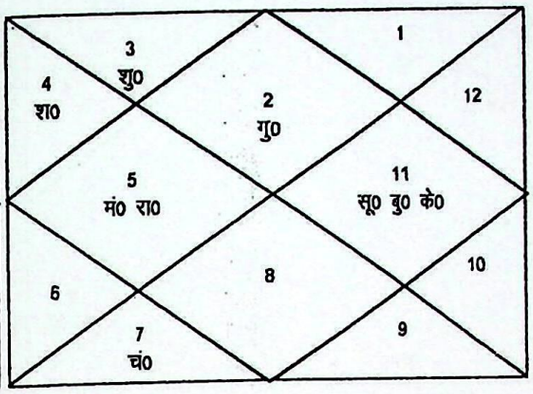

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

चंद्र - बुध	
10-07-2005 से 10-12-2006 तक	
बुध	22–09–2005
केतु	22–10–2005
शुक्र	17–01–2006
सूर्य	12–02–2006
चंद्र	25–03–2006
मङ्गल	25–04–2006
राहु	11–07–2006
गुरू	19–09–2006
शनि	10–12–2006

रोगी का परिचयः-

नाम – गुड्डू
जन्मतिथि – 22 सितम्बर 1985
समय – 09.45 PM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक गुड्डू विषाद--अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 25 सितम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचमेश बुध स्वयं अपने घर में पापी ग्रह सूर्य के साथ स्थित है, जो जातक के मन में विषाद–अवसाद रोग उत्पन्न कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचमेश पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होताा है।"[1]

उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को "विस्मयशील बुद्धि" कहा गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का रोग आयुर्वेद के अनुसार विषाद अवसाद रोग की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चन्द्रमा की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 23 सितम्बर 2005 से 22 अक्टूबर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि बुध की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को कठोर भोजन पाने वाला, पेट के रोग से युक्त और रक्त तथा पित्त से उत्पन्न व्याधियों से दुखी होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)
2. कठिनान्नस्य संप्राप्तिरूदरे रोगसंभवः।
कामलं रक्तपित्तं च सौम्य सौम्यान्तरा शिखी। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ बुधविदिशाफलम्, श्लोक–2, पृष्ठ–450)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

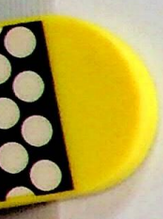

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

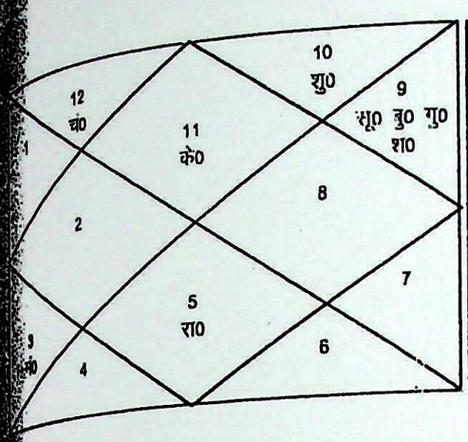

नवमांश

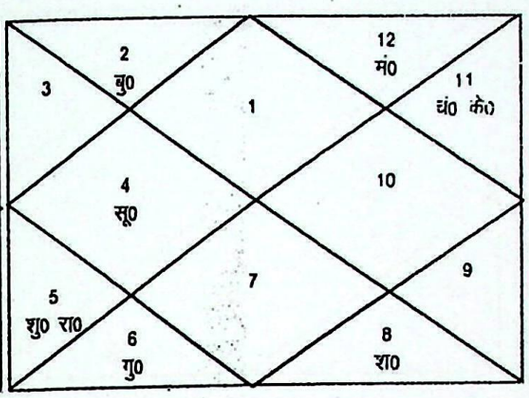

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

चंद्र - शनि	
14-10-2004 से 14-05-2006 तक	
शनि	14-01-2005
बुध	05-04-2005
केतु	08-05-2005
शुक्र	13-08-2005
सूर्य	12-09-2005
चंद्र	29-10-2005
मङ्गल	02-12-2005
राहु	28-02-2006
गुरू	14-05-2006

रोगी का परिचयः-

नाम – प्रमोद सिंह
जन्मतिथि – 26 दिसम्बर 1960
समय – 11.00 AM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक प्रमोद सिंह विषाद--अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 01 नवम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में पाप ग्रह मंगल स्थित है और पंचममेश स्वयं पाप ग्रह सूर्य और शनि से युक्त है, जो जातक के विचारों को विकृत कर उसे मनोरोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" तथा "जातक तत्वम्" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः-

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो भय के कारण उन्माद होता है।"[1]

तथा

"यदि पंचमेश पापग्रस्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि वाला होता है।"[2]

उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग को "उन्माद" तथा "विस्मयशील बुद्धि" कहा गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का रोग आयुर्वेद के अनुसार विषाद अवसाद रोग की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चन्द्रमा की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 30 अक्टूबर 2005 से 02 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार- "यदि शनि की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की तेजस्विता में कमी, पुत्र को कष्ट, अग्नि से भय, शत्रु से भय तथा वात पित्त से कष्ट होता है।"[3] प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग- अध्याय-12, सूत्र--47, पेज--182)
2. सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्- पंचम विवेक, सूत्र-19, पेज-137)
3. तेजोहानिः पुत्रघातो वह्नि भीन्ती रिपोर्भयम्। [illegible] (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-53, पृष्ठ-642)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषाद-अवसाद रोगी की जन्म कुण्डली

20-13

लग्न कुण्डली

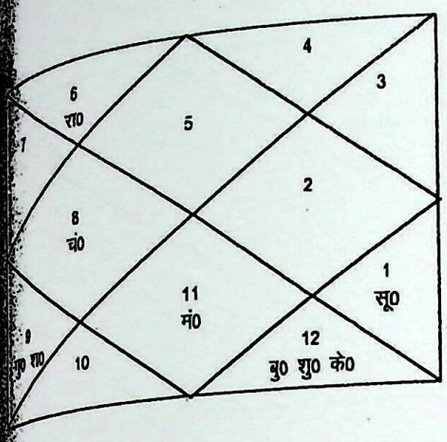

नवमांश

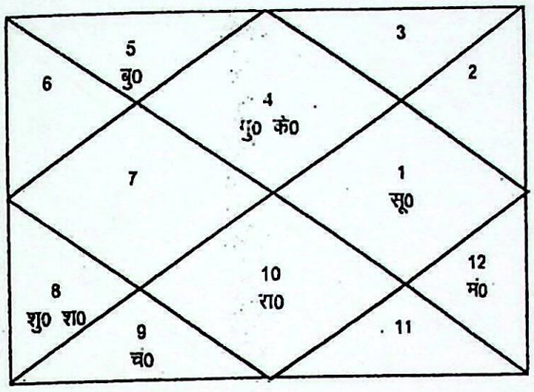

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

सूर्य - शुक्र	
15-03-2005 से 15-03-2006 तक	
शुक्र	15–05–2005
सूर्य	03–06–2005
चंद्र	03–07–2005
मङ्गल	24–07–2005
राहु	18–09–2005
गुरू	06–11–2005
शनि	03–01–2006
बुध	24–02–2006
केतु	15–03–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – जगदीश
जन्मतिथि – 15 अप्रैल 1960
समय – 02.45 PM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक जगदीश विषाद–अवसाद रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 01 अगस्त, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचमेश गुरू स्वयं पंचम भाव में शनि के साथ स्थित है जो रोगी को अवसादग्रस्त बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचमेश पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होता है।"[1]

रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का रोग आयुर्वेद के अनुसार विषाद अवसाद रोग की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत राहु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 25 जुलाई 2005 से 18 सितम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक स्त्री से लड़ने वाला, अचानक भयभीत तथा राजा एवं शत्रुओं से पीड़ित होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)

2– कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद्भयसंभवः।
राजतः शत्रुतः पीडा शुक्रे शुक्रान्तरा तमः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शुक्रविदिशाफलम्, श्लोक–5, पृष्ठ–466)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

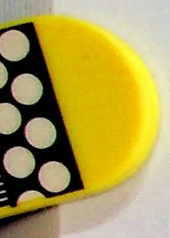

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यवस्थित चित्तता रोगी की जन्म कुण्डली

-14

लग्न कुण्डली

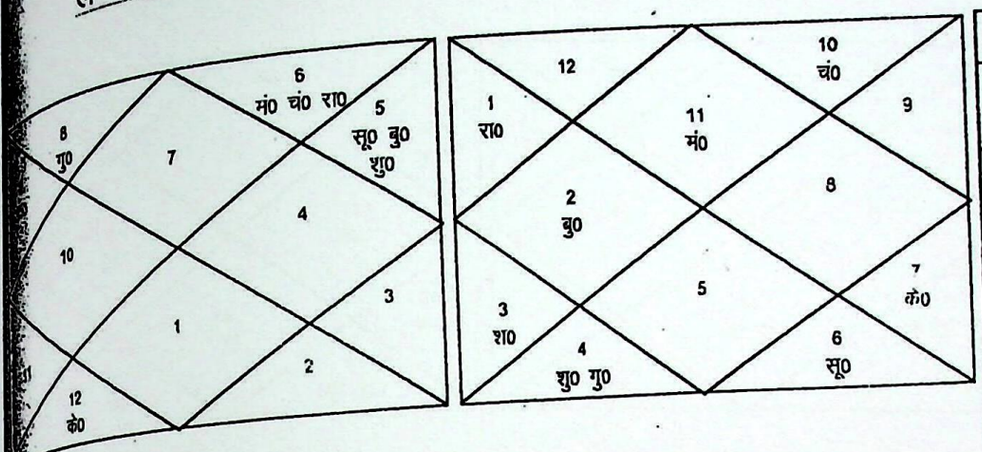

नवमांश

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

गुरू - केतु	
19-04-2005 से 25-03-2006 तक	
केतु	09–05–2005
शुक्र	05–07–2005
सूर्य	22–07–2005
चंद्र	20–08–2005
मङ्गल	09–09–2005
राहु	30–10–2005
गुरू	15–12–2005
शनि	08–02–2006
बुध	25–03–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – प्रमोद कुमार
जन्मतिथि – 04 सितम्बर 1959
समय – 10.00 AM
स्थान – वाराणसी।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक प्रमोद कुमार अव्यवस्थित चित्तता रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 फरवरी, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में व्यय भाव में मंगल, चन्द्रमा तथा राहु की युति जातक को अव्यवस्थित चित्तता रोग से पीड़ित करती है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि राहु व चन्द्रमा यदि पापग्रह के साथ बारहवें स्थान में स्थित हों तो मनुष्य उन्माद का रोगी तथा धोखेबाज स्वभाव वाला होता है।"[1]

रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "अव्यवस्थित चित्तता" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा अन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 09 फरवरी 2006 से 25 मार्च 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि केतु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, बड़ा उद्वेग, विद्या का नाश, अधिक भयभीत तथा कार्य में असफल होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

[1] राहिन्दू सपासपौ रिःफे उम्पादी कलहशीलः। (जातकतत्वम– मिश्र विवेक श्लोक–83, पृष्ठ–314)

[2] बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महाभयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत केतोः केत्वन्तरा बुधः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ केतोर्विदिशाफलम्, श्लोक–9, पृष्ठ–459)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya(MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यवस्थित चित्तता रोगी की जन्म कुण्डली

सं0–15

लग्न कुण्डली

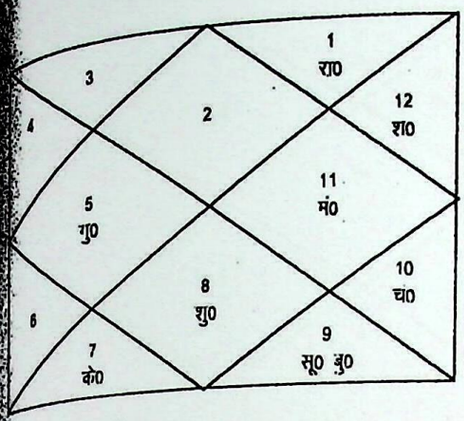

नवमांश

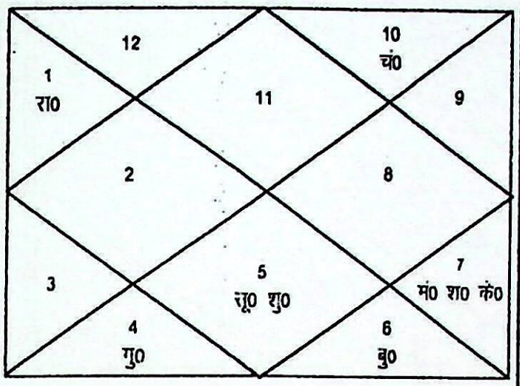

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

राहु – मङ्गल	
03–03–2005 से 21–03–2006 तक	
मङ्गल	25–03–2005
राहु	21–05–2005
गुरू	12–07–2005
शनि	12–09–2005
बुध	05–11–2005
केतु	27–11–2005
शुक्र	30–01–2006
सूर्य	19–02–2006
चंद्र	21–03–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	बलविन्दर कौर
जन्मतिथि	–	01 जनवरी 1968
समय	–	02.30 PM
स्थान	–	लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक बलविन्दर कौर अव्यवस्थित चित्तता रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, आलबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 26 सितम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में बुध अष्टम भाव में पाप ग्रह सूर्य के साथ स्थित होकर जातक को अव्यवस्थित चित्तता का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि तृतीय, षष्टम्, अष्टम् या व्यय स्थान में पापयुक्त बुध हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

उपर्युक्त रोग से उत्पन्न रोग को उन्माद कहा गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "अव्यवस्थित चित्तता" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 13 सितम्बर 2005 से 05 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, धन हानि, शरीर में ज्वर रोग, भोजन का अभाव तथा मित्रों से कष्ट होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्त्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)

2– सर्वथा बुद्धिनाशाश्च धनहानिर्ज्वरस्तनौ।
वस्त्रान्नसुहृदां नाशो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–24, पृष्ठ–638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यवस्थित चित्तता रोगी की जन्म कुण्डली

20-16

लग्न कुण्डली

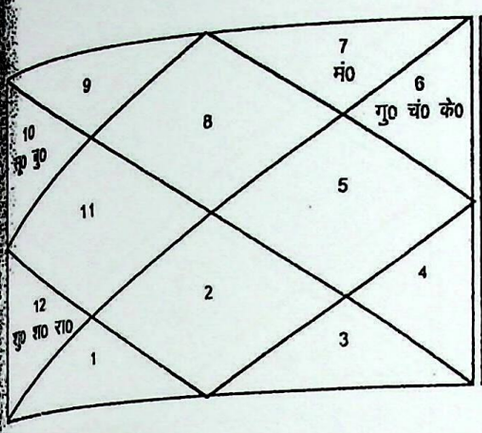

नवमांश

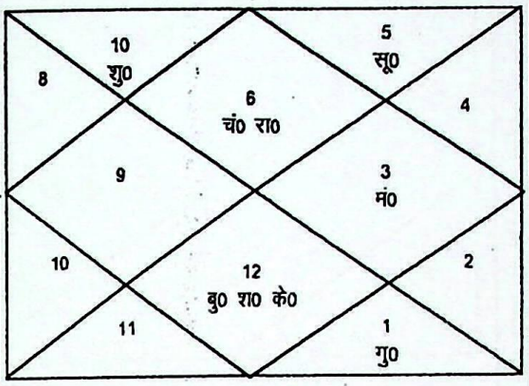

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

गुरू – मङ्गल	
05-03-2004 से 11-02-2005 तक	
मङ्गल	24–03–2004
राहु	15–05–2004
गुरू	30–06–2004
शनि	23–08–2004
बुध	10–10–2004
केतु	30–10–2004
शुक्र	26–12–2004
सूर्य	13–01–2005
चंद्र	11–02–2005

रोगी का परिचयः–

नाम	–	अवधेश
जन्मतिथि	–	08 फरवरी 1969
समय	–	02.00 AM
स्थान	–	गाजियाबाद।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक अवधेश कौर अव्यवस्थित चित्तता रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 20 जुलाई, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि राहु के साथ पंचम भाव में स्थित है जो जातक के मन को विकृत कर जातक को अव्यवस्थित चित्तता का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि कुण्डली में पञ्चमभाव में शनि हो तो जातक सुख–पुत्र–मित्र से रहित बुद्धिहीन, अचेत, पागल तथा दीन होता है।"[1]

इस श्लोक में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए बुद्धिहीन, अचेत, पागल तथा दीन आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "अव्यवस्थित चित्तता" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 01 जुलाई 2004 से 23 अगस्त 2004 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक के स्वामी की मृत्यु, अनेक प्रकार के कष्ट, धन हानि, भय का वातावरण, विकलता तथा कलह होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सुखसुतमित्रविहीनं मति रहितचेतसं त्रिकोणस्थः।
सोन्मादं रवितनयः करोति पुरूषं सदा दीनम्।। (सारावली–अध्याय–23, श्लोक–78 पृष्ठ 226)

2– स्वामिनाशस्तथा पीड़ा धनहानिर्महाभयम्।
वैकल्यं कलहस्त्रासो शनेः प्रत्यन्तरे भवेत।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–23, पृष्ठ–638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यवस्थित चित्तता रोगी की जन्म कुण्डली

20-17

लग्न कुण्डली

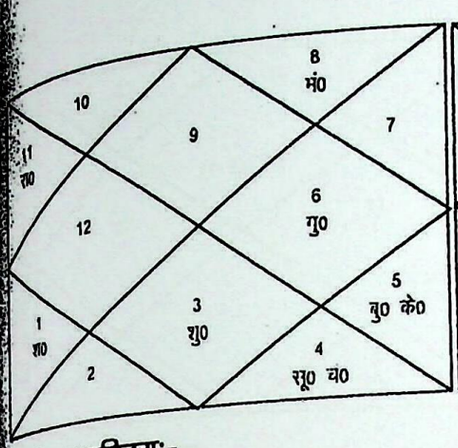

नवमांश

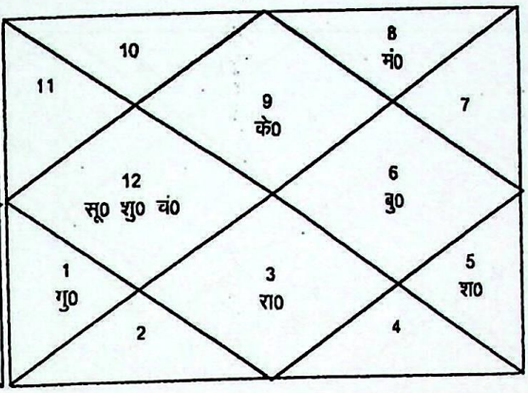

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

चंद्र - गुरू	
27-07-2005 से 27-11-2006 तक	
गुरू	01–10–2005
शनि	17–12–2005
बुध	25–02–2006
केतु	23–03–2006
शुक्र	13–06–2006
सूर्य	07–07–2006
चंद्र	17–08–2006
मङ्गल	15–06–2006
राहु	17–11–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – सविता
जन्मतिथि – 13 अगस्त 1969
समय – 05.00 PM
स्थान – बाराबंकी।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक सविता अव्यवस्थित चित्तता रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 नवम्बर, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि पंचम भाव में उपस्थित होकर जातक को अव्यवस्थित चित्तता का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि कुण्डली में पञ्चमभाव में शनि हो तो जातक सुख–पुत्र–मित्र से रहित बुद्धिहीन, अचेत, पागल तथा दीन होता है।"[1]

उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए बुद्धिहीन, अचेत, पागल आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "अव्यवस्थित चित्तता" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चन्द्रमा की दशा में गुरू की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 18 अगस्त 2006 से 15 जून 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि गुरू की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को शस्त्र भय, गुदाद्वार के रोग, अपच, भूख कम लगना तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ा होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सुखसुतमित्रविहीनं मति रहितचेतसं त्रिकोणस्थः।
सोन्मादं रवितनयः करोति पुरूषं सदा दीनम्।। (सारावली–अध्याय–23, श्लोक–78 पृष्ठ 226)

2– शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वहिनमान्द्यमजीर्णता।
पीडाशत्रुकृता भूतिर्भामप्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–45, पृष्ठ–641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

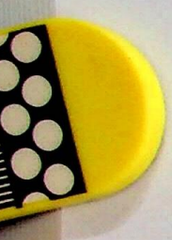

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यवस्थित चित्तता रोगी की जन्म कुण्डली

सं0–18

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

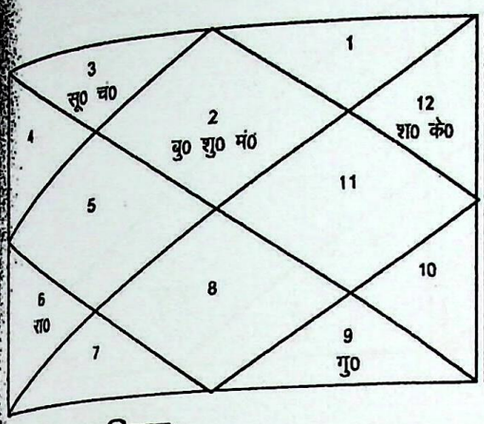

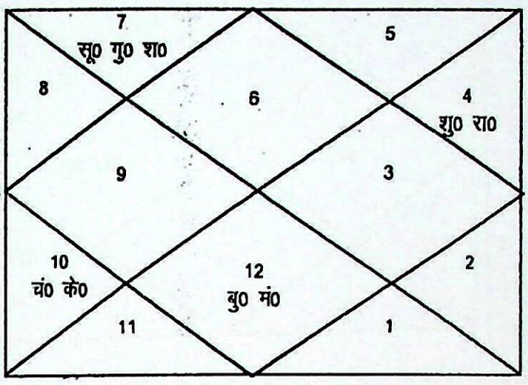

राहु – मङ्गल	
04-09-2005 से 22-09-2006 तक	
मङ्गल	26–09–2005
राहु	23–11–2005
गुरू	13–01–2006
शनि	13–03–2006
बुध	06–05–2006
केतु	29–05–2006
शुक्र	02–08–2006
सूर्य	20–08–2006
चंद्र	22–09–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	विनोद कुमार
जन्मतिथि	–	17 जून 1996
समय	–	05.00 AM
स्थान	–	लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक विनोद कुमार अव्यवस्थित–चित्तता रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 दिसम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में मंगल लग्न में लग्नेश के साथ है तथा षष्ठेश शुक्र भी लग्न में है, जो जातक को अव्यवस्थित चित्तता का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातक पारिजात" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि लग्न मंगल से दृष्ट हो तथा षष्ठेश दशम, सप्तम भाव अथवा लग्न में स्थित होतो जातक मन्त्राभिचारजन्य व्याधि से पीड़ित होता है।"[1]

इस श्लोक में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए मन्त्राभिचारजन्य व्याधि (जिसका अभिप्राय है– तांत्रिक क्रियाओं से उत्पन्न रोग) का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "अव्यवस्थित चित्तता" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत गुरू की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 24 नवम्बर 2005 से 13 जनवरी 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में गुरू की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, दुखी, संतापी, कलही, चिन्तित तथा अभावग्रस्तता रहती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– आरेक्षिते यदि विलग्नगृहेऽरिनाथे
मानेऽथवाऽस्ततनुगे कृतमाभिचारम्।
लग्नाधिपेन सहितेऽवनिजे विलग्ने
केन्द्रेऽथवा रिपुपतौ तनुगे तथा स्यात् (जातक पारिजात– जातक भङाध्यायः– श्लोक–93 पृष्ठ 291)

2– मतिनाशं तथा दुःखं संतापकलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं भौमभौमान्तरो गुरूः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ भौमविदिशाफलम्, श्लोक–3, पृष्ठ–420)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यवस्थित चित्तता रोगी की जन्म कुण्डली

क्र0–19

लग्न कुण्डली

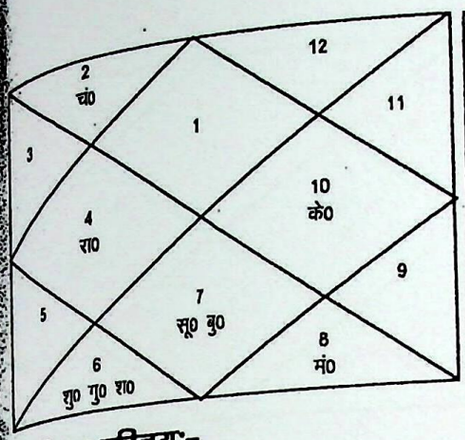

नवमांश

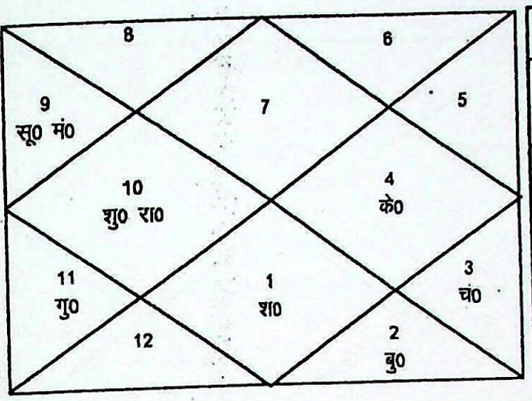

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

राहु – शुक्र	
08–02–2004 से 08–02–2007 तक	
शुक्र	08--08–2004
सूर्य	02--10–2004
चंद्र	02–01–2005
मङ्गल	05–03--2005
राहु	17–08–2005
गुरू	11–01–2006
शनि	02–07–2006
बुध	05--12–2006
केतु	08–02–2007

रोगी का परिचयः–

नाम	–	अमित दुबे
जन्मतिथि	–	26 अक्टूबर 1980
समय	–	06.00 PM
स्थान	–	कानपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक अमित दुबे अव्यवस्थित चित्तता रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 20 अगस्त, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में पाप ग्रह राहु स्थित है तथा चतुर्थेश चन्द्रमा भा मंगल की सप्तम दृष्टि से पापग्रस्त है, जिससे जातक अव्यवस्थित चित्तता के रोग से पीड़ित हो गया है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह हों तथा चतुर्थेश क्रूर ग्रह से युक्त हो तो जातक "विरूद्ध–चित्त" का होता है।"[1]

रोगी के परिजनों ने बताया कि यह रोग दो बार आत्म हत्या का असफल प्रयास कर चुका है।

रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि इस प्रकार का रोगी आयुर्वेद के अनुसार अव्यवस्थित चित्तता रोग की श्रेणी में आता है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 09 अगस्त 2004 से 02 अक्टूबर 2004 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को वातजन्य रोग, मस्तक से पीड़ा, राजा तथा शत्रुओं से कष्ट आदि होते है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सुखे क्रूरे क्रूरान्विते सुखेशे विरूद्धचितः। (जातकतत्वम्– प्रथम विवेक, श्लोक--322, पृष्ठ–82)

2– वातज्वरः शिरःपीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि शुक्रे शुक्रान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शुक्रविदिशाफलम्, श्लोक--2, पृष्ठ–165)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव्यवस्थित चित्तता रोगी की जन्म कुण्डली

सं0-20

लग्न कुण्डली

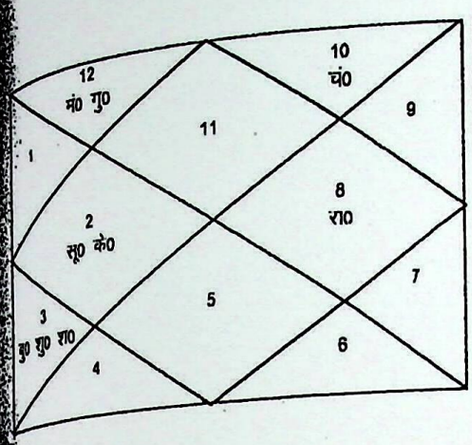

नवमांश

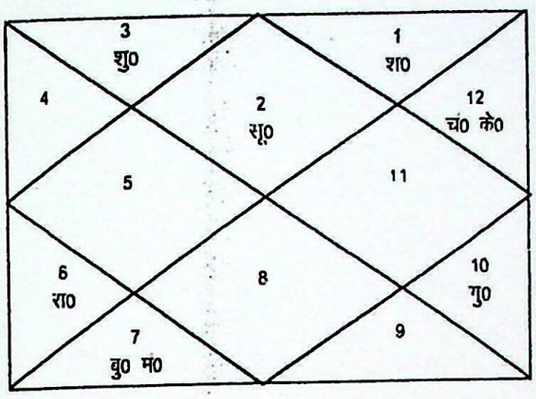

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

राहु - शुक्र	
23-04-2004 से 23-04-2007 तक	
शुक्र	23–10–2004
सूर्य	17–12–2004
चंद्र	17–03–2005
मङ्गल	20–05–2005
राहु	02–11–2005
गुरू	26–03–2006
शनि	17–09–2006
बुध	20–02–2007
केतु	23–04–2007

रोगी का परिचयः-

नाम – बबलू
जन्मतिथि – 30 मई 1975
समय – 01.00 AM
स्थान – इलाहाबाद।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक बबलू अव्यवस्थित चित्तता रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 02 नवम्बर, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि पंचम भाव में स्थित होकर जातक को अव्यवस्थित चित्तता का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि पंचम भाव में शनि हो तो जातक सुख, पुत्र, मित्र से रहित, बुद्धिहीन, अचेत, पागल तथा दीन होता है।"[1]

उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए बुद्धिहीन, अचेत, पागल आदि लक्षणों का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त है कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार "अव्यवस्थित चित्तता" रोग से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 24 अक्टूबर 2004 से 17 दिसम्बर 2004 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक वायु जन्य रोग, मस्तक से कष्ट तथा राजा एवं शत्रुओं से पीड़ित होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- सुखसुतमित्रविहीनं मति रहितचेतसं त्रिकोणस्थः।
सोन्मादं रवितनयः करोति पुरूषं सदा दीनम्।। (सारावली–अध्याय–23, श्लोक–78 पृष्ठ 226)

2- वातज्वरः शिरःपीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि शुक्रे शुक्रान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय--9, अथ शुक्रविदिशाफलम्, श्लोक–2, पृष्ठ--465)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-सप्तम

भ्रम, विभ्रम अवस्तुबोधन,

संविभ्रम : स्थिर व्यामोह, मिथ्या-विश्वास संघर्ष

(Illusion, Hallucination, Paranoia, Delusion)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय सप्तम

भ्रम, विभ्रम या अवस्तुबोधन, संविभ्रम : स्थिर व्यामोह, व्यामोह–मिथ्याविश्वास–संघर्ष

(Illusion, Hallucination, Paranoia, Delusion)

भ्रम (Illusion)

रोग का परिचयः–

यह ज्ञान, बोध या उपलब्धि के व्यतिक्रम का महत्वपूर्ण विकार है।[1]

लक्षणः–[2]

1. किसी सत्य वस्तु में असत्य वस्तु का भान या ज्ञान होना भ्रम कहलाता है।
2. किसी वस्तु में अपने स्वरूप की न छोड़ते हुए, दूसरी वस्तु की मिथ्या प्रतीति होना भ्रम है, इसे दर्शनशास्त्र में विवर्त या अध्यास कहते हैं। जैसे– रस्सी का अपने रूप का बिना परित्याग किये सर्प रूप में प्रतीत होना, मिथ्या प्रतीति या भ्रम है।
3. भ्रम, भ्रान्ति, विपर्यय या मिथ्याज्ञान– ये पर्यायवाची शब्द हैं। जो पदार्थ जैसा है, वैसा न दिखलाई देकर दूसरा ही मालूम पड़े, जैसे– सीप को चांदी समझना भ्रान्ति या भ्रम है।

विभ्रम या अवस्तुबोधन

(Hallucination)

रोग परिचयः–

यह भ्रम के आगे की स्थिति है, जिसका कोई आधार नहीं होता। यह अस्तित्वविहीन मिथ्या ज्ञान है।[3]

1– विद्याधर शुक्ल– काय चिकित्सा पृष्ठ--243

2– तत्रैव– पृष्ठ–243

3– तत्रैव– पृष्ठ–244

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लक्षण:–[4]

1. जब किसी वस्तु का अस्तित्व न होने पर भी उस वस्तु की सत्ता प्रतीत होती है, तो इस अवस्तु–बोधन को विभ्रम कहते हैं। इसका कोई आश्रय या मूलाधार नहीं होता। इसलिए इसको निर्मूल भ्रम कहते हैं।
2. इसमें कोई वाहय उद्दीपक नहीं होता है, फिर भी इन्द्रियार्थों की (शब्द–स्पर्श–रूप–रस–गन्ध की) मिथ्या प्रतीति होती हे।
3. रोगी को विभिन्न प्रकार की धमकी, तिरस्कार अथवा प्रशंसा भरी ध्वनियां सुनाई देती हैं जो अवास्तविक एवं अस्तित्वविहीन होती हैं।
4. रोगी को दिव्य अलौकिक चमत्कारपूर्ण दृश्य दिखलाई देते हैं, जो मिथ्या होते हैं।
5. उसे अस्तित्वविहीन वस्तुओं के स्वाद का अनुभव होता है।
6. रोगी को विचित्र गन्ध मालूम होती है, जो वस्तुतः अस्तित्वविहीन होता है। इसी प्रकार–
7. रोगी को अस्तित्वविहीन कृमियों के शरीर पर रेंगने या उसके स्पर्श का अनुभव होता है।

संविभ्रम : स्थिर व्यामोह

(Paranoia)

रोग परिचय:–

जब किसी व्यक्ति में भ्रम का स्थिर निवास होता है, तो उसे 'संविभ्रम' कहते हैं। यह एक प्रकार की प्रवृद्ध भ्रमावस्था है।[5]

4– तत्रैव– पृष्ठ–244
5– तत्रैव– पृष्ठ–245

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लक्षण:–[6]

1. रोगी को सदैव यह भ्रम रहता है कि कोई उसे कष्ट पहुंचाने के लिए उद्यत है और हो सकता है कि वह भोजन में विष मिलाना चाहता हो।
2. उसका भ्रम स्थायी होता है और अपने अगल–बगल की प्रत्येक वस्तु को वह खतरनाक समझता है।
3. रोगी अहंकारी होता है और अपनी जिद पर हठ करता है।
4. वह महत्वाकांक्षी और उच्च अभिलाषा वाला होता है।
5. रोगी किसी पर विश्वास नहीं करता है और सबको सन्देह की दृष्टि से देखता है।
6. वह कल्पना लोक में विचरण करता है और दूसरों को सजा देने की बात सोचता है।
7. उसे ऐसा अनुभव होता है कि सभी लोग उसके विरूद्ध हैं।
8. उसे अपनी हत्या कराये जाने का भ्रम बराबर बना रहता है।

व्यामोह–मिथ्याविश्वास–संघर्ष

(Delusion)

रोग परिचय:–

यह एक ऐसी गलत धारणा वाला रोग है, जिसे किसी भी प्रमाण से सही नहीं सिद्ध किया जा सकता। यह एक प्रकार का उन्माद जैसा रोग है, जो अनेक प्रकार के मानस रोगों में एक लक्षण के रूप में पाया जाता है।[7]

लक्षण:–

1. रोगी द्वारा अपने को किसी भी क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम और महानतम होने का दावा करना, उसका मिथ्याविश्वास–संघर्ष कहा जाता है।

6– तत्रैव– पृष्ठ–245

7– तत्रैव– पृष्ठ–246

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. वह आशा के पाश में बंधा रहता है तथा कामी, क्रोधी और लोभी होता है।

3. उसमें ईर्ष्या और द्वेष की भावना अधिक होती है। वह महान अहंकारी होता है और उसे अपने बल तथा धन–जन का अपार दर्प रहता है।

4. किसी क्षेत्र में सफलता मिल जाने पर ऐसे व्यक्ति के मानसपटन पर मिथ्या विश्वास का जन्म होता है।

जातक ग्रन्थों में उपरोक्त रोगों के लक्षणः–

यह पूर्व अध्याय में स्पष्ट किया जा चुका है कि जातक ग्रन्थों में मानसिक रोगों के विभिन्न वर्गों के नाम आयुर्वेद में प्रयुक्त रोगों के नामों से भिन्न है, तथापि जातकग्रन्थों में उपरोक्त सभी रोगों के लक्षण तथा योग प्राप्त हो जाते हैं।

जातक ग्रन्थों में उपरोक्त रोगों के विभिन्न लक्षणों का उल्लेख है जैसे– मतिभ्रम, हीन बुद्धि, जड़ बुद्धि तथा चंचल बुद्धि आदि। सभी लक्षण उपरोक्त रोगों से ही सम्बन्धित हैं।

जातक ग्रन्थों में उल्लिखित उपरोक्त रोगों के योगः–

जातक ग्रन्थ "जातक पारिजात" में उल्लिखित मतिभ्रम का योगः–

1– यदि बुध और चन्द्रमा संयुक्त होकर केन्द्रभावों में स्थित हों अथवा दोनों पापग्रह के नवांश में स्थित हों तो जातक बौद्धिक विभ्रम से पीड़ित होता है।[8]

2– **जातक ग्रन्थ जातक तत्वम में "हीन बुद्धि" के योगों का उल्लेखः–**

जातक ग्रन्थ "जातक तत्वम" में "हीन बुद्धि" तथा "जड़ बुद्धि" का उल्लेख अध्याय–2 में किया जा चुका है तथापि इनके कुछ योगों को पुनः उद्धृत किया जा रहा है, क्योंकि इस अध्याय में इन योगों के आधार पर ही जन्म कुण्डलियों की समीक्षा की गयी है। हीन बुद्धि के योग निम्नलिखित हैं।[9]

8– केन्द्रस्थितौ सौयनिशाकरौ वा सौम्यांशहीनौ भ्रमसंयुतः स्यात्।
केन्द्रस्थिता मन्दनिशाकरार्का जडो भवेदत्र मधूपभोक्ता।। (जातक पारिजात –जातकभङ्गाध्यायः, श्लोक–81)

9– लग्ने चन्द्रे मन्दारदृष्टे हीनधीः।।
सुतेशे क्रूरषष्ट्यंशे हीनधीः।।
मन्दाराकौश्चन्द्रं पश्यन्ति मौर्ख्यकराः।।
सूते जीवे मेधानाशः।। (जातकतत्वम्, पंचम विवेक–सूत्र–26 से 29, पृष्ठ–138)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1– यदि लग्न में चन्द्रमा स्थित हो तथा उसे शनि व मंगल देखते हों तो मनुष्य हीनबुद्धि अर्थात कम बुद्धि वाला होता है।

2– यदि पंचमेश क्रूर षष्ट्यंश में हो तो मनुष्य हीनबुद्धि होता है।

3– शनि, मंगल व सूर्य ये तीनों यदि चन्द्रमा को देखते हों तो मनुष्य मूर्ख होता है।

4– यदि बृहस्पति पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य की स्मरणशक्ति का नाश होता है।

"जातक तत्वम" में "जड़बुद्धि" के योगों का उल्लेख निम्नलिखित है:–[10]

1– चन्द्रमा, शनि व गुलिक यदि ये तीनों केन्द्र स्थानों में हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

2– धनस्थान में गुलिक व सूर्य स्थित हों तथा उन्हें पापग्रह देखते हों अथवा शनि व तृतीयेश दोनों एक साथ हों तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

3– यदि द्वितीयेश पापग्रहों से युक्त होकर दशम स्थान में स्थित हों तो मनुष्य जनसमुदाय के सामने जड़बुद्धि हो जाता है। अर्थात् लोगों के सामने उसकी बुद्धि ठीक कार्य नहीं करती है।

4– तृतीयेश यदि राहु के साथ हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

5– पंचम स्थान में शनि लग्नेश होकर स्थित हो तथा पंचमेश को शनि देखता हो तथा पंचमेश पापग्रहों से युत हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

6– गुलिक व शनि दोनों पंचम स्थान में हो तथा शुभग्रहों का कोई सम्बन्ध वहां न हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।

10– केन्द्रगा मन्देन्दुगुलिका जडः।।
धनेगुलिकाकौ पापदृष्टौ वा सार्कजे सोत्थपे जडः।।
सपापे धनेशे खे सभाजडः।।
सतमसि सोत्थपे जडः।।
सुतेमन्द्र लग्नेशे मन्ददृष्टे सुतेशे सपापे जडः।।
गुलिकार्कजौ सुते शुभयोगहीने जडः।। (जातकतत्वम–पंचम विवेक–सूत्र–20 से 25, पृष्ठ–137)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kanchodi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जातकतत्वम में उल्लिखित "चंचल बुद्धि" के योग निम्नलिखित हैं:–[11]

1– सूर्य व चन्द्रमा लग्न या त्रिकोण स्थानों में कहीं हों तो मनुष्य चंचल बुद्धि वाला होता है।

2– यदि बुध द्वितीय स्थान में स्थित हो तों मनुष्य चंचल बुद्धि वाला होता है।

3– यदि बुध द्वितीय स्थान में स्थित हो तथा वह निर्बल हो और पाप ग्रह उसे देखते हों तो मनुष्य की विचारधारा अस्थिर होती है। अर्थात् वह अस्थिर मन वाला होता है।

यह दृष्टव्य है कि विभिन्न योगों के लिए सूत्रों अथवा श्लोकों की रचना प्राचीन ज्योतिषाचार्यों ने शतप्रतिशत सम्भावना के दृष्टिकोण से की है, इसीलिए कुछ सूत्रों तथा श्लोकों में तीन या चार स्थितियों का विवरण प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ निम्न सूत्र दर्शनीय है:–

"सुतेमन्दे लग्नेशे मन्द्रदृष्टे सुतेशे सपापे जड़:।"

उपरोक्त सूत्र में चार स्थितियों का विवरण है– 1– पंचम भाव में शनि का स्थित होना, 2– शनि का लग्नेश होना, 3– पंचमेश का शनि द्वारा दृष्ट होना, 4– पंचमेश का पाप ग्रहों से युत होना।

सूत्र के रचनाकार के मत के अनुसार यदि किसी जन्म कुण्डली में यह चारो स्थितियां हैं, तो जातक जड़बुद्धि होगा।

विभिन्न मानसिक रोगियों की जन्म कुण्डलियों की समीक्षा करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यदि किसी जन्म कुण्डली में एक ही स्थिति अर्थात "पंचम भाव में शनि का स्थित होना" पाया जाता है तो भी रोग की उग्रता 25 प्रतिशत होती है, इसी प्रकार दो स्थितियों में 50 प्रतिशत, तीन स्थितियों में 75 प्रतिशत तथा चार

11– लग्नकोणे चन्द्रार्कौ चञ्चलधीः।।
केन्द्रे जीवे चञ्चलधीः।।
सौम्येऽर्थेऽबले पापदृष्ट चलचित्तः।। (जातकतत्वम–पंचम विवेक–सूत्र–11 से 13, पृष्ठ–135)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

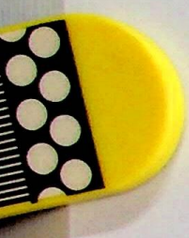

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थितियों में शत–प्रतिशत उग्रता होती है।

उन्माद तथा जड़बुद्धि आदि रोग उग्र लक्षणों वाले रोग हैं, जबकि भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह आदि रोग हल्के तथा मध्यम उग्रता वाले रोग हैं, जो योग के एक या दो स्थितियों की दशा में देखे गये हैं।

इस वर्ग के अनेक रोगियों की जन्म कुण्डलियों की समीक्षा अग्र पृष्ठों पर प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

कं0-1

लग्न कुण्डली

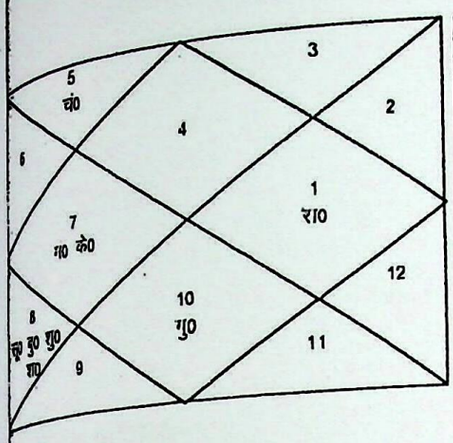

नवमांश

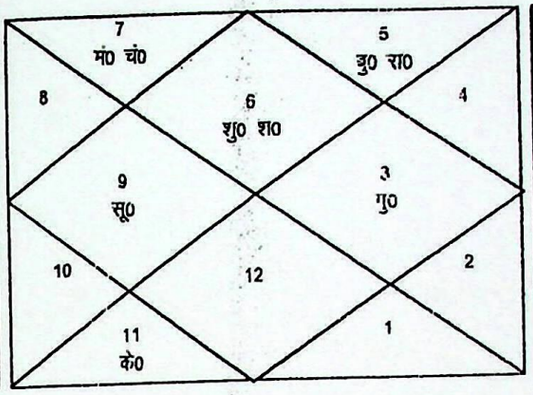

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

चंद्र - शुक्र	
14-01-2005 से 14-09-2006 तक	
शुक्र	24–04–2005
सूर्य	24–05–2005
चंद्र	14–07–2005
मङ्गल	19–08–2005
राहु	19–11–2005
गुरू	09–02–2006
शनि	14–05–2006
बुध	09–08–2006
केतु	14–09–2006

रोगी का परिचयः-

नाम	–	सुरभि
जन्मतिथि	–	05 दिसम्बर 1985
समय	–	09.00 PM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक सुरभि विभ्रम रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 28 अप्रैल, 2005 को आयी। मैंने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में क्रूर ग्रह मंगल तथा केतु स्थित है तथा चतुर्थेश शुक्र पंचम भाव में सूर्य तथा शनि से युक्त होकर पाप ग्रस्त है, जिससे जातक विभ्रम रोग से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह हों तथा चतुर्थेश क्रूर ग्रह से युक्त हो तो जातक "विरूद्ध–चित्त" होता है।"[1]

इस सूत्र में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "विरूद्ध चित्त" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चन्द्रमा की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 25 अप्रैल 2005 से 24 मई 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को वातजन्य रोग, मस्तक से पीड़ा तथा राजा एवं शत्रुओं से कष्ट होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- सुखे क्रूरे क्रूरान्विते सुखेशे विरूद्धचितः। (जातकतत्वम्– प्रथम विवेक, श्लोक–322, पृष्ठ–82)

2- वातज्वरः शिरःपीडा राज्ञः पीडा रवौरवि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि शुक्रे शुक्रान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शुक्रविदिशाफलम्, श्लोक–2,

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

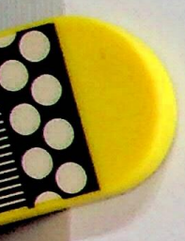

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

चा0-2

लग्न कुण्डली

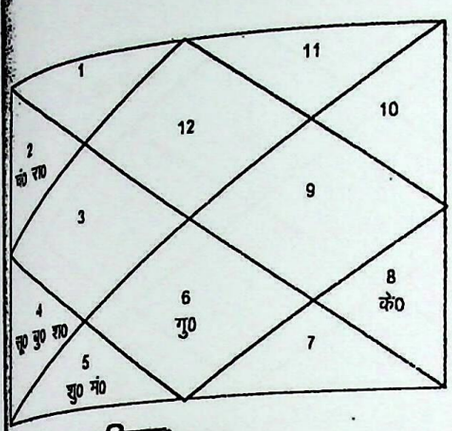

नवमांश

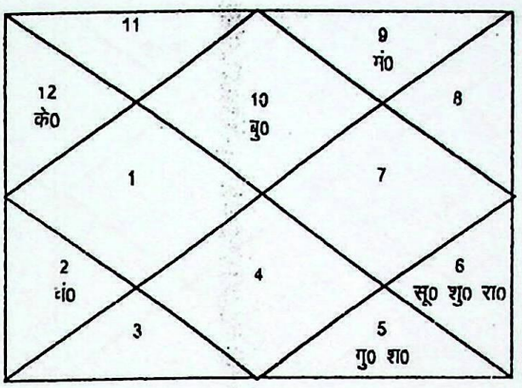

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शनि – मङ्गल	
21-04-2005 से 30-05-2006 तक	
मङ्गल	14–05–2005
राहु	14--07–2005
गुरू	07–09--2005
शनि	11--11--2005
बुध	07–01–2006
केतु	30–01–2006
शुक्र	07–04–2006
सूर्य	27–04–2006
चंद्र	30–05–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – सुदर्शन
जन्मतिथि – 24 जुलाई 1946
समय – 10.30 PM
स्थान – गाजीपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक सुदर्शन विभ्रम रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 06 अगस्त, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि पंचम भाव में है और पंचमेश चन्द्रमा पापी ग्रह राहु के साथ तृतीय भाव में स्थित होकर जातक को विभ्रम रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" तथा "जातकतत्वम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हों तो भय के कारण उन्माद होता है।"[1]

तथा

"पंचमेश यदि पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होता है।"[2]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए उन्माद तथा विस्मयशील बुद्धि का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत गुरू की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 15 जुलाई 2005 से 07 सितम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में गुरू की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, दुख, संताप, कलह तथा सारी योजनाओं में विफलता होती है।"[3]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)
2. सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)
3. मतिनाशस्तथा दुःख सन्तापः कलहो भवेत्। विफलं चिन्तितं सर्व गुरोः प्रत्यन्तरे वदेत।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् अध्याय–63, श्लोक–22, पृष्ठ–638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

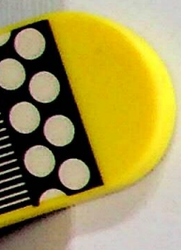

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

सं0–3

लग्न कुण्डली

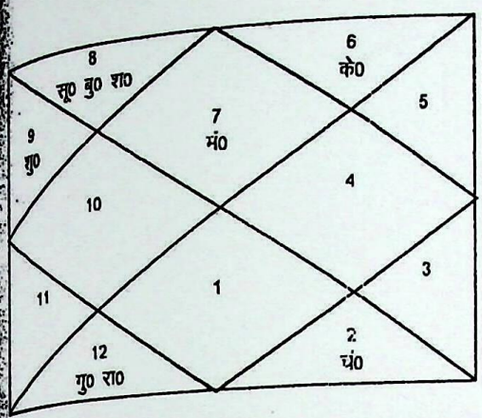

नवमांश

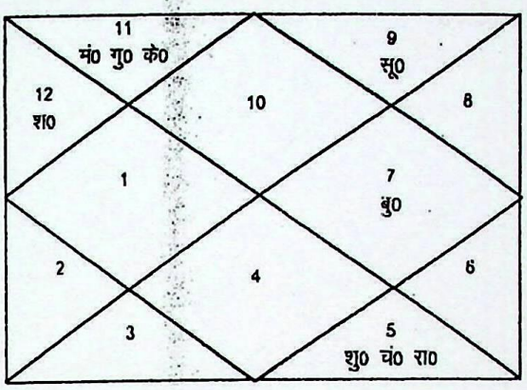

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

राहु - शुक्र	
18-10-2004 से 18-10-2007 तक	
शुक्र	18–04–2005
सूर्य	12–06–2005
चंद्र	12–09–2005
मङ्गल	15–11–2005
राहु	27–04–2006
गुरू	21–09–2006
शनि	12–03–2007
बुध	15–08–2007
केतु	18–10–2007

रोगी का परिचयः–

नाम	–	जमुना रानी
जन्मतिथि	–	06 दिसम्बर 1987
समय	–	04.00 AM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक जमुना रानी विभ्रम रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 16 अक्टूबर, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में स्थित चन्द्रमा को सूर्य तथा शनि सप्तम दृष्टि से तथा मंगल अष्टम दृष्टि से देखकर जातक को विभ्रम रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि शनि, मंगल तथा सूर्य, यह तीनों चन्द्रमा को देखते हों तो जातक मूर्ख होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "मूर्ख" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 13 सितम्बर 2005 से 15 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को रक्त पित्त का विकार, कलह, अपमान, तिरस्कार तथा अधिक क्लेश होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– मन्दारार्काश्चन्द्रं पश्यन्ति मौर्श्यकराः।। (जातकतत्वम् पंचम विवेक, श्लोक–28, पृष्ठ–138)

2– रक्तपित्तादि रोगश्च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेशो भवेदत्र कुजप्रत्यन्तरे द्विज।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–77, पृष्ठ–645)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

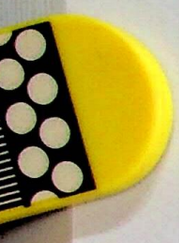

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–4

लग्न कुण्डली

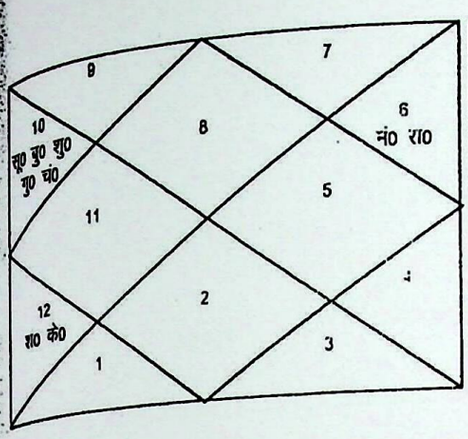

नवमांश

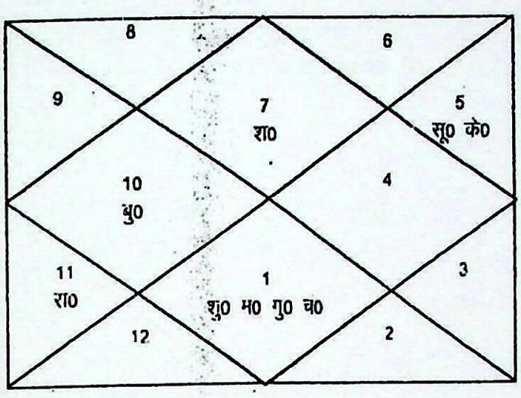

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

मंगल – राहु	
02-02-2005 से 20-02-2006 तक	
राहु	29–03–2005
गुरू	19–05–2005
शनि	19–07–2005
बुध	13–09–2005
केतु	05–10–2005
शुक्र	08–12–2005
सूर्य	27–12–2005
चंद्र	28–01–2006
मङ्गल	20–02–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	कल्यानी
जन्मतिथि	–	07 फरवरी 1997
समय	–	02.00 AM
स्थान	–	सीतापुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कल्यानी विभ्रम रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 06 मई, 2006 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में बुध, सूर्य तथा शनि से युक्त होकर पाप युक्त हो गया है , जो जातक को विभ्रम रोग से पीड़ित बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि तृतीय, षष्टम्, अष्टम या व्यय स्थान में पापयुक्त बुध स्थित हो तो जातक उन्माद रोग से पीड़ित होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "उन्माद" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 14 सितम्बर 2005 से 05 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, विघ्नों से युक्त, धन का क्षय, अत्यधिक भय, कलह तथा उद्वेग होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्त्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)

2– बुद्धिनाशो भयं विघ्नं धन हानिर्महाभयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगौ राहौ राहवन्तरा शिखी।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ राहुविदिशाफलम्, श्लोक–5,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

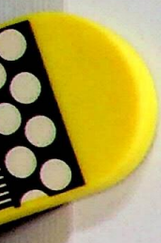

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

क्रं0–5

लग्न कुण्डली

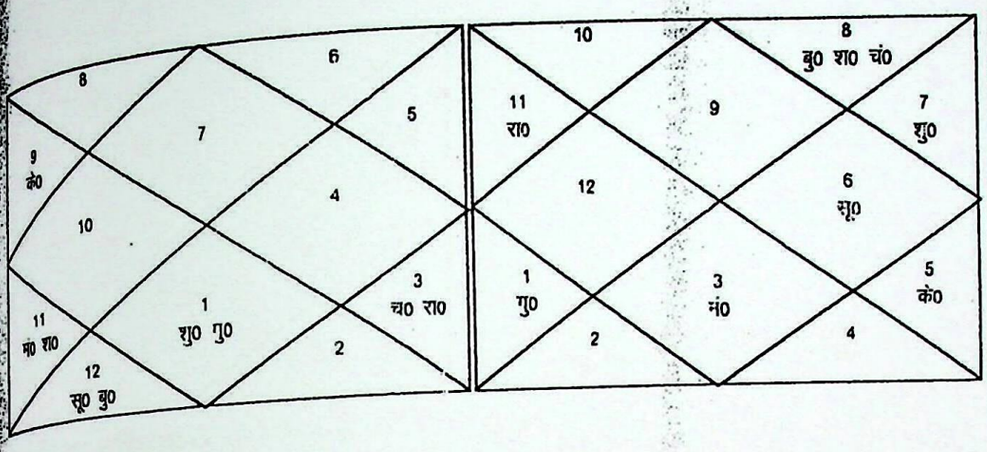

नवमांश

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

शनि – केतु	
10–07–2005 से 19–08–2006 तक	
केतु	04–08–2005
शुक्र	10–10–2005
सूर्य	30–10–2005
चंद्र	03–12–2005
मङ्गल	26–12–2005
राहु	26–02–2006
गुरू	20–04–2006
शनि	23–06–2006
बुध	19–08–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – जितेन्द्र कुमार
जन्मतिथि – 20 मार्च 1964
समय – 08.30 PM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक जितेन्द्र कुमार विभ्रम रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 01 जुलाई, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया।रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में षष्टम भाव में बुध, सूर्य से युक्त होकर पापयुक्त हो गया है, जो जातक को विभ्रम रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि तृतीय, षष्टम, अष्टम या व्यय स्थान में पापयुक्त बुध हो तो जात को उन्माद रोग होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "उन्माद" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 24 जून 2006 से 19 अगस्त 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि केतु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, महान उद्वेग, विद्या हानि, भय तथा कार्य में असफलता होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्त्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)

2– बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महद्भवम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत ज्ञस्य प्रत्यन्तरे फलम्। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–73, पृष्ठ–644)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

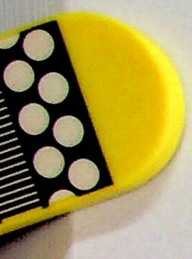

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–6

लग्न कुण्डली

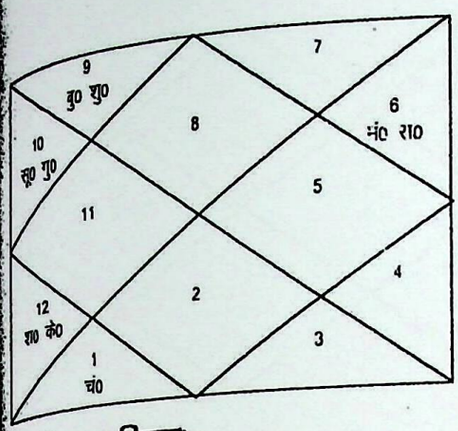

नवमांश

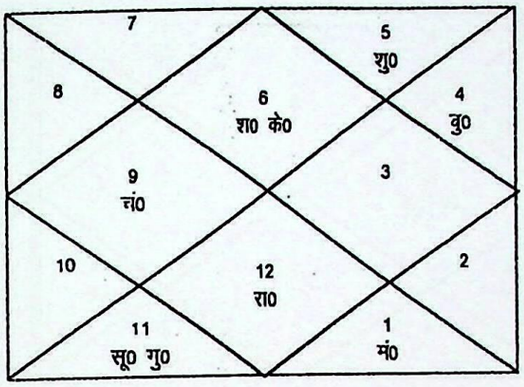

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

चंद्र – गुरू	
24-11-2004 से 24-03-2006 तक	
गुरू	28–01–2005
शनि	14–04–2005
बुध	22–06–2005
केतु	20–07–2005
शुक्र	10–10–2005
सूर्य	04–11–2005
चंद्र	14–12–2005
मङ्गल	12–01–2005
राहु	24–03–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – जगदीश

जन्मतिथि – 18 जनवरी 1997

समय – 03.00 AM

स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक जगदीश विभ्रम रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 दिसम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में शनि तथा केतु के स्थित होने के कारण पापग्रस्त है पंचमेश गुझ भी तृतीय भाव में सूर्य से युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है जो जातक को विभ्रम रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" तथा "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचम भाव में पापग्रह स्थित हों तो जातक को उन्माद होता है।"[1]

तथा

"यदि पंचमेश पापग्रस्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होता है।"[2]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "उन्माद" तथा "विस्मयशील" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चन्द्रमा की दशा में गुरू की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 15 दिसम्बर 2005 से 12 जनवरी 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि गुरू की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को शस्त्र भय, गुदा द्वार के रोग, अपच, भूख कम लगना तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ा होती है।"[3]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)

2– सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)

3– शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वह्निमान्द्यमजीर्णता।
पीडाशत्रुकृता भूतिर्भामप्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–45, पृष्ठ–641)

CC0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Vidyavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

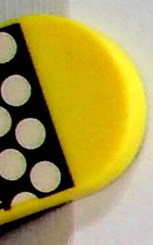

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–7

लग्न कुण्डली

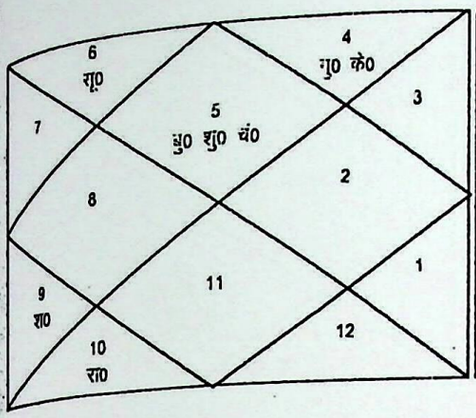

नवमांश

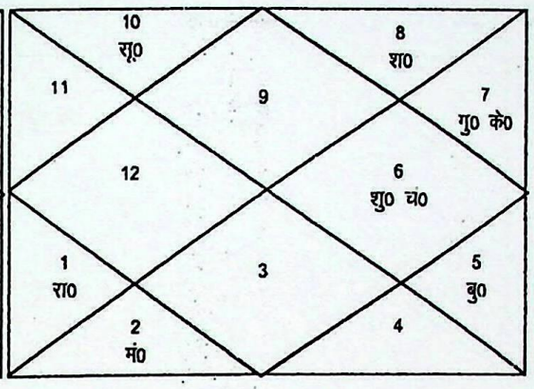

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

सूर्य - बुध	
10-01-2006 से 16-11-2006 तक	
बुध	24–02–2006
केतु	11–03–2006
शुक्र	02–05–2006
सूर्य	18–05–2006
चंद्र	13–06–2006
मङ्गल	01–07–2006
राहु	17–08–2006
गुरू	28–09–2006
शनि	16–11–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	तिलक
जन्मतिथि	–	18 सितम्बर 1990
समय	–	06.00 AM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक तिलक विभ्रम रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 05 मई, 2006 को आंया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त जन्म कुण्डली में शनि पंचम भाव को पापग्रस्त कर रहा है तथा पंचमेश गुरू भी व्यय भाव में केतु से युक्त होकर पापग्रस्त हो गया है, जो जातक को विभ्रम रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" तथा "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह स्थित हों तो जातक को उन्माद होता है।"[1]

तथा

"यदि पंचमेश पापग्रस्त हो तो जातक विस्मयशील बुद्धि का होता है।"[2]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "उन्माद" तथा "विस्मयशील" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 03 मई 2006 से 18 मई 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि बुध की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक निस्तेज, रोगी, अनेक कष्ट भोगने वाला तथा अशान्त होता है।"[3]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)

2– सपापे सुतपे विस्मयशीलः।। (जातक तत्वम्– पंचम विवेक, सूत्र–19, पेज–137)

3– तेजो हानिर्भवेद्रोगो तत्पीडा तु मार्दवी।
जायते चित्तवैकल्यं सौम्ये सौम्यान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ बुधविदिशाफलम्, श्लोक–4,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–8

लग्न कुण्डली

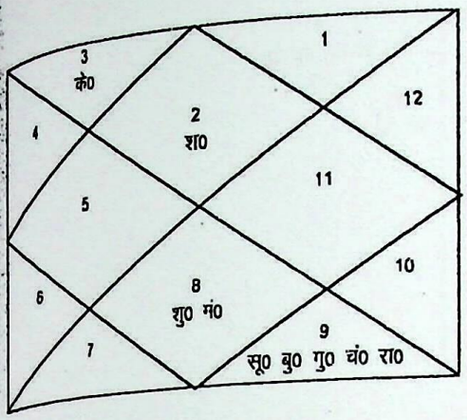

नवमांश

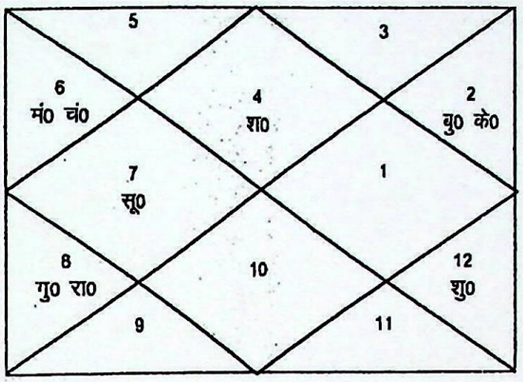

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

मंगल – बुध	
25–10–2005 से 22–10–2006 तक	
बुध	16–12–2005
केतु	07–01–2006
शुक्र	06–03–2006
सूर्य	24–03–2006
चंद्र	24–04–2006
मङ्गल	15–05–2006
राहु	08–07–2006
गुरू	26–08–2006
शनि	22–10–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	शेखर
जन्मतिथि	–	04 जनवरी 1973
समय	–	03.30 PM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक शेखर विभ्रम रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 दिसम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तृतीयेश चन्द्रमा राहु के साथ अनिष्ट स्थान अष्टम भाव में स्थित होकर जातक को विभ्रम रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"तृतीयेश यदि राहु के साथ हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "जड़बुद्धि" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 17 दिसम्बर 2005 से 07 जनवरी 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि बुध की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक कठोर भोजन पाने वाला, पेट के रोग से युक्त तथा रक्त पित्त जन्य, व्याधियों से दुखी होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सतमसि सोत्थपे जड़ः। (जातकतत्वम–पंचम विवेक–सूत्र–23 पृष्ठ–138)

2– कठिनान्नस्य संप्राप्तिरूदरे रोगसंभवः।
कामलं रक्तपित्तं च सौम्य सौम्यान्तरा शिखी। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ बुधविदिशाफलम्, श्लोक–2, पृष्ठ–450)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–9

लग्न कुण्डली

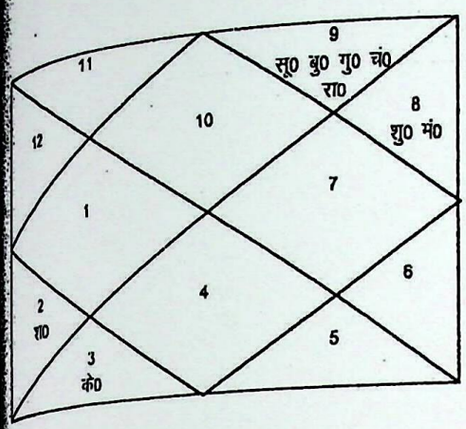

नवमांश

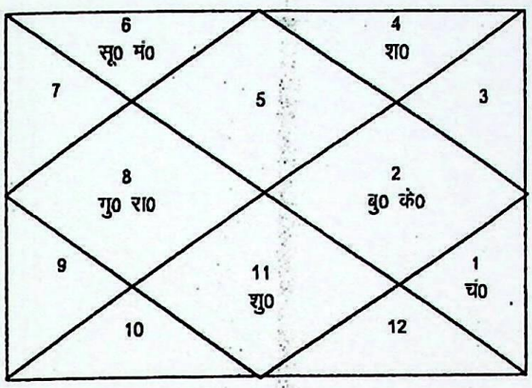

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

चंद्र – मङ्गल	
06–07–2005 से 06–02–2006 तक	
मङ्गल	18–07–2005
राहु	20–08–2005
गुरू	18–09–2005
शनि	21–10–2005
बुध	21–11–2005
केतु	03–12–2005
शुक्र	08–01–2006
सूर्य	19–01–2006
चंद्र	06–02–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – वेदिका
जन्मतिथि – 03 जनवरी 1973
समय – 09.00 AM
स्थान – वाराणसी।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक वेदिका विभ्रम रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 22 जुलाई, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तृतीयेश गुरू राहु के साथ अनिष्ट स्थान व्यय भाव में स्थित होकर जातक को विभ्रम रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"तृतीयेश यदि राहु के साथ हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए जड़बुद्धि का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चन्द्रमा की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत गुरू की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 19 जुलाई 2005 से 20 अगस्त 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में गुरू की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, दुख, संताप, कलह, विकलता तथा विभिन्न प्रकार की चिन्ताएं होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सतमसि सोत्थपे जड़ः। (जातकतत्वम–पंचम विवेक–सूत्र–23 पृष्ठ–138)

2– मतिनाशस्तथा दुःखं सन्तापः कलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्व गुरोः प्रत्यन्तरे वदेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् अध्याय–63, श्लोक–22, पृष्ठ–638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

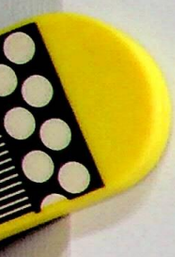

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

10–10

लग्न कुण्डली

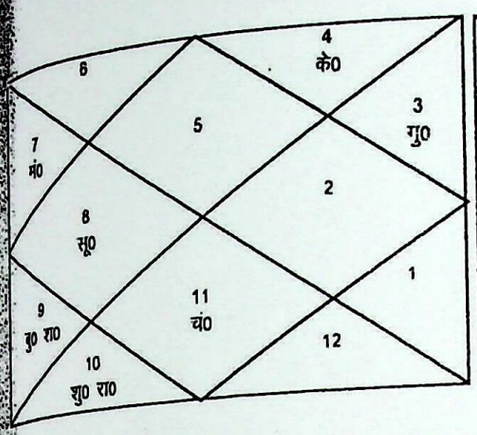

नवमांश

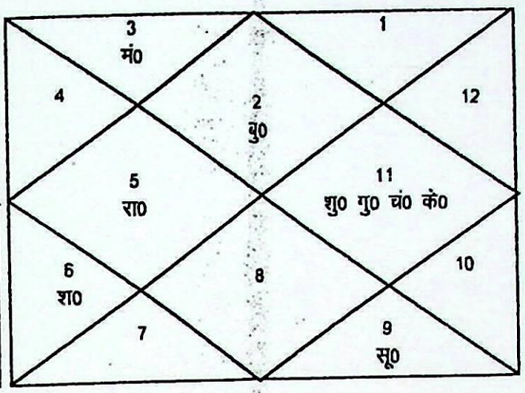

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

गुरू - शुक्र	
24–08–2003 से 24–04–2006 तक	
शुक्र	04–02–2004
सूर्य	22–03–2004
चद्र	22–06–2004
मङ्गल	08–08–2004
राहु	02–01–2005
गुरू	10–05–2005
शनि	12–10–2005
बुध	28–02–2006
केतु	24–04–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	सुरेश
जन्मतिथि	–	05 दिसम्बर 1989
समय	–	11.00 PM
स्थान	–	गाजियाबाद।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक सुरेश विभ्रम रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 08 फरवरी, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तृतीयेश शुक्र राहु के साथ अनिष्ट स्थान छठे भाव में स्थित होकर जातक को विभ्रम रोग से पीड़ित करता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"तृतीयेश यदि राहु के साथ हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "जड़बुद्धि" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 05 फरवरी 2004 से 22 मार्च 2004 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को वातजन्य ज्वर, मस्तक में पीड़ा, राजा एवं शत्रुओं से पीड़ा होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सतमसि सोत्थपे जड़ः। (जातकतत्वम–पंचम विवेक–सूत्र–23 पृष्ठ–138

2– वातज्वरः शिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि रवेः प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–75, पृष्ठ–644)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

नं0-11

लग्न कुण्डली

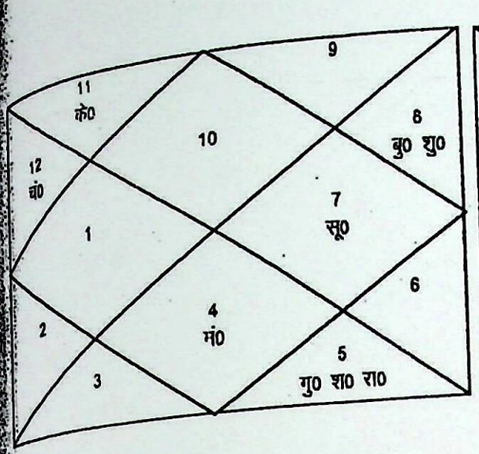

नवमांश

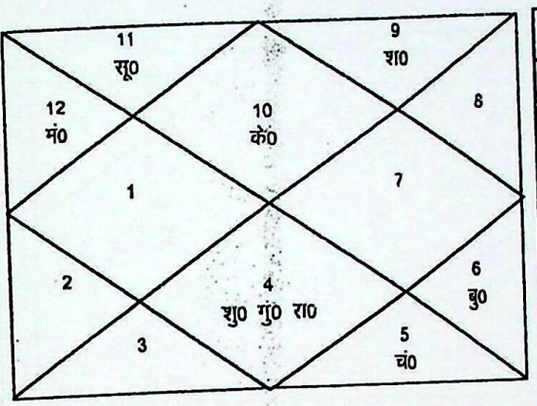

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

बुध - चंद्र	
07-09-2004 से 07-02-2006 तक	
चंद्र	19-10-2004
मङ्गल	19-11-2004
राहु	06-02-2005
गुरू	14-04-2005
शनि	04-07-2005
बुध	17-09-2005
केतु	16-10-2005
शुक्र	11-01-2006
सूर्य	07-02-2006

रोगी का परिचयः-

नाम — दीपा
जन्मतिथि — 01 नवम्बर 1979
समय — 12.00 PM (दोपहर)
स्थान — सीतापुर।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक दीपा विभ्रम रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 05 मई, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तृतीयेश गुरू राहु के साथ अनिष्ट स्थान अष्टम भाव में बैठकर जातक को विभ्रम रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ जातकतत्वम में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"तृतीयेश यदि राहु के साथ हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "जड़बुद्धि" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 15 अप्रैल 2005 से 04 जुलाई 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार- "यदि चन्द्र की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक दूषित दिनों के कारण वात तथा पित्त से विशेष पीड़ा पाने वाला, धन धान्य तथा यश की हानि से कष्ट पाने वाला होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- सतमसि सोत्थपे जड़ः। (जातकतत्वम-पंचम विवेक-सूत्र-23 पृष्ठ-138

2- दुर्दिनैर्लभते पीडां वातपित्ताद् विशेषतः।
धधान्ययशेहानिश्चन्द्रचन्द्रान्तरे शनिः।। (होरारत्नम् अध्याय-9, अथ चंद्रविदिशाफलम्, श्लोक-5, पृष्ठ-413)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–12

लग्न कुण्डली

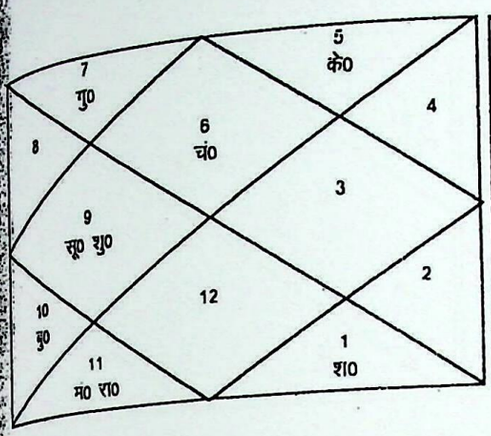

नवमांश

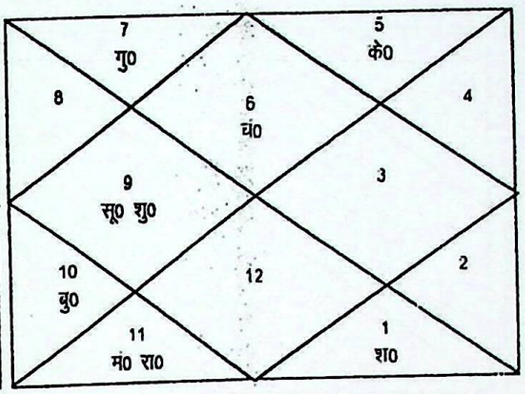

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

गुरू – शनि	
23–08–2003 से 05–03–2006 तक	
शनि	18–01–2004
बुध	27–05–2004
केतु	20–07–2004
शुक्र	22–12–2004
सूर्य	08–02–2005
चंद्र	24–04–2005
मङ्गल	17–06–2005
राहु	04–11–2005
गुरू	05–03–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – संगीता
जन्मतिथि – 01 जनवरी 1970
समय – 00.30 AM
स्थान – लखनऊ।।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक संगीता विभ्रम रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 17 जुलाई, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में तृतीयेश मंगल राहु के साथ अनिष्ट स्थान छठे भाव में स्थित होकर जातक को विभ्रम रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

सतमसि सोत्थपे जड़ः। (जातकतत्वम पंचम विवेक सूत्र–23 पृष्ठ–138)

"तृतीयेश यदि राहु के साथ हो तो मनुष्य जड़बुद्धि होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "जड़बुद्धि" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत राहु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 18 जून 2005 से 04 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि शनि की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक धन का विनाशी, वस्त्रों तथा भूमि को नष्ट करने वाला, विदेश गमन करने वाला तथा मृत्यु के भय से युक्त होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सतमसि सोत्थपे जड़ः। (जातकतत्वम पंचम विवेक सूत्र–23 पृष्ठ–138)

2– धननाशो वस्त्रहरिर्भूमिनाशो भयं भवेत्।
विदेशगमनं मृत्युः कोणेकोणान्तरा तमः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शनिविदिशाफलम्, श्लोक–1,

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur. MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यामोह रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–13

लग्न कुण्डली

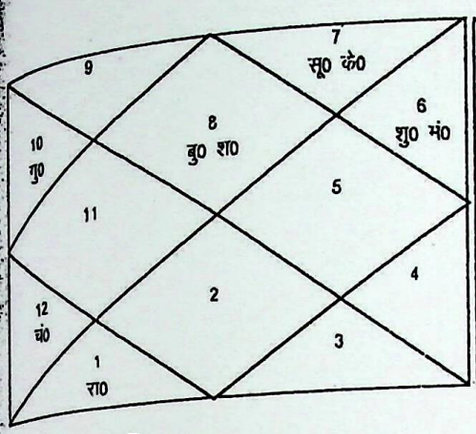

नवमांश

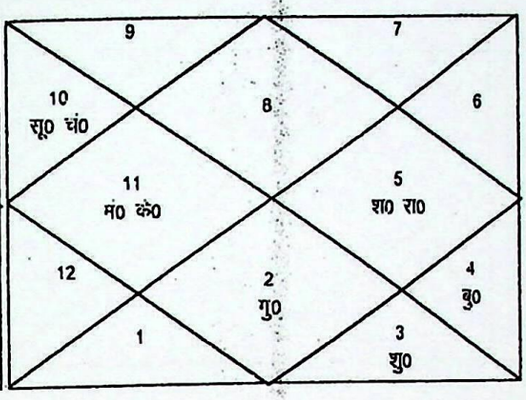

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शुक्र – सूर्य	
08–06–2005 से 08–06–2006 तक	
सूर्य	26–06–2005
चंद्र	26–07–2005
मङ्गल	17–08–2005
राहु	11–10–2005
गुरू	29–11–2005
शनि	26–01–2006
बुध	17–03–2006
केतु	08–04–2006
शुक्र	08–06–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	डिम्पल
जन्मतिथि	–	27 अक्टूबर 1985
समय	–	09.00 AM
स्थान	–	लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक डिम्पल व्यामोह रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 10 जून, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में लग्न में शनि, व्यय भाव में सूर्य तथा त्रिकोण में चन्द्रमा स्थित होकर जातक व्यामोह रोग से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि लग्न में शनि, व्यय स्थान में सूर्य तथा त्रिकोण में चन्द्रमा या मंगल हो तो जातक उन्माद रोग से पीड़ित होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "उन्माद" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार व्यामोह रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 08 जून 2005 से 26 जून 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक उद्वेगी, स्त्री पीड़ा से युक्त, मस्तक में दर्द से पीड़ित तथा अनेक प्रकार का विवाद करने वाला होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– मन्दऽङ्गे व्ययेऽर्के कोणे चन्द्रे वा भौमे उन्मादी।। (जातकतत्वम– प्रकीर्णतत्वम– प्रथम विवेक सूत्र–147 पृष्ठ–63)

2– उद्वेगोऽथ बलं वित्तं दारार्तिः शिरसि व्यथा।
ब्राम्हणन विवादश्र सूर्यः स्वविदशां गतः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ स्वांतर्दशाफलम्, श्लोक–1, पृष्ठ–406)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karaundi, Jabalpur, MP. Digitized by eGangotri

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यामोह रोगी की जन्म कुण्डली

कं0–14

लग्न कुण्डली

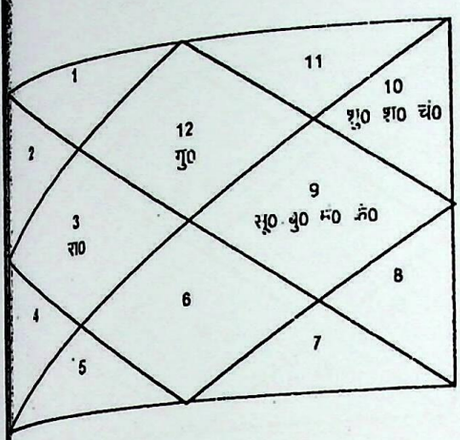

नवमांश

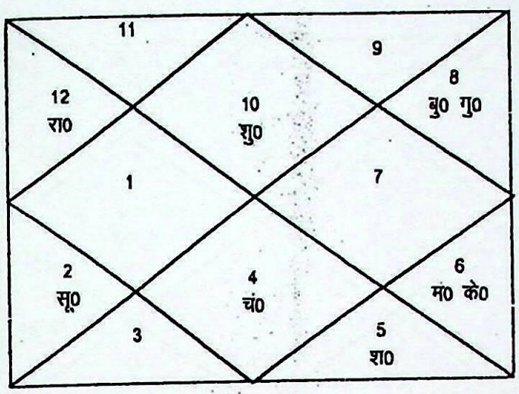

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

गुरू - राहु	
02–10–2003 से 26–02–2006 तक	
राहु	11–02–2004
गुरू	06–06–2004
शनि	23–10–2004
बुध	26–02–2005
केतु	16–04–2005
शुक्र	10–09–2005
सूर्य	23–10–2005
चंद्र	05–01–2006
मङ्गल	26–02–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	अखिलेश
जन्मतिथि	–	20 दिसम्बर 1963
समय	–	01.00 PM
स्थान	–	लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक अखिलेश व्यामोह रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 01 मार्च, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा पाप ग्रह शनि तथा शुक्र के साथ एकादश भाव में स्थित होकर जातक को व्यामोह का रोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि क्षीण चन्द्रमा पापग्रहों के साथ लग्न, एकादश, पंचम या नवम स्थान में हो तो जातक उन्माद रोगी होता है।"[1]

इस सूत्र में उपरोक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "उन्माद" का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार व्यामोह रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 27 फरवरी 2005 से 16 अप्रैल 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, भय, विघ्न, धन हानि, सर्वत्र कलह तथा उद्वेग होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– पापोपेतकृशामृतांशुरूदयायस्वान्तधर्मोपगः।। (प्रश्नमार्ग– द्वादश अध्यायः– सूत्र--31 पृष्ठ–180)

2– बुद्धिनाशो भयं विघ्नो धनहानिर्गहद्भयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगो केतो प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–33, पृष्ठ–639)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यामोह रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–15

लग्न कुण्डली

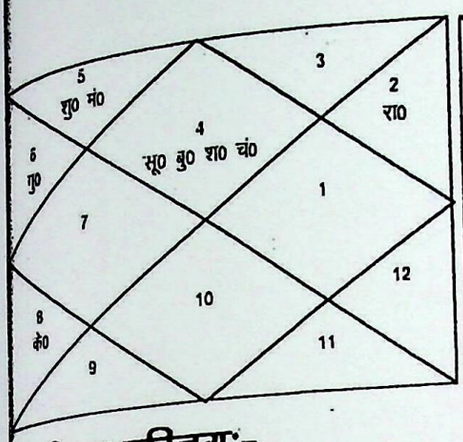

नवमांश

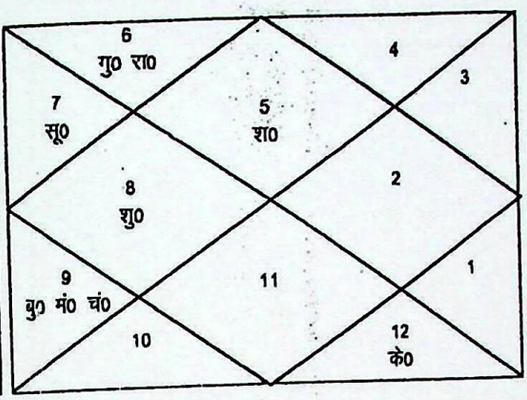

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

मंगल – राहु	
22-06-2004 से 10-07-2005 तक	
राहु	19–08–2004
गुरू	09–10–2004
शनि	09–12–2004
बुध	03–02–2005
केतु	25–02–2005
शुक्र	28–04–2005
सूर्य	17–05–2005
चंद्र	18–06–2005
मङ्गल	10–07–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – कविता

जन्मतिथि – 29 जुलाई 1946

समय – 05.00 AM

स्थान – देवबन्ध (उ0प्र0)।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कविता व्यामोह रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 05 जनवरी, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में केतु स्थित है, जो राहु की सप्तम तथा मंगल की चतुर्थ दृष्टि से पीड़ित है, जो जातक को व्यामोह का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार व्यामोह रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 10 दिसम्बर 2004 से 03 फरवरी 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, भयभीत, विघ्नों से युक्त, धन का क्षय, कलह तथा उद्वेग होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)

2– बुद्धिनाशो भयं विघ्नं धन हानिर्महाभयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगौ राहौ राहुहन्तरा शिखी।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ राहुविदिशाफलम्, श्लोक–5,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यामोह रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–15

लग्न कुण्डली

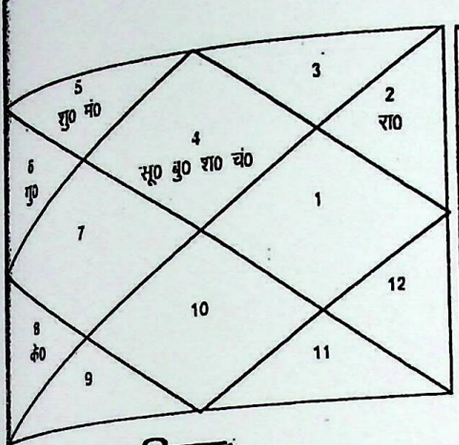

नवमांश

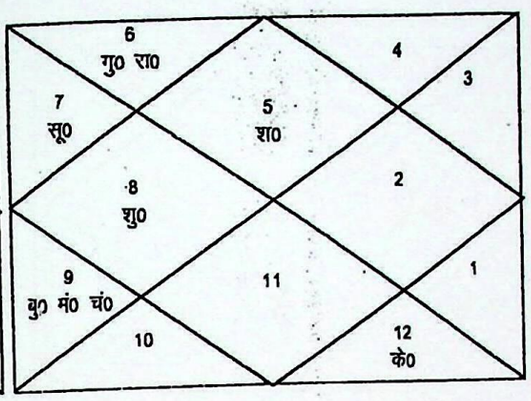

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

मंगल – राहु	
22-06-2004 से 10-07-2005 तक	
राहु	19–08–2004
गुरू	09–10–2004
शनि	09–12–2004
बुध	03–02–2005
केतु	25–02–2005
शुक्र	28–04–2005
सूर्य	17–05–2005
चंद्र	18–06–2005
मङ्गल	10–07–2005

रोगी का परिचयः–

नाम	–	कविता
जन्मतिथि	–	29 जुलाई 1946
समय	–	05.00 AM
स्थान	–	देवबन्ध (उ0प्र0)।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कविता व्यामोह रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 05 जनवरी, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में केतु स्थित है, जो राहु की सप्तम तथा मंगल की चतुर्थ दृष्टि से पीड़ित है, जो जातक को व्यामोह का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार व्यामोह रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 10 दिसम्बर 2004 से 03 फरवरी 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, भयभीत, विघ्नों से युक्त, धन का क्षय, कलह तथा उद्वेग होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)

2– बुद्धिनाशो भयं विघ्नं धन हानिर्महाभयम्।
सर्वत्र कलहोदवेगौ राहौ राहह्वन्तरा शिखी।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ राहुविदिशाफलम्, श्लोक–5,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur. Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–16

लग्न कुण्डली

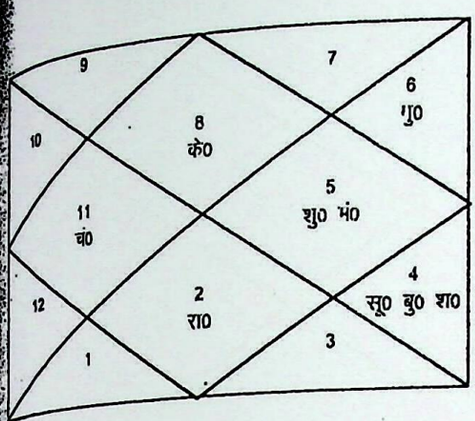

नवमांश

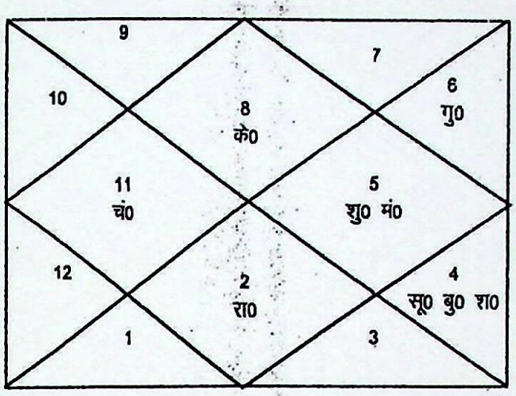

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

बुध - सूर्य	
27–08–2005 से 03–07–2006 तक	
सूर्य	13–09–2005
चंद्र	08–10–2005
मङ्गल	26–10–2005
राहु	12–12–2005
गुरू	23–03–2006
शनि	11–03–2006
बुध	24–04–2006
केतु	12–05–2006
शुक्र	03–07–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	रवि
जन्मतिथि	–	17 जुलाई 1946
समय	–	04.30 PM
स्थान	–	देवबन्ध (उ0प्र0)।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक रवि भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 31 अगस्त, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में चन्द्रमा मंगल की सप्तम दृष्टि से पीड़ित होकर जातक को भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेष युक्त हो तो जातक कठोरभाषी, मिर्गी का रोगी तथा सदैव शारीरिक शक्ति घटाने वाले किसी बड़े रोग से पीड़ित होता है।"[1]

रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 27 अगस्त 2005 से 13 सितम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की ही प्रत्यंतर दशा हो तो जातक उद्वेगी, स्त्री पीड़ा से युक्त, मस्तक में दर्द से पीड़ित तथा विवादी होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– परूषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे।
रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभः स्थलमाश्रितै–
र्भृतकमनुजः पूर्वोदिदृष्टैर्वराधममध्यमाः।।17।। (वृहज्जातकम अध्याय–21, श्लोक–17, पृष्ठ–340)

2– उद्वेगोऽथ बलं क्षिप्तं दारार्तिः शिरसि व्यथा।

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–17

लग्न कुण्डली

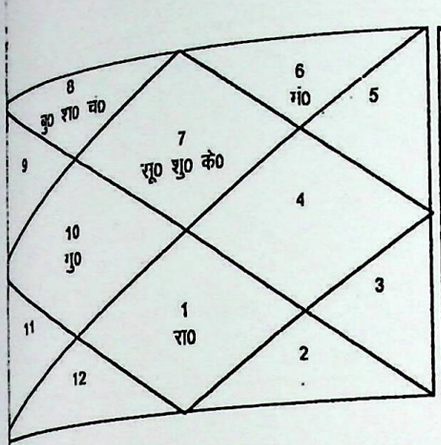

नवमांश

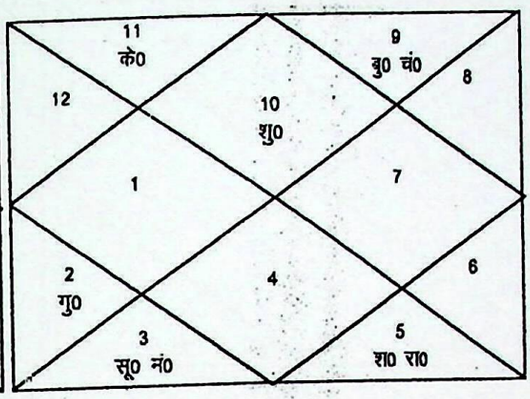

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

केतु - गुरू	
27–10–2005 से 03–10–2006 तक	
गुरू	12–12–2005
शनि	05–02–2006
बुध	23–03–2006
केतु	12–04–2006
शुक्र	08–06–2006
सूर्य	25–06–2006
चंद्र	23–07–2006
मङ्गल	13–08–2006
राहु	03–10–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – जागृति
जन्मतिथि – 14 नवम्बर 1985
समय – 05.00 AM
स्थान – गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक जागृति भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 25 जुलाई, 2006 को आयी मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में चन्द्रमा शनि से युक्त होकर जातक को भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोग से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "वृहज्जातकम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो या चन्द्रमा परिवेष युक्त हो तो जातक कठोरभाषी, मिर्गी का रोगी तथा सदैव शारीरिक शक्ति घटाने वाले किसी बड़े रोग से पीड़ित होता है।"[1]

रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में केतु की दशा में गुरू की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 24 जुलाई 2006 से 13 अगस्त 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि गुरू की अन्तर्दशा में मंगल की ही प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को शस्त्र भय, अनेक प्रकार के कष्ट, अपच, भूख कम लगना तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ा होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– परूषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे।
रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभः स्थलमाश्रितै–
भृतकमनुजः पूर्वोदिदष्टैर्वराधममध्यमाः।।17।। (वृहज्जातकम अध्याय–21, श्लोक–17, पृष्ठ–340)

2– शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वाहिममाद्यमजीर्णता।
— ... (बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम. अध्याय–63 श्लोक–45, पृष्ठ–641)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोगी की जन्म कुण्डली

रो0-18

लग्न कुण्डली

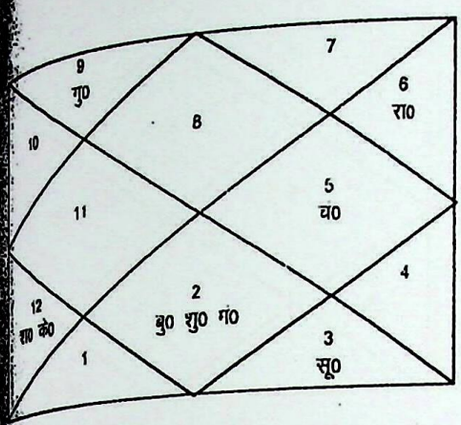

नवमांश

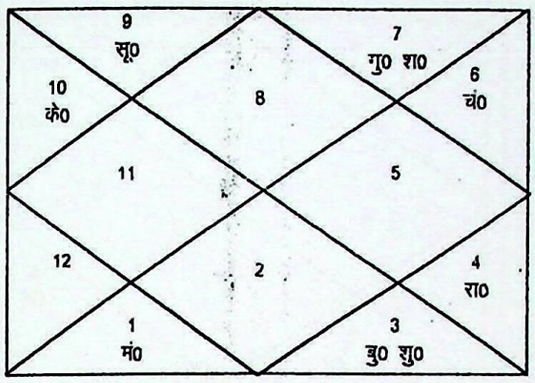

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शुक्र - शनि	
19-07-2002 से 19-09-2005 तक	
शनि	20–01–2003
बुध	01–07–2003
केतु	08–09–2003
शुक्र	08–03–2004
सूर्य	15–05–2004
चंद्र	20–08–2004
मङ्गल	20–10–2004
राहु	17–04–2005
गुरू	19–09–2005

रोगी का परिचयः–

नाम	–	प्रियांशु
जन्मतिथि	–	22 जून 1996
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक प्रियांशु भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 22 नवम्बर, 2004 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में शनि तथा केतु युक्त होकर स्थित हैं, जिससे जातक भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोग से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को भय के कारण उन्माद होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "उन्माद" का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार भ्रम, विभ्रम तथा व्यामोह रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत राहु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 21 अक्टूबर 2004 से 17 अप्रैल 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि शनि की अन्तर्दशा में राहु की ही प्रत्यंतर दशा हो तो जातक के धन का नाश, वस्त्र तथा भूमि का विनाश तथा अनेक प्रकार का भय, विदेश गमन तथा मृत्यु का भी भय होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)
2. धननाशो वस्त्रहानिर्भूमिनाशो भयं भवेत्।
विदेशगमनं मृत्युः कोणेकोणान्तरा तमः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शनिविदिशाफलम्, श्लोक–1, पृष्ठ–443)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभ्रम रोगी की जन्म कुण्डली

नं0–19

लग्न कुण्डली

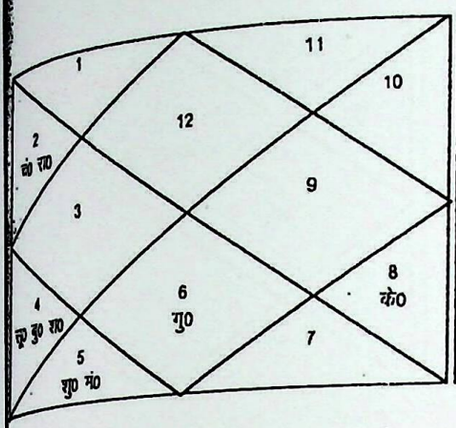

नवमांश

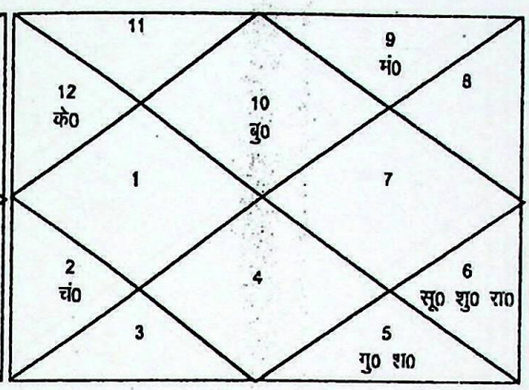

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शनि – मङ्गल	
29-01-2005 से 08-03-2006 तक	
मङ्गल	23–02–2005
राहु	22–04–2005
गुरू	16–06–2005
शनि	19–08–2005
बुध	15–10–2005
केतु	09–11–2005
शुक्र	15–01–2006
सूर्य	05–02–2006
चंद्र	08–03--2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	दिनेश
जन्मतिथि	–	24 जुलाई 1946
समय	–	11.00 PM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक दिनेश विभ्रम रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 28 अगस्त, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में पाप ग्रह सूर्य, बुध तथा शनि स्थित है, जो जातक को विभ्रम रोगी बनाते है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को भय के कारण उन्माद होता है।"[1]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "उन्माद" शब्द का प्रयोग किया गया है। रोगी से साक्षात्कार करने तथा उस रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी आयुर्वेद के अनुसार विभ्रम रोग से पीड़ित हैं।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 20 अगस्त 2005 से 15 अक्टूबर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, धन का नाश, अनेक प्रकार के रोग तथा मित्रों से भी हानि होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)
2. सर्वथा बुद्धिनाशाश्च धनहानिर्ज्वरस्तनौ।
वस्त्रान्नसुहृदां नाशो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–24, पृष्ठ–638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यामोह रोगी की जन्म कुण्डली

0-20

लग्न कुण्डली

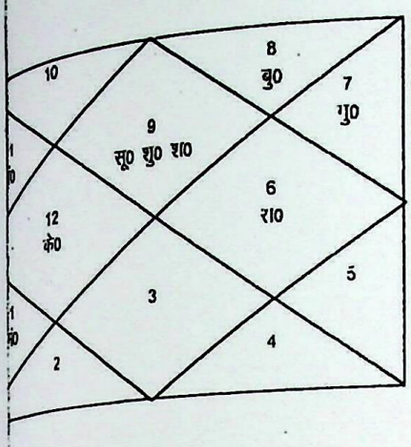

नवमांश

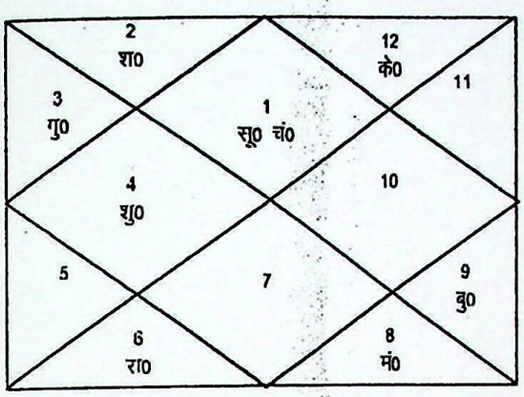

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

बुध - गुरू	
23-11-2004 से 01-03-2007 तक	
गुरू	12-03-2005
शनि	21-07-2005
बुध	17-11-2005
केतु	05-01-2006
शुक्र	21-05-2006
सूर्य	01-07-2006
चंद्र	09-09-2006
मङ्गल	27-10-2006
राहु	01-03-2007

ी का परिचयः-

	–	राजेश
तिथि	–	17 दिसम्बर 19
य	–	07.00 AM
न	–	लखनऊ।।

से सम्पर्कः-

जातक राजेश व्यामोह रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा 20 सितम्बर, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में केतु स्थित है तथा चतुर्थेश गुरू भी मंगल की सप्तम दृष्टि से पीड़ित था पंचम भाव भी मंगल से पापग्रस्त है जिससे जातक जातक व्यामोह रोग से पीड़ित है

क ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "जातकतत्वम" तथा "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः-

"यदि चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह हो तथा चतुर्थेश भी क्रूर ग्रह से युक्त हो तो जातक "विरूद्ध-चित्त" होता है।"[1]

तथा

"यदि पंचम भाव में पापग्रह हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[2]

इस सूत्र में उपर्युक्त योग से उत्पन्न रोग के लिए "विरूद्ध चित्त" तथा "उन्माद" का प्रयोग किया गया है। रोगी साक्षात्कार करने तथा उस रोग को पूर्ण विवरण प्राप्त करने के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह मानसिक रोगी र्वेद के अनुसार व्यामोह रोग से पीड़ित हैं।

त्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में गुरू की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल प्रत्यन्तर दशा दिनांक 10 सितम्बर 2006 से 27 अक्टूबर 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार- "यदि गुरू की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो क को शस्त्रों से भय, अनेक प्रकार की पीड़ा, अपच तथा शत्रुओं द्वारा कष्ट होता है।"[3]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता मैं वृद्धि हुई।

सुखे क्रूरे क्रूरान्विते सुखेशे विरूद्धचितः। (जातकतत्वम्- प्रथम विवेक, श्लोक-322, पृष्ठ-82)

सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग्- अध्याय-12, सूत्र-47, पेज-182)

शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वहिनमान्द्यमजीर्णता।
पीडाशत्रुकृता भूतिर्भामप्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-45, पृष्ठ-641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-अष्टम्

मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति, मनोग्रन्थि

(हठ और बाध्यतायुक्त मानसिक रोग)

(Neurasthenia, Obsessional Compulsive Neurosis)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय अष्टम

मनोनाड़ीदौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोग्रन्थि (हठ और बाध्यतायुक्त मानसिक रोग)

(Neuresthenia, Obsessional Compulsive Neurosis)

मनोनाड़ी दौर्बल्य : मनःश्रान्ति

रोग का परिचयः–

यह मस्तिष्क दौर्बल्य और हीनमनस्कतायुक्त रोग है। इसमें किसी प्रकार का शारीरिक या मानसिक श्रमजनक कार्य किये बिना ही शरीर और मन श्रान्त, क्षुब्ध तथा अवसादग्रस्त होते हैं।[1]

लक्षणः–[2]

1. रोगी आत्मकेन्द्रित होता है। वह अपने ही ताने–बाने में व्यस्त रहता है।
3. उसका मन विचलित, शान्त तथा उदास रहता है एवं शरीर शिथिल होता है।
4. वह रोजमर्रा की जिन्दगी का बोझ नहीं सम्भाल पाता और बेचैन रहता है।
5. छोटे–छोटी बातों में आवेश और तैश में आ जाता है तथा चिड़चिड़ा हो जाता है।
6. वह 'शरीर व्याधिमन्दिरम्' का अनुगामी होता है और अपने शरीर को तरह–तरह के रोगों से ग्रसित हुआ मानता है।
7. क्षुधानाश, अनिद्रा, अजीर्ण, उदावर्त, विवन्ध, सिर–शूल, मलावरोध, जँभाई, कटि–पृष्ठशूल और नपुंसकता का अनुभव करता है।
8. उसका रक्तचाप न्यून होता है और नाड़ी की गति अनियमित रहती है। उसे

---

1. विद्याधर शुक्ल– कायचिकित्सा– पृष्ठ–247
2. तत्रैव, पृष्ठ–247

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंगों में झिनझिनी, ठंडक या शून्यता की प्रतीति होती है।

9. शिरःशूल शिरोभ्रम, निद्रानाश, अक्षम पाचनशक्ति, मानसिक अशान्ति, सहिष्णुता का ह्रास, हृदय–गति का आधिक्य, मुखाकृति–रक्तिम और स्वेदाधिक्य ये लक्षण होते हैं।

मनोग्रन्थि

(हठ और बाध्यतायुक्त मानसिक रोग)

(Obsessional Compulsive Neurosis)

रोग परिचयः–

इस रोग में रोगी के मन में किसी कार्य के प्रति ऐसी झक या हठ उत्पन्न हो जाती है, जिससे बाध्य होकर वह उस कार्य को तल्लीनता से करता रहता है। जैसे– नीरोग रहने पर भी बार–बार चिकित्सक से परामर्श लेना, चोरी करना या, दूसरों को अपमानित करना तथा उनहें हानि पहुंचाना आदि।[3]

लक्षणः–[4]

1. यह एक प्रकार का उन्माद है, जो कारण के अनुरूप लक्षणों वाला होता है।
2. कोई व्यक्ति चलते–फिरते किसी विचार में तल्लीन हो जाता है और आवेश में आकर, मुट्ठी कसकर, ओंठ भींचकर, आकाश में हाथ फेंककर, गर्दन और सिर हिलाकर अकेले असम्बद्ध बात करने लगता है।
3. कोई व्यक्ति स्वच्छता के प्रति इतना अधिक संवेदनशील हो जाता है कि वह बतासा–पेड़ा तथा चीनी धोकर खाता है और लकड़ी धोकर जलाता है। किसी के शरीरका स्पर्श होने पर, शौच जाने पर और भोजन करने के पूर्व

3– तत्रैव, पृष्ठ–249
4– तत्रैव, पृष्ठ–249

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्नान करता है और इसी तरह प्रत्येक कार्य में असामान्य ढंग से सफाई करता है।

4. कोई रोगी अपनी वेशभूषा, क्रीज, कालर और सिर के बालों की सेटिंग निहारता है तथा मुड़–मुड़ कर कन्धे को देखता है।

5. कुछ लागों को दूसरों को हानि पहुंचाने की झक, विषय–सम्भोग की झक या नशा करने की झक हो जाती है।

6. ऐसा रोगी बार–बार किसी बात को सोचता रहता है और ज्यों–ज्यों उसे भूलने की कोशिश करता है, त्यों–त्यों वह चिन्ता स्मृति–पटल पर उभड़ जाया करती है, जिसे वह भूलना चाहने पर भी नहीं भूल पाता।

7. किसी–किसी के मन में विकृत विचार घर बना लेते हैं और ऐसा व्यक्ति असामान्य आचरण करने लगता है। जैसे– बार–बार हाथ धोना, दिन में कई बार नहाना, प्रत्येक वस्तु को अनावश्यक झाड़ते–पोछते रहना, तुच्छ वस्तुओं को चुराना, बार–बार रोग का निदान कराना और औषध खाना और इसी तरह के अनर्गल कार्यों को करता रहता है।

8. यह रोगी सफाई, तौर–तरीका, तहजीब, शिष्टाचार, अनुशासन की पाबन्दी के प्रति ज्यादा जागरूक रहता है।

9. वह किसी भी कार्य को शीघ्र पूरा कर लेने के प्रति हठी होता है।

10. यह कठोर परिश्रमी, अति सचेत और अपनी ड्यूटी का पक्का होता है।

11. वह कष्ट सहने के लिए तैयार रहता है, किन्तु अपने हठ से टस–मस नहीं होता। वह किसी भी कार्य में ढीलापन नहीं पसन्द करता और अपने को हमेशा सीन–काफ दुरूस्त रखता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जातक ग्रन्थों में मनोनाड़ीदौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोग्रन्थि (हठ और बाध्यतायुक्त मानसिक रोग के लक्षण)

(Neuresthenia, Obsessional Compulsive Neurosis)

उपरोक्त सभी रोग मनोनाड़ी दौर्बल्य से ही सम्बन्धित हैं। मनोनाड़ी दौर्बल्य कारण रूप है तथा अन्य सभी रोग इसके प्रतिफल हैं।

जातक ग्रन्थों मनोनाड़ी दौर्बल्य मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि के लक्षणों की अभिव्यक्ति के लिए अनेक समानार्थी शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे–

1– भाराध्वश्रमदुखैः– .अर्थात अनावश्यक रूप से भार या श्रम से थके होने की अनुभूति।

2– स्त्रीहीनः– अर्थात पुरूषत्वहीनता की अनुभूति।

3– सदारोगी– अर्थात शरीर व्याधि मन्दिरम् का अनुगामी होना।

4– भृतिजीवी– सेवक की मनोभावना से जीने वाला अर्थात हीन मनोवृत्ति से ग्रसित।

5– स्वपक्षरहितः– अपने जनों से हीन अर्थात आत्मकेन्द्रित होना।

6– प्रचण्डकोपः– उग्रक्रोध से उन्मादग्रस्त होना।

7– क्षय, व्यय व्याधिभिस्तप्तः– हानि या व्यय की अनावश्यक चिन्ता में तल्लीन होकर दुखी होना, आदि।

जातक ग्रन्थों में उल्लिखित उपर्युक्त रोगों के योगः–

उपर्युक्त लक्षणों के लिए अनेक योगों का उल्लेख जातक ग्रन्थों में है। ऐसे कुछ रोगों का उल्लेख निम्नलिखित हैः–

1– लिपिपाठ्यपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9, 10 पृष्ठ–204)

अर्थात यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक लिखने व पढ़ने में रत, ज्ञाता, निन्दित, शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, सेवक (नौकर) वृत्ति से जीने वाला, अपने जनों से हीन, अप्रसन्न, निन्दित कार्यों में तत्पर, अधिक क्रोधी, मनोरथों से अनुद्विग्न वा भ्रान्त, भार व मार्ग के श्रम से दुःखी तथा मध्यम शरीरधारी होता है।[5]

2– द्वेषपरो विषमो वा विषशस्त्रघ्नः प्रचण्डकोपश्च।
लुब्धो दृप्तोऽर्थयुतः परस्वहरणे समर्थश्च।।
बाह्यो मंङलवाद्यैर्नृशंसकर्मा ह्यनेकदुःखः स्यात्।
अष्टमराशौ रविजे क्षयव्ययव्याधिभिस्तप्तः।। (सारावली–अध्याय–एक्कोनत्रिंश श्लोक–15, 16 पृष्ठ–205)

अर्थात यदि प्रादुर्भाव के समय वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक– द्रोह में तत्पर, वा कुटिल, विष (जहर) व शास्त्र से आहत, उग्र क्रोधी, लोभी अहंकारी, धनी, दूसरे के धन हरण करने में समर्थ, मांगलिक कार्यों से बहिर्मुख, निन्दित कार्यकर्ता, हानि व्यय (खर्च) रोगों से पीड़ित होकर अनेक प्रकार के दुःख पाने वाला होता है।[6]

मनोनाड़ी दौर्बल्य से सम्बन्धित रोगों से ग्रसित अनेक प्रकार के रोगियों से सम्पर्क किया गया है तथा उनकी जन्म कुण्डलियों का विश्लेषण अग्र पृष्ठों पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

5– श्रीमत कल्याण वर्मा विरचित– "सारावली"– व्याख्याकार– डा0 मुरलीधर चतुर्वेदी, पृष्ठ–204
6– तत्रैव, पृष्ठ–205

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चं0–1 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

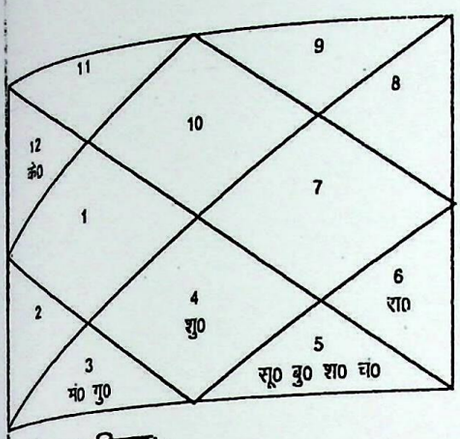

नवमांश

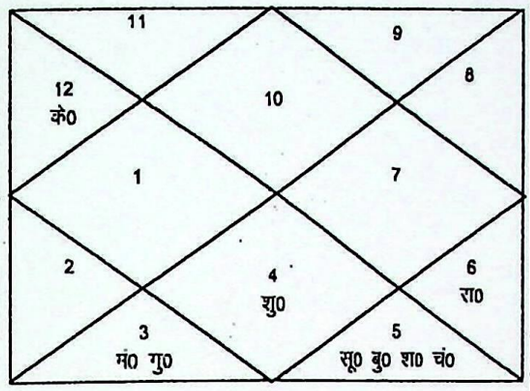

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

सूर्य - राहु	
03–05–2005 से 27–03–2006 तक	
राहु	22–06–2005
गुरू	05–08–2005
शनि	26–09–2005
बुध	12–11–2005
केतु	01–12–2005
शुक्र	25–01–2006
सूर्य	11–02–2006
चंद्र	08–03–2006
मङ्गल	27–03–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – पिंकी
जन्मतिथि – 11 सितम्बर 1977
समय – 04.00 PM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक पिंकी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 नवम्बर, 2005 को आयी मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में सिंह राशि में शनि होने से जातक मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 13 नवम्बर 2005 से 01 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, विघ्न, धन हानि, भय का वातावरण, सर्वत्र कलह तथा उद्वेग होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

लिपिपाठयपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9, 10 पृष्ठ–204)

बुद्धिनाशो भयं विघ्नो धनहानिर्महद्भयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगो केतो प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–33, पृष्ठ–639)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं0-2 मनोनाड़ी दौर्बल्य-मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

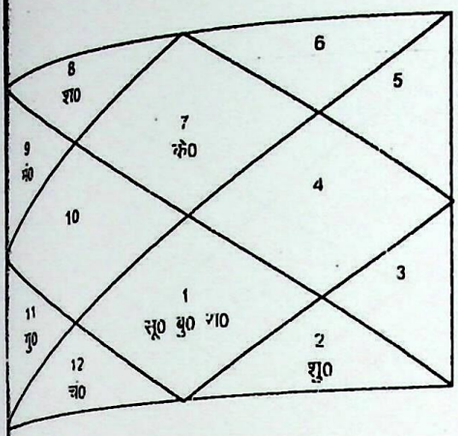

नवमांश

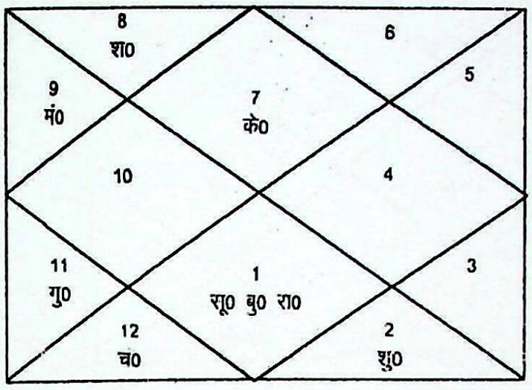

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शनि - राहु	
20-07-2003 से 26-05-2006 तक	
राहु	24–12–2003
गुरू	11–05–2004
शनि	23–10–2004
बुध	18–03–2005
केतु	18–05–2005
शुक्र	09–11–2005
सूर्य	01–01–2006
चंद्र	26–03–2006
मङ्गल	26–05–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – कावेरी
जन्मतिथि – 04 मई 1986
समय – 05.00 PM
स्थान – देवरिया।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कावेरी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 05 अप्रैल, 2005 को आयी मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि वृश्चिक राशि में स्थित है और मंगल छठे भाव में स्थित चन्द्रमा को चतुर्थ दृष्टि से पीड़ित कर रहा है। वृश्चिक राशि में स्थित शनि जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक द्रोह में तत्पर, उग्र क्रोधी, अहंकारी तथा अनेक रोगों से पीड़ित होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 27 मार्च 2006 से 26 मई 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि राहु की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक भगन्दर रोग से पीड़ित, रक्त पित्त जन्म रोग से दुखी, धन की कमी तथा उद्वेगी होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

द्वेषपरो विषमो वा विषशस्त्रघ्नः प्रचण्डकोपश्च।
लुब्धो दृप्तोऽर्थयुतः परस्वहरणे समर्थश्च।।
बाह्यो मंडलवाद्यैर्नृशंसकर्मा ह्यनेकदुःखः स्यात्।
अष्टमराशौ रविजे क्षयव्ययव्याधिभिस्तप्तः।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–15, 16 पृष्ठ–205)

भगन्दरकृतापीडा रक्तपित्तप्रपीडनम्
अर्थहानिर्महोद्वेगं राहौ राह्वन्तरे कुजः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ राहुविदिशाफलम् श्लोक–9, पृष्ठ–427)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya, Jabalpur. Digitized by eGangotri

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं0–3 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोग्रन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

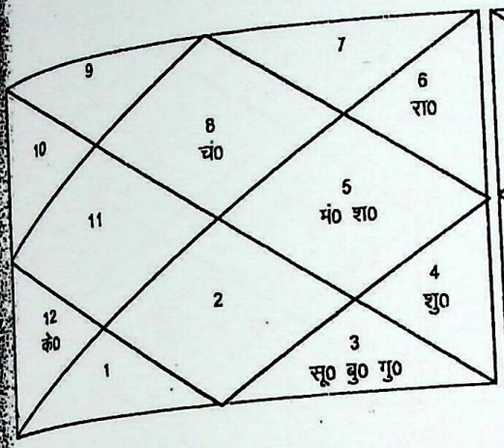

नवमांश

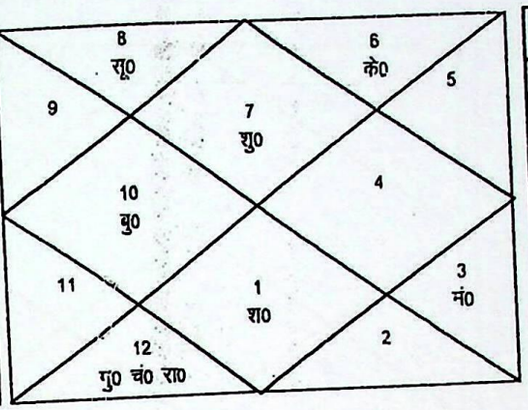

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

सूर्य – मङ्गल	
12–06–2006 से 18–10–2006 तक	
मङ्गल	19–06–2006
राहु	08–07–2006
गुरू	25–07–2006
शनि	15–08–2006
बुध	03–09–2006
केतु	10–09–2006
शुक्र	01–10–2006
सूर्य	07–10–2006
चंद्र	18–10–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	विजेन्द्र
जन्मतिथि	–	20 जून 1978
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक विजेन्द्र मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 12 जुलाई, 2006 को आया मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा को मंगल अपनी चतुर्थ दृष्टि से पीड़ित कर लग्न को दूषित कर रहा है तथा शनि सिंह राशि में स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधि
ाक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में सूर्य की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत गुरू की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 09 जुलाई 2006 से 25 जुलाई 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में गुरू की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, दुखी, संतापी, कलही, चिन्तित तथा अभावग्रस्तता रहती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– लिपिपाठयपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9. 10 पृष्ठ–204)

2– मतिनाशं तथा दुःखं संतापकलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं नीचभौमान्तरे गुरुः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ भौमविदिशाफलम्, श्लोक–3, पृष्ठ–420)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मनोनाड़ी दौर्बल्य-मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

नं0-4

लग्न कुण्डली

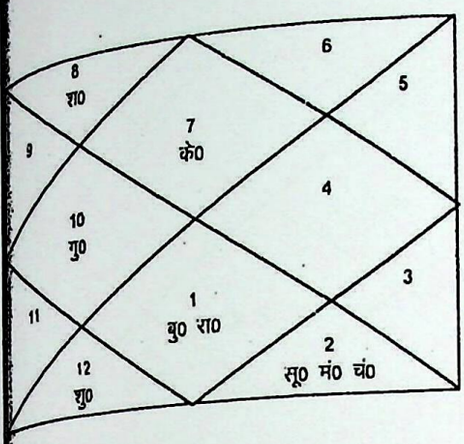

नवमांश

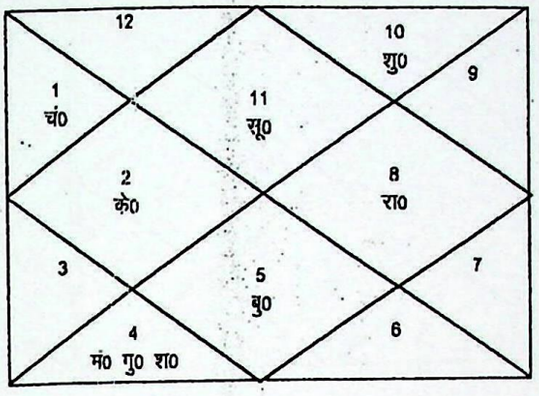

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

राहु - गुरू	
03-07-2003 से 27-11-2005 तक	
गुरू	28–10–2003
शनि	15–03–2004
बुध	18–07–2004
केतु	08–09–2004
शुक्र	02–02–2005
सूर्य	15–03–2005
चंद्र	27–05–2005
मङ्गल	18–07–2005
राहु	27–11–2005

रोगी का परिचयः-

नाम – मंजू
जन्मतिथि – 20 मई 1985
समय – 05.00 PM
स्थान – गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक मंजू मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 जून, 2005 को आयी मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा, सूर्य, मंगल अष्टम भाव में स्थित होकर जातक को मानसिक रोगी बनाते हैं, शनि वृश्चिक राशि में स्थित है जिससे जातक मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि प्रादुर्भाव के समय वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक द्रोह में तत्पर, उग्र क्रोधी, अहंकारी तथा अनेक रोगों से पीड़ित होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली-भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में गुरू की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 28 मई 2005 से 18 जुलाई 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार- "यदि गुरू की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को शस्त्र भय, गुदा द्वार के रोग, अपच, भूख कम लगना तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ा होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- द्वेषपरो विषमो वा विषशस्त्रघ्नः प्रचण्डकोपश्च।
लुब्धो दृप्तोऽर्थयुतः परस्वहरणे समर्थश्च।।
बाह्यो मंडलवाद्यैर्नृशंसकर्मा ह्यनेकदुःखः स्यात्।
अष्टमराशौ रविजे क्षयव्ययव्याधिभिस्तप्तः।। (सारावली-अध्याय-एकोनत्रिंश श्लोक-15, 16 पृष्ठ-205)

2- शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वहिन्नमान्द्यमजीर्णता।
पीडाशत्रुकृता भूतिर्भामप्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-45, पृष्ठ-641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुं0–5 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

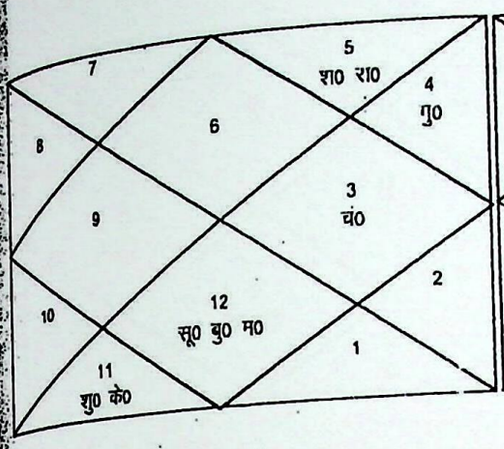

नवमांश

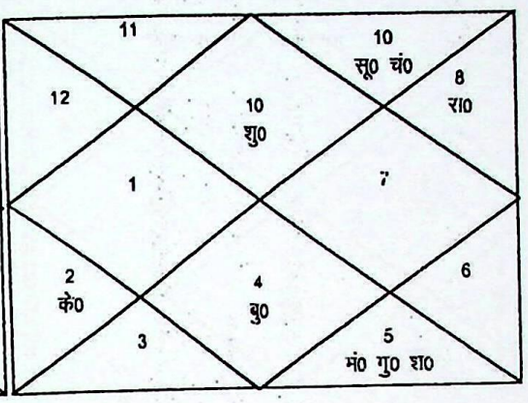

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

गुरू – चंद्र	
10–05–2005 से 10–09–2006 तक	
चंद्र	20–06–2005
मङ्गल	18–07–2005
राहु	30–09–2005
गुरू	04–12–2005
शनि	20–02–2006
बुध	28–04–2006
केतु	26–05–2006
शुक्र	16–08–2006
सूर्य	10–09–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	राकेश
जन्मतिथि	–	03 अप्रैल 1979
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक विजेन्द्र मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 02 जनवरी, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि सिंह राशि में स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि का रोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 05 दिसम्बर 2005 से 20 फरवरी 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि चन्द्र की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक अशुभ दिनों के कारण वात तथा पित्त जन्य रोगों से विशेष कष्ट पाने वाला तथा धन–धान्य एवं यश की हानि से दुखी होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– लिपिपाठयपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9, 10 पृष्ठ–204)

2– दुर्दिनैर्लभते पीडां वातपित्ताद् विशेषतः।
धधान्ययशोहानिश्चन्द्रचन्द्रान्तरे शनिः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ चंद्रविदिशाफलम्, श्लोक–5, पृष्ठ–413)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMV), Karaundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नं0–6 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

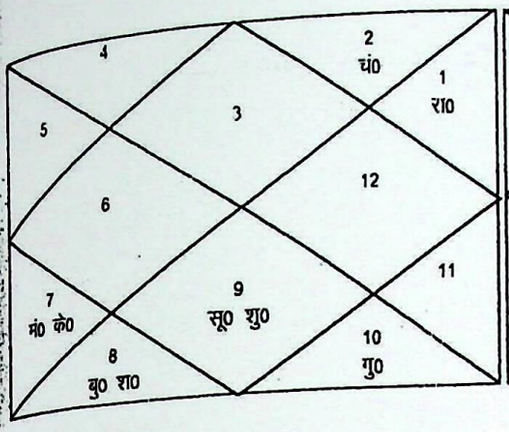

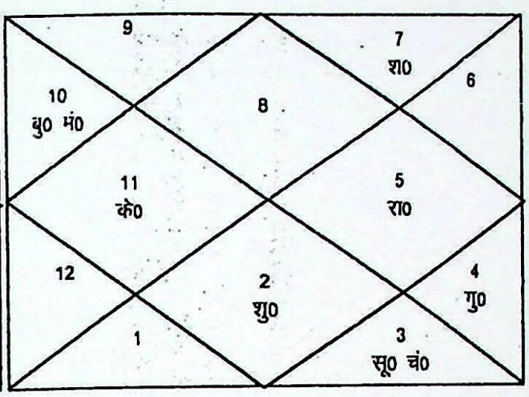

राहु - केतु	
10-04-2006 से 28-04-2007 तक	
केतु	02–05–2006
शुक्र	05–07–2006
सूर्य	24–07–2006
चंद्र	26–08–2006
मङ्गल	18–09–2006
राहु	15–11–2006
गुरू	05–01–2007
शनि	05–03–2007
बुध	28–04–2007

रोगी का परिचयः–

नाम	–	फूलमती
जन्मतिथि	–	25 दिसम्बर 1985
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक फूलमती मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 10 मई, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा व्यय भाव में है जिसे मंगल अपनी अष्टम दृष्टि से पीड़ित कर रहा है। शनि वृश्चिक राशि में स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित करता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक द्रोह में तत्पर, उग्र क्रोधी, अहंकारी तथा अनेक रोगों से पीड़ित होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शुक्र की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 03 मई 2006 से 05 जुलाई 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि केतु की अन्तर्दशा में शुक्र की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को निम्न कोटि के लोगों से भय, धन नाश, नेत्र रोग, मस्तक में पीड़ा तथा चौपायों की हानि होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– द्वेषपरो विषमो वा विषशस्त्रघ्नः प्रचण्डकोपश्च।
लुब्धो दृप्तोऽर्थयुतः परस्वहरणे समर्थश्च।।
बाह्यो मंडलवाद्यैर्नृशंसकर्मा ह्यनेकदुःखः स्यात्।
अष्टमराशौ रविजे क्षयव्ययव्याधिभिस्तप्तः।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–15, 16 पृष्ठ–205)

2– म्लेच्छभीरर्थनाशो वा नेत्ररोगः शिरोव्यथा।
हानिश्चतुष्पदानां च भृगोः प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–66, पृष्ठ–643)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नं0–7 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

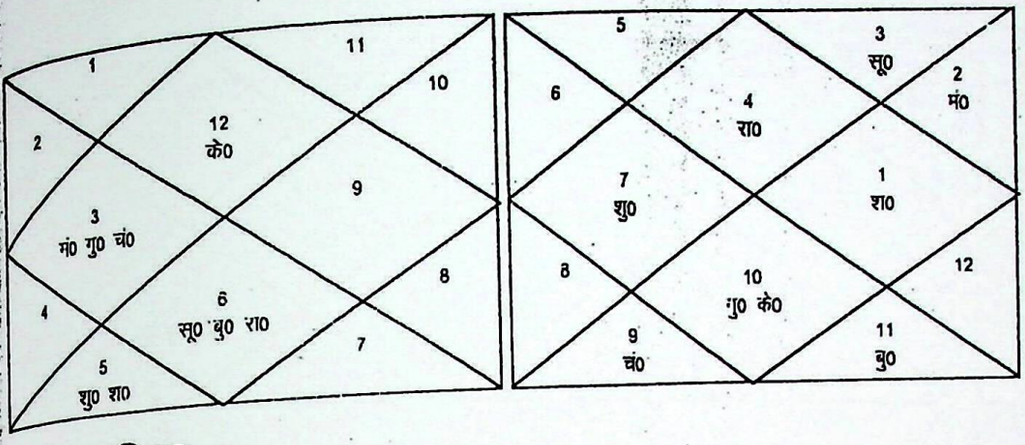

गुरू - सूर्य	
07-01-2005 से 25-10-2005 तक	
सूर्य	21–01–2005
चंद्र	15–02–2005
मङ्गल	02–03–2005
राहु	15–04–2005
गुरू	24–05–2005
शनि	09–07–2005
बुध	20–08–2005
केतु	07–09–2005
शुक्र	25–10–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – अनुज
जन्मतिथि – 04 अक्टूबर 1977
समय – 05.00 PM
स्थान – बाराबंकी।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक अनुज मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 10 जनवरी, 2005 को आया मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में छठे भाव में शनि शुक्र के साथ सिंह राशि में स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि का रोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 07 जनवरी 2005 से 21 जनवरी 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक उद्वेगी, स्त्री पीड़ा से युक्त, मस्तक में पीडा तथा विवादग्रस्त होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– लिपिपाठयपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9, 10 पृष्ठ–204)

2– उद्वेगोऽथ बलं वित्तं दारार्तिः शिरसि व्यथा।
ब्राम्हणन विवादश्र सूर्यः स्वविदशां गतः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ रवेर्विदशाफलम्, श्लोक–1, पृष्ठ–406)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नं0-8 मनोनाड़ी दौर्बल्य-मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

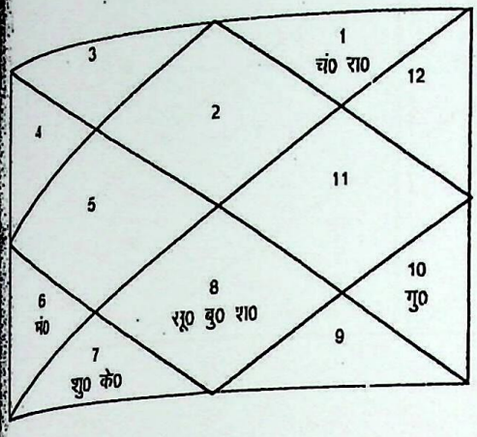

नवमांश

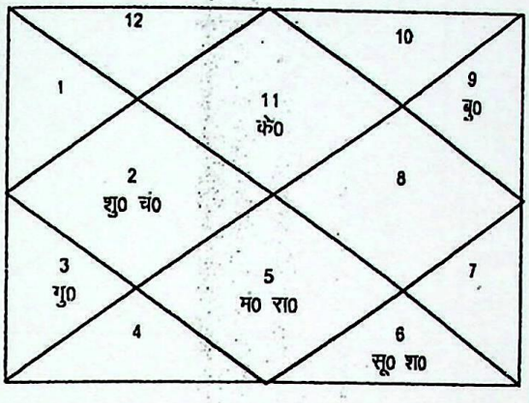

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शुक्र - शनि	
26-10-2002 से 26-12-2005 तक	
शनि	26-04-2003
बुध	08-10-2003
केतु	14-12-2003
शुक्र	24-06-2004
सूर्य	21-08-2004
चंद्र	26-11-2004
मङ्गल	03-02-2005
राहु	24-11-2005
गुरू	26-12-2005

रोगी का परिचयः-

नाम	–	सीता
जन्मतिथि	–	24 नवम्बर 1985
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	गोरखपुर।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक सीता मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 04 जनवरी, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि वृश्चिक राशि में स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित कर रहा है। चन्द्रमा राहु के साथ भी व्यय भाव में जाकर जातक को मानसिक रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि प्रादुर्भाव के समय वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक द्रोह में तत्पर, उग्र क्रोधी, अहंकारी तथा अनेक रोगों से पीड़ित होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली-भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शुक्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की ही प्रत्यन्तर दशा दिनांक 27 नवम्बर 2004 से 03 फरवरी 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार- "यदि शनि की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक तेजस्विता से रहित, शत्रुओं से भयभीत तथा वात तथा पित्त जन्य रोगों से पीड़ित होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- द्वेषपरो विषमो वा विषशस्त्रघ्नः प्रचण्डकोपश्च।
लुब्धो दृप्तोऽर्थयुतः परस्वहरणे समर्थश्च।।
बाह्यो मंङलवाद्यैर्नृशंसकर्मा ह्यनेकदुःखः स्यात्।
अष्टमराशौ रविजे क्षयव्ययव्याधिभिस्तप्तः।। (सारावली-अध्याय-एकोनत्रिंश श्लोक-15, 16 पृष्ठ-205)

2- तेजोहानिः पुत्रघातो वह्नि भीन्ती रिपोर्भयम्।
वातपित्तकृता पीड़ा कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-53, पृष्ठ-642)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV), Karbundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केस-9 मनोनाड़ी दौर्बल्य-मनःश्रान्ति, मनोग्रन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

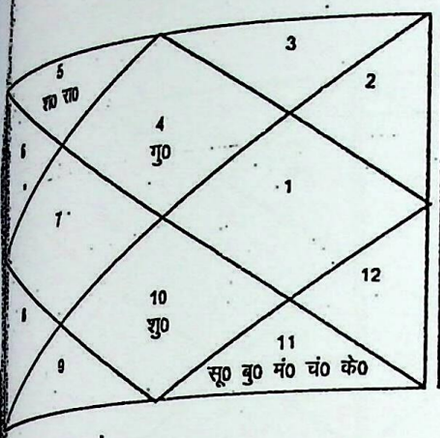

नवमांश

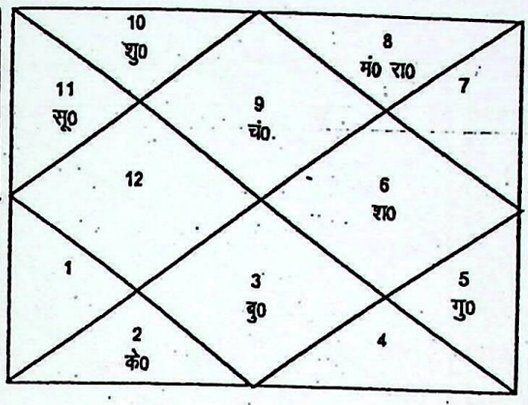

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

गुरू – मङ्गल	
04-05-2005 से 10-04-2006 तक	
मङ्गल	23-05-2005
राहु	14-07-2005
गुरू	29-08-2005
शनि	22-10-2005
बुध	09-12-2005
केतु	29-12-2005
शुक्र	25-02-2006
सूर्य	12-03-2006
चंद्र	10-04-2006

रोगी का परिचयः-

नाम – अमर
जन्मतिथि – 26 फरवरी 1979
समय – 04.00 PM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक अमर मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नू मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 28 अक्टूबर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि सिंह राशि में राहु के साथ है, जिसे मंगल, सूर्य, बुध, चन्द्रमा ये सभी सप्तम दृष्टि से देखकर जातक को पीड़ित करते हैं। सिंह राशि में शनि होने से जातक मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली-भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 23 अक्टूबर 2005 से 09 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार- "यदि मंगल की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, धन हानि, ज्वर रोग तथा मित्रों से भी हानि होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. लिपिपाठ्यपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली-अध्याय-एकोनत्रिंश श्लोक-9, 10 पृष्ठ-204)

2. सर्वथा बुद्धिनाशाश्च धनहानिर्ज्वरस्तनौ।
वस्त्रान्नसुहृदां नाशो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-24, पृष्ठ-638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

10 मनोनाड़ी दौर्बल्य-मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

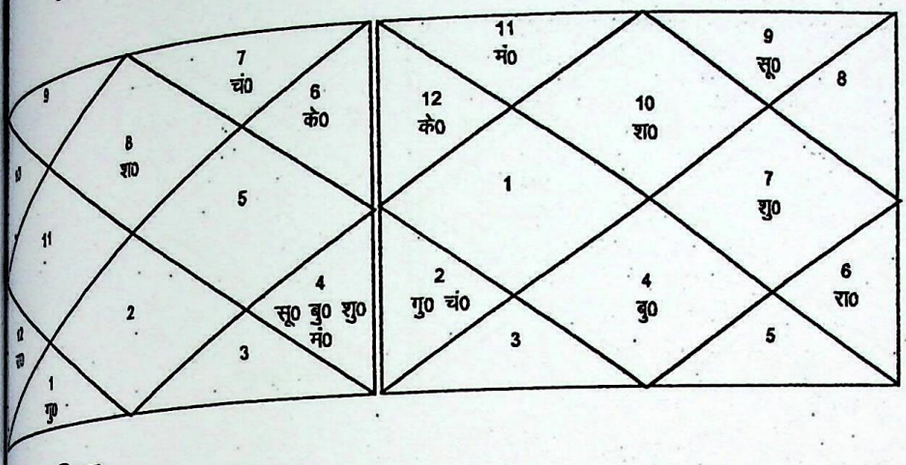

नवमांश

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

शनि - केतु	
23-04-2004 से 02-06-2005 तक	
केतु	16–05–2004
शुक्र	23–07–2004
सूर्य	13–08–2004
चंद्र	16–09–2004
मङ्गल	09–10–2004
राहु	09–12–2004
गुरू	02–02–2005
शनि	05–04–2005
बुध	02–06–2005

रोगी का परिचयः–

नाम – ध्रुव
जन्मतिथि – 03 अगस्त 1987
जन्मसमय – 03.00 PM
जन्मस्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक ध्रुव मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय 5 मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 16 अप्रैल, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि वृश्चिक राशि में स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रंथि आदि रोगों से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक द्रोह में तत्पर, उग्र क्रोधी, अहंकारी तथा अनेक रोगों से पीड़ित होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 06 अप्रैल 2005 से 02 जून 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि केतु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का विनाश, अत्यधिक उद्वेग, विद्या हानि, भय का वातावरण तथा कार्यो में असफलता होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

१. द्वेषपरो विषमो वा विषशस्त्रघ्नः प्रचण्डकोपश्च।
लुब्धो दृप्तोऽर्थयुतः परस्वहरणे समर्थश्च।।
बाह्यो मंङ्गलवाद्यैर्नृशंसकर्मा ह्यनेकदुःखः स्यात्।
(सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–15, 16 पृष्ठ–205)

२. अष्टमराशौ रविजे क्षयव्ययव्याधिभिस्तप्तः।।
बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महाभयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत केतोः केत्वन्तरा बुधः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ केतोर्विदिशाफलम्, श्लोक–9, पृष्ठ–459)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रो0–11 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

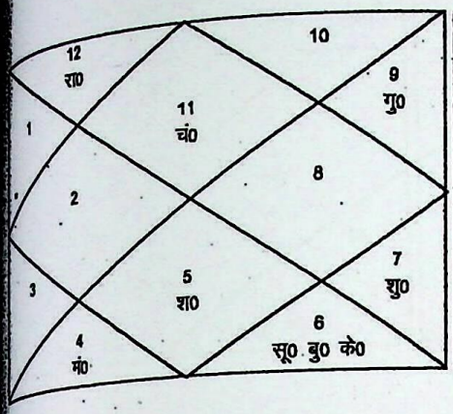

नवमांश

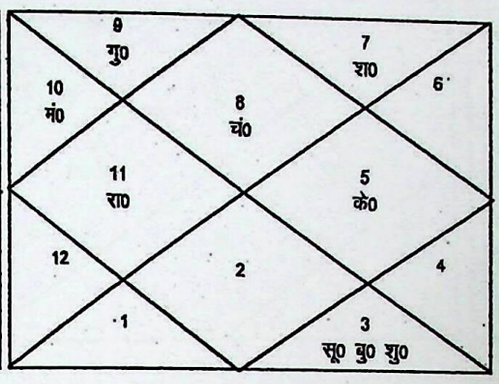

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

बुध - केतु	
16-04-2005 से 13-04-2006 तक	
केतु	07–05–2005
शुक्र	07–07–2005
सूर्य	25–07–2005
चंद्र	24–08–2005
मङ्गल	15–09–2005
राहु	09–11–2005
गुरू	26–12–2005
शनि	23–02–2006
बुध	13–04–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	इन्दू
जन्मतिथि	–	03 अक्टूबर 1949
समय	–	04.00 PM
स्थान	–	दिल्ली।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक इन्दू मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 मई, 2005 को आयी मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि सिंह राशि में स्थित होकर लग्न में स्थित चन्द्रमा को सप्तम दृष्टि से देखता है। मंगल भी अष्टम दृष्टि से लग्न को देखकर जातक को पीड़ित करता है। सिंह राशि में शनि की उपस्थिति जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में केतु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शुक्र की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 08 मई 2005 से 07 जुलाई 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि केतु की अन्तर्दशा में शुक्र की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को निम्न श्रेणी के लोगों से भय, धन का नाश, नेत्र में रोग, मस्तक में व्यथा तथा चौपायों की हानि होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– लिपिपाठ्यपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9, 10 पृष्ठ–204)

2– म्लेच्छभीरर्थनाशो वा नेत्ररोगः शिरोव्यथा।
हानिश्चतुष्पदानां च भुगो प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–66, पृष्ठ–643)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केस-12 मनोनाड़ी दौर्बल्य--मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

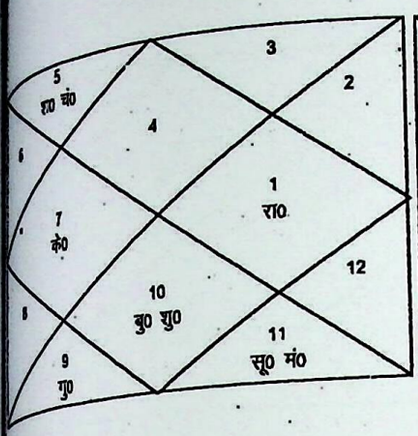

नवमांश

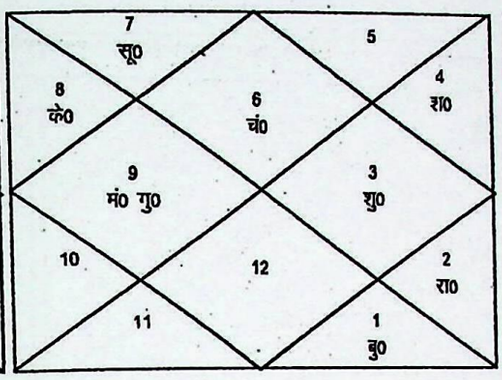

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

गुरू - गुरू	
14-04-2004 से 02-06-2006 तक	
गुरू	27–07–2004
शनि	28–11–2004
बुध	17–03–2005
केतु	02–05–2005
शुक्र	10–09–2005
सूर्य	18–10–2005
चंद्र	22–12–2005
मङ्गल	07–02–2006
राहु	02–06–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – कैलाश
जन्मतिथि – 14 फरवरी 1949
समय – 04.00 PM
स्थान – उन्नाव।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक कैलाश मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 02 जनवरी, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में सिंह राशि में स्थित शनि की चन्द्रमा से युति है, जिसे सूर्य तथा मंगल की सप्तम दृष्टि पीड़ित कर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित बनाती है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में गुरू की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 23 दिसम्बर 2005 से 07 फरवरी 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि गुरू की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को शस्त्र भय, गुदा द्वार के रोग, अपच, भूख कम लगना तथा शत्रुओं द्वारा पीड़ा होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– लिपिपाठ्यपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9, 10 पृष्ठ–204)

2– माराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।।
शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वहिनमान्द्यमजीर्णता।
पीडाशत्रुकृता भूतिर्भामप्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–45, पृष्ठ–641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कं0-13 मनोनाड़ी दौर्बल्य-मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

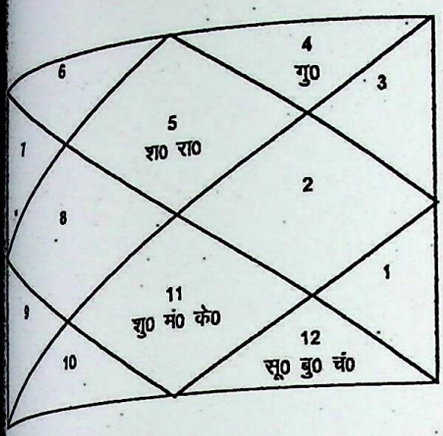

नवमांश

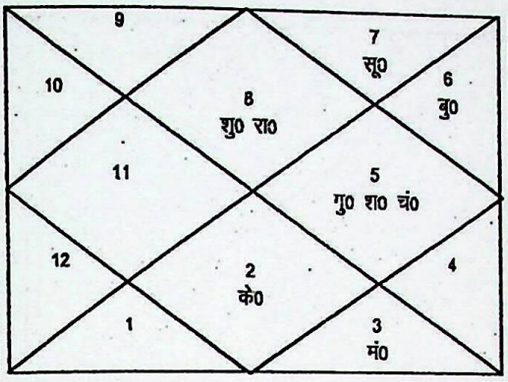

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

बुध – मङ्गल	
26-01-2001 से 23-01-2007 तक	
मङ्गल	17–02–2006
राहु	11–04–2006
गुरू	28–05–2006
शनि	25–07–2006
बुध	15–09–2006
केतु	06–10–2006
शुक्र	06–12–2006
सूर्य	24–12–2006
चंद्र	23–01–2007

रोगी का परिचयः–

नाम	–	शंकर
जन्मतिथि	–	27 मार्च 1979
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक शंकर मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 20 अप्रैल, 2006 को आया मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में सूर्य, चन्द्रमा बुध के साथ आठवें भाव में है, मंगल लग्न को सप्तम दृष्टि से देखकर जातक को कमज़ोर कर रहा है। शनि सिंह राशि में स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में मंगल की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत गुरू की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 12 अप्रैल 2006 से 28 मई 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में गुरू की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, दुख, सन्ताप, कलह तथा सभी योजनाओं की विफलता होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. लिपिपाठयपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
माराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9, 10 पृष्ठ–204)

2. मतिनाशस्तथा दुःखं सन्तापः कलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं गुरौः प्रत्यन्तरे यदि।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् अध्याय–63, श्लोक–22, पृष्ठ–638)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नं0–14 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

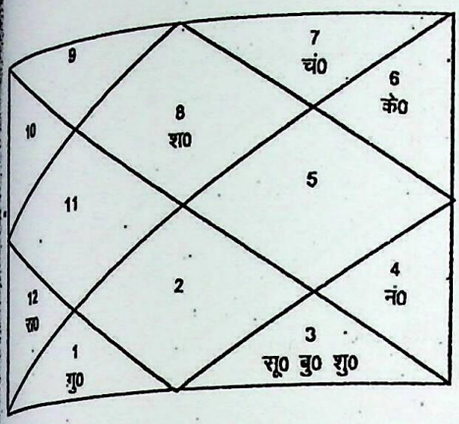

नवमांश

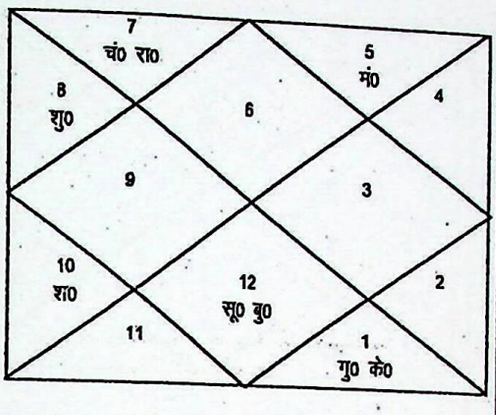

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

राहु – चंद	
01-05-2005 से 01-11-2006 तक	
चंद्र	16–06–2005
मङ्गल	18–07–2005
राहु	09–10–2005
गुरू	23–12–2005
शनि	16–03–2006
बुध	03–06–2006
केतु	04–07–2006
शुक्र	04–10–2006
सूर्य	01–11–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	विपिन
जन्मतिथि	–	05 जुलाई 1987
समय	–	04.00 PM
स्थान	–	लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक विपिन मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 12 जनवरी, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में वृश्चिक राशि का शनि लग्न में स्थित है और चन्द्रमा व्यय भाव में स्थित है, जिस पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि है। वृश्चिक राशि का शनि जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक द्रोह में तत्पर, उग्र क्रोधी, अहंकारी तथा अनेक रोगों से पीड़ित होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में चंद्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 24 दिसम्बर 2005 से 16 मार्च 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि चन्द्र की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक कष्टकारी दिनों के कारण वात तथा पित्त के रोग से विशेष कष्ट पाता है तथा धन–धान्य एवं यश की हानि होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1– द्वेषपरो विषमो वा विषशंस्त्रघ्नः प्रचण्डकोपश्च।
लुब्धो दृप्तोऽर्थयुतः परस्वहरणे समर्थश्च।।
बाह्यो मंङ्गलवाद्यैर्नृशंसकर्मा ह्यनेकदुःखः स्यात्।
अष्टमराशौ रविजे क्षयव्ययव्याधिभिस्तप्तः।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–15, 16 पृष्ठ–205)

2– दुर्दिनैर्लभते पीडां वातपित्ताद् विशेषतः।
धधान्ययशेहानिश्चन्द्रचन्द्रान्तरे शनिः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ चंद्रविदिशाफलम्, श्लोक–5, पृष्ठ–413)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुण्डली-15 मनोनाड़ी दौर्बल्य-मनःश्रान्ति, मनोग्रन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

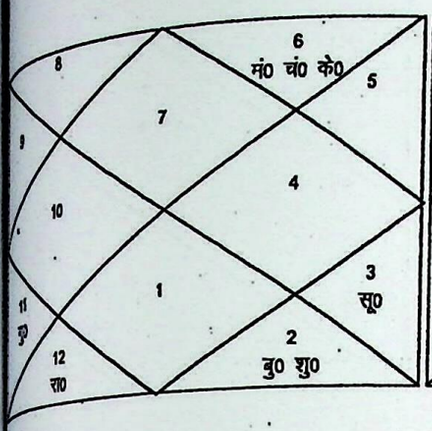

नवमांश

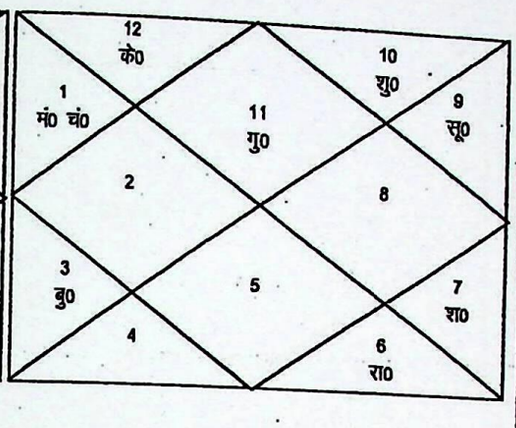

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

शनि - बुध	
18-02-2004 से 27-10-2006 तक	
बुध	05-07-2004
केतु	02-09-2004
शुक्र	13-02-2005
सूर्य	02-04-2005
चंद्र	23-06-2005
मङ्गल	19-08-2005
राहु	15-01-2006
गुरू	24-05-2006
शनि	27-10-2006

कुण्डली का परिचय:-

नाम — भावना
जन्मतिथि — 23 जून 1950
समय — 03.00 PM
स्थान — लखनऊ।

कुण्डली से सम्पर्क:-

जातक भावना मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 15 जुलाई, 2006 को आयी मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षा:-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में चन्द्रमा मंगल तथा केतु की युति के साथ व्यय भाव में जाकर मानसिक पीड़ा का कारण बनता है तथा शनि सिंह राशि स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योग:-

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित है:-

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली-भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षा:-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 25 मई 2006 से 27 अक्टूबर 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार- "यदि बुध की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को वात तथा पित्त से अत्यधिक कष्ट, शरीर पर आघात तथा धन का नाश होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

लिपिपाठ्यपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली-अध्याय-एकोनत्रिंश श्लोक-9, 10 पृष्ठ-204)

वातपित्तमहापीडा देहघातसमुद्भवा।
धननाशमवाप्नोति शनेः प्रत्यन्तरे जनः।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-64, पृष्ठ-643)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

...-16 मनोनाड़ी दौर्बल्य-मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

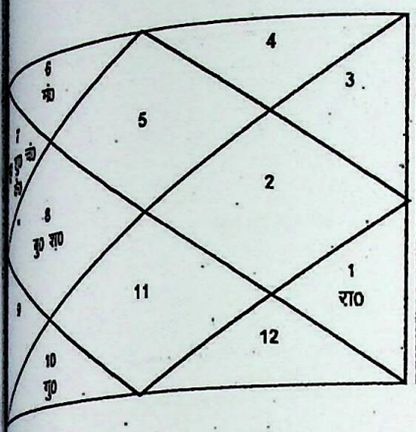

नवमांश

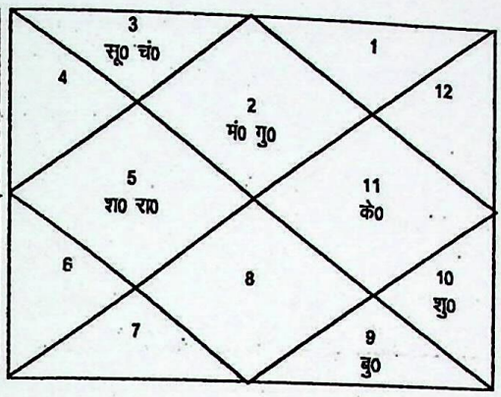

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

शनि - राहु	
01-03-2004 से 05-01-2007 तक	
राहु	02-08-2004
गुरू	19-12-2004
शनि	02-06-2005
बुध	27-10-2005
केतु	27-12-2005
शुक्र	18-06-2006
सूर्य	09-08-2006
चंद्र	05-11-2006
मङ्गल	05-01-2007

...गी का परिचयः-

...म	–	पार्वती
...न्मतिथि	–	13 नवम्बर 1985
...मय	–	12.30 AM
...थान	–	दिल्ली।

...गी से सम्पर्कः-

जातक पार्वती मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल ...लेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 दिसम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से ...र्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर ...लब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

...न्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि वृश्चिक राशि में स्थित होकर लग्न को पीड़ित कर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, ...श्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित कर रहा है।

...तक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि प्रादुर्भाव के समय वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक द्रोह में तत्पर, उग्र क्रोधी, अहंकारी तथा अनेक रोगों ...पीड़ित होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली-भांति परीक्षण ...ने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित ...।

...शोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में शनि की दशा में राहु की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत ...तु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 28 अक्टूबर 2005 से 27 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार- "यदि राहु की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो ...तक की बुद्धि का नाश, विघ्न, धन हानि, अत्यधिक भय, सर्वत्र कलह तथा उद्वेग होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. द्वेषपरो विषमो वा विषशस्त्रघ्नः प्रचण्डकोपश्च।
लुब्धो दृप्तोऽर्थयुतः परस्वहरणे समर्थश्च।।
बाह्यो मंङलवाद्यैर्नृशंसकर्मा ह्यनेकदुःखः स्यात्।
अष्टमराशौ रविजे क्षयव्ययव्याधिभिस्तप्तः।। (सारावली-अध्याय-एकोनत्रिंश श्लोक-15, 16 पृष्ठ-205)

2. बुद्धिनाशो भयं विघ्नो धनहानिर्महद्भयम्।
सर्वत्र कलहोद्वेगो केतो प्रत्यन्तरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-33, पृष्ठ-639)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

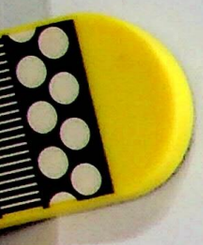

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

...-17 मनोनाड़ी दौर्बल्य-मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

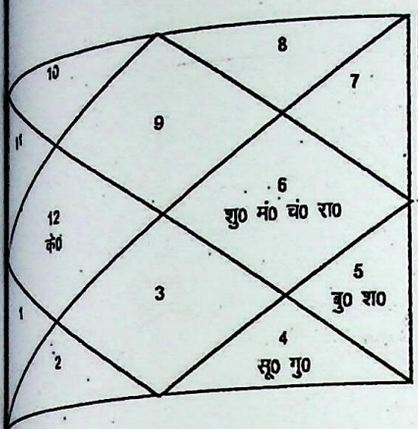

नवमांश

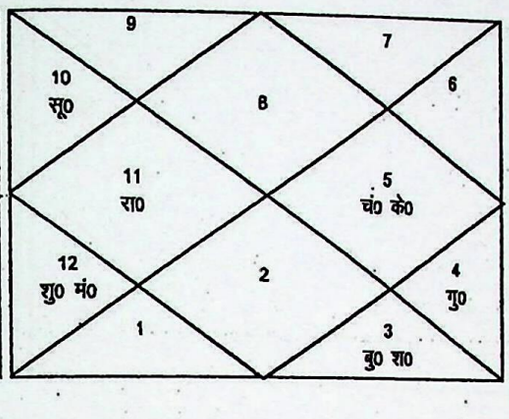

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

गुरू - शनि	
05-04-2005 से 17-10-2007 तक	
शनि	29-08-2005
बुध	08-01-2006
केतु	01-03-2006
शुक्र	03-08-2006
सूर्य	19-09-2006
चंद्र	05-12-2006
मङ्गल	28-01-2007
राहु	15-06-2007
गुरू	17-10-2007

रोगी का परिचयः-

नाम	–	रागिनी
जन्मतिथि	–	09 अगस्त 1978
समय	–	05.00 PM
स्थान	–	लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक रागिनी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 03 जून, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में दशम भाव में स्थित मंगल लग्न को चतुर्थ दृष्टि से दूषित करता है। शनि सिंह राशि में स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली-भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 05 अप्रैल 2005 से 29 अगस्त 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार- "यदि शनि की अन्तर्दशा में शनि की ही प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को निम्न श्रेणी के लोगों से कष्ट तथा अनेक प्रकार के शारीरिक कष्टों से दुख होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

1- लिपिपाठयपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरंतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली-अध्याय-एकोनत्रिंश श्लोक-9, 10 पृष्ठ-204)

2- देहपीडा कलेर्भीतिर्भयमन्त्यजलोकतः।
दुःखं शन्यन्तरे नाना शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय-63 श्लोक-47, पृष्ठ-641)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तं0–18 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

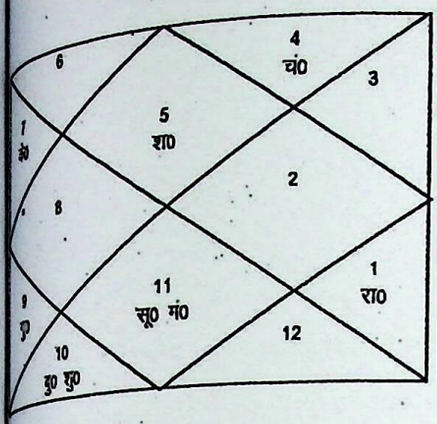

नवमांश

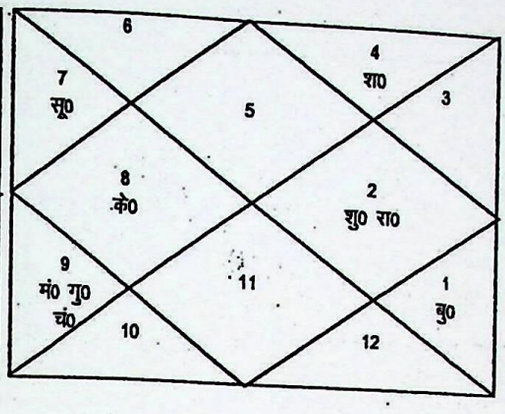

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

मंगल – मङ्गल	
10–04–2006 से 07–09–2006 तक	
मङ्गल	18–04–2006
राहु	11–05–2006
गुरू	30–05–2006
शनि	23–06–2006
बुध	14–07–2006
केतु	23–07–2006
शुक्र	17–08–2006
सूर्य	25–08–2006
चंद्र	07–09–2006

रोगी का परिचयः–

नाम	–	विजयलक्ष्मी
जन्मतिथि	–	12 फरवरी 1949
समय	–	07.00 PM
स्थान	–	लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक विजयलक्ष्मी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग बिभाग में चिकित्सा हेतु 01 जून, 2006 को आयी मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि सिंह राशि में लग्न में स्थित है, जिसे क्रूर ग्रह सूर्य और मंगल सप्तम दृष्टि से दृष्टित कर रहे हैं। चन्द्रमा व्यय भाव में है। सिंह राशि में स्थित शनि जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में मंगल की दशा में मंगल की ही अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत राहु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 21 मई 2006 से 23 जून 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि मंगल की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक के स्वामी की मृत्यु, धन हानि, अनेक कष्ट, व्याकुलता तथा कलह होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. लिपिपाठ्यपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9, 10 पृष्ठ–204)

2. स्वामिनाशस्तथा पीड़ा धनहानिर्महाभयम्।
वैकल्यं कलहस्त्रासो शनेः प्रत्यन्तरे भवेत।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–23, पृष्ठ–638)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं0–19 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

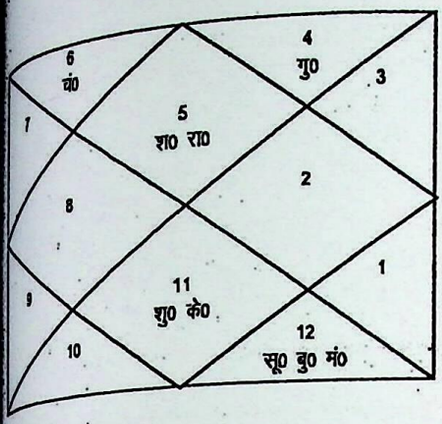

नवमांश

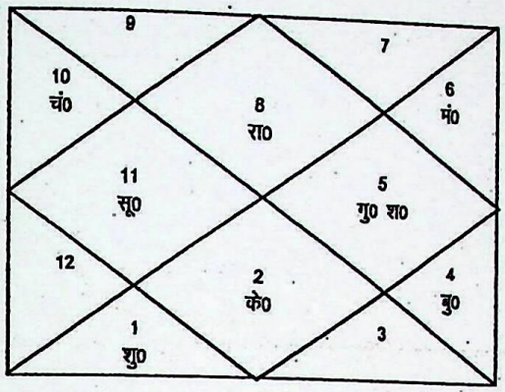

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

राहु – शनि	
14–11–2004 से 20–09–2007 तक	
शनि	27–04–2005
बुध	22–09–2005
केतु	22–11–2005
शुक्र	13–05–2006
सूर्य	04–07–2006
चंद्र	30–09–2006
मङ्गल	29–11–2006
राहु	03–05–2007
गुरू	20–09–2007

रोगी का परिचयः–

नाम – रोशनी
जन्मतिथि – 10 अप्रैल 1979
समय – 04.00 PM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक रोशनी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 03 जून, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में शनि राहु के साथ लग्न में सिंह राशि में स्थित होकर जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य, मनःश्रान्ति तथा मनोग्रन्थि आदि का रोगी बनाता है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "सारावली" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि प्रादुर्भाव के समय सिंह राशि में शनि हो तो जातक शालीनता से रहित, स्त्री से हीन, अप्रसन्न, भ्रान्ति, अधिक क्रोधी मनोरथों से अनुद्विग्न आदि के लक्षणों से युक्त होता है।"[1]

ऐसे सभी लक्षण मनोनाड़ी दौर्बल्य रोग के अन्तर्गत आते हैं। रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 28 अप्रैल 2005 से 22 सितम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि शनि की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, कलह, भय, भोजन का अभाव, धन–धान्य की हानि तथा शत्रुओं से कष्ट होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

१. लिपिपाठ्यपरोऽभिज्ञो विगर्हितो विगतशीलश्च।
स्त्रीवियुतो भृतिजीवी स्वपक्षरहितो मुदा हीनः।।
नीचक्रियासु निरतो विवृद्धरोषो मनोरथै र्दान्तः।
भाराध्वश्रमदुःखैः प्रकीर्णदेहो यमे सिंहे।। (सारावली–अध्याय–एकोनत्रिंश श्लोक–9, 10 पृष्ठ–204)

२. बुद्धिनाशं कलिं भीतिमन्नापानादिहानिकृत्।
धनहानिर्भयं शत्रोः शनेः शत्रुगृहे बुधः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ शनिविदिशाफलम्, श्लोक–2, पृष्ठ–443)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रो0–20 मनोनाड़ी दौर्बल्य–मनःश्रान्ति, मनोगन्थि रोगी की जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली

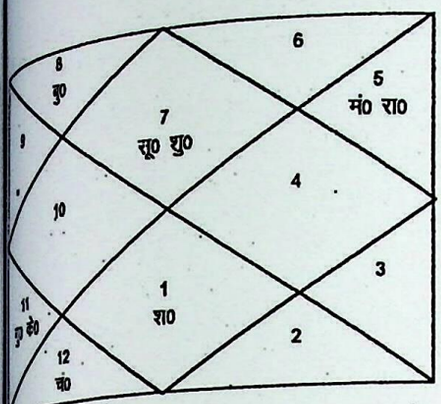

नवमांश

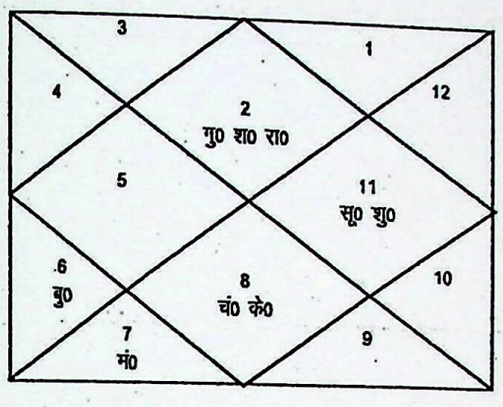

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

बुध – शुक्र	
26–10–2004 से 26–08–2007 तक	
शुक्र	16–04–2005
सूर्य	07–06–2005
चंद्र	02–09–2005
मङ्गल	01–11–2005
राहु	04–04–2006
गुरू	20–08–2006
शनि	02–02–2007
बुध	26–06–2007
केतु	26–08–2007

रोगी का परिचयः–

नाम – रमापति
जन्मतिथि – 02 नवम्बर 1998
समय – 07.00 AM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक रमापति मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 15 सितम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव में पाप ग्रह केतु स्थित है, जो मंगल तथा राहु की सप्तम दृष्टि से भी पीड़ित है। इसके अतिरिक्त षष्टम भाव में चन्द्रमा पर मंगल की अष्टम दृष्टि है, जो जातक को मनोनाड़ी दौर्बल्य और अनिद्रा आदि के रोगों से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" तथा "वृहज्जातकम" में उपलब्ध है जो निम्नलिखित हैः–

"यदि पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

तथा

"यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो अथवा चन्द्रमा परिवेष युक्त हो तो जातक कठोर भाषी, मिर्गी का रोगी तथा सदैव शारीरिक शक्ति घटाते रहने वाले किसी बड़े रोग से पीड़ित होता है।"[2]

रोगी से साक्षात्कार तथा उसकी भली–भांति परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह रोगी मनोनाड़ी दौर्बल्य तथा मनःश्रान्ति एवं मनोग्रन्थि आदि रोगों से पीड़ित है।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत मंगल की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 03 सितम्बर 2005 से 01 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र हो।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को रक्त तथा पित्त का विकार, कलह, अपमान तथा अधिक क्लेश होता है।"[3]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)
2. परूषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे।
रविसमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभः स्थलमाश्रितै–
भृतकमनुजः पूर्वोदिदृष्टैर्वराधममध्यमाः।।17।। (वृहज्जातकम अध्याय–21, श्लोक–17, पृष्ठ–340)
रक्तपित्तादि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-नवम्

वृद्धावस्थाजन्य मनोविकार

(Senile Psychosis)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय नवम

वृद्धावस्थाजन्य मनोविकार

(Senile Psychosis)

रोग का परिचयः—

यह प्रायः 70 वर्ष या उससे अधिक आयु में होने वाला रोग है, जबकि मनुष्य की शारीरिक धातुओं तथा मानसिक शक्ति का ह्रास होने लगता है। यह अल्पबुद्धि एवं अल्पसाधन वाले व्यक्तियों को अधिकांश होता है।[1]

लक्षणः—[2]

1. चिड़चिड़ापन, संवेदनशीलता, स्मृतिनाश, तीव्र स्वार्थपरता, अनुदारता, चिन्ता की अधिकता और स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है।

2. हठ, क्रोध, विचार–संकोच, व्याकुलता और लापरवाही बढ़ जाती है।

3. अपनी वस्तुओं, वस्त्रों और कपड़ों को अव्यवस्थित रखता है।

4. वह परिचितों की आकृति और नाम भूल जाता है और एक ही बात बार–बार पूछता है।

5. वह आशंका से ग्रस्त होता है और लोगों पर विश्वास नहीं करता। उसे यह डर बना रहता है कि लोग मेरी सम्पत्ति हड़पना चाहते हैं, इसलिए कहीं मुझे जहर न दें आदि।

6. उसे कपड़े पहनने, उन्हें स्वच्छ रखने और तरतीब से रखने में कोई रूचि नहीं

1- विद्याधर शुक्ल- कायचिकित्सा पृष्ठ-250

2- प्रकाशक का नाम, पता एवं प्रकाशन वर्ष-पूर्वोक्त तत्रैव- पृष्ठ-251

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होती।

7. वह आत्मकेन्द्रित, ईर्ष्याद्वेष की भावना वाला तथा भुलक्कड़ स्वभाव का होता है।

8. कभी–कभी वह बालकों जैसा हठ और वार्तालाप तथा व्यवहार करता है।

9. वह अधिकांश किसी कार्य की सफलता के प्रति सन्दिग्ध रहता है।

10. वह सभी कार्य के अन्धकार पक्ष को ही देखता है और विषादग्रस्त रहता है।

वृद्धावस्था जन्य मानसिक रोगः–

जातक शास्त्रों में जिन योगों के प्रभाववश व्यक्ति की आयु सत्तर वर्ष से ऊपर होती है उन्हें दीर्घायु की श्रेणी में रखा गयाहै। वृद्धावस्था जन्य मानसिक रोगों के ज्ञान हेतु दीर्घायु योगों तथा विभिन्न ग्रहों की दशा महादशा तथा अन्तर्दशा आदि पर विचार करना अनिवार्य होता है।

"जातक पारिजात" में उल्लिखित दीर्घायु के योग निम्नलिखित हैः–[3]

3- चतुष्टये शुभैर्युक्ते लग्नेशे शुभसंयुते।
गुरूणा दृष्टिसंयोगे पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत्।।
केन्द्रान्विते विलग्नेशे गुरूशुक्रसमन्विते।
ताभ्यां निरीक्षिते वाऽपि पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत्।।
उच्चान्वितैस्त्रिभिः खेटैर्लग्नरन्ध्रेशसंयुतैः।
रन्ध्रे पापविहीने च दीर्घमायुर्विनिर्दिशेत्।।
रन्ध्रस्थितैस्त्रिभिः खेटैः स्वोच्चमित्रस्ववर्गगैः।
लग्नेशे बलसंयुक्ते दीर्घमायुर्विनिर्दिशेत्।।
स्वोच्चस्थितेन केनाऽपि खेचरेण समन्वितः।
शनिर्वा रन्ध्रनाथो वा दीर्घमायुर्विनिर्दिशेत्।।
त्रिषडायगताः पापाः शुभाः केन्द्रत्रिकोणगाः।
लग्नेशो बलसंयुक्तः पूर्णमायुर्विनिदिशेत्।।
जातक पारिजात अध्याय-4, श्लोक-85 से 90 तक, पृष्ठ-181-182

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1- केन्द्र में शुभ ग्रह स्थित हों तथा लग्नेश शुभ ग्रहों से संयुक्त होकर यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो जातक दीर्घजीवी होता है।

2- बृहस्पति और शुक्र के साथ लग्नेश यदि केन्द्र में हो अथवा केन्द्रस्थ लग्नेश यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट हो तो जातक दीर्घायु होता है।

3- तीन ग्रह अपनी–अपनी उच्चराशिगत हों, लग्न अष्टमेश से युत हो, अष्टम भाव पापग्रहों से हीन हो तो जातक दीर्घायु होता है।

4- तीन ग्रह अष्टम भाव में स्थित हो और वे अपनी–अपनी उच्चराशि, मित्र की राशि या अपनी राशि के वर्ग में स्थित हो और लग्नेश बली हो तो जातक दीर्घायु होता है।

5- यदि उच्चराशिस्थ किसी ग्रह से शनि या अष्टमेश संयुक्त हो तो जातक दीर्घायु होता है।

6- तीसरे, छठे और एकादश भावों में पापग्रह, केन्द्र एवं त्रिकोण में सभी शुभग्रह स्थित हों और लग्नेश बलवान हो तो जातक पूर्णायु भोग करता है।

विभिन्न ज़ातग ग्रन्थों में उपरोक्त योगों के समान अनेक अन्य दीर्घायु योगों का उल्लेख प्राप्त होता है।

विभिन्न ग्रहों की महादशा तथा अन्तर्दशा में उत्पन्न होनें वाले मानसिक रोगों का विवरण अध्याय द्वितीय में दिया जा चुका है। अतएव यहां मारकेश निर्णय का ही संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है।

मारकेश निर्णय के लिए वृहत् पाराशर होरा शास्त्रम में अध्याय 40 (मारक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karounđi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भेदाध्यायः) में विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।[4] डा0 शुकदेव चतुर्वेदी ने इन नियमों का सरलीकृत रूप प्रस्तुत किया है जो निम्नलिखित हैं:—[5]

1— **द्वितीयेश की दशा महादशा में—**

(अ) व्ययेश की अन्तर्दशा, (आ) सप्तमेश की अन्तर्दशा, (इ) व्यय भाव में स्थित ग्रह की दशा, (ई) व्ययेश से दृष्ट ग्रह की अन्तर्दशा।

2— **सप्तमेश की महादशा में—**

(अ) द्वितीयेश की अन्तर्दशा, (आ) द्वितीय स्थान में स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा, (इ) व्ययेश से सम्बन्धित पापग्रह की अन्तर्दशा।

3— **द्वितीय भावमें स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा में—**

(अ) सप्तमेश की अन्तर्दशा, (आ) द्वितीयेश की अन्तर्दशा, (इ) व्ययेश से सम्बन्धी पापग्रह की अन्तर्दशा में।

4— **सप्तम भाव में स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा में—**

(अ) द्वितीयेश की अन्तर्दशा, (आ) सप्तमेश की अन्तर्दशा, (इ) द्वितीय भाव में

4— अथान्यदपि वक्ष्यामि नृणां मारकलक्षणम्।
अल्पायुर्योगजातस्य विपद्भे तु मृतिर्भवेत्।।
मध्यायुर्योगजस्यैवं प्रत्यरिभे भवेन्मृतिः।
दीर्घायुर्योगजातस्य वधभेतु मृतिर्भवेत्।।
द्वाविंश त्र्यंशपश्चैव तथा वैनाशिकाधिपः।
विपत्ताराप्रत्यरीशा वधभेशस्तथैव च।।
स्वान्त्यपौ च विज्ञेयौ चन्द्राकान्तगृहाद्द्विज।
मारकौ पापखेटौ तौ शुभौ रोगप्रदौ मतौ।। वृहत् पाराशर होराशास्त्रम् अध्याय-40 (अथ मारकभेदाध्यायः) श्लोक 16-19 पृष्ठ 323

5— डा0 शुकदेव चतुर्वेदी- ज्योतिष शास्त्र में रोग विचार, पृष्ठ-192-193 संस्करण-2004 प्रकाशक-मोतीलाल बनारसीदास, चौक, वाराणसी।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा, (ई) व्यय भाव में स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा।

5– **द्वितीयेश से युत पापग्रह की महादशा में–**

(अ) द्वितीयेश की अन्तर्दशा, (आ) द्वितीय स्थान में स्थित पापग्रह की अर्न्तदशा, (इ) सप्तमेश की अन्तर्दशा।

6– **सप्तमेश से युक्त पापग्रह की महादशा में–**

(अ) सप्तमेश की अन्तर्दशा, (आ) सप्तम स्थान में स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा, (इ) द्वितीयेश की अन्तर्दशा।

7– **अष्टमेश की महादशा में–**

(अ) अष्टमेश से सम्बन्धी पापग्रह की अर्न्दशा, (आ) षष्ठ स्थान में स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा, (इ) षष्ठेश से युक्त पापग्रह की अन्तर्दशा।

8– **मारकेश से युक्त अष्टमेश की महादशा में–**

(अ) द्वितीयेश की अन्तर्दशा, (आ) सप्तमेश की अन्तर्दशा, (इ) षष्ठेश की अन्तर्दशा।

9– **मारकेश से युक्त शनि की महादशा में–**

(अ) शनि से युक्त ग्रह की अन्तर्दशा, (आ) शुक्र की अन्तर्दशा, (इ) किसी भी मारकेश की अन्तर्दशा।

10– **षष्ठेश की महादशा में–**

(अ) अष्टमेश की अन्तर्दशा, (आ) अष्टम स्थान में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(इ) सप्तमेश की अन्तर्दशा।

11– व्ययेश की महादशा में–

(अ) द्वितीयेश की अन्तर्दशा, (आ) द्वितीयेश के साथ स्थित ग्रह की अन्तर्दशा, (इ) सप्तमेश की अन्तर्दशा।

12– पापग्रहों की महादशा में–

(अ) उनके सम्बन्धी ग्रहों की अन्तर्दशा (आ) उनके सधर्मी ग्रहों की अन्तर्दशा, (इ) मारकेश ग्रहों की अन्तर्दशा।

मैंने लगभग 25 वृद्धावस्था जन्य मानसिक रोगियों से सम्पर्क किया, उनमें अधिकांश ने यह बतलाया कि उनकी जन्म कुण्डलियां खो चुकी हैं अथवा किसी कारणवश उपलब्ध नहीं हैं। केवल छः रोगियों ने ही अपनी जन्म कुण्डली उपलब्ध करायी, जिनका विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है, जो अग्रलिखित हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृद्धावस्था जन्य मनोविकार (Senile Psychosis) से ग्रस्त रोगी की

चित्र-1 लग्न कुण्डली

नवमांश

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

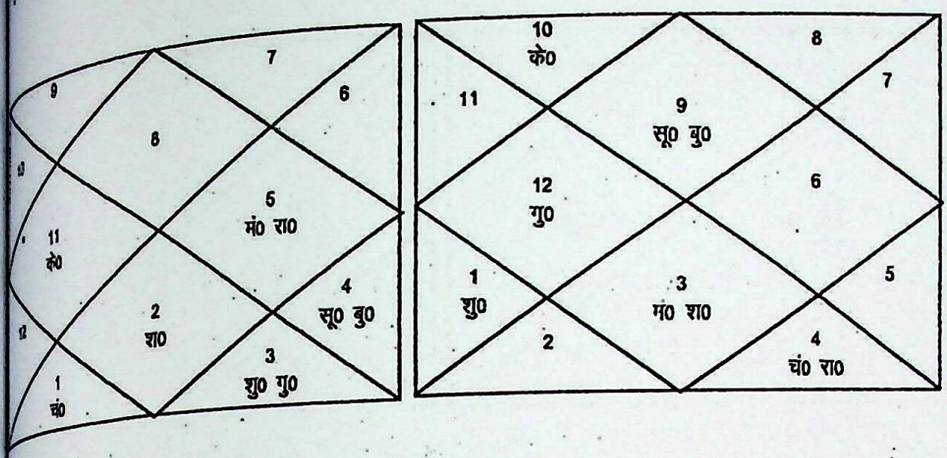

गुरू - गुरू	
06-11-2004 से 24-12-2006 तक	
गुरू	18-02-2005
शनि	20-06-2005
बुध	08-10-2005
केतु	23-11-2005
शुक्र	01-04-2006
सूर्य	10-05-2006
चंद्र	14-07-2006
मङ्गल	28-08-2006
राहु	24-12-2006

रोगी का परिचयः-

नाम – राधेश्याम
जन्मतिथि – 03 अगस्त 1942
समय – 03.00 PM
स्थान – हरदोई।

रोगी से सम्पर्कः-

जातक राधेश्याम वृद्धावस्था जन्य मनोविकार आदि रोगों से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 14 अक्टूबर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्मकुण्डली की समीक्षाः-

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में नवम भाव में पाप ग्रह सूर्य बुध के साथ युक्त होकर जातक को मनोरोग से पीड़ित कर रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः-

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः-

"यदि नवम भाव में पाप ग्रह स्थित हों तो जातक गुरू आदि के शाप से उन्माद रोग से पीड़ित होता है।"[1]

वृद्धावस्था में जब शरीर की रोग प्रतिरोध क्षमता क्षीण हो गयी तब इस योग ने अपना प्रभाव दिखाया और जातक मनोविकार उत्पन्न हो गये।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः-

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में गुरू की दशा में गुरू की अन्तर्दशा तथा अन्तर्गत केतु की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 09 अक्टूबर 2005 से 23 नवम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार- "यदि गुरू की अन्तर्दशा में केतु की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक जल से भयभीत, चोरी, बन्धन, कलह, मृत्युदायक परिस्थिति तथा कठिन भय से युक्त होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. गुर्वादिशापसम्भूतः पापे नवमसंस्थिते। (प्रश्नमार्ग- अध्याय-12, सूत्र-48, पेज-182)
2. जलभीतिस्तथा चौर्यं बन्धनं कलहो भवेत्।
अल्पमृत्युर्भयं घोरंग जीवजीवान्तरे ध्वजे।। (होरारत्नम् अध्याय-9, अथ गुरोर्विदशाफलम्, श्लोक-4, पृष्ठ-436)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृद्धावस्था जन्य मनोविकार (Senile Psychosis) से ग्रस्त रोगी की

नो–2 लग्न कुण्डली

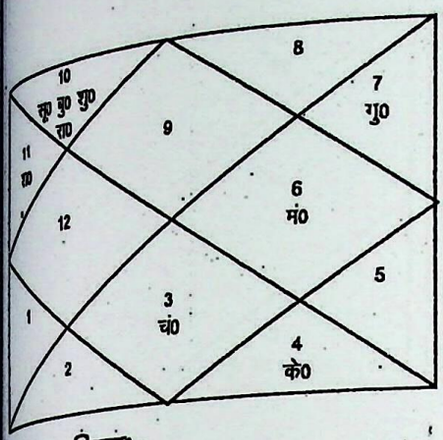

नवमांश

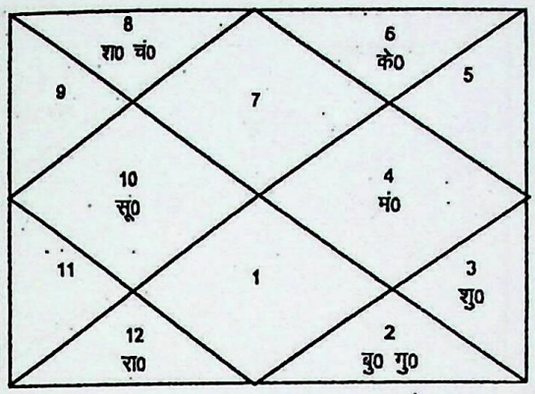

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

केतु - केतु0	
01–06–2006 से 28–10–2006 तक	
केतु	10–06–2006
शुक्र	04–07–2006
सूर्य	12–07–2006
चंद्र	24–07–2006
मङ्गल	03–08–2006
राहु	25–08–2006
गुरू	14–09–2006
शनि	07–10–2006
बुध	28–10–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – रमा देवी
जन्मतिथि – 17 जनवरी 1935
समय – 06.15 AM
स्थान – लखनऊ।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक रमादेवी डिमेंशिया रोग से पीड़ित होकर मानसिक चिकित्सालय नूर मंजिल, लालबाग, लखनऊ में चिकित्सा हेतु 10 अक्टूबर, 2006 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया।रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में पंचम भाव शनि की तृतीय दृष्टि तथा मंगल की अष्टम दृष्टि से पीड़ित है जो मानसिक रोग की प्रवृत्ति को द्योतक है। इसके अतिरिक्त नवमांश में द्वितीय भाव में शनि तथा चन्द्रमा युक्त हैं जो जातक को मानसिक रोग से पीड़ित कर रहे हैं।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" तथा "वृहज्जातकम्" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

यदि पंचम भाव में पाप ग्रह स्थित हों तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

तथा

यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो या मंगल से दृष्ट हो अथवा चन्द्रमा परिवेश युक्त हो तो जातक कठोर भाषी, मिर्गी का रोगी तथा सदैव शारीरिक शक्ति घटाते रहने वाले किसी बड़े रोग से पीड़ित होता है।"[2]

वृद्धावस्था में शरीर की रोग–प्रतिरोध क्षमता क्षीण होने पर मानसिक रोग से ग्रस्त हुआ।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में केतु की दशा में केतु की ही अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत बुध की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 08 अक्टूबर 2006 से 28 अक्टूबर 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि केतु की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक की बुद्धि का नाश, महान उद्वेग, विद्या की हानि, महान भय तथा कार्यों में असफलता होती है।"[3]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. सपापे पंचमे भीतिवैराग्योत्थः स भूमिजे। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–47, पेज–182)
2. परूषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे।
रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभः स्थलमाश्रितै–
भृतकमनुजः पूर्वोदिदष्टैर्वराधममध्यमाः।।17।। (वृहज्जातकम अध्याय–21, श्लोक–17, पृष्ठ–340)
3. बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महाभयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत केतोः केत्वन्तरा बुधः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ केतोर्विदिशाफलम्, श्लोक–9, पृष्ठ–459)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृद्धावस्था जन्य मनोविकार (Senile Psychosis) से ग्रस्त रोगी की

चं0-3 लग्न कुण्डली

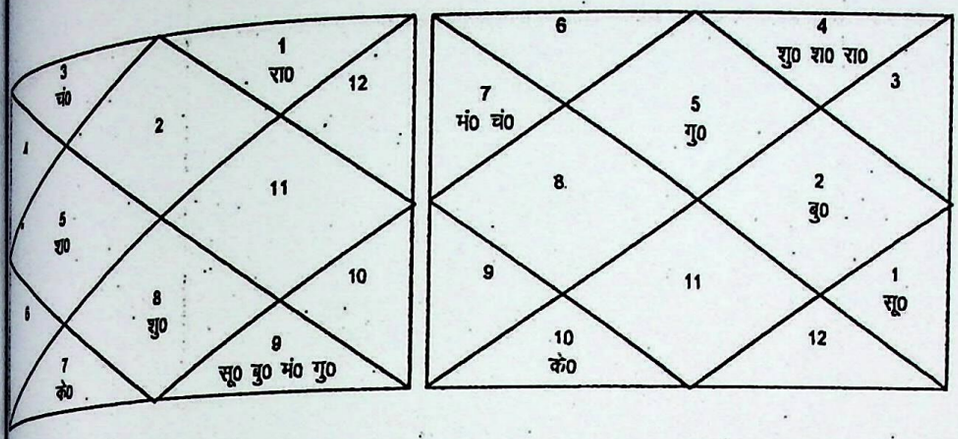

नवमांश

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

बुध - बुध	
15-03-2004 से 12-08-2006 तक	
बुध	18–07–2004
केतु	09–09–2004
शुक्र	03–02–2005
सूर्य	16–03–2005
चंद्र	29–05–2005
मङ्गल	19–07–2005
राहु	29–11–2005
गुरू	25–03–2006
शनि	12–08–2006

रोगी का परिचयः–

नाम – बन्दिता
जन्मतिथि – 16 दिसम्बर 1948
समय – 04.45 PM
स्थान – हरदोई

रोगी से सम्पर्कः–

जातक बन्दिता मानसिक रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 10 फरवरी, 2005 को आयी। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

लग्न-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में सूर्य, मंगल के साथ युक्त होकर बुध पाप ग्रस्त हो गया है, जिससे जातक मनोरोग से पीड़ित हुआ।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि तृतीय, षष्टम, अष्टम या व्यय स्थान में पाप युक्त बुध हो तो जातक को उन्माद रोग होता है।"[1]

वृद्धावस्था में जब शरीर की रोग प्रतिरोध क्षमता क्षीण हो गयी तो मनोविकारों की उग्रता में वृद्धि हुई।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक के विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में बुध की दशा में बुध की ही अन्तर्दशा तथा अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 04 फरवरी 2005 से 16 मार्च 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि बुध की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक पित्तप्रकोप होने वाला रोगी तथा अनेक प्रकार का शारीरिक कष्ट भोगने वाला एवं चित्त से अशान्त होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. अस्ते पापयुतो मान्दिर्वित्त्रिषष्ठाष्टामान्त्यगः। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–32, पेज–180)
2. तेजो हानिर्भवेद्रोगो तनुपीडा तु मार्दवी।
जायते चित्तवैकल्यं सौम्ये सौम्यान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ बुधविदिशाफलम्, श्लोक–4, पृष्ठ–451)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृद्धावस्था जन्य मनोविकार (Senile Psychosis) से ग्रस्त रोगी की

लग्न कुण्डली | नवमांश | विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

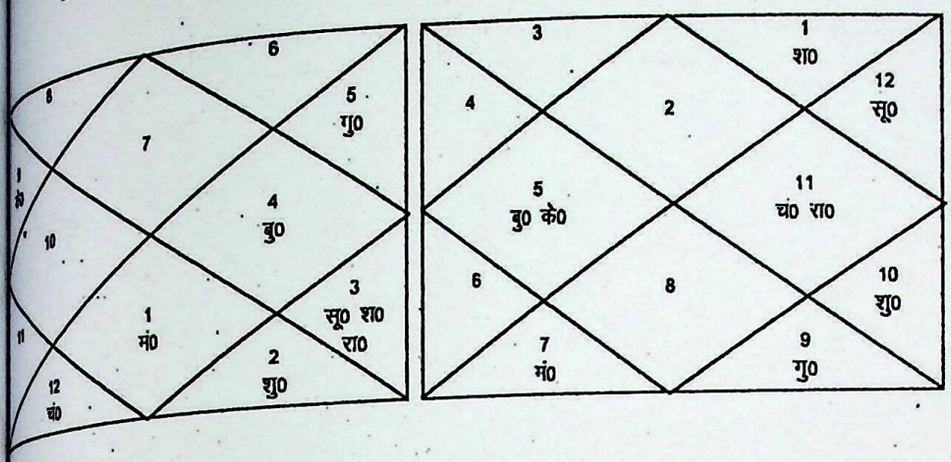

राहु - शनि	
24-02-2005 से 30-12-2007 तक	
शनि	06–08–2005
बुध	02–01–2006
केतु	02–03–2006
शुक्र	23–08–2006
सूर्य	14–10–2006
चंद्र	09–01–2007
मङ्गल	09–03–2007
राहु	13–08–2007
गुरू	30–12–2007

रोगी का परिचयः–

नाम – अक्षय
जन्मतिथि – 03 जुलाई 1945
समय – 03.00 PM
स्थान – सुल्तानपुर।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक अक्षय मानसिक रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 01 मार्च, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में नवम भाव में सूर्य, शनि तथा राहु युक्त होकर जातक को मनोरोगी बना रहे हैं।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि नवम भाव में पाप ग्रह हो तो गुरू आदि के शाप से उन्माद रोग होता है।"[1]

वृद्धावस्था में रोग प्रतिरोध क्षमता के क्षीण होने पर मनोविकारों की उग्रता में वृद्धि हुई।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक की विशोंत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में शनि की अन्तर्दशा तथा अन्तर्गत शनि की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 24 फरवरी 2005 से 06 अगस्त 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि शनि की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को निम्न श्रेणी के रोगों से पीड़ा तथा दुख की अनेकता होती है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. गुर्वादिशापसम्भूतः पापे नवमसंस्थिते। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–48, पेज–182)
2. देहपीडा कलेर्भीतिर्भयमन्त्यजलोकतः।
दुःखं शन्यन्तरे नाना शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–47, पृष्ठ–641)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृद्धावस्था जन्य मनोविकार (Senile Psychosis) से ग्रस्त रोगी की

नं0–5 लग्न कुण्डली

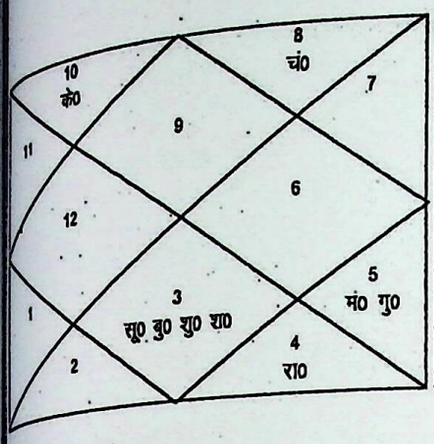

नवमांश

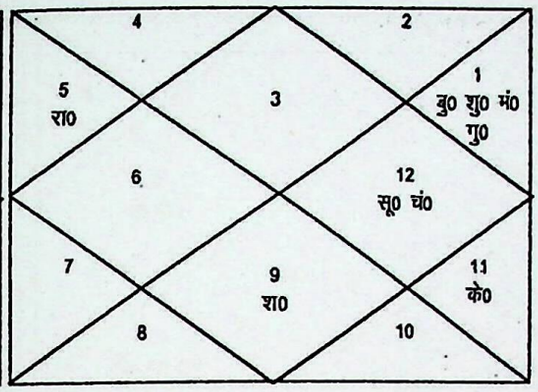

विंशोत्तरी दशा
(प्रत्यंतर)

राहु – बुध	
13–05–2005 से 01–12–2007 तक	
बुध	23–09–2005
केतु	16–11–2005
शुक्र	19–04–2006
सूर्य	05–06–2006
चंद्र	22–08–2006
मङ्गल	15–10–2006
राहु	03–03–2007
गुरू	05–07–2007
शनि	01–12–2007

रोगी का परिचयः–

नाम – अरविन्द
जन्मतिथि – 04 जुलाई 1944
समय – 06.15 PM
स्थान – इलाहाबाद।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक अरविन्द मानसिक रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 05 मई, 2006 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म–कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में नवम् भाव में पाप ग्रह मंगल स्थित होकर जातक को मनोरोगी बना रहा है।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

यह योग जातक ग्रन्थ "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"यदि नवम भाव में पाप ग्रह हो तो गुरू आदि के शाप से उन्माद होता है।"[1]

वृद्धावस्था में रोग प्रतिरोध क्षमता के क्षीण होने पर मनोविकारों की उग्रता में वृद्धि हुई।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक की विशोंत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में राहु की दशा में बुध की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 20 अप्रैल 2006 से 05 जून 2006 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "होरारत्नम्" के अनुसार– "यदि बुध की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक निस्तेज होने वाला रोग तथा शारीरिक कष्ट भोगने वाला एवं चित्त से अशान्त होता है।"[2]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

१. गुर्वादिशापसम्भूतः पापे नवमसंस्थिते। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–48, पेज–182)

२. तेजो हानिर्भवेद्रोगो तनुपीडा तु मार्दवी।
जायते चित्तवैकल्यं सौम्ये सौम्यान्तरा रविः।। (होरारत्नम् अध्याय–9, अथ बुधतिदिशाफलम्, श्लोक–4, पृष्ठ–451)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृद्धावस्था जन्य मनोविकार (Senile Psychosis) से ग्रस्त रोगी की

चं0–6

लग्न कुण्डली

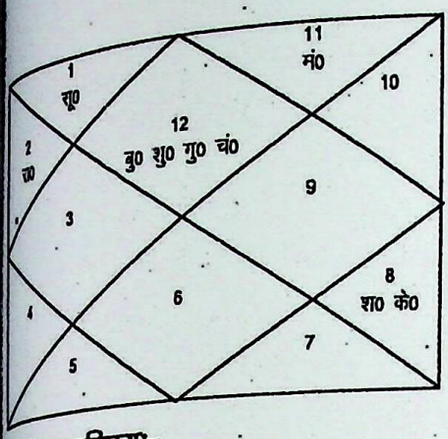

नवमांश

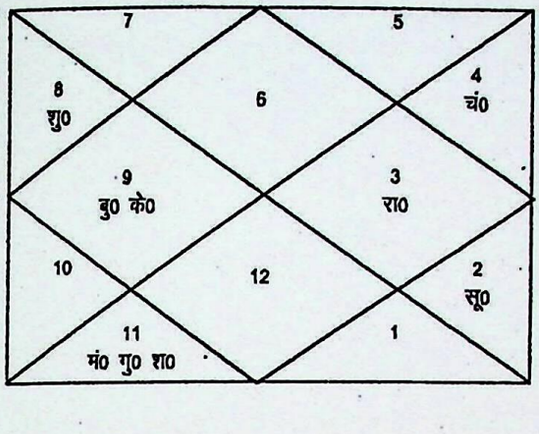

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर)

चंद्र - शुक्र	
20-08-2005 से 20-04-2007 तक	
शुक्र	30–11–2005
सूर्य	30–12–2005
चंद्र	20–02–2006
मङ्गल	25–03–2006
राहु	25–06–2006
गुरू	15–09–2006
शनि	20–12–2006
बुध	15–03–2007
केतु	20–04–2007

रोगी का परिचयः–

नाम – राम वचन
जन्मतिथि – 18 अप्रैल 1928
समय – 04.15 AM
स्थान – वाराणसी।

रोगी से सम्पर्कः–

जातक राम बचन मानसिक रोग से पीड़ित होकर किंग जार्ज मेडिकल कालेज के मानसिक रोग विभाग में चिकित्सा हेतु 03 दिसम्बर, 2005 को आया। मैने इस रोगी तथा इसके परिजनों से सम्पर्क किया तथा रोग का पूर्ण विवरण प्राप्त कर इनसे रोगी की जन्म कुण्डली मांगी, जिसे उन्होंने एक सप्ताह के अन्दर उपलब्ध करा दिया। रोग के सम्यक् विश्लेषण के लिए लगभग एक माह तक इनसे अनेक बार सम्पर्क किया गया।

जन्म-कुण्डली की समीक्षाः–

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में गुरू स्वराशि में लग्न भाव में स्थित है तथा लग्न भाव में ही चन्द्रमा, शुक्र तथा बुध स्थित है। इसलिए जातक दीर्घायु है तथापि उपर्युक्त लग्न कुण्डली में नवम् भाव में पाप ग्रह शनि तथा केतु स्थित होकर जातक को मनोरोग से पीड़ित कर रहे हैं।

जातक ग्रन्थ में उल्लिखित योगः–

दीर्घायु का उपर्युक्त योग जातक ग्रन्थ "जातक पारिजात" में तथा मानसिक रोग का योग "प्रश्नमार्ग" में उपलब्ध है, जो निम्नलिखित हैः–

"बृहस्पति और शुक्र के साथ लग्नेश यदि केन्द्र में हो अथवा केन्द्रस्थ लग्नेश बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट हो तो जातक दीर्घायु होता है।"[1]

तथा

यदि नवम् भाव में पाप ग्रह हो तो गुरू आदि के शाप से उन्माद होता है।"[2]

वृद्धावस्था में रोग प्रतिरोध क्षमता के क्षीण होने पर मनोविकारों की उग्रता में वृद्धि हुई।

विंशोत्तरी दशा (प्रत्यंतर) के अनुसार समीक्षाः–

जातक की विंशोत्तरी दशा के अनुसार उपर्युक्त अवधि में चन्द्रमा की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा तथा तदन्तर्गत सूर्य की प्रत्यन्तर दशा दिनांक 01 दिसम्बर 2005 से 30 दिसम्बर 2005 तक चल रही थी। फलतः रोग का प्रकोप उग्र था।

जातक ग्रन्थ "वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्" के अनुसार– "यदि शुक्र की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यंतर दशा हो तो जातक को वातजन्य ज्वर, सिर में पीड़ा तथा राजा एवं शत्रुओं से भय होता है।"[3]

प्रत्यन्तर दशा फल की प्रतिकूलता के कारण उपर्युक्त अवधि में रोग की उग्रता में वृद्धि हुई।

---

1. केन्द्रान्विते विलग्नेशे गुरूशुक्रसमन्विते।
2. ताभ्यां निरीक्षिते वाऽपि पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत्।। (जातक पारिजात अध्याय–4 श्लोक–86 पृष्ठ–181)
3. गुर्वादिशापसम्भूतः पापे नवमसंस्थिते। (प्रश्नमार्ग– अध्याय–12, सूत्र–48, पेज–182)
   वातज्वरः शिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
   जायते स्वल्पलाभोऽपि स्वैः प्रत्यनंतरे फलम्।। (वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, अध्याय–63 श्लोक–75, पृष्ठ–644)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYV) Varanasi. Digitized by eGangotri Collection

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-दशम्

आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में ज्योतिर्विज्ञान के सिद्धान्तों की समीक्षा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय दशम

आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में ज्योतिर्विज्ञान के सिद्धान्तों की समीक्षा

ज्योतिर्विज्ञान एक अद्भुत विज्ञान है। यदि किसी ज्योतिषाचार्य द्वारा निपुणता से गणना कर ठीक प्रकार से भविष्य कथन किया गया हो तो वे इतने अधिक सटीक सिद्ध होते हैं कि हमें दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है, तथापि ज्योतिष के लिए अभी तक पूर्ण वैज्ञानिक सहमति नहीं बन सकी है। यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि संसार के सभी वैंज्ञानिक यह मानते हैं कि अभी तक वे सृष्टि के सम्पूर्ण रहस्यों को नहीं समझ सके हैं।

शोध प्रबन्ध की "विषय–प्रवेश" में ही हम देख चुके हैं कि सन् 1976 में लगभग 186 वैज्ञानिकों ने एक संयुक्त घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किया था, जिसका शीर्षक था "ज्योतिष से असहमति"[1] इस परिप्रेक्ष्य में यह उल्लेखनीय है कि जिस समय अल्बर्ट आइन्सटीन ने अपने सापेक्षवाद के सिद्धान्त की खोज की थी, उस समय भी सैकड़ों वैज्ञानिकों ने उनको गलत ठहराया था। उनके विरूद्ध एक पुस्तक प्रकाशित की गयी थी जिसका शीर्षक था "हण्ड्रेड आथर्स अगेन्स्ट आइन्सटीन" (Hundred Authors against Einstein)। इस पुस्तक पर अपनी तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए आइन्सटीन ने कहा था कि यदि मैं गलत हूं तो मुझे गलत सिद्ध करने के लिए एक ही आदमी काफी होता (सौ की क्या आवश्यकता)[2]

1- **Gary Lachman** का लेख जो **The Guardian (London)** में प्रकाशित हुआ था तथा इसे हिन्दुस्तान टाईम्स (Lucknow) ने दिनांक फरवरी 01, 2004 को प्रकाशित किया था, से उद्धृत।

2- An anti-Einstein organization was even set up. One man was convicted of inciting others to murder Einstein (and fined a mere six dollars). But Einstein was phlegmatic: when a book was published entitled 100 Authors Against Einstein, he retorted, "If I were wrong, then one would have been enough!"
(**Stephen Hawkins- A brief History of Time** Page 188) Publisher- Bantum Books Edition-1989, 666 Fifth Avenue- New York-10103

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV) Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वस्तुतः आइन्सटीन के क्रान्तिकारी अनुसंधानों के पश्चात अब विज्ञान भी एक नये युग में प्रवेश कर चुका है।

बर्कले (कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय) के प्रोफेसर फ्रिटजॉफ कैपरा का कथन है कि "यह अवधारणा अब ध्वस्त हो चुकी है कि सृष्टि की प्रक्रिया केवल एक यांत्रिक प्रक्रिया है और यह सृष्टि प्रारम्भिक कणों के समूह से बनी है और मानव शरीर भी केवल एक मशीन की भांति ही है तथा समाज में जीवन का संघर्ष सदा चलता रहता है तथा आर्थिक एवं तकनीकी विकास के द्वारा असीमिति भौतिक सम्पत्ति की प्राप्ति ही जीवन का उद्देश्य है। उपर्युक्त सभी अवधारणायें समाप्त होती जा रही हैं। आधुनिक अनुसंधानों ने विज्ञान मे एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है।[3]

भौतिक विज्ञान की नवीनतम विधा ब्रम्हाण्डिकीय (cosmology) के आधुनिक अनुसंधानों ने तो सृष्टि के सम्बन्ध में अब तक के ज्ञात वैज्ञानिक मान्यताओं को उलट–पलट कर रख दिया है।

इस विधा की प्रसिद्ध पुस्तक है वैज्ञानिक एण्ड्रेई लाइंडे द्वारा लिखित "पार्टिकिल फिजिक्स एण्ड इन्फ्लेशनरी कास्मोलॉजी"[4] तथा दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तक है ब्रायन ग्रीन के (Brian Greene) के द्वारा लिखित "द एलीगैन्ट यूनिवर्स" सुपर स्ट्रिंग्स, हिडेन डायमेन्सन्स एण्ड द क्वेस्ट फार द अल्टीमेट थ्योरी (The Elegant

---

3- the view of the universe as a mechanical system composed of elementary building-books, the view of the human body as a machine, the view of life in society as a competitive struggle for existence, the belief in unlimited material progress to be achieved through economic and technological growth.....All of these assumptions have been fatefully challenged by recent events. And, indeed, a radical revision of them is now occuring.

(Fritjof Capra- The web of life- A New Synthesis of mind and matter page- 6) Edition-1996, Harper Collins Publishers, 77-85, Fulham Palace Hammer Smith, London- W-68 JB

4- **Linde, Andrei Particle Physics and inflationary cosmology,** Harwood Publishers, Chur, Switzerland) Edition-1990.

(www.Amazon.com- The Elegant Universe,Brian Greene)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Universe, Super Strings, Hidden Dimension and the quest for the ultimate theory)[5]

इनके अतिरिक्त आज अनेक वैज्ञानिक पुस्तकें इस विधि से लिखी गयी हैं कि इन्हें सामान्य व्यक्ति भी समझ सके। ऐसे पुस्तकों में स्टीफन हाकिन्स द्वारा लिखित "ए ब्रीफ हिस्ट्री आफ टाईम" (A brief history of time) तथा बर्कले (कैलीफोर्निया युनिवर्सिटी) के प्रोफेसर फ्रिटजॉक कैफरा द्वारा लिखित "द ताओ आफ फिजिक्स" (The tao of physics), द टर्निंग प्वाइंट (The turning point) तथा द वेब आफ लाईफ (The web of life) आदि अति प्रसिद्ध हैं।

इनके अतिरिक्त मार्क रिचर्डसन (Mark Richardson) ने संसार के अनेक शीर्षस्थ वैज्ञानिकों के शोध परक लेखों का संग्रह कर "साइंस एण्ड स्पीरीचुअल क्वेस्ट" (Science and Spiritual Quest) नामक पुस्तक प्रकाशित की है, जिसमें ब्रम्हाण्ड वैज्ञानिक एण्ड्रेई लाइन्डे का महत्वपूर्ण लेख भी प्रकाशित है जिसमें आधुनिकतम शोधों के द्वारा सृष्टि रचना की अद्भुत प्रक्रिया को समझाया गया है।

उपर्युक्त सभी वैज्ञानिकों ने ब्रम्हाण्ड रचना से सम्बन्धित विभिन्न सिद्धान्तों तथा प्रक्रियाओं को इस प्रकार बतलाया है जिससे विज्ञान के अति जटिल सिद्धान्तों को न समझने वाला व्यक्ति भी समझ सके।

वैज्ञानिक स्टीफेन हाकिन्स ने अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक "ए ब्रीफ हिस्ट्री आफ टाईम" की भूमिका में ही यह कहा है कि "इस विश्व का भविष्य तथा इसके उद्भव के आधारभूत नियमों को बिना मैथेमेटिक्स के भी इस ढंग से समझाया जा सकता है कि विज्ञान की विधिवत शिक्षा नहीं प्राप्त किये हुए व्यक्ति भी इसे समझ

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सकें। मैनें इस पुस्तक में यही करने का प्रयत्न किया है। पाठकगण स्वयं यह निर्णय कर सकते हैं कि क्या मैं इस प्रयास में सफल हुआ हूँ।"[6]

इस परिप्रेक्ष्य में ही मैनें ज्योतिर्विज्ञान के सिद्धान्तों के विज्ञान सम्मत पक्षों को ढूढ़ने का प्रयास किया है।

ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार इस ज्ञान का स्रोत स्वयं सृष्टि रचयिता पितामह ब्रम्हा हैं तथा वसिष्ठ आदि अट्ठारह ऋषि इसके प्रवर्तक माने गये हैं। सर्वप्रथम हम इस तथ्य की समीक्षा करेंगे कि क्या ब्रम्हा द्वारा सृष्टि की रचना करना तथा उनका ज्ञान प्रदान करना विज्ञान–सम्मत प्रतीत होता है? चूंकि ज्योतिर्विज्ञान से सर्वाधिक निकटतम विधा "आधुनिक ब्रम्हांडिकी" (Modern Cosmology) है, अतएव आधुनिक ब्रम्हांडिकी के सिद्धान्तों के आधार पर ही हम इस प्रश्न की समीक्षा प्रस्तुत करने का प्रयास करते हुए यह भी देखेंगे कि क्या ज्योतिष के प्रवर्तकों (जिनमें महर्षि वसिष्ठ की भी गणना होती है) का ब्रम्हाण्ड के ज्ञान से सम्बन्धित सिद्धान्त, आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं? योग वासिष्ठ में ब्रम्हाण्ड से सम्बन्धित अद्भुत सिद्धान्तों का उल्लेख प्राप्त होता है। इसलिए हम ब्रम्हाण्ड का मूल कण, अंतरिक्ष, सृष्टि रचना की प्रक्रिया तथा सृष्टि रचयिता के सम्बन्ध में आधुनिक विज्ञान तथा ज्योतिष के प्रवर्तक भारतीय महर्षियों के विचारों की समीक्षा प्रस्तुत कर रहे हैं।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार ब्रम्हाण्ड का मूल कणः–

आधुनिक विज्ञान के अनुसार ब्रम्हाण्ड का मूल कण क्वांटा है, जिसमें एक साथ कण (सीमित तथा स्थिर) तथा तरंग (असीमित तथा चलायमान) दोनों गुण विद्यमान हैं।

6– The basic ideas about the origin and fate of the universe can be stated without mathematics in a form that people without a scientific education can understand. This is what I have attempted to do in this book. The reader must judge whether I have succeeded.

(Stephen Hawkins- A Brief History of Times, Page vi)

(प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष-पुर्वोक्त)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMVV), Kanchana, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि कोई वस्तु एक साथ कण (सीमित तथा स्थिर) तथा तरंग (असीमित तथा चलायमान) कैसे हो सकता है? किन्तु यह एक वैज्ञानिक सत्य है।[7]

इसीलिए आधुनिक वैज्ञानिक इसे अनिश्चयवाद का सिद्धान्त (The theory of uncertainty) कहते हैं।[8]

योग वासिष्ठ के सिद्धान्तों के अनुसार मूल कणः–

योग वासिष्ठ में कहा गया है कि "आकाश के परमाणु के हजारवें भाग के भीतर जो शुद्ध चिन्मात्र सत्ता वर्तमान है, वही परमार्थ संवित है। वह न दिखाई देता है और न उसका वर्णन किया जा सकता है।[9]

जैसे मरूस्थल में लता पत्र आदि का सर्वथा अभाव रहता है वैसे ही उस परम तत्व के लिए जड़ या चेतन आदि शब्दों का प्रयोग नहीं हो सकता।[10]

ब्रम्ह को आत्मा भी नहीं कहा जा सकता, उसके लिऐ आत्मा आदि संज्ञा स्वाभाविक नहीं केवल कल्पित है।[11]

इस प्रकार यह स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है कि महर्षि वसिष्ठ के सिद्धान्तों में भी अनिश्चयवाद का सिद्धान्त विद्यमान है।

7– **Fritjof Capra- The Tao of Physics** 1920/13 street boulder colorado USA- Published in 1975 (देखिये परिशिष्ट-7)

8– **Stephen Hawkins- A Brief History of Time,** Page 58 (प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष-पूर्वोक्त)

9– आकाश परमाणु सहस्त्रांशमात्रेऽपि या शुद्ध चिन्मात्रसत्ता विद्यते सा हि परमार्थ संवित् (6/1/48/10) योग वासिष्ठ और उसके सिद्धान्त– डा0 भीखन लाल आत्रेय पृष्ठ–455 (प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशनार्थ-पूर्वोक्त)

10– जड़चेतनभावादिशब्दार्थश्रीर्न विद्यते।
अनिर्देश्यपदे पत्रलतादीव महामरौ।। (तत्रैव– श्लोक–3/91/36, पृष्ठ– 452)

11– यतो वाचो निवर्तन्ते यो मुक्तैरवगम्यते।
तस्यचात्मादिकाः संज्ञाः कल्पिता न स्वभावजाः।। (तत्रैव– श्लोक–3/5/5, पृष्ठ– 452)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आधुनिक विज्ञान के अनुसार अन्तरिक्ष तथा सृष्टि रचना प्रक्रियाः–

अंतरिक्षः–

आधुनिक भौतिक विज्ञान के द्वारा प्रतिपादित क्वांटम फिल्ड थ्योरी (Quantum Field Theory) के अनुसार जो अन्तरिक्ष खाली दिखायी दे रहा है, वह वस्तुतः खाली नहीं है। वह स्पन्दनशील क्वान्टा से भरा हुआ है, जिसमें हर प्रकार के भौतिक क्षेत्र हैं। इन्हें क्वांटा की स्पन्दनशीलता से उत्पादित तरंगे मान सकते हैं जो विभिन्न तरंग दैर्ध्यों की हो सकती है।[12]

योग वासिष्ठ के अनुसार अन्तरिक्षः–

योग वासिष्ठ के अनुसार "अन्तरिक्ष तथा सभी स्थानों में चिति व्याप्त है। सब कुछ चिति है। सभी ओर चिति ही है, वह सत और सर्वात्मक है। अन्वय व्यतिरेक करने पर मुझे यही दिखाई दिया।"[13]

"यह स्पन्दनयुत होकर भी स्पन्दनहीन है, पर्वत रूप होकर भी वह पर्वत नहीं है। यह स्वप्न में कल्पना जगत के समान है।"[14]

12– According to quantum field theory, empty space is not entirely empty. It is filled with quantum fluctuations of all types of physical fields. These fluctions can be regarded as waves of physical fields with all possible wavelengths.
(Andrei Linde- The Universe Life and Conciousness Page- 193) Published in "Science and Spiritual Quest- New Essays by Leading Scientist- Edited by Mark Richardson- Published in 2002 by Routledge, 11, New Fetter Lane, London)

13– चिति सर्व चितः सर्व चित्सर्व सर्वतश्च चित्।
चित्सर्त्वात्मिकेत्येद्दृष्ट तत्र मयाऽखिम्।। 74/18 (योग वासिष्ठ द्वितीय खण्ड, सम्पादक– पं0 श्रीराम जी शर्मा आचार्य, पृष्ठ–323) संस्करण–1992, प्रकाशक–संस्कृति संस्थान, ख्वाजाकुतुब, वेदनगर, बरेली–243003

14– संस्पन्दोऽपि हि नि स्पन्दाः पर्वतोऽपि न पर्वतः।
यथा स्वप्नेषु चिद्भावः स्वभावोऽथमतस्त्वया।। तत्रैव, श्लोक–99/7, पृष्ठ–451

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि योग वासिष्ठ में उल्लिखित अंतरिक्ष का विवरण आधुनिक भौतिक विज्ञान के अनुरूप ही है।

सृष्टि रचनाः—

वैज्ञानिक एण्ड्रेई लाइंडे ने सृष्टि रचना के सम्बन्ध में निम्नलिखित सिद्धान्त प्रस्तुत किया हैः—

"हमारी सृष्टि की रचना बाहर की ओर फैलती हुई क्वांटा की स्पन्दनशीलता से हुई। यह सृष्टि केवल एक मिलीग्राम द्रव्य (matter) से ही उत्पन्न हो सकती है, यदि इस एक मिलीग्राम द्रव्य पर इतना अधिक दबाव डाला जाये कि इसका आकार संकुचित होकर एक इलेक्ट्रान के आकार से भी सूक्ष्म हो जाय। इस प्रकार से सृष्टि की रचना स्वचालित यंत्र की भांति होने लगेगी।"[15]

योग वासिष्ठ में उल्लिखित सृष्टि रचनाः—

यदि हम योग वासिष्ठ में उल्लिखित सृष्टि रचना की प्रक्रिया को देखें तो यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा कि वैज्ञानिक शब्दावली में जिसे सृष्टि के फैलाव का सिद्धान्त (inflationary cosmology) कहते हैं, उसे ही महर्षि वसिष्ठ ने ब्रम्ह (अर्थात अनवरत वर्धनशील), कहा है तथा क्वांटम की स्पन्दनशीलता (quantum fluctuation) को ब्रम्ह का स्पन्दन कहा है।

15— Indeed, we believe now that galaxies emerged as a result of small quantum fluctuations produced during inflation. The universe itself could organinatc from less than one milligram of matter compressed to a size billions of times smaller than a size of an electron. Its different parts were formed during the quantum-mechanical process of self-reproduction of the universe

(Andrei Linde- The Universe, Life and Conciousness, Page 198)

(प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष-पूर्वोक्त)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

योग वासिष्ठ के अनुसार "ब्रम्ह की वर्धन शक्ति ही जगत है और जगत ब्रम्ह का विस्तार है। अनादि और अनन्त ब्रम्ह ही समुद्र की भांति बढ़ रहा है। जैसे– तरंग, कण और लहरों के रूप में समुद्र प्रकट होता है वैसे ही समस्त वस्तुओं के रूप में आत्मा ही प्रकट हो रहा है।"[16]

"जो कुछ फैला हुआ है यह जगत जाल दिखायी दे रहा है, वह सब कुछ ब्रम्ह ही इस प्रकार स्थित है।"[17]

इस प्रकार स्पष्ट है कि आधुनिक विज्ञान के अनुसार सृष्टि रचना प्रक्रिया तथा योग वासिष्ठ के अनुसार भी सृष्टि रचना प्रक्रिया लगभग एक समान है, केवल शब्दावलियों में ही अन्तर है।

सृष्टि के रचयिताः–

सृष्टि के रचने के सम्बन्ध में वैज्ञानिक एण्ड्रेई लाइण्डे ने आगे लिखा है कि "हाल ही में कुछ भौतिकविदों ने इस बात की चर्चा की है कि क्या प्रयोगशाला में सृष्टि की रचना करना सम्भव है? वस्तुतः सृष्टि रचना के लिए केवल एक मिलीग्राम द्रव्य (matter) की ही आवश्यकता होगी जो एक वातरहित तथा बाहर की ओर

16– ब्रह्मबृंहैव हि जगज्जगच्च ब्रह्मबृंहणम्। (6/1/2/51)
ब्रह्मैव तदनाद्यन्तमब्धिवत्प्रविजृम्भते।। (6/1/2/27)
आत्मैव स्पन्दते विश्वं वस्तुजातैरिवोदितम्।
तरंगकणकल्लोलैरनन्ताम्बवम्बुधाविव।। (5/72/23)
(योग वासिष्ठ और उसके सिद्धान्त, पृष्ठ–468) डा0 भीखनलाल आत्रेय, प्रकाशक– श्री कृष्ण जन्म स्थान सेवा संस्थान, मथुरा।

17– यदिदं किञ्चिदाभोगिं जगज्जालं प्रदृश्यते।
तत्सर्वममलं ब्रह्म भवत्येतद्व्यवस्थितम्।। (तत्रैव– श्लोक–6/1/11/16)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फैलती हुई दशा में कार्यशील होगी। इस प्रकार इस प्रक्रिया में एक नहीं अनेक सृष्टियां उत्पन्न होने लगेंगी।"[18]

उक्त वैज्ञानिक ने पुनः कहा है कि अभी यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट नहीं हुआ है कि सृष्टि रचना की यह प्रक्रिया सैद्धान्तिक तथा तकनीकी दृष्टिकोण से सम्भव है अथवा नहीं। यदि हम मान लें कि यह सम्भव है तो प्रश्न उठता है कि क्या हमें प्रयोगशाला में सृष्टि की रचना करना चाहिए? इसका हमारे लिए क्या उपयोग होगा? हम दूसरी सृष्टि से ऊर्जा भी अपनी सृष्टि में नहीं ला सकते क्योंकि यह ऊर्जा के अविनाशीत्व के सिद्धान्त के विपरीत होगा। हम नयी सृष्टि में छलांग लगा करके नहीं जा सकते क्योंकि निर्माण के समय यह अत्यन्त सूक्ष्म तथा सघन होगा और कुछ समय पश्चात हमारी सृष्टि से पृथक हो जायेगा।"[19]

उक्त वैज्ञानिक ने आगे लिखा है कि – "कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी इस सृष्टि की रचना किसी दुस्साहसिक भौतिकविद् ने की हो! कहीं ऐसा तो नहीं कि

18– Recently there has been some discussion of whether it is possible to create a universe in a laboratory. Indeed, one would need only a miligram of matter in a vacuum-like exponentially expanding state, and then the process of self-reproduction would create from this matter not one universe but infinitely many!.

Andrei Linde- The Universe, Life and Consciousness, Page 196, Published in Science and Spritiual quest) (प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष-पूर्वोक्त)

19– It is still not quite clear whether this process is theoretically possible or technologically feasible, but let us imagine for a second that the answer to both of these questions is positive. Should we really try to build a new universe in a laboratory? How would one we able to use it? Indeed, one cannot "pump" energy from the new universe to ours, since this would contradict the conservation of energy. One cannot jump into the new universe, since at the moment of its creation it is microscopically small and extermely dense, and later it decouples from our universe.

(तत्रैव पृष्ठ–196)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केवल भौतिकविदों में ही ईश्वर के संदेश को समझने की क्षमता है?"[20]

यद्यपि एण्ड्रेई लाइण्ड्रे का उपरोक्त कथन अभी सिद्धान्त रूप में है तथापि यह प्राचीन शास्त्रों में उल्लिखित ब्रम्हा का सृष्टि रचयिता होने तथा महर्षि विश्वामित्र द्वारा नई सृष्टि के रचने के वृतान्त के सत्य होने की सम्भावना की ओर संकेत करता है।

अब प्रश्न उठता है कि जब आज के वैज्ञानिक सृष्टि रचना की प्रक्रिया को जानने की ओर उन्मुख हो रहे हैं तो क्या भातीय ज्योतिर्विद ऐसा करने में समर्थ थे? इस सम्बन्ध में विश्वामित्र द्वारा सृष्टि रचना की प्रक्रिया का अत्यन्त आश्चर्यजनक वृतान्त वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड) में दिया गया है जो निम्नलिखित है:-

"तेजस्वी विश्वामित्र ने ऋषि मण्डली के बीच दूसरे प्रजापति के समान दक्षिण मार्ग के लिए नये सप्तर्षियों की सृष्टि की तथा क्रोध से भरकर उन्होंने नवीन नक्षत्रों का निर्माण भी कर डाला।"[21]

"वें महा यशस्वी मुनि क्रोधित होकर दक्षिण दिशा में ऋषि मण्डली के बीच नूतन नक्षत्र मालाओं की सृष्टि करके यह विचार करने लगे कि मैं दूसरे इन्द्र की सृष्टि करूंगा अथवा मेरे द्वारा रचित स्वर्ग लोक बिना इन्द्र के ही रहेगा। ऐसा निश्चिय करके उन्होंने क्रोध पूर्वक नूतन देवताओं की सृष्टि आरम्भ की।"[22]

20- Does this mean that our universe was created by a physicist hacker? Does this mean that only physicists can read the meassage of God?
(तत्रैव पृष्ठ-197)

21- ऋषिमध्ये स तेजस्वी प्रजापतिरिवापरः।।20।।
सृजन् दक्षिणमार्गस्थान् सप्तर्षीनपरान् पुनः।
नक्षत्रवंशमपरमसृजत् क्रोधमूर्च्छितः।।21।। (श्रीमद वाल्मिकीय रामायण बालकाण्ड-सर्ग-षष्टितमः (60) श्लोक-20, 21) पृष्ठ-145, संस्करण-सम्वत्-2007, गीताप्रेस गोरखपुर।

22- दक्षिणां दिशमास्थाय ऋषिमध्ये महायशाः।
सृष्ट्वा नक्षत्रवंशं च क्रोधेन कलुषीकृतः।।22।।
अन्यमिन्द्रं करिष्यामि लोको वास्यालमिन्द्रकः।
दैवतान्यपि स क्रोधात् स्रष्टुं समुपचक्रमे।।23।। (तत्रैव श्लोक-22, 23)

CC-0. Mahamana Madan Mohan Malaviya Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निर्माण कार्य पूर्ण होने के पश्चात उन्होंने कहा– "मैने जिन नक्षत्रों का निर्माण किया है वे सदा मौजूद रहे हैं। जब तक संसार रहे तब तक सभी वस्तुएं जिनकी मेरे द्वारा सृष्टि हुई है, सदा बनी रहे। देवताओं! आप लोग इस बात का अनुमोदन करें"[23]।

"ऐसा कहने पर देवता लोग बोले– महर्षे, ऐसा ही हो। यह सभी वस्तुएं बनी रहें। आपके रचे हुए अनेक नक्षत्र आकाश में वैश्वानर पथ से बाहर प्रकाशित होंगे और उन्हीं ज्योतिर्मय नक्षत्रों के बीच में सिर नीचा किये त्रिशंकु भी प्रकाशमान होंगे।"[24]

अति प्राचीन काल का यह ब्रम्हाण्डीय ज्ञान अत्यन्त विस्मयकारी है। ये वृतान्त यद्यपि धार्मिक ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण में उल्लिखित है तथापित यह विज्ञान–सम्मत है। कदाचित इसीलिए वैज्ञानिक एन्ड्रेई लाइंडे ने लिखा है कि– "यह अत्यन्त मनोरंजक है कि सृष्टि रचना की यह नवीनतम वैज्ञानिक अवधारणा धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप ही है।"[25]

ब्रम्हा द्वारा सृष्टि रचनाः–

प्राचीन भारतीय शास्त्रों के अनुसार सृष्टि को ब्रम्हाजी ने अपने तप बल से

23– स्वर्गोऽस्तु सशरीरस्य त्रिशंकोरस्य शाश्वतः।
नक्षत्राणि च सर्वाणि मामकानि ध्रुवाण्यथ।।28।।
यावल्लोका धरिष्यन्ति तिष्ठन्त्वेतानि सर्वशः।
यत् कृतानि सुराः सर्वे सतदुज्ञातुमर्हथ।।29।। (श्रीमद वाल्मिकीय रामायण बालकाण्ड–सर्ग–षष्टितमः (60) श्लोक–28, 29) पृष्ठ–146, संस्करण–सम्वत्–2007, गीताप्रेस गोरखपुर।

24– अनुयास्यन्ति चैतानि ज्योतींषि नृपसत्तमम्।।
कृतार्थ कीर्तिमन्तं च स्वर्गलोकगतं यथा।।32।। (तत्रैव श्लोक–32) पृष्ठ–146

25– It is interesting to ask whether the new picture of the world is compatible with common religious beliefs.
Andrei Linde- The Universe, Life and Conciousness Essay Published in the book "Science and Spritual Quest Page 195. (प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष-पूर्वोक्त)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्पन्न किया। तप का आधुनिक भाषा में तात्पर्य हो सकता है– भौतिक ज्ञान तथा आत्मज्ञान का विवेकपूर्ण उपयोग। कठोपनिषद प्राचीन शास्त्रों के अनुसार आत्मज्ञान प्राप्त होने पर भौतिक ज्ञान स्वयं उपलब्ध हो जाता है।[26]

ब्रम्हा के विषय में श्रीमद् भागवत में कहा गया है कि– "ब्रम्हा जी, आप तो सब कुछ जानते हैं, क्योंकि जो कुछ हुआ है, हो रहा है, होगा, उसके स्वामी आप ही हैं। यह सारा संसार हथेली पर रखे हुए आंवले के समान आपकी ज्ञान दृष्टि के अन्तर्गत ही है।[27]

वस्तुतः ब्रम्हा के अस्तित्व की विवेचना आत्मज्ञान उपलब्ध होने के पश्चात ही की जा सकती है।

अभी इतना ही कहा जा सकता है कि जब धरती के मनुष्य की बुद्धि विकसित हुई तो ब्रम्हा जी की असीम ज्ञान राशि से ज्योतिशास्त्र का ज्ञान स्वतः ही कुछ महर्षियों के मानस पटल पर अंकित हो गया।

सम्भव है विज्ञान के कुछ अधिक विकसित होने पर तथा विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के पश्चात ब्रम्हा जी के अस्तित्व को समझने में हम सफल हो सकें।

वस्तुतः इस अति प्राचीन काल के ब्रम्हाण्डीय ज्ञान से ही ज्योतिष शास्त्र विकसित हुआ।

26– एतद्वयेवाक्षरं ब्रह्म एतद्वयेवाक्षरं परम्।
एतद्वयेवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्। (कठोपनिषद– व्याख्याकार– डा0 देवेन्द्र नाथ पाण्डेय प्रथम अध्याय– द्वितीय वल्ली– मंत्र–16 पृष्ठ–80)

27– हंसा प्रकाशन– जयपुर, संस्करण–1997
सर्व ह्येतद् भवान वेद भूतभव्यभवत्प्रभुः।
करामलकवद् विश्वं विज्ञानावसितं तव।।3।। वेद व्यास– श्रीमद् भागवत महापुराणम, प्रथम खण्ड, द्वितीय स्कन्ध अध्याय–5, श्लोक–3, पृष्ठ–163, संस्करण–2043, गीता प्रेस, गोरखपुर।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐसा प्रतीत होता है कि पृथ्वी पर कुछ ऐसा विनाश हुआ जिससे यह लुप्त हो गया। इसीलिए आज ज्योतिर्विज्ञान जैसे अद्भुत विज्ञान की आधार शिलाओं का पुनः अन्वेषण अनिवार्य प्रतीत होने लगा है।

ज्योतिष के उद्भव के सम्बन्ध में ओशो (रजनीश) का कथन है कि "ज्योतिष किसी सभ्यता द्वारा बहुत बड़ा विकसित विज्ञान है। फिर यह सभ्यता खो गयी और हमारे हाथ में ज्योतिष के अधूरे सूत्र रह गये। ज्योतिष कोई नया विज्ञान नहीं है, जिसे विकसित होना है, बल्कि कोई विज्ञान है जो पूरी तरह विकसित हुआ था और फिर जिस सभ्यता ने उसे विकसित किया वह खो गयी। सभ्यतायें आती हैं, फिर खो जाती हैं। फिर उनके द्वारा विकसित ज्ञान भी अपना मौलिक आधार खो देता है, सूत्र भूल जाते हैं, उनकी आधारशिलाएं खो जाती हैं।"[28]

अब यह प्रश्न उठता है कि इतना बड़ा विज्ञान इस धरती से एक साथ कैसे खो गया। इस प्रश्न पर संसार के अनेक विद्वानों ने शोध किये हैं।

यूनान के प्राचीन विद्वान प्लेटो (Plato) ने लगभग 2400 वर्ष पूर्व अपनी प्रसिद्ध पुस्तक टिमियस (Timaeus) में एक अत्यन्त उच्च कोटि की विकसित सभ्यता का विवरण दिया है, जिसका नाम एटलांटिस (Atlantis) था। इस सभ्यता का विनाश परस्पर युद्धों के कारण तथा साथ–साथ प्राकृतिक आपदाओं के कारण हुआ। ब्रिटेन के अन्वेशक पीटर जेम्स ने इस सम्बन्ध में गहन शोध किया है तथा उनकी प्रसिद्ध पुस्तक द संकेन किंगडम (The Sunken Kingdom) नें सम्पूर्ण संसार का ध्यान इस प्राचीन सभ्यता की ओर आकर्षित किया है।[29]

28– आशो रजनीश– ज्योतिष अद्वैत का विज्ञान
मैं कहता आखन देखी, पृष्ठ–199, प्रकाशक– ताओ पब्लिशिंग प्रा0 लि0– 50 कोरे गांव पार्क, पुणे– संस्करण–2003

29– www.Amazon.com The Sunken Kingdom- Peter James)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनेक आधुनिक अन्वेषकों ने मिश्र के पिरामिड़ों तथा वहां स्थित स्फिक्स (Sphinx) में अति प्राचीन सभ्यता के चिन्ह प्राप्त किया है। इन सभ्यताओं के विनाश के कारणों के खोज के लिए अनेक पाश्चात्य विद्वान आकर्षित हुए हैं। स्विटजरलैण्ड के प्रसिद्ध विद्वान एरिक वॉन डेनिकन (Aric Von Denikan) ने अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक "द चैरिएट्स आफ गॉड्स" (The Chariot of Gods) में इस संसार के अनेक प्राचीन सभ्यताओं के सम्बन्ध में अपना अन्वेषण प्रस्तुत किया है।

भारत के प्राचीन वैज्ञानिक ज्ञान का संस्कृत ग्रन्थों में अध्ययन करने के बाद उक्त अन्वेषक तथा लेखक एरिक वान डेनिकन इतना प्रभावित हुये कि उन्होंने लिखा है–

"एक उत्सुकता जो मुझे सदैव बेचैन किये रहती है, उसने मुझे प्राचीन भारतीयों ग्रन्थों की ओर आकर्षित किया। भारत के वेद और पुराणों में प्राचीन उड़ने वाली मशीनों तथा विस्मयकारी अस्त्र–शस्त्रों का कितना आश्चर्यजनक विवरण भरा पड़ा है? भारतीय स्वर्णिम वैज्ञानिक ज्ञान के समक्ष "ओल्ड टेस्टामेंट" ग्रन्थ में उल्लिखित वैज्ञानिक विवरण बिल्कुल फीके पड़ जाते हैं..... मुझे स्वयं अपने पर कितना अधिक क्रोध आ रहा है कि मैं संस्कृत भाषा नहीं जानता।[30]

भारत के प्राचीन ग्रन्थों में भी अपने अति प्राचीन सभ्यता तथा तकनीकी ज्ञान का भरपूर उल्लेख प्राप्त होता है। यह भी उल्लेख मिलता है कि इस विकसित ज्ञान का अन्त किस प्रकार हुआ।

महर्षि वेद व्यास ने महाभारत (मौसल पर्व) में इस महाविनाश का विवरण

30– A Curiosity that Leaves me no rest has always drawn me to the old Indian source books. What a mass of fascinating and & mysterious infromation about flying machines and fantastic weapons in the remote past can be found in the translation of the Indian vedas and epics. The old testament with its vigorous, vivid discriptions pales beside these Indian jewels..... How furious I was that I could not read Sanskrit!

(Eric Von Daniken – Return to the stars Page 139 and 141)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Corgi Books- Transworld Publishers Ltd. (Edition 1981) Century House 61-63

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिया है, जो निम्नलिखित है–

"बिजली की गड़गड़ाहट के साथ बालू और कंकड़ बरसाने वाली प्रचण्ड आंधी चलने लगी।"[31]

"बड़ी–बड़ी नदियां बालू के भीतर छिप कर बहने लगी। दिशायें कुहरे से आच्छादित हो गयीं। आकाश से पृथ्वी पर अंगार बरसाने वाली उल्कायें गिरने लगीं।"[32]

"सूर्य, मण्डल धूल से आच्छन्न हो गया था। उदय काल में सूर्य तेजोहीन प्रतीत होता था। सूर्य मण्डल प्रतिदिन अनेक कबन्धों (बिना सिर के धड़ों) से युक्त दिखाई देता था।"[33]

"चन्द्रमा और सूर्य दोनों के चारों ओर भयानक घेरे दृष्टिगोचर होते थे। उन घेरों में तीन रंग प्रतीत होते थे, उसका किनारे का भाग काला एवं रूखा होता था। बीच में भस्म के समान धूसर रंग दिखता था और भीतरी किनारे की कान्ति अरूण–वर्ण की दृष्टिगोचर होती थी।"[34]

पुनः द्वारका के समुद्र में डूबने का विवरण निम्नलिखित है–

"जन समुदाय के निकलते ही मगरों और घड़ियालों के निवास स्थान समुद्र

31– वबुर्वाताश्च निर्घाता रूक्षाः शर्करवर्षिणः।
अपसव्यानि शकुना मण्डलानि प्रचक्रिरे।। वेद व्यास– श्री महाभारतम (मौसल पर्व– प्रथमोध्यायः) श्लोक–2, संस्करण सम्वत्–2058, गीताप्रेस, गोरखपुर (पृष्ठ–6463)

32– प्रत्यगृह्णर्महानद्यो दिशो नीहारसंवृताः।
उल्काश्चाङ्गारवर्षिण्यः प्रापतन् गगनाद्भुवि।। तत्रैव श्लोक–3

33– आदित्यो रजसा राजन् समबच्छन्नमण्डलः।
विरश्मिरूदये नित्यं कबन्धैः समदृश्यत।। तत्रैव श्लोक–4

34– परिवेशश्च दृश्यन्ते दारूणाश्चन्द्रसूर्ययोः।
त्रिवर्णिः श्यामरूक्षान्तास्तथा भस्मारूणप्रभाः।। तत्रैव श्लोक–5

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने रत्नों से भरी पूरी द्वारका नगरी को जल में डुबो दिया। पुरूष सिंह अर्जुन ने उस नगर का जो–जो भाग छोड़ा उसे समुद्र ने अपने जल से आप्लावित कर दिया। यह अद्भुत दृश्य देखकर द्वाराकावासी मनुष्य बड़ी तेजी से चलने लगे। उस समय उनके मुख से बारम्बार यही निकलता था कि दैव की लीला विचित्र है।"[35]

ज्योतिष शास्त्र के उच्च कोटि के आधुनिक विद्वान श्री स्वामी सनातन श्री ने अपनी पुस्तक "साधना विज्ञान" में लिखा है कि– "वेद तथा महाभारत आदि ग्रन्थों में स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि महाभारत युद्ध के 36 वर्ष के उपरान्त पृथ्वी पर भयंकर उल्कापात हुए थे। यह उल्कापात महाभारत युद्ध में प्रयुक्त हुए ब्रम्हास्त्रों तथा पाशुपतास्त्रों के प्रतिफल थे। ब्रम्हास्त्र तथा पाशुपतास्त्र देवलोक की सम्पत्ति थे..... .....धरती का भौगोलिक स्वरूप बदल गया। दूर–दूर तक फैली पर्वत श्रृंखलाएं इन उल्कापातों के कारण ही बनी हैं। धरती का तापभी बढ़ने लगा। ध्रुव पिघलने लगे। सागर महाप्रलय पर उतर आये। द्वारकायें डूब गयीं।[36]

इस विनाश का विवरण महर्षि वेद व्यास नें अपनी संहिताओं में दिया है। वेद व्यास कहते हैं "पृथ्वी पर एक सहस्त्र वेद की शाखाएं थीं। पापी इन्द्र ने उन्हें ध्वस्त कर दिया। मैं वेद व्यास कुछ शाखाओं का पुनः प्रतिरोपण कर रहा हूं।"[37]

"इन वाक्यों से स्पष्ट है कि वेद व्यास जो महाभारत काल के बहुत उपरान्त तक जीवित रहे। इस सम्पूर्ण विनाश के साक्षी थे। महाविनाश के उपरान्त ही उन्होंने जब संहिताओं को संकलित किया तो उनके मन पर पड़ी महाविनाश की गहरी छाप

35- नियति तु जने तस्मिन् सागरो मकरालयः।
द्वारकां रत्नसम्पूर्णो जलेनाप्लावयत् तदा।।
यद् यद्धि पुरूषव्याघ्रो भूमेस्तस्या व्यमुंचत।
तत् तत् सम्प्लावयामास सलिलेन स सागरः।। बेद व्यास- श्री महाभारतम (सप्तमोध्यायः) श्लोक-41-42, संस्करण सम्वत्-2058, गीताप्रेस, गोरखपुर (पृष्ठ-6479)

36- स्वामी सनातन श्री- साधना विज्ञान, (पृष्ठ-215 से 218 तक), संस्करण-1992, प्रकाशक- श्री सनातन आश्रम, गौरीबाग, कुर्सी रोड, लखनऊ-226007

37- तत्रैव

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और पीड़ाएं इनसंहिताओं में स्थान–स्थान पर मुखरित हो उठी हैं।"[38]

सम्भव है, भारत की पौराणिक सरस्वती नदी इसी महा विनाश के फलस्वरूप विलुप्त हो गयी थी। (देखिये– परिशिष्ट–8)

सभ्यताओं के उत्थान–पतन के परिप्रेक्ष्य में ज्योतिर्विज्ञान की वैज्ञानिक आधारशिलाओं के लुप्त होने के कारणों को भी ढूढ़ा जा सकता है।

ज्योतिष के आधारशिलाओं के विज्ञानसम्मत सूत्रों का अन्वेषण आज अनेक देशों में हो रहा है। इनमें प्रमुख हैं "एस्ट्रोलॉजी सेन्टर आफ अमेरिका" तथा "एस्ट्रोलॉजी सेन्टर आफ ब्रिटेन" से सम्बन्धित अनेक ज्योतिष के विद्वान जिनमें रिचर्ड नोले की प्रसिद्ध पुस्तक क्रिटिकल एस्ट्रोलॉजी– इनवेस्टीगेटिंग द कास्मिक कनेक्शनस (Critical Astrology : Investigating the Cosmic Connections) अत्यन्त प्रसिद्ध कृति है।[39]

भारत में हरिद्वार में स्थित शान्तिकुंज में इस क्षेत्र में अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य हो रहा है। इसके वर्तमान अधिष्ठाता डा0 प्रणव पंड्या ने ज्योतिष के वैज्ञानिक पक्षों पर पूर्ण प्रकाश डाला है।

भारत के प्राचीन तथा वर्तमान ग्रन्थों के आधार पर कुछ सूत्र अग्रलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत किया है, जो ज्योतिष को वैज्ञानिक आधारशिला प्रदान करते हैं। सूत्र तो अनेक हैं किन्तु अति विस्तार के भय से कुछ थोड़े सूत्रों का ही यहां उल्लेख किया जा रहा है:–

1– यथा पिंडे तथा ब्रम्हांडे का सिद्धान्तः–

भारत के प्राचीन ऋषियों ने इस तथ्य को भली प्रकार समझ लिया था कि

38– स्वामी सनातन श्री– साधना विज्ञान, (पृष्ठ–215 से 218 तक), संस्करण–1992, प्रकाशक– श्री सनातन आश्रम, गौराबाग, कुर्सी रोड, लखनऊ–226007

39– www.shop@Londonastrology.com

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूक्ष्मतम वस्तुओं में तथा ब्रम्हांड में एक ही सिद्धान्त कार्य करता है। उदाहरणार्थ आज हमें अच्छी प्रकार ज्ञात हो गया है कि एक परमाणु की बनावट तथा हमारे सौर मण्डल की बनावट एक जैसी ही है जिस प्रकार परमाणु में नाभिक के चारों ओर इलेक्ट्रान अपनी विभिन्न कक्षाओं में चक्कर लगाते हैं वैसे ही सूर्य के चारों ओर विभिन्न ग्रह अपनी विभिन्न कक्षाओं में चक्कर लगाते हैं। इसी सत्य को कटोपनिषद में कहा गया है कि–

अणोरणियान महतो महीयान।
आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।।[40]

अर्थात सूक्ष्मातिसूक्ष्म वस्तुओं में तथा विशालतम ब्रम्हांड में एक ही सिद्धान्त कार्य करता है।

इस सिद्धान्त से यह ज्ञात होता है कि वे एक दूसरे को प्रभावित करेंगे।

2. पाइथागोरस द्वारा प्रतिपादित ब्रम्हांडीय लयबद्धता का सिद्धान्त–

यूनान का प्राचीन विद्वान पाइथागोरस का विचार था कि प्रत्येक नक्षत्र या प्रत्येक ग्रह या उपग्रह जब अंतरिक्ष में यात्रा करते हैं तो उनकी यात्रा के कारण एक विशेष ध्वनि पैदा होती है। इन सारे नक्षत्रों की ध्वनियों का एक तालमेल है, जिसे वह "विश्व की लयबद्धता" (Cosmic Hamony)[41] कहते हैं। जब कोई व्यक्ति जन्म लेता है तब उस जन्म के क्षण में इन नक्षत्रों के बीच जो संगीत की व्यवस्था होती है। वह उसके संवेदनशील चित्त पर अंकित हो जाता है। वही उसे जीवन भर

40– कठोपनिषद– व्याख्याकार– डा0 देवेन्द्र नाथ पाण्डेय, प्रथम अध्याय– द्वितीय वल्ली, मंत्र–16– पृष्ठ–86 संस्करण–1997, प्रकाशक–हंसा प्रकाशन, जयपुर।

41– www.Amazon.com.nature's magic synergy in evolution and the fate of human kind-by Peter Corning, Chapter-Pythagorus and "The music of the spheres". Publisher-Cambridge University Press.

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

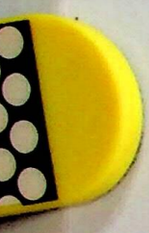

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वस्थ तथा अस्वस्थ करती है। जब भी अपनी उस जन्म के साथ पायी गयी संगीत व्यवस्था के साथ तालमेल बना लेता है तो स्वस्थ हो जाता है और जब उसका तालमेल टूट जाता है तो अस्वस्थ हो जाता है।

3. महर्षि इन्टरनेशनल यूनिवर्सिटी (यू0एस0ए0) द्वारा इस सम्बन्ध में किया हुआ अनुसंधानः–

महर्षि इन्टरनेशनल यूनिवर्सिटी (यू0एस0ए0) ने लगभग सभी प्राच्य विद्याओं पर वैज्ञानिक शोध किया है।

भारत की इन प्राचीन विभिन्न विद्याओं के द्वारा मानव चेतना में कौन–कौन से गुण विकसित होते हैं, इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा है कि ज्योतिष से सर्वज्ञता का गुण प्राप्त होता है। इन सत्ताइस नक्षत्रों तथा नौ ग्रहों का मानव मस्तिष्क पर कैसे प्रभाव पड़ता है, इसके लिए परिशिष्ट–9, 10, 11 तथा 12 दर्शनीय है जिन्हें उक्त विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया है।[42]

उन सभी चार्टों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि सभी ग्रह राशियों और नक्षत्र हमारे मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं। मस्तिष्क ही शरीर के सम्पूर्ण अंगों को नियंत्रित करता है और मस्तिष्क के विभिन्न भाग विभिन्न ग्रहों, राशियों और नक्षत्रों से प्रभावित होते हैं।

4. आकाशीय पिंडों में आकर्षण शक्ति–

प्रत्येक आकाशीय पिंड में आकर्षण शक्ति होती है जिससे वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। आधुनिक विज्ञान के नवीनतम अनुसंधानों के अनुसार दो आकाशीय

42– Alliance for knowledge
Published by Maharshi International University MIU Press Publication No.-G-50
Printed in West Germany by MIU Press Edition-1974

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिंडों के मध्य जो स्थान खाली दिखाई देता है वह भी वास्तव मे खाली नहीं है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफेन हाकिन्स ने अपनी पुस्तक "ए ब्रीफ हिस्ट्री आफ टाइम" में लिखा है "क्वान्टम थ्योरी के अनिश्चयवाद के सिद्धान्त का अर्थ है कि कोई भी स्थान खाली नहीं है। जो स्थान हमें खाली दिखाई देता है, वहां भी मूल कण तथा मूल प्रतिकण (पाटिकल तथा एण्टीपार्टिकल) भरे पड़े हैं जिनमें अपार उर्जा उपस्थित है।"[43]

उपर्युक्त सिद्धान्त का अर्थ हुआ कि कोई भी ग्रह नक्षत्र आदि हमसे पृथक नहीं है बल्कि जुड़े हुए हैं।

दो आकाशीय पिंडों में आकर्षण का कारण बताते हुए उन्होंने कहा है कि "एक पिंड में ग्रेविटान नामक कण निकलता है तथा दूसरे द्वारा अवशोषित होता है इस प्रकार ग्रविटान कणों के निस्तारण तथा अवशोषण से सभी आकाशीय पिंड एक दूसरे से सम्बन्धित हैं।"[44]

उपर्युक्त नवीनतम वैज्ञानिक शोधों से भी ग्रह नक्षत्रों का हमारे शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों की पुष्टि होती है।

5. लोवसांग राम्पा का कथन–

विश्व प्रसिद्ध रहस्यात्मक विषयों की विश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत करने वाले तथा अनेक विश्व प्रसिद्ध पुस्तकों के लेखक लोवसांग राम्पा ने ग्रहों, नक्षत्रों तथा

43– The uncertainty principle means that even empty space is filled with pairs of vertual particles and anti particles. These pairs would have an infinite amount of energy.
(Stephen Hawkins- A Brief History of Time) page 165.

44– (प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष-पूर्वोक्त)
तत्रैव Page 169

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राशियों का शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में ऐसे तथ्यों को उजागर किया है जो सामान्यतः हमें दिखाई नहीं देता। उन्होंने कहा है कि अपनी योग क्षमता को विकसित कर अनेक अदृश्य तथ्यों को जाना जा सकता है।

मानव शरीर तथा ग्रहों के सम्बन्ध में उन्होंने निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किया है।[45]

1– प्रत्येक आकाशीय पिंड से सदैव विद्युत चुम्बकीय तरंगे निकलती रहती हैं, जिनकी तरंग दैर्ध्य की आवृत्ति भिन्न–भिन्न होती है। तरंग दैर्ध्य तथा आवृत्तियों की विभिन्न श्रृंखलाओं से रंग उत्पन्न होते हैं अथवा रंगों का आभास होता है।

मङ्गल ग्रह से लाल रंग, सूर्य से नारंगी रंग, शुक्र से नीला रंग तथा शनि से हरा, बुध से पीले रंग की रश्मियाँ आती रहती है।

2– मानव शरीर के विभिन्न केन्द्रों से भी विभिन्न प्रकार की विद्युत चुम्बकीय तरंगे निकलती हैं।

3– मानव शरीर से उत्सर्जित तरंगें ग्रहों तथा नक्षत्रों से आने वाली तरंगों से प्रभावित होती है तथा दोनों तरंगों का सम्मिश्रण हमारे शरीर के चारों ओर हो जाता है।

4– हमारे शरीर को भी चारों ओर से एक हल्का प्रकाश घेरे रहता है जिसे

45– **Lobsang Rampa- You for Ever**
(from Page 11 to 41)
Cogi Books- Transworld Publishers Ltd.
Century House- 61-63, Uxbridge Road,
Ealing, London, W55SA, Reprint-1980

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karqundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लेखक ने इथरिक अथवा इथर का प्रकाश कहा है इस अदृश्य प्रकाश पुंज के परत की मोटाई एक इंच के आठवें भाग से लेकर 6 इंच तक हो सकती है। यह परिशष्ट–13 में दिखाया गया है।

इथरिक के परत के ऊपर आरा (Aura) का अदृश्य प्रकाश होता है यह ऊंचाई में शरीर से लगभग सात फीट तथा मोटाई भी लगभग चार फिट तक हो सकती है। यह चित्र 9 में दिखाया गया है।

इस आरा (Aura) को एक पतली परत चारों ओर से घेरी रहती है जिससे आरा (Aura) का आकार एक अंडे जैसा हो जाता है। (देखिये– परिशिष्ट–14 तथा 15)

5– ग्रहों तथा नक्षत्रों से आने वाली तरंगों का रंग तथा हमारे शरीर से उत्सर्जित होने वाली तरंगों के रंग के सम्मिश्रण से विभिन्न प्रकार के रंग आरा में दिखाई पड़ते हैं।

रामपा के अनुसार आरा (Aura) के रंगों को योग दृष्टि (एक्स्ट्रा सेंसरी परसेप्सन) से देखकर निम्नलिखित तथ्य ज्ञात होते हैं।

क– यदि स्वच्छ लाल रंग की रश्मियां आरा (Aura) में दिखाई दें तो इसका तात्पर्य है कि इस व्यक्ति का स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

ख– यदि हल्का लाल रंग दिखाई दे तो इसका तात्पर्य यह होगा कि यह व्यक्ति मानसिक रूप से दुर्बल है।

ग– यदि लाल तथा भूरे रंग का सम्मिश्रण है और धुंधला दिखाई दे तो इसका अर्थ होगा कि शरीर के इस भाग में कैंसर जैसा रोग है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घ– यदि आरा में नारंगी रंग की प्रधानता हो तो इसका अर्थ होगा कि यह व्यक्ति मानवतावादी दृष्टिकोण वाला है।

ङ– यदि नारंगी तथा भूरे रंग का सम्मिश्रण हो तो इसका अर्थ होगा कि इस व्यक्ति को गुर्दे (किडनी) का रोग है।

इस प्रकार आरा (Aura) के रंगों के देखकर रोगों को जाना जा सकता है तथा किसी लेन्स द्वारा रंगों को नियंत्रित कर रोगों को ठीक किया जा सकता है।

लोवसांग ने भविष्य में रोगों के निवारण हेतु आरा चिकित्सा (Aura thorupy) विकसित होने की सम्भावना व्यक्त की है।

6. स्वामी विशुद्धानन्द द्वारा प्रतिपादित सूर्य–सिद्धान्त

ग्रहों राशियों और नक्षत्रों का हमारे शरीर पर कैसे प्रभाव पड़ता है, इस प्रश्न का सर्वोत्तम उत्तर हमें स्वामी विशुद्धानन्द द्वारा प्रतिपादित "सूर्य सिद्धान्त" से प्राप्त होता है।

स्वामी विशुद्धानन्द पश्चिमी बंगाल में वर्दवान जिले के रहने वाले थे। मानसरोवर के निकट तिब्बत में स्थित ज्ञानगंज नामक सिद्ध आश्रम में रहकर इन्होंने योग विद्या का अभ्यास किया था तथा पूर्ण योगी बनने के पश्चात काशी में आकर रहने लगे थे।

पं0 गोपीनाथ कविराज ने स्वामी विशुद्धानन्द जी के अनेक चमत्कारों का उल्लेख अपनी पुस्तकों में किया है।

प्रसिद्ध शोधकर्ता पाल ब्रंटन के समक्ष स्वामी जी ने एक मृत पक्षी को थोड़े

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समय के लिए जीवित कर दिया था। जीवित करने की यह प्रक्रिया उन्होंने सूर्य किरणों को एक लेन्स से संयोजित करके किया था और यह सिद्ध किया था कि सूर्य किरणों के साथ जीवन की धारा भी प्रकाश की गति के साथ प्रवाहित होती रहती है इस घटना का विवरण पाल ब्रंटन ने अपनी पुस्तक "ए सर्च इन सेक्रेट इण्डिया" में दिया है।[46]

पं0 गोपीनाथ कविराज ने भी स्वामी जी के चमत्कारों का विवरण देते हुए लिखा है कि सूर्य किरणों को एक स्फटिक के लेन्स से संयोजित कर स्वामी जी ने एक गुलाब के फूल को जवा का फूल बना दिया था तथा एक बार एक फूल को ग्रेनाइट पत्थर में बदल दिया था।[47]

यह सब असम्भव कार्य कैसे सम्भव हो जाता है कि इस सम्बन्ध में स्वामी जी ने निम्नलिखित सिद्धान्त बतलाया था—[48]

"जो व्यक्ति सूर्य की रश्मियों अथवा वर्णमाला (स्पेक्ट्रम) को भली–भांति पहचान गया है और वर्णों को शोधित करके परस्पर मिश्रित करना सीख गया है, वह सहज ही सभी पदार्थों का संघटन या विघटन कर सकता है। सभी पदार्थों का मूलबीज इस रश्मिमाला के विभिन्न प्रकार के संयोग से ही उत्पन्न होता है।"

अपने सूर्य सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए उन्होंने बतलाया कि "रश्मियों को शुद्ध रूप से पहचान कर उनकी योजना करना ही सूर्य विज्ञान का प्रतिपाद्य विषय

46– **Paul Brunton- A search of secret India**- Page 196
Edition- 1982, B.I. Publication
54, Janpath, New Delhi.

47– म0म0पं0 गोपीनाथ कविराज– योगीराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्व कथा, पृष्ठ–42
संस्करण–2000ई0, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी–221001

48– तत्रैव चतुर्थ अध्याय (सूर्य विज्ञान का रहस्य) पृष्ठ 77–86

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। जो ऐसा कर सकते हैं वे सभी स्थूल एवं सूक्ष्म कार्य करने में समर्थ होते हैं। सुख दुख, पाप–पुण्य, काम–क्रोध, लोभ, प्रीति, भक्ति आदि सभी चेतना की वृत्तियां और संस्कार भी रश्मियों के संयोग से ही उत्पन्न होते हैं। स्थूल या जड़ वस्तुओं के लिए तो कुछ कहना ही नहीं है।"

यदि हम स्वामी जी द्वारा उद्घाटित सिद्धान्त की आधुनिक भौतिक विज्ञान की पृष्ठभूमि में समीक्षा करें तो हमें यह सिद्धान्त आश्चर्यजनक रूप से आधुनिक विज्ञान के क्वान्टम सिद्धान्त के समान ही प्रतीत होता है।

आधुनिक विज्ञान में यह वर्षों से विवाद चलता रहा है कि प्रकाश तरंगों से बना है अथवा कणों से। क्वान्टन के सिद्धान्त ने यह रहस्योद्घाटन किया कि प्रकाश तरंगों और कणों दोनों से बना है, किन्तु किसी प्रयोग में प्रकाश श्रृंखलाबद्ध तरंगों के रूप में दिखता है तो किसी में कणों के रूप में, पर दोनों रूपों में एक साथ नहीं देखा जा सकता।

वास्तव में स्वामी जी का सूर्य सिद्धान्त क्वान्टम सिद्धान्त का समर्थन करते हुए उससे आगे बढ़ गया है। क्योंकि इस सूर्य सिद्धान्त के अनुसार प्रकाश रश्मियों तथा कणों के रूप में तो है ही जिससे सभी पदार्थों का निर्माण होता है, साथ–साथ जीवन तत्व का भी वाहक है जिससे जीवन में सुख, दुख, पाप, पुण्य, काम, क्रोध, लोभ, प्रीति, भक्ति आदि उत्पन्न होते हैं।

यदि हम किसी वैज्ञानिक के समक्ष यह तर्क प्रस्तुत करें कि क्वान्टम थ्योरी जहां आकार रूक गयी है सूर्य सिद्धान्त उसमें जीवन तत्व को भी सम्मिलित कर उसे आगे बढ़ाती है तो वह सहसा इसे स्वीकार नहीं करेगा। किन्तु यह भी सत्य है कि किसी बात को असम्भव मान लेने से विचारों का विकास रूक जाता है अतएव तथ्यों को असम्भव मानने की अपेक्षा उनका नवीन दृष्टि से विश्लेषण करना उचित है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अब हम सूर्य सिद्धान्त से सहमत होते हुए यह कह सकते हैं कि चूंकि सूर्य आदि ग्रहों नक्षत्रों या राशियों से सतत तरंगे आती रहती हैं अतएव इस तरंगों के साथ चेतना की विभिन्न अनुभूतियों सुख, दुख, पाप, पुण्य, लोभ, मोह, क्रोध आदि के प्रभाव भी आते हैं। इस प्रकार हमारा जीवन इनसे प्रभावित होता रहता है।

7. ओशो रजनीश द्वारा विज्ञान–सम्मत विश्लेषण–

ओशो रजनीश का कथन है कि "अब वैज्ञानिक मानते हैं कि प्रत्येक ग्रह की रेडियो एक्टिविटी अलग–अलग हैं। जैसे वीनस से जो रेडिया तत्व हमारी तरफ आते हैं वे चांद के रेडियो तत्वों से भिन्न हैं। इसी प्रकार जुपीटर से आने वाले रेडियो तत्व सूर्य के रेडियो तत्वों से भिन्न हैं, क्योंकि प्रत्येक ग्रह के पास अलग तरह के गैसों और अलग तरह के तत्वों का वातावरण है। उन सबसे अलग–अलग प्रभाव पृथ्वी पर आते हैं। जब एक बच्चा पैदा हो रहा है तो पृथ्वी के चारो तरफ क्षितिज को घेरकर खड़े हुए जो भी नक्षत्र हैं, ग्रह, उपग्रह अथवा दूर आकाश में महातारे हैं, उन सबके सब उस एक्सपोजर के क्षण में बच्चे के चित्त पर गहराईयों तक प्रवेश कर जाते हैं, फिर उसकी कमजोरियां, उसकी ताकतें, उसका सामर्थ्य सब सदा के लिए प्रभावित हो जाता है।"[49]

पुनः उन्होंने एक व्यक्ति का चौराहे से तुलना करते हुए कहा है कि हम सब क्रिसक्रास प्वाइंटस हैं, जहां जगत की अनंत शक्तियां आकर एक बिन्दु को काटती हैं वहां व्यक्ति निर्मित हो जाता है तथा इंडीविजुएल बन जाता है।[50]

ओशों ने ज्योतिष के पूर्ण प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए कहा है कि हमारे चारो

49– ओशो रजनीश– मैं कहता आखन देखी, (ज्योतिष अर्थात अध्यात्म) पृष्ठ–223
(प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष-पूर्वोक्त)

50– तत्रैव– पृष्ठ–229

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओर उर्जाओं के क्षेत्र हैं, जो पूरे समय हमें प्रभावित करते हैं। एक बच्चे के जन्म को वैज्ञानिक भाषा में हम एक्सपोजर कह सकते हैं। यह ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार एक फिल्म को हम कैमरे में एक्सपोज करते हैं। एक क्षण के लिए कैमरे का शटर दबाते हैं, कैमरे की खिड़की खुलती है और बन्द हो जाती है। उस क्षण में जो भी कैमरे के समक्ष आ जाता है, वह फिल्म पर अंकित हो जाता है, अब दूसरा उस पर कुछ भी अंकित न होगा।[51]

मनुष्य पर पड़ने वाले ज्योतिषीय प्रभाव के सम्बन्ध में ओशो द्वारा की गयी उपर्युक्त विज्ञान–सम्मत विश्लेषणात्मक व्याख्या पूर्णतः उपयुक्त एवं तर्कसंगत है।

8. जातक ग्रन्थों में उल्लिखित प्रेत बाधा, शाप तथा अभिचार–जन्य रोगों के सम्बन्ध में विवेचना–

जातक ग्रन्थों तथा आयुर्वेद ग्रन्थों में प्रेत बाधा, शाप तथा अभिचार जन्य रोगों के उल्लेख प्राप्त होते हैं। आधुनिक मनोचिकित्सकों के समक्ष ऐसे अस्वस्थ व्यक्ति प्रायः आते रहते हैं किन्तु आधुनिक चिकित्सक केवल इसे काल्पनिक भय की उपज मानते हैं। अतएव इसकी भी समीक्षा आवश्यक है।

यह स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि क्या प्रेतात्माओं का अस्तित्व होता है?

चरक संहिता में कहा गया है कि "मन के संयोग से ही गमन करने वाला आत्मा, आकाश को छोड़कर, शेष चार महाभूतों के सूक्ष्म रूप के साथ मृत शरीर से निकलकर पुनः नूतन शरीर में चला जाता है। यह आत्मा का कार्य उसके पूर्व जन्म कृत कर्म के अनुसार होता है। जब तक दिव्य दृष्टि नहीं प्राप्त होती तब तक आत्मा का दर्शन नहीं होता।[52]

51– ओशो रजनीश– (ज्योतिष अर्थात अध्यात्म) मैं कहता आखन देखी, पृष्ठ–223 (प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष–पूर्वोक्त)

52– चरक संहिता– प्रथम खण्ड– 2/31 (प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष–पूर्वोक्त)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आजकल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इस सम्बन्ध में अमेरिका तथा योरप के अनेक देशों तथा रूस एवं जापान आदि देशों में शोध हो रहे हैं। अनेक जिज्ञासुओं ने सूक्ष्म आत्माओं का इन्फ्रारेड कैमरे से चित्र लेने में सफलता पायी है। यद्यपि अभी यह वैज्ञानिकों द्वारा पूर्ण रूप से स्वीकृत नहीं हुआ है तथापि शोध निरन्तर हो रहे हैं।

प्रेतात्माओं का आवेश दूसरों के शरीर में किस प्रकार होता है, इस प्रक्रिया को समझने के लिए पतञ्जलि का निम्न सूत्र दृष्टव्य है:–

बन्धनकारण शैथिल्यात प्रचार संवेदनाच्च
चित्तस्य परशरीरावेशः।[53]

अर्थात बंधन (सूक्ष्म शरीर तथा स्थूल शरीर के बंधन) को शिथिल करने से तथा चित्त की गति का भलीभांति ज्ञान होने से स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर को बाहर निकालने तथा इसे दूसरे के शरीर में प्रवेश कराने का योगी जनों को अभ्यास हो जाता है।

इसी प्रकार सूक्ष्म शरीरों का विवरण सांख्य दर्शन, श्वेताश्वर उपनिषद तथा ब्रम्हसूत्र, महाभारत, तथा भगवत् गीता आदि अनेक ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं।

बीसवीं शताब्दी के महानतम योगी श्री अरविन्द का भी कथन है कि– "जैसे स्थूल भौतिक सत्ता का एक लोक है वैसे ही उसके ठीक ऊपर एक और लोक है, जिसमें जड़ तत्व सर्वोपरि नहीं है, बल्कि प्राण शक्ति, प्रधान निर्धारिका के रूप में उसका स्थान ले लेती है।..... यह स्थूल जीवन के समान अपरिवर्तनीय

53– महर्षि पतञ्जलिकृत– योग दर्शन– विभूति पाद, सूत्र–38, गीता प्रेस, गोरखपुर–273005, संस्करण– सम्वत–2061

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नियम से बंधा हुआ नहीं है, बल्कि यह अपनी स्थिति में अनेक प्रकार के परिवर्तन ला सकती है।[54]

भूतावेश के प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए चरक का कथन है कि जिस प्रकार दर्पण में छाया (प्रतिबिम्ब) अथवा सूर्यकान्त मणि में आतम (सूर्य की किरणें) अदृश्य रूप से शीघ्र प्रविष्ट हो जाती है, उसी प्रकार देवता, ऋषि, गंधर्व, आदि भी उन्माद रोगी के शरीर को दूषित न करते हुए अदृश्य रूप से अपने–अपने गुणों के प्रभाव से उसमें प्रवेश कर जाते हैं।[55]

चरक संहिता में तथा अनेक जातक ग्रन्थों में शाप जन्य मानसिक रोगों का उल्लेख किया गया है। चरक संहिता में कहा गया है कि गुरू, वृद्ध (ज्ञान वृद्ध, तपो वृद्ध आदि), सिद्ध (तपः सिद्ध अथवा देवयोनि विशेष) ऋषि आदि के शाप से या अभिचार (मारण, सम्मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि अनुष्ठानों) से या अभिज्ञान (इसी के निरन्तर चिन्तन) से उन्मत हुआ व्यक्ति उनके अनुरूप चेष्टायें, आचरण तथा व्यवहार करने लगता है तो उसे उसकी चेष्टा आदि लक्षणों को देखकर गुरू आदि के शाप से उन्मत्त समझना चाहिए।[56]

चरक संहिता के उपर्युक्त कथन को आधुनिक चिकित्सक प्रायः हास्यास्पद समझते हैं क्योंकि इस कथन की वैज्ञानिक व्याख्या विज्ञान के सामान्य नियमों के अन्तर्गत नहीं हो पाती। किन्तु संसार के लगभग सभी प्राचीन संस्कृतियों में इससे सम्बन्धित उल्लेख प्राप्त होते हैं।

54– श्री अरविन्द– योग समन्वय– पूर्वार्ध अनुवादक– श्री जगन्नाथ वेदालंकार, पृष्ठ–518 प्रकाशक– श्री अरविन्द सोसायटी पांडिचेरी–1969

55– चरक संहिता– द्वितीय खण्ड– 9/18 (प्रकाशक का नाम, पता तथा प्रकाशन वर्ष-पूर्वोक्त)

56– तत्रैव– द्वितीय खण्ड– 9/19/2

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आजकल मानसिक शक्ति को सैनिक कार्यों में उपयोग के लिए अमेरिका तथा यूरोप में अनेक प्रयोग हो रहे हैं।

प्रसिद्ध विचारक लोबसांग राम्पा (जिन्होंने विज्ञान और दर्शन का समन्वय करने के उद्देश्य से अनेक विश्व प्रसिद्ध पुस्तकें लिखी हैं) का कथन है कि यह अभिचार क्रिया विचार का धनीभूत आकार (Thought form) है। इससे किसी को लाभ तथा किसी को हानि भी पहुंचाया जा सकता है। उनका निम्नलिखित कथन दृष्टव्य है। "विचारों के धनीभूत आकार का निर्माण किसी के द्वारा भी किया जा सकता है। इसके लिए थोड़े अभ्यास की आवश्यकता होती है। इसके निर्माण के पहले यह निश्चित कर लेना चाहिए कि इसे किसी के हित के लिए ही उपयोग किया जाय। यदि किसी के हानि के लिए इसका उपयोग करते हैं तो यह पलटकर आपको ही शारीरिक अथवा मानसिक रूप से हानि पहुंचा सकता है।"[57]

अनेक तार्किकों द्वारा ऐसे विचारों की आलोचनाओं के सम्बन्ध में श्री राम्पा ने आगे कहा है कि– "यह तो लगभग सोचने में भी कठिन प्रतीत होता है कि आज इतना अधिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी उन्नति के बाद भी लोग सूक्ष्म आत्माओं के सम्बन्ध में इतने अनभिज्ञ हैं।[58]

57– Thought Forms can be made by anyone at all with just a little practice, but you must first at all times concentrate upon good in your Thought Forms because if you try to make an evil form, then assuredly that Thought Form will turn upon you and cause you the gravest harm perhaps in the physical, in the mental, or in the astra state.
(**T. Lobsang Rampa- The Rampa Story**, Page-151) Edition-1982 Corgi Books- Transworld Publishers Ltd., Century House 61-63 unbridge road, Ealing, London. W.55 SA

58– It seems inconceivable that a people with their technical progress should be so blind to the things of the spirit.
तत्रैव पेज-170

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जातक ग्रन्थों में उल्लिखित लगभग सभी सिद्धान्तों तथा प्रक्रियाओं की विज्ञान–सम्मत तथा तर्कसंगत व्याख्या की जा सकती है।

वस्तुतः ज्यों–ज्यों आधुनिक विज्ञान विकसित हो रहा है, त्यों–त्यों प्राचीन भारत के अनेक शास्त्रीय सिद्धान्त और मान्यतायें विज्ञान–सम्मत सिद्ध होती जा रही हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट--7

क्वान्टम थ्योरी

The concepts of quantum theory were not easy to accept even after their mathematical formulation had been completed. Their effect on the physicists' imaginations was truly shattering. Rutherford's experiments had shown that atoms, instead of being hard and indestructible, consisted of vast regions of space in which extremely small particles moved, and now quantum theory made it clear that even these particles were nothing like the solid objects of classical physics. The subatomic units of matter are very abstract entities which have a dual aspect. Depending on how we look at them, they appear sometimes as particles, sometimes as waves; and this dual nature is also exhibited by light which can take the form of electromagnetic waves or of particles.

This property of matter and of light is very strange. It seems impossible to accept that something can be, at the same time, a particle—i.e. an entity confined to a very small volume—and

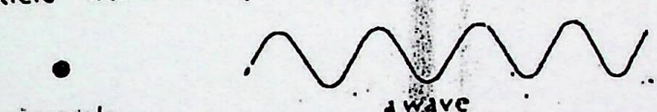

a particle a wave

a wave, which is spread out over a large region of space. This contradiction gave rise to most of the *koan*-like paradoxes which finally led to the formulation of quantum theory. The whole development started when Max Planck discovered that the energy of heat radiation is not emitted continuously, but appears in the form of 'energy packets'. Einstein called these energy packets 'quanta' and recognized them as a fundamental aspect of nature. He was bold enough to postulate that light and every other form of electromagnetic radiation can appear not only as electromagnetic waves, but also in the form of these quanta. The light quanta, which gave quantum theory its name, have since been accepted as bona fide particles and are now called photons. They are particles of a special kind, however, massless and always travelling with the speed of light.

मूलतः क्वान्टा में एक साथ कण तथा तरंग, दोनों का गुण होता है। यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि कोई वस्तु एक साथ कण (सीमित) तथा तरंग (असीमित) दोनो कैसे हो सकता है? किन्तु यह एक वैज्ञानिक सत्य है।

साभार उद्धृत-- फ्रिंटजौफ कैपरा- द ताओ ऑफ फिजिक्स

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

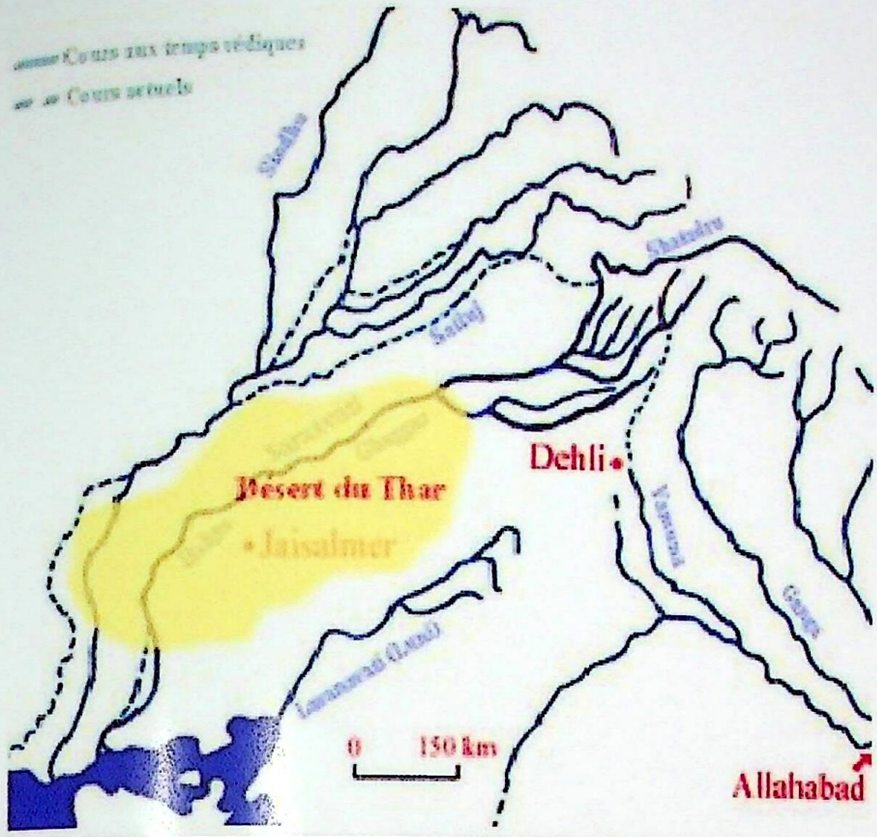

ANCIENT SARASWATI RIVER

The myth of river Saraswati

G. V. Padhye[1] has opened a Pandora's box by creating a new myth about the Vedic river Saraswati. According to his hypothesis, the river Saraswati is the same as river Ili in the Balkhash region of Kazakhstan. He has based his argu-ments on rudimentary concepts of phi-lology and linguistics in defence of his hypothesis. Padhye has identified seven rivers of *Sapta-sindhu*, with some riv-ers and streams flowing into Balkhash lake. Most of his arguments are not only absurd, but also seem to be illogical. For example, by a stretch of his imagi-nation, he opts for simple solutions. According to him, the *Kusa* grass grown in the delta of river Ili (Saraswati) gave its alternative name, Darbha. Regarding the *Sapta-sindhu*, all of them are pre-sent outside India. *Shubra-vastra* – a saree – is but a paper thin crust of ice which formed on the river surface.

It is an established fact in history that the seven rivers known as *Sapta-sindhu* in the Vedas are identifiable with seven rivers of Indian origin, viz. Indus, Jhelum, Chenab, Ravi, Sutlej, Beas and Saraswati/Yamuna. Ancient Yamuna and Sutlej were flowing to-gether into the Arabian Sea as Saraswati river but due to neotectonic upliftment, both the rivers shifted their courses[2]. The present-day Ghaggar and its tribu-taries, namely Markanda, Tangri, Patiali Rao, etc. define the course of ancient Yamuna and Sutlej. A. V. Sankaran[3] has identified the course of river Saraswati with that of river Ghaggar flowing through Punjab and ending up in the Thar desert of Rajasthan. His hypothe-sis is based on logical arguments derived from geological and hydro-geological investigations, remote sens-ing studies by LANDSAT and geo-physical surveys carried out in Rajast-han. Roy and Jakhar[4] have also con-firmed the findings of Valdiya[2] and Sankaran[3] basing their arguments on geological evidence. Vedic Saraswati flowed in India and it had no connection with river Ili of Kazakhstan.

1. Padhye, G. V., *Curr. Sci.*, 2001, **81**, 1154–1155.
2. Valdiya, K. S., *Resonance*, 1996, **1**, 19–28.
3. Sankaran, A. V., *Curr. Sci.*, 1999, **77**, 1054–1060.
4. Roy, A. B. and Jakhar, S. R., *Curr. Sci.*, 2001, **81**, 1188–1195.

H. S. VIRK

Department of Physics,
Guru Nanak Dev University,
Amritsar 143 005, India e-mail: virkhs@yahoo.com

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

JYOTISH:
The Basal Ganglia and the 9 *Grahas* (I)

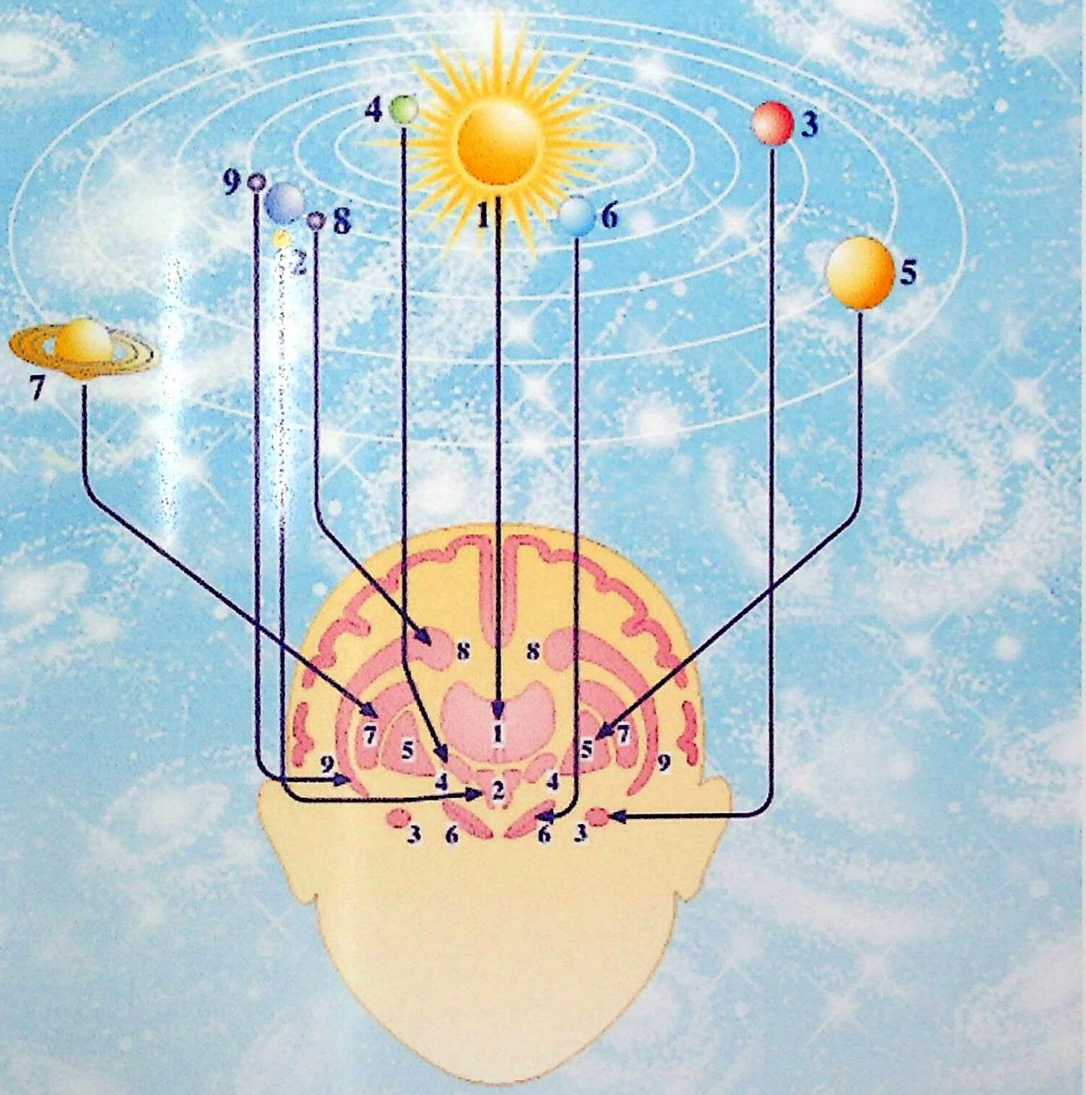

1 • Sūrya or Sun 1 • Thalamus	4 • Budh or Mercury 4 • Subthalamus	7 • Shani or Saturn 7 • Putamen
2 • Chandra or Moon 2 • Hypothalamus	5 • Guru or Jupiter 5 • Globus Pallidus	8 • Rāhu or Ascending Lunar Node 8 • Nucleus Caudatus, head
3 • Mangal or Mars 3 • Amygdala	6 • Shukra or Venus 6 • Substancia Nigra	9 • Ketu or Descending Lunar Node 9 • Nucleus Caudatus, tail

Figure 45 This shows a coronal section of the brain with its internal structures, including the basal ganglia, the thalamus, the hypothalamus, the subthalamus, etc., and their one-to-one relationship with the 9 planets, or *Grahas*, of the solar system.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

NATURAL LAW

Influence from all over the Universe on the Earth and the Human Brain

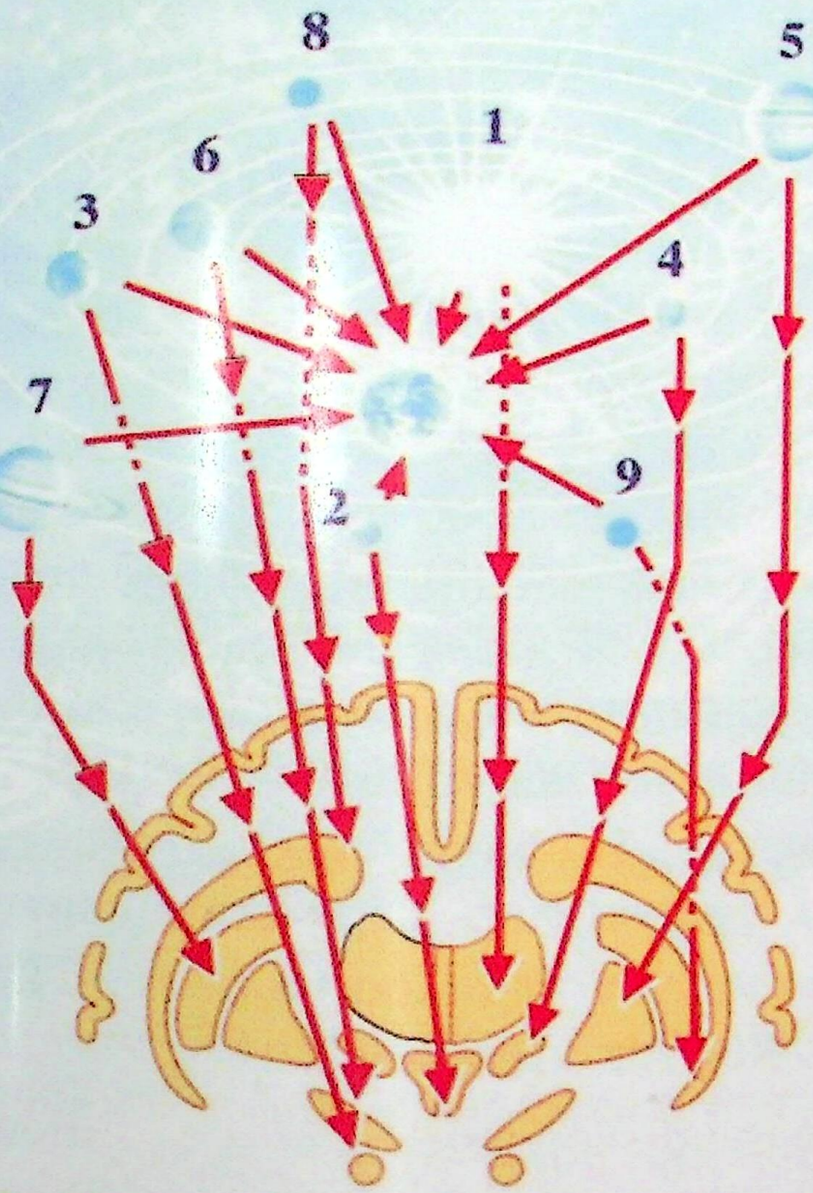

1. Sun – *Thalamus*
2. Moon – *Hypo-thalamus*
3. Mars – *Red Nucleus*
4. Mercury – *Sub-thalamus*
5. Jupiter – *Globus Palidus*
6. Venus – *Substancia Nigra*
7. Saturn – *Putamen*
8. Lunar node – *Nucleus Caudatus, Head*
9. Lunar node – *Nucleus Caudatus, Tail*

This picture shows a coronal section of the brain with its internal structures and their one to one relation to the planets. Perfect order and balance in the structure and function of the universe is reflected in the structure and function of the physiology.

(For simplicity, only a few of the aspects of the comprehensive connections between the universe and the physiology are shown in this illustration.)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Influence from all over the Universe on the Earth and the Human Brain

27 Cosmic Counterparts of the 27 Aspects of the Human Brain

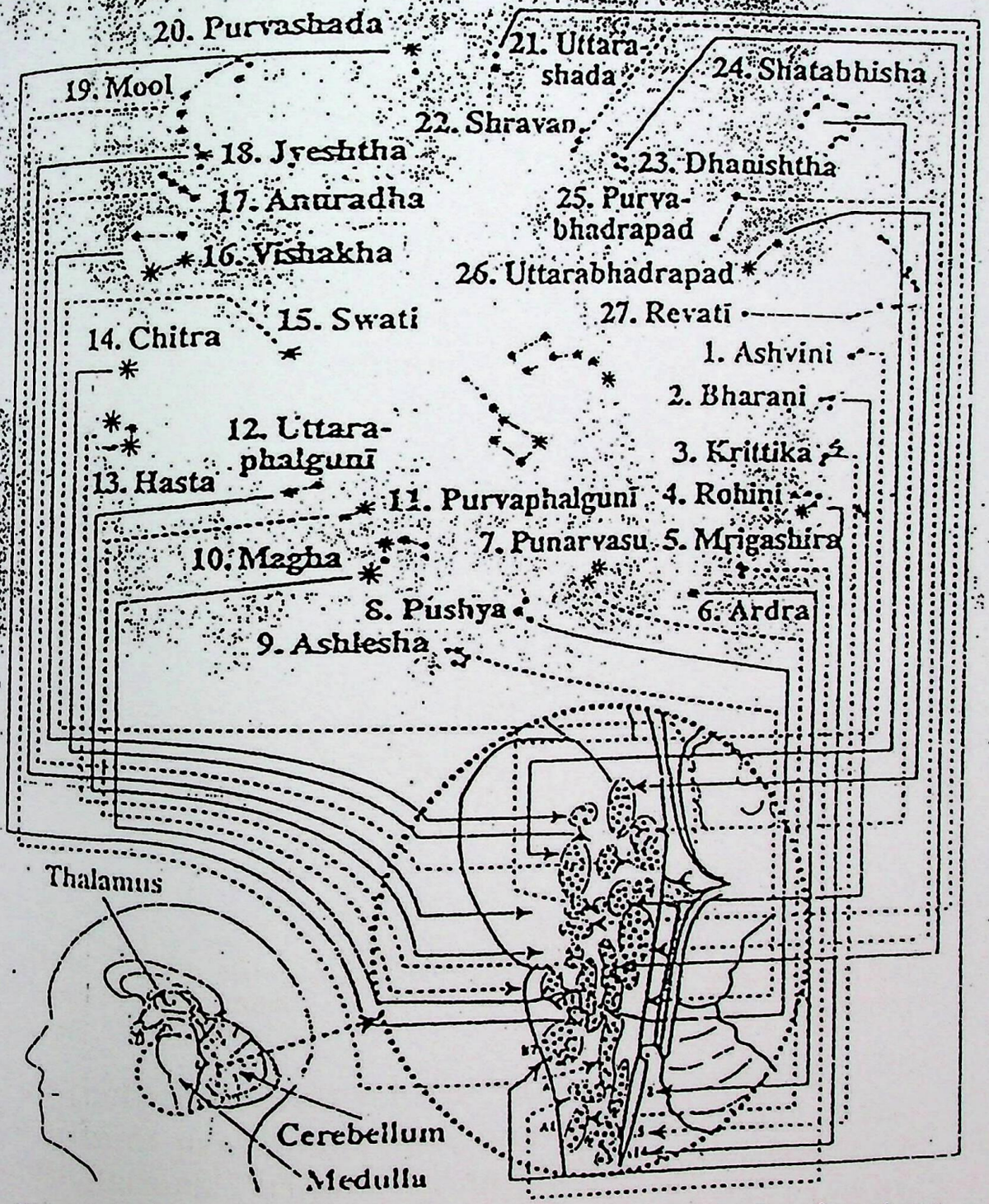

This picture shows a sagittal section of the brain stem with its internal structures and their one-to-one relation to collections of distant stars. Perfect order and balance in the structure and function of the universe is reflected in the structure and function of the human physiology.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Influence from all over the Universe on the Earth and the Human Brain

The Counterpart of the Individual Physiology Discovered in the Cosmic Physiology of the Universe

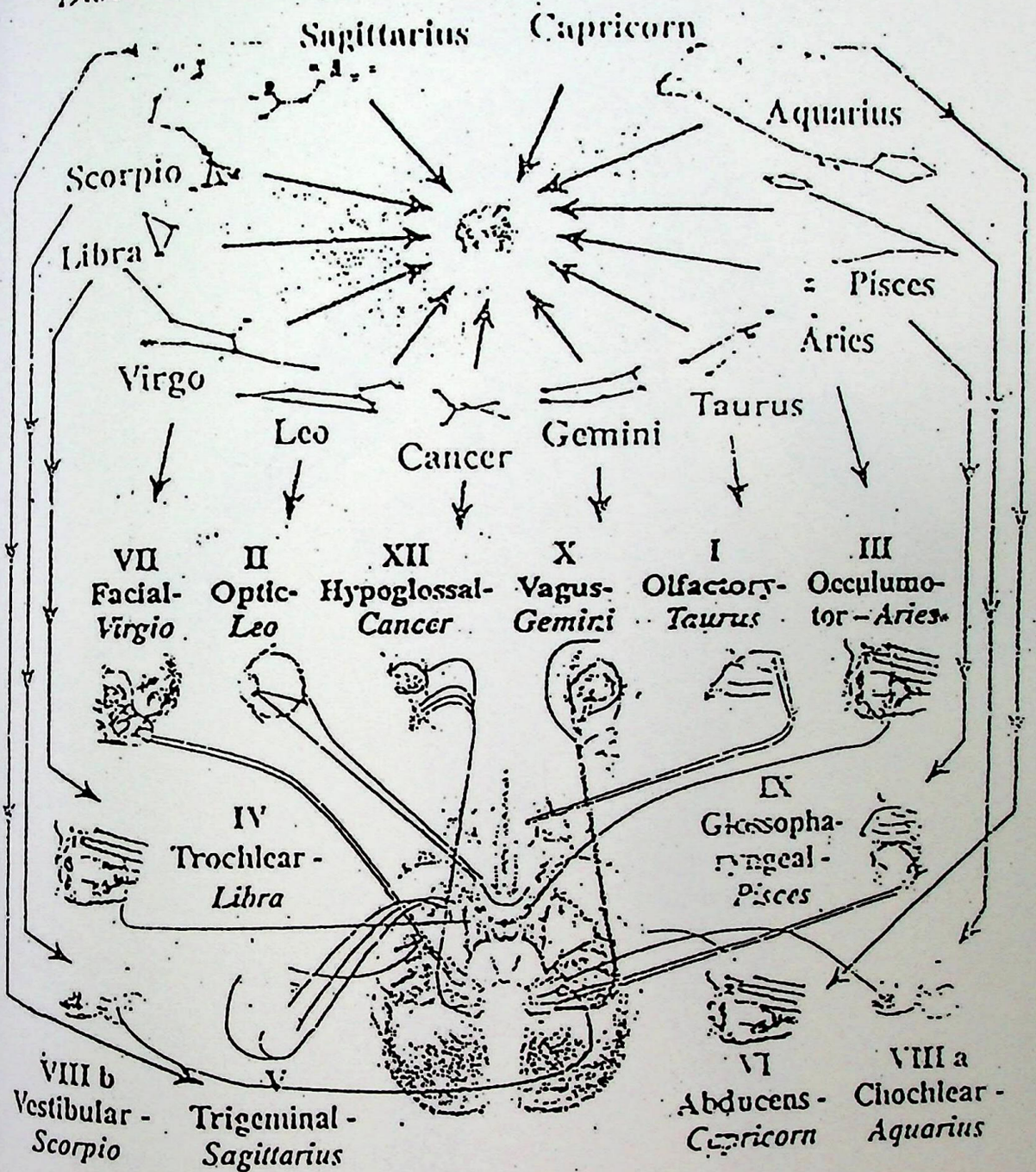

This picture shows a ventral view of the brain with its 12 cranial nerves and their one-to-one relation to the constellations. Perfect order and balance in the structure and function of the universe is reflected in the structure and function of the human physiology.

(For simplicity, only a few of the aspects of the comprehensive connections between the universe and the physiology are shown in this illustration.)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

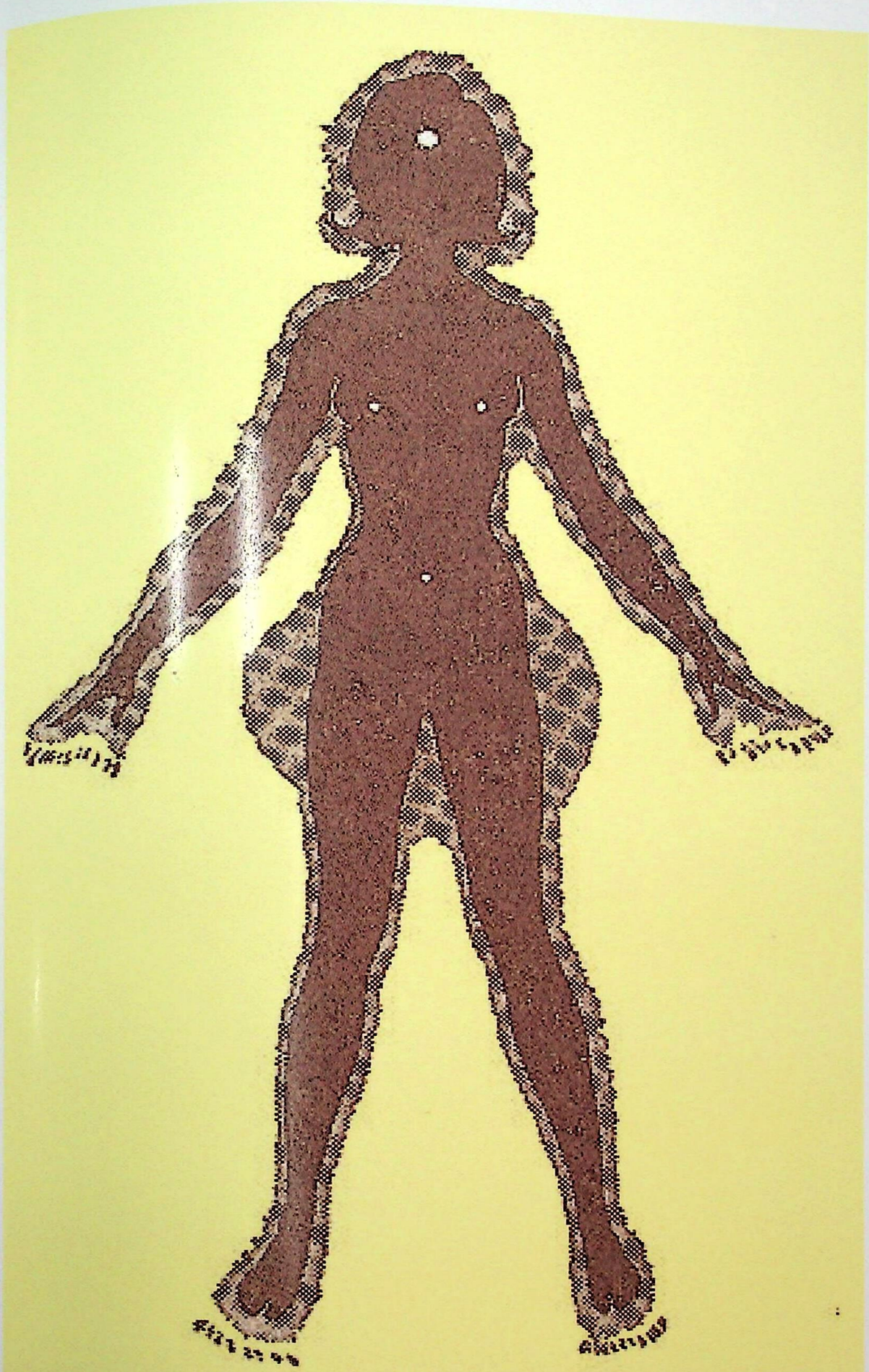

THE ETHERIC

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

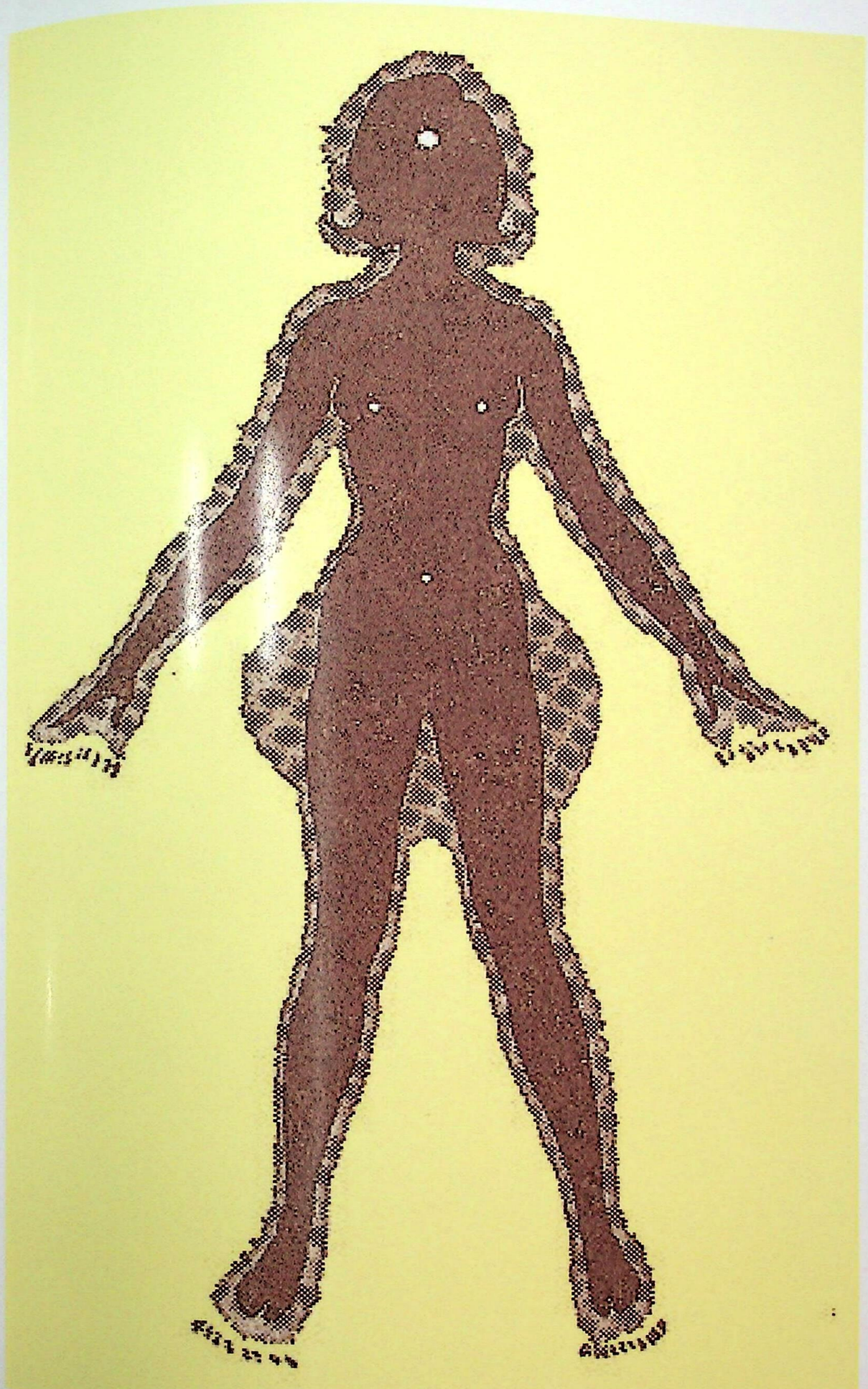

THE ETHERIC

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट-14

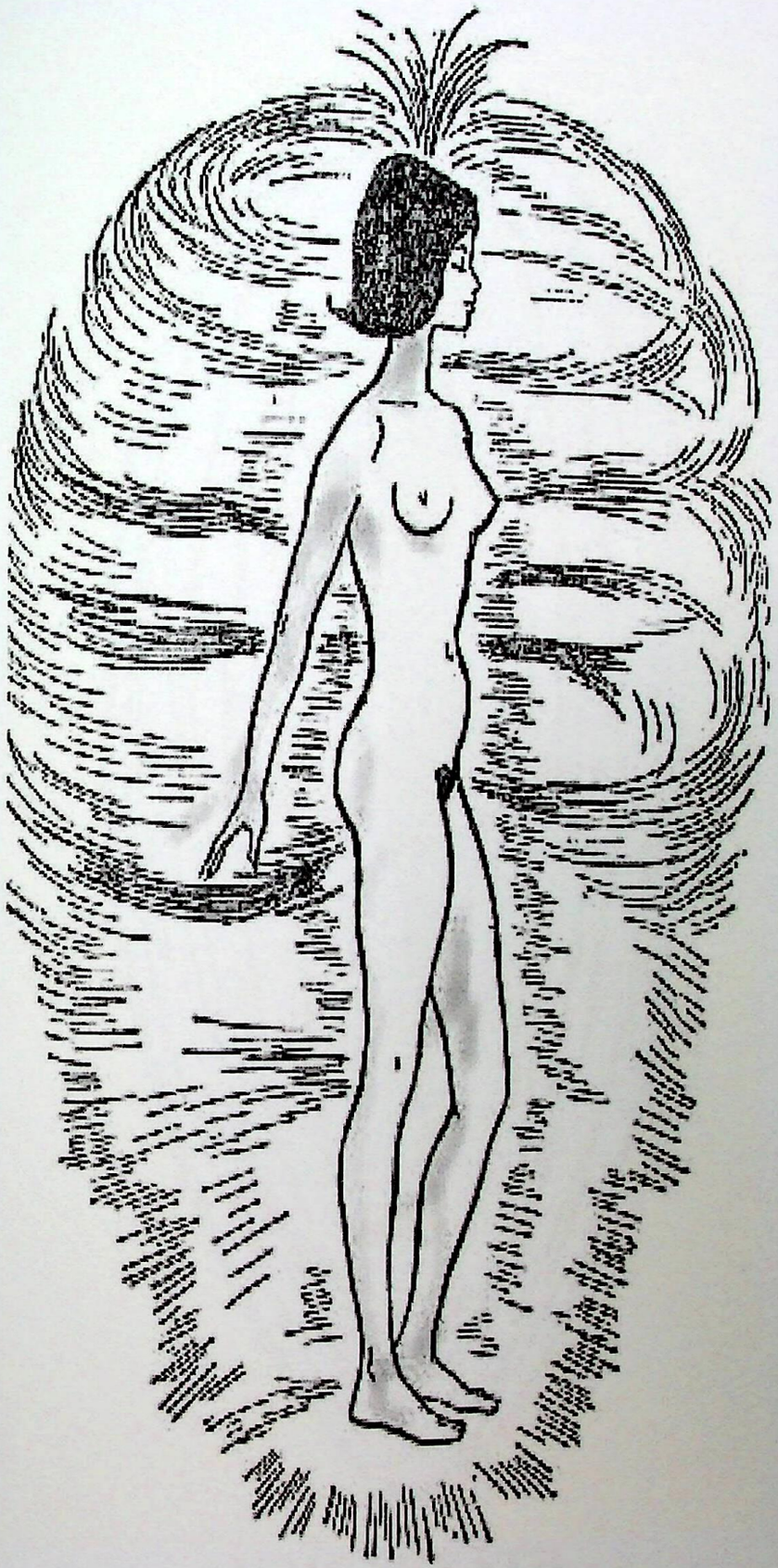

MAIN LINES OF AURA

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट-15

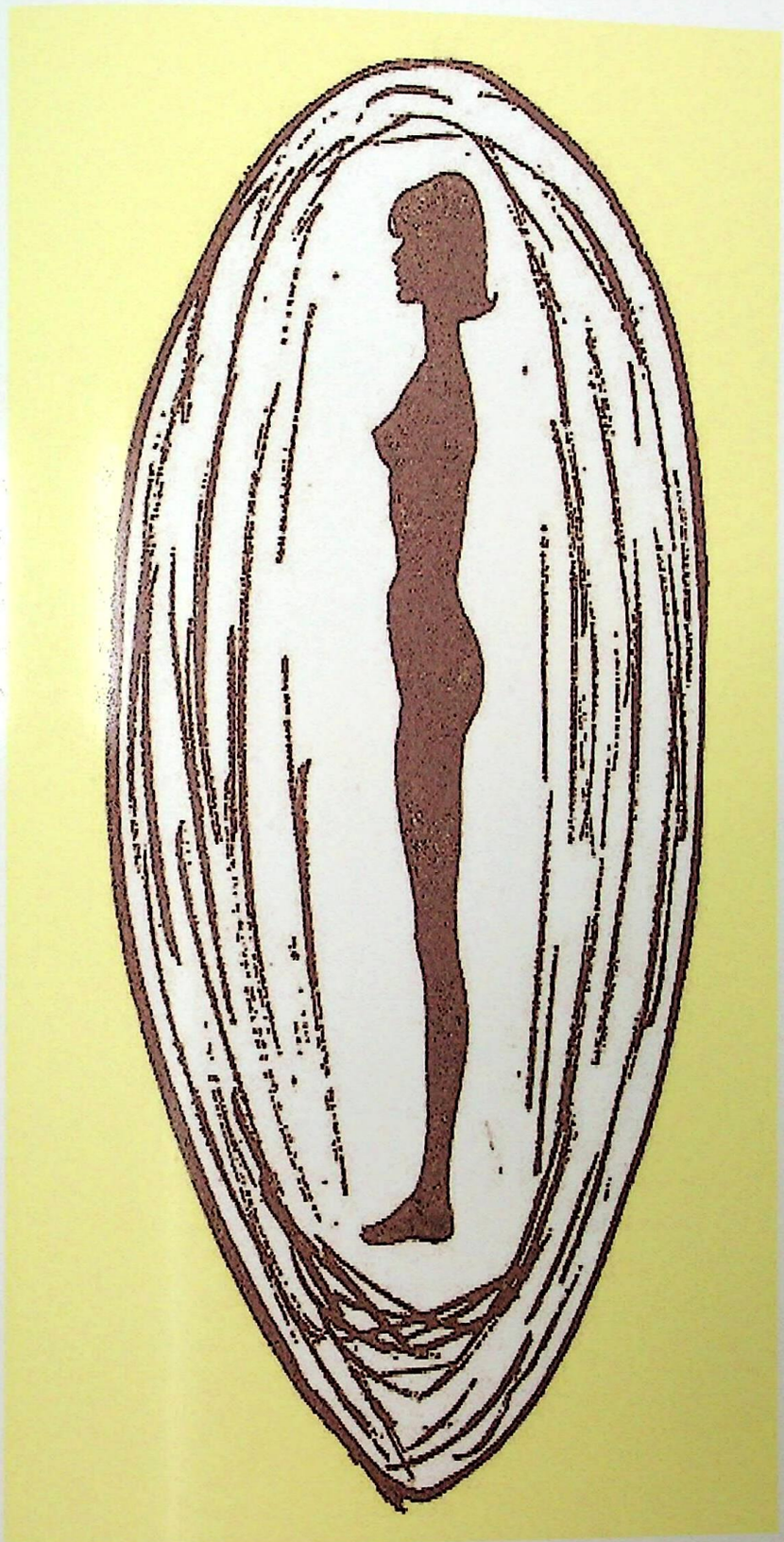

AURIC SHEATH

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याय-एकादश
उपसंहार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एकादश अध्याय

उपसंहार

पूर्व अध्यायों में विभिन्न ग्रह नक्षत्रों तथा राशियों का पृथ्वी के सभी मनुष्यों पर उनकी जन्म कुण्डली के अनुसार पड़ने वाले प्रभावों के परिप्रेक्ष्य में मानसिक रोगों के ज्योतिषीय कारणों की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है। अन्त में शोध प्रक्रिया के निष्कर्षों का उल्लेख करते हुए कुछ ऐसे प्रश्नों पर विचार करना अनिवार्य प्रतीत होता है, जो आज के वैज्ञानिक युग में जिज्ञासुओं के मानस पटल पर प्रायः उभरते रहते हैं।

शोध प्रक्रिया का निष्कर्षः–

अपनी शोध प्रक्रिया के क्रम में मैने जितने भी मानसिक रोगियों की जन्मपत्रियों का विश्लेषण किया है, उन सभी में ऐसे रोगोत्पादक योग विद्यमान हैं। कुछ ऐसे भी व्यक्तियों की जन्मपत्रियां देखने को मिली, जिनमें रोगोत्पादक योग विद्यमान थे किन्तु उन्हें अब तक कोई मानसिक रोग नहीं हुआ था। ऐसे लोगों को पूर्ण विश्वास में लेने के पश्चात उनसे पूछताछ करने पर उन्होंनें यह स्वीकार किया कि अनेक बार उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि उनका मानसिक संतुलन खो रहा है किन्तु वे अपनें इच्छा शक्ति (will power) के द्वारा अपने को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं तथा साथ–साथ अपने को तनावरहित करने के लिए अध्यात्मिक गुरू जनों के सम्पर्क में भी रहतें हैं।

वस्तुतः ज्योतिषीय योग मानसिक रोगों के प्रवृत्ति तथा उसकी प्रबल सम्भावना के ही द्योतक होते हैं। वे बाध्यकारी आदेश नहीं देते। वैज्ञानिक भाषा में हम कह सकते हैं कि ऐसे योग रोगों से बचाव के लिए जो शरीर में प्रतिरोध क्षमता होती है उसे क्षीण कर देते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐसे व्यक्ति यदि पहले से उपयुक्त औषधियों का सेवन करते रहें और अपने शरीर में किसी प्रकार की निर्बलता न आने दें तथा वाह्य प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करते रहें तो उनका किसी भी प्रकार के रोगों से बचाव होता रहेगा। ब्रिटिश ज्योतिषी पीटर मार्शल ने इस सम्बन्ध में कहा है कि ऐसे योग केवल रोगों के होने की प्रबल सम्भावना को ही व्यक्त करते हैं, रोगाक्रान्त होने के लिए बाध्य नहीं करते (Stars Incline, they do not compell)[1]

वस्तुतः रोगों के अनेक अन्य कारण भी होते हैं, जैसे ऋतु परिवर्तन, अतिशीत या ताप का प्रभाव, संक्रामक रोगों से संक्रमित होना, सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य वाह्य प्रतिकूल परिस्थितियां आदि। ये सभी कारणं अपना प्रभाव तभी दिखाते हैं, जब शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता घटती है। रोगों की प्रतिरोध क्षमता सर्वाधिक ज्योतिषीय कारणों से ही प्रभावित होती है अतएव ज्योतिषीय कारण रोगों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण हैं।

शोध प्रक्रिया के क्रम में पूछे जाने वाले कुछ सामान्य प्रश्नः–

अब शोध प्रबन्ध का समापन करने से पूर्व कुछ ऐसे प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक है जो प्रायः अनेक जिज्ञासुओं द्वारा पूछे जाते हैं।

अनेक तार्किक व्यक्तियों नें ज्योतिष की आलोचना करते हुए यह कहा है कि यदि हमारा जीवन आकाशीय पिण्डों के प्रभाव से ही संचालित होता है तो हमारा मानव जीवन यन्त्रवत् हो गया, फिर हमारे कर्मों का क्या महत्व रह जाता है?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तरः–

ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तकों ने भी इन प्रश्नों पर विचार किया था तथा इनका

1– पूर्वोक्त (देखिये विषय प्रवेश तथा www.amazon.com world astrology.peter marshal)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समुचित उत्तर भी दिया है।

प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तकों में 18 महर्षियों के नामों का उल्लेख है। यथा 1–सूर्य, 2–पितामह ब्रह्मा, 3–व्यास, 4–वसिष्ठ, 5–अत्रि, 6–पराशर, 7–कश्यप, 8–नारद, 9–गर्ग, 10–मरीचि, 11–मनु, 12–अंगिरा, 13–लोमश, 14–पौलिश, 15–च्यवन, 16–यवन, 17–भृगु, 18–शौनक[2]

हम यहां उपरोक्त महर्षियों में प्रमुख महर्षि वेद व्यास तथा महर्षि वसिष्ठ के कर्म और भाग्य से सम्बन्धित विचारों का अवलोकन करेंगे।

महर्षि वेद व्यास द्वारा कर्म और भाग्य के सिद्धान्तों का विवेचनः–

महर्षि वेद व्यास ने अपने गूढ़तम सिद्धान्तों को विभिन्न कथानकों के माध्यम से समझाया है ताकि सामान्य जन भी इन्हें हृदयंगम कर सकें।

वेद व्यास ने महाभारत (अनुशासन पर्व) में स्वयं ब्रह्मा द्वारा बतलाये गये दैव (भाग्य) तथा कर्म (पुरूषार्थ) से सम्बन्धित सिद्धान्तों को बतलाया है जो निम्नलिखित हैः–

"जैसे बीज खेत में बोये बिना फल प्राप्त नहीं हो सकता उसी प्रकार दैव (प्रारब्ध) भी पुरूषार्थ के बिना सिद्ध नहीं होता।"[3]

2– सूर्यः पितामहो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरंगिराः।।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशैवेते ज्योतिःशास्त्रप्रवर्तकाः।। डा0 गोरख प्रसाद- भारतीय ज्योतिष का इतिहास, पृष्ठ-130, प्रकाशक- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, संस्करण-2004 तथा अनेक अन्य ज्योतिष ग्रन्थों में उल्लिखित

3– यथा बीजं बिना क्षेत्रमुप्तं भवति निष्फलम्।
तथा पुरूषकारेण बिना दैवं न सिध्यति।। वेद व्यास- श्रीमद्महाभारतम् (अनुशासन पर्व) षष्ठोऽध्यायः श्लोक नं0-7, पृष्ठ 5446, गीता प्रेस, गोरखपुर-273005, संस्करण सम्वत्-2058

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya Kanchana, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"मनुष्य को तपस्या से रूप, सौभाग्य और नाना प्रकार के रत्न प्राप्त होते हैं। इस प्रकार कर्म से सब कुछ मिल सकता है परन्तु भाग्य के भरोसे निकम्मे बैठे रहने वाले को कुछ नहीं मिलता।"[4]

"किया हुआ पुरूषार्थ ही दैव का अनुसरण करता है परन्तु पुरूषार्थ न करने पर दैव किसी को कुछ नहीं दे सकता।"[5]

"प्रबल पुरूषार्थ करने से पहले का किया हुआ भी कोई कर्म बिना किया हुआ सा हो जाता है और वह प्रबल पुरूषार्थ ही सिद्ध होकर फल प्रदान करता है। इस तरह पीछे का किया हुआ पुण्य या पाप कर्म अपने यथार्थ फल को नहीं दे पाते।"[6]

"जैसे थोड़ी सी आग वायु का सहारा पाकर बहुत बड़ी हो जाती है, उसी प्रकार पुरूषार्थ का सहारा पाकर दैव का बल विशेष बढ़ जाता है।"[7]

"जिस प्रकार तेज समाप्त हो जाने से दीपक बुझ जाता है, उसी प्रकार कर्म (पुरूषार्थ) के क्षीण हो जाने पर दैव भी नष्ट हो जाता है।"[8]

4- तपसा रूपसौभाग्यं रत्नानि विविधानि च।
प्राप्यते कर्मणा सर्वे न दैवादकृतात्मना।। वेद व्यास- श्रीमद्महाभारतम् (अनुशासन पर्व) षष्ठोऽध्यायः श्लोक नं0-12, पृष्ठ 5446, गीता प्रेस, गोरखपुर-273005, संस्करण सम्वत्-2058

5- कृतः पुरूषकारस्तु दैवमेवानुवर्तते।
न दैवमकृते किंचित् कस्यचिद् दातुमर्हति।। तत्रैव, श्लोक नं0-22

6- कृतं चाप्यकृतं किंचित् कृते कर्मणि सिद्धयति।
सुकृतं दुष्कृतं कर्म न यथार्थ प्रपद्यते।। तत्रैव, श्लोक नं0-28, पृष्ठ-5447

7- यथाग्निः पवनोद्धूतः सुसूक्ष्मोऽपि महान् भवेत्।
तथा कर्मसमायुक्तं दैवं साधु विवर्धते।। तत्रैव, श्लोक नं0-43, पृष्ठ-5448

8- यथा तैलक्षयाद् दीपः प्रहासमुपगच्छति।
तथा कर्मक्षयाद् दैवं प्रहासमुपगच्छति।। तत्रैव, श्लोक नं0-44, पृष्ठ 5448

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"इस जीव जगत में उद्योगहीन मनुष्य कभी फलता–फूलता नहीं दिखायी देता। दैव (भाग्य) में इतनी शक्ति नहीं है कि वह उसे कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर लगा दे। जैसे शिष्य गुरू को आगे करके चलता है, उसी तरह दैव (भाग्य) पुरूषार्थ को ही आगे करके स्वयं उसके पीछे चलता है। किया हुआ पुरूषार्थ ही दैव को जहां चाहता है, वहां ले जाता है।"[9]

इस प्रकार स्पष्ट है कि ज्योषित शास्त्र के प्रवर्तक माने जाने वाले वेद व्यास ने प्रारब्ध को नहीं बल्कि पुरूषार्थ को ही सर्वाधिक महत्व देकर पुरूषार्थी बनने की प्रेरणा दी है।

महर्षि वसिष्ठ द्वारा कर्म और भाग्य के सिद्धान्तों का विवेचनः–

वसिष्ठ सिद्धान्त के प्रणेता महर्षि वसिष्ठ ने भी इस प्रश्न पर विचार करते हुए कहा है कि–

"दोनों (पुरूषार्थ और भाग्य) दो मेढों के समान एक दूसरे के साथ युद्ध करते हैं और जो उनमें अधिक बलवान होता है, वही विजय पाता है।"[10]

महर्षि वसिष्ठ ने ऐसे व्यक्तियों की भर्त्सना की है जो ऐसा सोचते हैं कि यदि संसार में सब बातें निर्धारित हैं तो फिर पुरूषार्थ करने से क्या होगा? अर्थात जो

9– न च फलति विकर्मा जीवलोके न दैवं
व्यपनयति विमार्गे नास्ति दैवे प्रभुत्वम्।
गुरूमिव कृतमग्र्यं कर्म संयाति दैवं
नयति पुरूषकारः संचितस्तत्र तत्र।।

वेद व्यास– श्रीमद्महाभारतम् (अनुशासन पर्व) षष्ठोऽध्यायः श्लोक नं0–47, पृष्ठ 5448, गीता प्रेस, गोरखपुर–273005, संस्करण सम्वत्–2058

10– द्वौ हुडाविच युध्येते पुरूषार्थौ परस्पम्।
य एव बलवान्स्तत्र स एव जयति क्षणात्।।

योग वशिष्ठ और उसके सिद्धान्त डा0 भीखन लाल आत्रेय– श्लोक–2।6।10, पृष्ठ–252 (प्रकाशक– श्री कृष्ण जन्म स्थान सेवा संस्थान–मथुरा, संस्करण–2003)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya Collection, Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होना है वही होगा, फिर हाथ पैर पीटने की क्या आवश्यकता है? वसिष्ठ जी के मतानुसार ऐसा सोचना ठीक नहीं है, वे स्पष्टतया कहते हैं–

"बुद्धिमान व्यक्ति को पुरूषार्थ का कभी भी त्याग नहीं करना चाहिए क्योंकि पुरूषार्थ से ही भाग्य का निर्माण होता है।"[11]

वसिष्ठ जी ने ऐसे व्यक्तियों पर भी विचार किया है जो दुख के क्षणों में भाग्य का दोष देते हैं। ऐसे लोगों के सम्बन्ध में भी उन्होंने कहा है कि–

"भाग्य की कल्पना कम बुद्धि पुरूषों को दुख के समय आश्वासन देने के लिए है। आश्वासन वाक्य के अतिरिक्त भाग्य परमार्थ रूप से कोई वस्तु नहीं है।[12]

महर्षि वसिष्ठ का उपर्युक्त वाक्य उनके प्रथम वाक्यों को काटता हुआ प्रतीत होता है क्योंकि पूर्व वाक्यों में उन्होंने स्वयं कहा कि भाग्य तथा कर्म दो मेढ़ों के समान परस्पर युद्ध करते हैं तथा जो इनमें बलवान होता है वही जीतता है। कदाचित महर्षि वसिष्ठ के भ्रमोत्पादक वाक्य का यह उद्देश्य है कि मनुष्य किसी भी प्रकार भाग्यवादी न बने क्योंकि भाग्यवादी बनने से आलस्य उत्पन्न होता है। महर्षि वसिष्ठ आलस्य के पूर्ण विरोधी थे। उन्होंने कहा है:–

"यदि जगत में आलस्यरूपी अनर्थ न होता तो कौन धनी और विद्वान न होता। आलस्य के कारण ही यह समुद्र पर्यन्त पृथ्वी निर्धन और मूर्ख (मनुष्य के रूप में पशु) लोगों से भरी पड़ी है।"[13]

11- पौरूषं न परित्याज्य मेतामश्रित्य धीमता।
पौरूषेणैव रूपेण नियतिर्हि नियामिका।। — योग वशिष्ठ और उसके सिद्धान्त डा0 भीखन लाल आत्रेय- श्लोक-3/62/27, पृष्ठ-306 (प्रकाशक- श्री कृष्ण जन्म स्थान सेवा संस्थान-मथुरा, संस्करण-2003)

12- दैवमाश्वासनामात्रं दुःखे पेलवबुद्धिषु।
समाश्वासनवागेषा न दैवं परमार्थतः।।7।। — (तत्रैव-2।8।15 पेज नं0-250)

13- आलस्यं यदि न भवेज्जगत्यनर्थः
को न स्याद्बहुधनको बहुश्रुतो वा।
आलस्यादियमवनिः ससागरान्ता — (तत्रैव-2/5/30 पेज नं0-254)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महर्षि वसिष्ठ ने यह भी कहा है कि प्रबल पुरूषार्थ से भाग्य को भी बदला जा सकता है । उनका निम्नांकित कथन अत्यन्त महत्वपूर्ण है–

"जिस प्रकार कल का बिगड़ा हुआ काम आज के प्रयत्न से सुधारा जाता है इसी प्रकार वर्तमान समय में किया हुआ पुरूषार्थ पूर्व के किये गये कर्मों (जिससे दुर्भाग्य उत्पन्न हुआ) को सुधार सकता है। इसलिए मनुष्य को कार्यशील होना चाहिए।"[14]

"अधिक बली होने पर अब का पुरूषार्थ पूर्व काल के पुरूषार्थ को और पूर्व काल का पुरूषार्थ अब के पुरूषार्थ को दबा लेता है इसलिए सदा पुरूष का प्रबल पुरूषार्थ ही विजयी होता है, जो उद्वेग रहित होकर पुरूषार्थ करता है, वही विजय पाता है।"[15]

"यह तो प्रत्यक्ष ही सिद्ध है कि पूर्व काल के कर्म की अपेक्षा आज का किया हुआ कर्म अधिक बलवान होता है। इसलिए दैव को आज का पुरूषार्थ इस प्रकार जीत लेता है जैसे कि बच्चे को युवक।"[16]

"इसलिए परम पुरूषार्थ का आश्रय लेकर शुभ कर्म द्वारा पूर्व काल के अशुभ कर्मों पर विजय करो।"[17]

14– ह्यस्तनी दुष्क्रियाभ्येति शोभां सत्क्रिया यथा।
अद्यैव प्राक्तनी तस्माद्यत्नात्सकार्यवान्भव।। योग वशिष्ठ और उसके सिद्धान्त डा0 भीखन लाल आत्रेय– श्लोक-6/2-157/29, पृष्ठ-252 (प्रकाशक– श्री कृष्ण जन्म स्थान सेवा संस्थान-मथुरा, संस्करण-2003)

15– ऐहिकः प्रक्तनं हन्ति प्राक्तानोऽद्यतनं बलात्।
सर्वदा पुरूषस्पन्दस्तत्रानुद्वेगवांजयी।।3।। (2।6।18) (तत्रैव– पेंज नं0-252)

16– द्वयोरद्यतनस्यैव प्रतयक्षाद्विलिता भवेत्।
दैवं जेतुं यतो यत्नैर्बालो यूनेव शक्यते।।4।। (2।6।19) (तत्रैव– पेज नं0-252)

17– परं पौरूषमाश्रित्य दन्तैर्दन्तान्विचूर्णयन्।
शुभेनाशुभमुद्युक्तं प्राक्तनं पौरूषं जयेत ।।5।। (2।5।9) (तत्रैव– पेज नं0-252)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"बलपूर्वक इस विचार को दूर करो कि पूर्व काल का किया गया कर्म (भाग्य) तुमको किसी ओर प्रेरित कर रहा है। वर्तमान काल के पुरूषार्थ से किसी प्रकार भी पूर्त का पुरूषार्थ बलवान नहीं है।"[18]

मनुष्य को इतना पुरूषार्थ करना चाहिए कि जिससे उसके पूर्व काल के अशुभ कर्म शान्त हा जाये।[19]

अंतएव यह स्पष्ट है कि ज्योतिर्विज्ञान के प्रणेताओं का यह उद्देश्य कदापि नहीं था कि आप भाग्यवादी बनें। उन्होंने हमेशा पुरूषार्थी बनने की ही प्रेरणा दी है।

कर्म फल तथा ग्रह फल की समीक्षाः-

कुछ आलोचकों ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि यदि कर्मों से ही भाग्यबनता है तो ग्रह नक्षत्रों के द्वारा भाग्य में क्यों हस्तक्षेप किया जाता है? यह कहा जा सकता है कि किसी ने बहुत ही अधिक दुष्कर्म किए किन्तु यदि शुभ ग्रहों तथा नक्षत्रों में जन्म हो गया हो तो उनका जीवन सुखमय हो जाएगा इसके विपरीत यदि किसी ने बहुत ही शुभ कर्म किए हों किन्तु उसका जन्म अशुभ नक्षत्रों में हुआ तो उसका जीवन दुखमय हो जायेगा। अतएव यह स्वाभाविक प्रश्न बनता है कि भाग्य के निर्धारण में पूर्व में किया गया कर्म प्रधान है अथवा ग्रहों नक्षत्रों का फल।

यदि हम उपर्युक्त प्रश्न पर विचार करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि जिस प्रकार के हमारे पूर्व काल में किए हुए कर्म होते हैं इसी प्रकार के प्रभाव वाले ग्रह नक्षत्रों में हमारा जन्म होता है। इसका कारण कदाचित यह है कि जिस प्रकार स्थूल शरीर

18- प्राक्तनः पुरूषार्थोऽसौ मां नियोजयतीति धीः।
बलादधम्पदीकायां प्रत्यक्षादधिका न सा।।6।। (2।5।15) (तत्रैव- पेज नं0-253)

19- तावक्तावन्प्रयत्नेव यतितव्यं सुपौरूषम्।
प्राक्तनं पौरूषं यावदशुभं शम्यति स्वयंम्।।7।। योग वशिष्ठ और उसके सिद्धान्त डा0 भीखन लाल आत्रेय- श्लोक-2/5/11, पृष्ठ-253 (प्रकाशक- श्री कृष्ण जन्म स्थान सेवा संस्थान-मथुरा, संस्करण-2003)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार मृत्यु के पश्चात तथा जन्म से पूर्व जो सूक्ष्म शरीर होता है वह भी ग्रह नक्षत्रों से प्रभावित होता है। ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तकों को इन तथ्यों का ज्ञान था। कदाचित इसी हेतु महर्षि वेद व्यास ने महाभारत में उल्लेख किया है कि वाणों से पूर्णरूप से बिध जाने के कारण भीष्म पितामह भूमि पर आ गये किन्तु सूर्य के दक्षिणायन होने के कारण उन्होंने प्राण नहीं त्यागा। उस शरशैया पर 58 दिन तक पड़े रहे और जब सूर्य उत्तरायण हुआ तभी उन्होंने प्राण त्यागा।

"वेद व्यास के कथनानुसार भीष्म ने यह घोषित किया कि– "हंसगण (महर्षियों)! आपसे सत्य कहताहूं, मैं दक्षिणायन में देह त्याग नहीं करूँगा। उत्तरायण होने पर ही अपने परम धाम की यात्रा करूंगा। यह मेरे मन में पहले से ही निश्चित है।"[20]

<u>आकस्मिक अथवा संयोगवश घटने वाली घटनाओं के ज्योतिषीय कारणों का विवेचनः–</u>

अनेक व्यक्तियों का यह भी कहना है कि जातक ग्रन्थों में आकस्मिक दुर्घटनाओं के भी योगों का उल्लेख है, वह किस प्रकार सम्भव होता है?

वस्तुतः जातक ग्रन्थों में अनेक आकस्मिक दुर्घटनाओं यथा वाहन दुर्घटना, जल में डूबना, सर्पदंश तथा पशुओं द्वारा घात आदि के विभिन्न योगों का उल्लेख

20– गमिष्यामि स्वकं स्थानमासीद् यन्मे पुरातनम्।
उद्गायन आदित्ये हंसाः सत्यं ब्रवीमि वः ।।105।।
धारयिष्याम्यहं प्राणानुत्तरायण कांछया।
ऐश्वर्यभूतः प्राणानामुत्सर्गो हि यतो मम ।।106।।

वेद व्यास- श्रीमद्महाभारतम- भीष्म पर्वणि एकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः, श्लोक-105, 106 पृष्ठ- 3088 सस्करण सम्वत् 2058, गीता प्रेस गोरखपुर-273005

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। कदाचित ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तकों की यह मान्यता थी कि जिन घटनाओं को हम आकस्मिक मानते हैं वह भी मात्र संयोग नहीं है। उनके पीछे भी कारण है जो सूक्ष्म और अदृश्य हैं जिन्हें ज्योतिष द्वारा ज्ञात किया जाता है।

विश्व विख्यात विचारक आर्थर कोसलर (Arthur Koestler) ने अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक रूट आफ को–इन्सीडेंस (Roots of Co-incidence) मे आकस्मिक घटनाओं पर अपना गहन विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि– "विराट सृष्टि से में सर्वत्र नियम और व्यवस्था का सिद्धान्त काम कर रहा है, जिन्हें हम संयोग समझते हैं, वह भी किसी न किसी अज्ञात नियमों द्वारा परिचालित होते हैं। उन नियमों से अपरिचित होने के कारण ही ऐसी घटनाओं को संयोग की संज्ञा दी जाती है।"[21]

इस प्रकार स्पष्ट है कि अनेक आधुनिक विचारक भी ज्योतिष की प्राचीन मान्यताओं में अन्तर्निहित सत्य को धीरे–धीरे समझने लगे हैं।

वास्तव में ज्योतिर्विज्ञान का यह उद्देश्य है कि वर्तमान की स्थिति तथा भविष्य की सम्भावनाओं को इस विज्ञान के आधार पर जानकर किसी भी प्रकार के अनिष्ट से बचा जा सके।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में ज्योतिष का उपयोगः–

चिकित्सा विज्ञान में भी इसके उपयोग की अपार सम्भावनायें हैं। अब तक रोगों की उत्पत्ति में प्रत्यक्ष तथा स्थूल कारणों को ही महत्व दिया जाता है तथा स्थूल उपचारों की ही बात सोची जाती है। यदि अदृश्य तथा महत्वपूर्ण भूमिका

21- www.amazon.com - Roots of coincidence- Arthor Koestler

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निभाने वाले ग्रह नक्षत्रों के प्रभावों को भी चिकित्सा अनुसंधान की कड़ी में जोड़ा जा सके तो रोगों के कारण और निवारण के कितने ही चमत्कारी सूत्र हाथ लग सकते हैं जिनसे अपरिचित रहने के कारण रोगोपचार में अनेकों बार कुशल चिकित्सक भी अपने का अक्षम पाते हैं। निदान और उपचार के ऐसे अनेकों रहस्य इस अनुसन्धान प्रक्रिया से खुलने की सम्भावना है।

आज भारत के अतिरिक्त योरप तथा अमेरिका में भी अनेक ऐसे चिकित्सक हैं जो रोगियों के निदान के लिए ज्योतिष को परम उपयोगी मानते हैं। अमेरिकन चिकित्सक डा0 एच0एल0 कार्नेन (H.L. Cornell) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "द इन्साइक्लोपीडिया आफ मेडिकल एस्ट्रोलॉजी (The Encyclopaedia of Medical Astrology) में पृष्ठ–502 में लिखा है कि "अपने चिकित्सा व्यवसाय के वर्षों में ज्योतिष ज्ञान के प्रयोग द्वारा रोगों के मूल कारण को शीघ्र समझने में मैं समर्थ रह चुका हूं। रोगी के स्पर्श किये बिना भी तथा उसकी परीक्षा किये बिना भी केवल उसके जन्म समय को जानकर रोग प्रारम्भ होने का समय भी ज्ञात करने में समर्थ रह चुका हूं।[22]

अमेरिका के अन्य आधुनिक चिकित्सक मार्शिया स्टार्च (Marcia Starch) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मेडिकल एस्ट्रोलॉजी–हीलिंग फार द ट्वेन्टिएथ सेन्चुरी (Medical Astrology- Healing for the 20th Century) में यह आशा व्यक्त की है कि 21वीं सदी में ज्योतिष तथा चिकित्सा का अत्यधिक उपयोग होगा तथा यह भविष्य की महत्वपूर्ण चिकित्सा विद्या मानी जायेगी।[23]

22– www.encyclopediaofmedicalastrology- H.L. Cornell

23– www.medicalastrology-healing for the 20th centry mercia starch

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अब यह स्पष्ट प्रतीत होने लगा है कि चिकित्सा विज्ञान में ज्योतिष के उपयोग की अपार सम्भावनाएं हैं। आज धीरे–धीरे ज्योतिर्विज्ञान चिकित्सा–विज्ञान के क्षेत्र में एक पूरक विज्ञान बनकर उभरने की ओर उन्मुख होता जा रहा है।

आज मनुष्य की बौद्धिक क्षमता तथा तकनीकी ज्ञान में असाधारण वृद्धि हुई है अतः आवश्यकता इस बात की है कि ज्योतिर्विज्ञान रूपी महान विद्या की विलुप्त कड़ियों को ढूढ़ने का प्रयत्य किया जाय जिससे दृश्य तथा अदृश्य जगत में पारस्परिक अन्तग्रहीय सम्बन्धों एवं प्रभावों से सर्वांगीण रूप से परिचित होकर इससे लाभान्वित हुआ जा सके।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संदर्भ ग्रन्थों की सूची

(Bibliography)

1. जातक पारिजात (श्री दैवज्ञ वैद्यनाथ विरचित)– व्याख्याकार– डा0 हरिशंकर पाठक, संस्करण–2001, चौखम्भा सुर भारती प्रकाशन, के–37/117, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी।
2. फल दीपिका (भावार्थ बोधिनी)– व्याख्याकार, गोपेश कुमार ओझा, संस्करण–2001, मोतीलाल बनारसी दास, चौक, वाराणसी।
3. सांरावली (श्रीमत् कल्याण वर्मा विरचित) व्याख्याकार– डा0 मुरलीधर चतुर्वेदी संस्करण–2000, मोतीलाल बनारसी दास, चौक, वाराणसी।
4. सर्वार्थ चिन्तामणि– (पं0 महीधर शर्मा कृत) प्रकाशक खेमराज श्री कृष्ण दास संस्करण–2004, खेमराज श्री कृष्ण दास मार्ग, मुम्बई।
5. वृहत्पाराशर होराशास्त्रम– व्याख्याकार– डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र, संस्करण–2005, रंजन पब्लिकेशन, 16, अंसारी रोड, दलियागंज, नई दिल्ली।
6. वृहज्जातकम् (आचार्य वराहमिहिर विरचित) व्याख्याकार– डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र, संस्करण–2001, प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन, 16, अंसारी रोड, दलियागंज, नई दिल्ली।
7. प्रश्नमार्ग (प्रथम तथा द्वितीय भाग) अनुवादक डा0 शुकदेव चतुर्वेदी, संस्करण 2002, प्रकाशक–रंजन पंब्लिकेशन, 16, अंसारी रोड, दलियागंज, नई दिल्ली।
8. जातकालंकार–(श्री गणेश कवि विरचित) व्याख्याकार– डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र, संस्करण–2004, प्रकाशक–रंजन पब्लिकेशन, 16, अंसारी रोड, दलियागंज, नई दिल्ली।
9. जातक तत्वम् (पं0 महादेव पाठक विरचित) व्याख्याकार– डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र, संस्करण–2005, प्रकाशक– रंजन पब्लिकेशन, 16, अंसारी रोड, दलियागंज, नई दिल्ली।
10. वृहत् संहिता (आचार्य वाराहमिहिर विरचित)– व्याख्याकार– डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र, संस्करण–2005, प्रकाशक–रंजन पब्लिकेशन, 16, अंसारी रोड, दलियागंज, नई दिल्ली।
11. भारतीय ज्योतिष– नैमिचन्द्र शास्त्री, संस्करण–2000, प्रकाशक– भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इंस्टीट्यूटनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली।
12. मुहुर्त चिन्तामणि (दैवज्ञ अनन्तसुतरामाचार्य प्रणीत) व्याख्याकार– पं0 योगेश्वर पाठक, संस्करण–2001, प्रकाशक– श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ी गली, वाराणसी।
13. चमत्कार चिन्तामणि (श्री भट्ट नारायणकृत) टीकाकार– मालवीय दैवग्य धर्मेश्वर, संस्करण–2001, प्रकाशक– मोतीलाल बनारसी दास, चौक, वाराणसी।
14. लघु पराशरी सिद्धान्त– मेजर एस0जी0 खोत, संस्करण–1999, प्रकाशक– मोतीलाल बनारसी दास, चौक, वाराणसी।
15. भारतीय ज्योतिष का इतिहास– डा0 गोरख प्रसाद, संस्करण–2004, प्रकाशक– अमलेश विक्रम सिंह, निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
16. विशाल भृगु संहिता– सम्पादक– भगवानदास मित्तल, संस्करण–2002, प्रकाशक– सावित्री ठाकुर प्रकाशन, रथ यात्रा चौराहा के–67/82, नाटी इमली, वाराणसी।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karaundi, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

17. आयुर्वेदीय मानसरोग चिकित्सा– डा0 गोविन्द प्रसाद उपाध्याय, संस्करण–2000, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी–221001

18. सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा, डा0 रामनाथ शर्मा, संस्करण–1971, प्रकाशक– केदारनाथ रामनाथ, 132, कालेज रोड, मेरठ।

19. चरक संहिता (भाग प्रथम तथा द्वितीय) व्याख्याकार– डा0 ब्रम्हानन्द त्रिपाठी, संस्करण–1994, प्रकाशक– चौखम्भा सुर भारती प्रकाशन के–37/117, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी।

20. सुश्रुत संहिता (भाग प्रथम तथा द्वितीय) व्याख्याकार– डा0 अम्बिकादत्त शास्त्री, संस्करण– सम्वत् 2052, प्रकाशक– चौखम्भा संस्कृत संस्थान, चौक, वाराणसी।

21. ज्योतिष शास्त्र में रोग विचार– डा0 शुकदेव चतुर्वेदी, संस्करण–2004, प्रकाशक– मोतीलाल बनारसी दास, चौक, वाराणसी।

22– डा0 भीखल लाल आत्रेय– योग वासिष्ठ और उसके सिद्धान्त।
संस्करण–2003
प्रकाशक– श्री कृष्ण जन्म स्थान सेवा संस्थान, मथुरा।

23– योग वासिष्ठ– प्रथम तथा द्वितीय खण्ड
सम्पादक– पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य
संस्करण– 1992
प्रकाशक– संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब, वेद नगर, बरेली–243003

24– श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण (प्रथम तथा द्वितीय भाग)
संस्करण–27वां, सम्वत्–2060, गीता प्रेस, गोरखपुर।

25– कठोपनिषद– व्याख्याकार– डा0 देवेन्द्र नाथ पाण्डेय
प्रथम अध्याय, द्वितीय वल्ली, मंत्र–16,
संस्करण–1997, हंसा प्रकाशन, जयपुर।

26– वेद व्यास– श्रीमद भागवत महापुराणम्
प्रथम खण्ड तथा द्वितीय खण्ड
संस्करण– सम्वत्–2043
गीता प्रेस गोरखपुर।

27– ओशो रजनीश– "ज्योतिष अद्वैत का विज्ञान" तथा "ज्योतिष और अध्यात्म"
संकलित– मै कहता आखन देखी
प्रकाशक– ताओ पब्लिशिंग प्राईवेट लि0,
50 कोरेगांव पार्क, पुणे।
संस्करण–2003

28– वेद व्यास– श्रीमद् महाभारतम्
संस्करण– सम्वत्–2058
गीता प्रेस– गोरखपुर।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

29– म0म0पं0 गोपीनाथ कविराज–
योगीराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्व कथा, संस्करण–2000
प्रकाशक– विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी–221001

30– श्री अरविन्द– योग समन्वय (पूर्वार्ध)
अनुवादक– जगन्नाथ वेदालंकार
संस्करण–1969
प्रकाशक– श्री अरविन्द सोसायटी, पांडिचेरी।

31– सांख्यकारिका
ईश्वर कृष्ण विरचित– व्याख्याकार– डा0 ब्रजमोहन चतुर्वेदी
प्रथम संस्करण–1969, प्रकाशक–नेशनल पब्लिशिंग हाउस
2/35ा अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली–6

32– काय चिकित्सा– विद्याधर शुक्ल
प्रकाशक–चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू0ए0 बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007
संस्करण–2006

33– राशियाँ बोलती हैं– प्रणेता एवं सम्पादक– सेतुबन्ध रामेश्वर मिश्र, संस्करण–1998, प्रकाशक–हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठी पब्लिकेशन आफीसर, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी–221002

34– जातक भूषणम् (आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ "पर्वतीय" कृत) व्याख्याकार– डॉ0 सुरेशचन्द्र मिश्र, संस्करण–1999, रंजन पब्लिकेशन, 16 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

35– सूर्य सिद्धान्त– टीकाकार पं0 माधव प्रसाद पुरोहित, प्रकाशक– चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, 38 यू0ए0 बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007, संस्करण–2006

36– होरारत्नम्– प्रथम तथा द्वितीय (श्रीमन्मिश्रबलभद्र विरचित) व्याख्याकार–डा0 मरलीधर चतुर्वेदी, संस्करण–2002, प्रकाशक–मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, दिल्ली–110007

37– अष्टांग हृदयं (श्रीमद् बाग्भट्ट विरचित) व्याख्याकार– डा0 ब्रम्हानन्द त्रिपाठी, प्रकाशक– चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, 38, यू0ए0 बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007, संस्करण–1999

38– सिद्धान्त शिरोमणि (श्रीमद् भाष्कराचार्य विरचित) व्याख्याकार– पं0 केदार दत्त जोशी, संस्करण–1988, प्रकाशक–मोतीलाल बनारसी दास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–110007

39– महर्षि पतञ्जलि कृत– योगदर्शन, संस्करण सम्वत्–2061, गीताप्रेस गोरखपुर–273005

40– स्वामी सनातन श्री– साधना विज्ञान– संस्करण–1992, प्रकाशक–श्री सनातन आश्रम, गौराबाग, कुर्सी रोड, लखनऊ–226007

41– पी0एन0ओक– फल ज्योतिष संस्करण–1996, प्रकाशक– हिन्दी साहित्य सदन, 30 पी, कनाट सर्कस, नई दिल्ली–110001

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंग्रेजी की सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

1– Stephen W. Hawkins0- A Brief History of Time- from big bang to black holes- Edition- 1989
Bantam Books, 666 Fifth Avenue- New York- 10103

2– Fritjof Capra- The Web of Life- A new synthesis of mind and matter.
Harper Collins Publishers.
77-85 Fulham Palace Road
Hammer Smith, London, W-6 8 JB

3– Linde Andrei- Particle Physics and Inflationary Cosmology- Edn.- 1990
Harwood Publishers
Chur, Switzerland

4– Fritjof Capra- The Tao of Physics
1920/13 Street Boulder, Colorado (U.S.A.)
Addition- 1975

5– Linde Andrei-
"The universe, life and consciousness"
The essay compiled in the book entitled "Science and Spritual Quest"- "New Essays by Leading Scienctist" Edited by- Mark Richardson- Edition- 2002 Published by Routledge, 11 New Fetter lane London.

6– Eric Von Daniken-
Return to the Star- Gods from Outer Space.
Corgi Books
Transworld Publishers Ltd. (Edition-1981) Century House, 61-63, Uxbridge Road, Ealing London- W5 5SA

7– Alliacne for knowledge
Published by- Maharshi International University Press
Publication No.-G50 printed in 1974, West Germany.

8– T. Lobsang Rampa- You for ever
Corgi Books, Transworld publishers Ltd. Adn.-1980, Century House- 61-63 Uxbridge Road, Ealing, London,W 5 5SA

9– Paul Prunton- A search of secret India
Edn.- 1982,
B.I. Publication, 54 Janpath, New Delhi.

10– T. Lobsang Rampa - The Rampa Story
Edn.-1982
Corgi Books

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Transworld Publishers Ltd., Century House, 61-63, Uxbridge road,Ealing, London-W5 5SA

11. C.G. Jung- Synchronicity An Acausal Connecting Principle, Translated from the German by RFC Hull, Published by Rutledge & Kegan Paul Ltd., 39 Store Street, London-WC 1 E 7 DD, Edition-1981

12. Jayant Narliker- The STructure of the Universe, Publisher- Oxford University Press Edition-1978 Walton Streen, Oxford.

वेबसाइट्टस

1– www.amazon.com. World Astrology Peter Marsal

4– www.amazon.com- The Elegant Universe- Brian Greene.

13– www.Amazon.com- The Sunken Kingdom- Peter Jems

16– www.shop@londonastrology.com

17– www.amazon.com- Natures' Synergy in evolution and The fate of human kind- Peter Corning .
Chapter- Pythogorus and The Music of the spheres
Cambridge University Press .

5– www.amazon.com.Roots of Coincidence Arthur Koestler

6– www.encyclopedia of medical astrology-H.L. Cornel

7– www.medical astrology- Healing for the Twentieth Century- Mecia Starch

8– www.sciencefrontier.com

& Many others

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

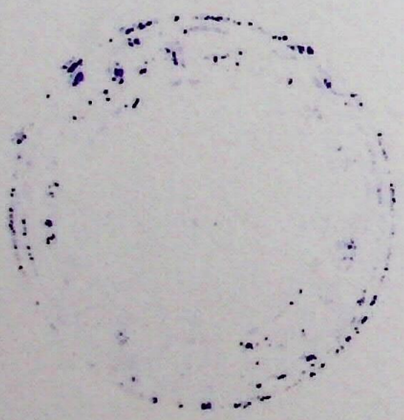

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. MYVM Karoundi, Jabalpur. MP. Collection.